

अथ गणरत्नमहोदधेः—प्रस्तावः

इदं पुस्तकं श्रीमता वर्द्धमाननाम्ना परिदत्तवर्षे ऐकादशशतसप्तनवत्युत्तरे (११९७) विक्रमीयसंवत्सरे वैयाकरणानामुपकारार्थं निर्मितम् । तत्र तेन पाणिन्यादिव्याकरणाभिमतगणशब्दान् रुचिकरकाव्यरीत्या पद्येषु निबध्य स्वयमेव सुलभासरसावृत्तिः सम्पादिता । साम्प्रतं यावन्ति कोशपुस्तकान्युपलभ्यन्ते तत्र बहूनां गणशब्दानां नामापि न दृश्यते लोकेऽपि तेषां कालप्रवाहपरिवर्तनेन वाच्यार्थेषु क्वापि केनापि प्रचारो न क्रियते । अतस्तेषां गणशब्दानामर्थबोधायैतत्पुस्तकमन्तरा नान्यच्छरणमस्तीति प्राज्ञैरभ्युपगन्तव्यम् । एतदर्थमेव अथेदं पुस्तकं कुतश्चित्कथंचिन्महता श्रमेणोपलभ्यानल्पश्रमेण संशोध्य च मुद्रापितम् । येन वैयाकरणानामुपकारः स्यादिति । पुस्तकमध्ये क्वापि मया न्यूनाधिकता स्वबुद्ध्या नैव कृता किन्तु यादृशः पाठः पुस्तकान्तर उपलब्धस्तादृश एव मुद्रापितः । यत्र क्वापि स्वानुमतिलेखनमावश्यकं ज्ञातं तत्र टिप्पण्यां तल्लिखितम् । यदि क्वापि विशिष्टं विवरणमपेक्षितं भविष्यति तर्हि संस्करणान्तरे विद्वाद्ग्राहकानुमत्या तत्करिष्ये । अस्मिन्पुस्तकेऽष्टावध्यायाः सन्ति तत्र पाणिनीयाष्टकक्रमेण गणानां सन्निवेशो न कृतः किन्तु प्रकरणनिबन्धपुरस्सरं गणशब्दाः सन्निविष्टाः । तद्यथा प्रथमो नामगणाध्यायः । तत्र व्याकरणस्य सर्वे गत्युपसर्गाव्ययनिपातसर्वनामादीनां गणा व्याख्याताः ।

द्वितीयै समासाश्रितगणा व्याख्याताः सर्वस्मिन्व्याकरणे सम-
स्तशब्दानां ये गणा उपलभ्यन्ते तेषां द्वितीयाध्याये व्याख्यानं
बोध्यम् । तृतीयमारभ्य सप्तमाध्यायावधि पञ्चाध्याय्यां सर्वे-
तद्वितगणा व्याख्याताः । अष्टमाध्याये च कदाख्यातसम्ब-
न्धिगणव्याख्यानमस्ति । यावन्तो गणाः पाणिनीयव्याकरण
उपलभ्यन्ते ततोऽधिकान्यवैयाकरणाभित्तगणव्याख्याऽपि पु-
स्तकेऽस्मिन्कृता । यदा चेदं पुस्तकं वर्धमानेन विनिर्मितं तदा
पाणिनीयादितरद्व्याकरणपुस्तकं पठनपाठनव्यापारे तदा-
नीन्तनैवैयाकरणैरभ्यनुज्ञातमित्यनुमीयते । यतो ह्यत्र पाणि-
नीयव्याकरणस्थगणसूत्राणि विहायान्यान्येव सूत्राणि वृत्तौ
धृतानि तानि च पाणिनीयं व्याकरणं दृष्ट्वैव संक्षेपार्थं कनापि
निर्मिता नीति प्रतीयते । मया च गणनाम्नामपि सूचीपत्रं
पुस्तकारम्भे पूर्वसौलभ्यार्थं निबद्धमन्ते च गणशब्दानामका-
रादिक्रमेण सूचीपत्रं निर्मितम् । अस्य शोधने यद्यपि प्रकृतो
यत्नः कृतस्तथापि पुनरवलोकनेन या अशुद्धयः प्राप्तास्ताः
पुस्तकान्ते सुद्रापिताः । एवं कृतेऽपि यदि क्वाप्यशुद्धिर्जायेत
तर्हि विद्वद्भिः प्रकरणादिना सम्यग्ज्ञात्वा शोध्या । संस्करणा-
न्तरेऽतोऽप्यधिकध्यानेन यन्त्रयिष्ये । मनुष्यस्याल्पज्ञत्वाद-
स्मिन् यन्त्रितपुस्तके यदि कश्चिद्वोपो न्यूनता वोपलभ्येत तर्हि
क्षन्तव्योऽहं प्राज्ञैः । नहि सर्वः सर्वं जानाति । अनुग्रहदृष्ट्या
च विज्ञाप्योहं सुधीभिः । अलं बहुना धीमत्सु ।

विदुषामनुग्राह्यो-

भीमसेनशर्मा

अथ गणानां सूचीपत्रम् ॥

श्लोक

श्लोक

श्लोक

प्रथमाध्यायः ॥

| | |
|------------------|-----|
| धादिस्वरादी | ४ |
| कस्कादिः | १८ |
| अहरादिपत्यादी | २० |
| सर्वादिः | २१ |
| त्यदादिः | २४ |
| यस्कादिः | २५ |
| उपकादिः | २८ |
| तिकतिकवादिः | ३२ |
| गोपवनादिः | ३५ |
| क्रौड्यादिः | ३६ |
| अजादिः | ३८ |
| स्वस्त्रादिः | ४२ |
| क्रोडादिः | ४३ |
| गौरादिः | ४४ |
| शोणादिः | ५२ |
| कुण्डादिपात्रादी | ५४ |
| लोहितादिः | ५९ |
| यदादिः | ६१ |
| द्वितीयाध्यायः ॥ | |
| अर्दुर्वादिः | ६३ |
| राजदन्तादिः | ७८ |
| कहारादिः | ८९ |
| आहिताग्न्यादिः | ९० |
| तिष्ठद्गवादिः | ९३ |
| ऊर्वादिः | ९६ |
| साक्षादादिः | ९८ |
| याजकादिः | ९९ |
| शौण्डादिः | १०१ |
| पात्रेसमितादिः | १०२ |
| अमयादिः | १०५ |
| किंशुकादिः | १०७ |

| | |
|-----------------|-----|
| व्याघ्रादिः | १०८ |
| श्रेण्यादिः | १०९ |
| कृतादिः | ११० |
| वृन्दारकादिः | ११२ |
| सतल्लिकादिः | ११३ |
| खसूच्यादिः | ११४ |
| मयूरव्यंसकादिः | ११५ |
| दधिपयत्रादिः | १२४ |
| गवाश्रवादिः | १२९ |
| हस्त्यादिः | १३३ |
| कुम्भपद्यादिः | १३४ |
| शरदादिः | १३५ |
| उरत्रादिः | १३६ |
| द्विदशड्यादिः | १३७ |
| प्रियादिः | १३९ |
| कुक्कुटाण्डादिः | १४० |
| कोटरादिः | १४१ |
| अज्जनादिः | १४१ |
| शरादिः | १४२ |
| अजिरादिः | १४३ |
| पृषोदरादिः | १४४ |
| पारस्करादिः | १५० |
| नम्राडादिः | १५५ |
| पक्षादिः | १५६ |
| रूपादिः | १५७ |
| सुषामादिः | १५८ |
| गिरिनद्यादिः | १६० |
| क्षुम्नादिः | १६१ |
| तृतीयाध्यायः ॥ | |
| अस्तादिः | १६३ |
| अनुशक्तिकादिः | १६४ |
| द्वारादिः | १६९ |

| | |
|---------------------------|-----|
| स्वागतादिः | १६८ |
| पैलादिः | १६९ |
| तौखल्यादिः | १७१ |
| मञ्जादिः | १७४ |
| अनन्तादिः | १७८ |
| आद्यादिः | १८१ |
| स्थूलादिः | १८२ |
| अर्वादिः (देवप- थादिः) | १८५ |
| यावादिः | १८७ |
| शाखादिः | १९० |
| शर्करादिः | १९१ |
| अङ्गुल्यादिः | १९२ |
| विनयादिः | १९३ |
| काकतालादिः | १९५ |
| पश्र्वादिः | १९७ |
| दामन्यादिः | १९८ |
| कम्बजादिः | २०१ |
| भर्गादिः | २०२ |
| वाह्रादिः | २०३ |
| व्यासादिः | २०८ |
| कुर्वादिः | २०८ |
| शिवादिः | २१२ |
| शुभ्रादिः | २१८ |
| कल्याण्यादिः | २२४ |
| गृष्ट्यादिः | २२६ |
| रेवत्यादिः | २२७ |
| वाकिनादिः | २२८ |
| तिकादिः | २२९ |
| नडादिः | २३२ |
| हरितादिः | २३७ |
| अश्रवादिः | २३९ |

श्लोक

श्लोक

श्लोक

| | |
|-----------------|-----|
| विदादिः | २४३ |
| कुञ्जादिः | २४५ |
| गर्गादिः | २४६ |
| चतुर्थाध्यायः ॥ | |
| घनादिः | २५३ |
| उत्सर्गदिः | २५४ |
| भिक्षादिः | २५७ |
| केदारादिः | २५८ |
| पाशादिः | २५९ |
| खलादिः | २६० |
| तालादिः | २६१ |
| शरादिः | २६५ |
| राजन्यादिः | " |
| मौरिक्यादिः | २६७ |
| ऐषुकार्यादिः | २६८ |
| नडादिः | २७० |
| अप्रमादिः | २७१ |
| सख्यादिः | २७२ |
| सङ्काशादिः | २७४ |
| वलादिः | २७७ |
| पक्षादिः | २७८ |
| कर्णादिः | २८१ |
| सुनङ्गमादिः | २८२ |
| वराहादिः | २८४ |
| कुन्दादिः | २८५ |
| अरीहणादिः | २८६ |
| कृशाश्वदिः | २९० |
| कृष्यादिः | २९३ |
| वल्गजादिः | २९४ |
| काशादिः | २९६ |
| सृणादिः | २९८ |
| प्रेक्षादिः | २९९ |

| | |
|----------------|-----|
| मध्वादिः | ३०० |
| उत्करादिः | ३०१ |
| शौनकादिः | ३०४ |
| उक्थादिः | ३०६ |
| क्रमादिः | ३११ |
| पञ्चमाध्यायः ॥ | |
| आध्यात्मादिः | ३१२ |
| नद्यादिः | ३१४ |
| करत्रयादिः | ३१५ |
| गहादिः | ३१७ |
| काश्यादिः | ३२२ |
| पलद्यादिः | ३२५ |
| कच्छादिः | ३२७ |
| धूमादिः | ३२९ |
| सन्ध्यादिः | ३३४ |
| अप्रमादिः | ३३५ |
| कथादिः | ३३६ |
| प्रतिजनादिः | ३३८ |
| दिगादिः | ३३९ |
| परिमुखादिः | ३४१ |
| ऋगयनादिः | ३४३ |
| ऋगादिः | ३४५ |
| शुण्डिकादिः | ३४६ |
| कुमालादिः | ३४७ |
| देवासुरादिः | ३४९ |
| शिशुक्रन्दादिः | ३५० |
| सिन्ध्वादिः | ३५१ |
| शुण्डिकादिः | ३५३ |
| कर्णादिः | ३५४ |
| पीलवादिः | " |
| रैवतिकादिः | ३५६ |
| गसादिः | ३५७ |

| | |
|-----------------|-----|
| अपूपादिः | ३५९ |
| षष्ठाध्यायः ॥ | |
| संशयादिः | ३६० |
| अजादिः | ३६१ |
| ऋत्वादिः | ३६१ |
| सन्तापादिः | ३६२ |
| व्युष्टादिः | ३६४ |
| चूडादिः | ३६५ |
| स्वर्गादिः | " |
| उत्थापनादिः | ३६६ |
| स्वस्तिवाचनादिः | ३६७ |
| दैवव्रतादिः | ३६८ |
| महानास्य्यादिः | ३६८ |
| अश्वदिः | ३६९ |
| वंशादिः | " |
| छेदादिः | ३७० |
| दण्डादिः | ३७१ |
| सुस्नातादिः | ३७२ |
| परदारादिः | ३७३ |
| प्रभूतादिः | ३७४ |
| पर्पादिः | ३७५ |
| वेतनादिः | ३७६ |
| उत्सङ्गादिः | ३७८ |
| भस्त्रादिः | ३७९ |
| अक्षयूतादिः | ३८० |
| निकटादिः | ३८२ |
| सहिष्यादिः | ३८३ |
| शक्त्यादिः | ३८४ |
| उत्रादिः | ३८५ |
| किशरादिः | ३८७ |

श्लोक

श्लोक

श्लोक

० सप्तमाध्यायः ॥

| | |
|--------------|-----|
| तारकादिः | ३८८ |
| पृथ्वादिः | ३८२ |
| दृढादिः | ३९३ |
| ब्राह्मणादिः | ३९५ |
| युवादिः | ४०५ |
| मनोज्ञादिः | ४०९ |
| इष्टादिः | ४११ |
| यवादिः | ४१४ |
| उदन्वदादिः | ४१५ |
| उयोत्सनादिः | ४१६ |
| पृच्छादिः | ४१७ |
| सिध्मादिः | ४१८ |

| | |
|----------------|-----|
| लीमादिः | ४२१ |
| पामादिः | ४२२ |
| बलादिः | ४२४ |
| मश्यादिः | ४२६ |
| सुखादिः | ४२७ |
| पुष्करादिः | ४२८ |
| कण्यादिः | ४३० |
| ऊषादिः | ४३१ |
| अर्शआदिः | ४३२ |
| विमुक्तादिः | ४३३ |
| गोषदादिः | ४३५ |
| अष्टमाध्यायः ॥ | |
| कण्डवादिः | ४३७ |

| | |
|--------------------------|-----|
| भृशादिः | ४४० |
| शब्दादिः | ४४१ |
| लौहितादिः | ४४३ |
| सुखादिः | ४४४ |
| ग्रहादिः | ४४५ |
| वारादिः (कपरि- कादिः) | ४४६ |
| संपदादिः | ४४८ |
| मिदादिः | ४५१ |
| नन्दादिः | ४५३ |
| पचादिः | ४५५ |
| ग्रहादिः | ४५७ |
| मूलविभुजादिः | ४६० |



ओ३म्

अथ

श्रीवर्धमानविरचितः स्वीयवृत्तिसहितो गणरत्नमहोदधिः ॥

सुखेनैव ग्रहीष्यन्ति गणरत्नानि यां श्रिताः ।

वृत्तिः सारभ्यते स्वीयगणरत्नमहोदधेः ॥

शास्त्रारम्भे समीहितसिद्धयेऽभिमतदेवतायां (१) ग्रन्थकृत्तमस्कारमाह ।

वाग्देवतायाः क्रमरेणवस्ते जयन्ति येषां मिषमाप्रतोऽपि ।

सर्वार्थदर्शी (२) मुकुरेण तुल्यः प्रकर्षमेति प्रतिभाविलासः ॥१॥

येषां वाग्देवतायाश्चरणरेपूनां संस्पर्शमात्रेणापि निखिलपदार्थसार्थप्रति-
बिम्बहेतुः प्रतिभाविलासः सातिशयः सम्पद्यते, ते 'जयन्तीति सम्बन्धः' ।
वाचामधिष्ठात्री (३) देवता वाग्देवतेति साभिप्रायं तस्यां नाम । जयन्तीति
सर्वोत्कर्षेण वर्तन्ते सर्वोत्कृष्टत्वेन च नमस्कार आक्षिप्यत इति तान्प्रति प्र-
णतोऽस्मीति लभ्यते । प्रतिमेति । प्रज्ञा नवनवोक्तेखशालिनी प्रतिभा मता ॥
इदानीं व्याकरणनिष्णातबुद्धीनां पूर्वाचार्याणां स्तुतिमाह ॥

शालातुरीयशकटाङ्गजचन्द्रगोमि

दिग्वस्त्रभर्तृहरिवामनभोजमुख्याः ।

मेधाविनः प्रवरदीपककर्तृयुक्ताः

• प्राज्ञैर्निषेवितपदहितया जयन्ति ॥२॥

शालातुरो नाम ग्रामः । सोऽभिजन्तोस्याऽस्तीति (४) शालातुरीयस्तत्रभवात्
प्राणिनिः । शकटाङ्गजः शाकटायनः । पूज्यश्चन्द्रश्चन्द्रगोमी । गोमिन् पूज्यइति

(१) देवताया इतिपाठान्तरम् । (२) शब्दार्थदर्शीतिपाठ (३) विद्याबोधो-
द्देशेयः । (४) तूदीशलातुरवर्मेती० ४ । ३ । ८४ इति सूत्रेण खण्प्रत्ययः ।

गोमिन् । दिग्वस्त्रो देवन्दी । भर्तृहरिर्वाक्यपदीयप्रकीर्णकयोः कर्ता महा-
भाष्यत्रिपाद्या व्याख्याता च । वामनोऽविश्रान्तविद्याधरव्याकरणकर्ता । भोजः
सरस्वतीकण्ठाभरणकर्ता । मुख्यशब्दस्यादिवचनत्वाच्छिवस्वामिपतञ्जलिका-
त्यायनप्रभृतयो लभ्यन्ते । दीपककर्ता श्रीभद्रेश्वरसूरिः । प्रवरश्चासौ दीपक-
कर्ता च प्रवरदीपककर्ता । प्राधान्यं चास्याधुनिकवैयाकरणापेक्षया ॥ निषे-
वितं पदद्वितयं चरणास्त्रुजद्वयं सुप्तिङ्लक्षणं च येषां ते तथोक्ताः ॥ इदानीं
अमस्तशास्त्रीपलम्भपूर्वकं स्वग्रन्थसारतां दर्शयति ।

विदित्वा शब्दशास्त्राणि (१) प्रयोगानुपलक्ष्य च ।

स्वशिष्यप्रार्थिताः कुर्मो गणरत्नमहोदधिम् ॥३॥

शब्दशास्त्राणीति (२) पाणिन्यादिविरचितानि सौपनिबन्धानि । प्रयो-
गान् सहाकाट्योपनिबद्धानि लक्ष्याणि । लक्ष्यं लक्षणं च सम्यग् ज्ञात्वा गण-
रत्नमहोदधिताम्नानं ग्रन्थं स्वविनेयैरभ्यर्थिताः कुर्मः पद्यग्रन्थेन रचयाप्तः (३) ॥

अथ गणानाह (४) ।

‘ च वा हहैवैवं नह नहि नवा नो चन हि है
स्वधा स्वाहा रै वै यदि यदुत नूनं नहि कमः ।
उताहो हा ही हे किमुत यदि नामेव तु तथा
भगो भो हंही हो इति ह नु सहामा ननु नञः ॥४॥

च । इत्यन्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चयविनियोगतुल्ययोगितावधारणहेतु-
यु (५) ॥ भिक्षामट गां चानय ॥ पाणी च प्रादौ च । पाणिपादम् ॥ स्रक्षश्च
न्यग्रोधश्च । स्रक्षन्यग्रोधौ ॥ पचति च पठति च चैत्रः ॥ अहं च त्वं च पुत्र ।
गच्छावः ॥ कृतं च गर्वाभिमुखं मनस्त्वया । किमन्यदेवं निहताश्च नो द्विपः ॥

अतीतः पन्थानं तद्य च महिमा वाङ्मनसयो—

रतहृव्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।

(१) सर्वशास्त्राणि—इति पा० । (२) सर्वशास्त्राणि—इति—पा० (३) ग्रन्थं
अथशिष्यायं विदुश्मद्व्यत्ययः । स्वशिष्यैः कुमारपालहरिपालमुनिचन्द्रप्रभृतिभिः
प्रार्थिताः ॥ (४) अधुनावसरमाप्तान् गणानाह । (५) सर्वत्राभिधेयक्रमेणो-
दाहरणानि ।



स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः—

पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥

हे देव यस्तव सहिमा स वाङ्मनसयोः पन्थानं मार्गमतीत एव । उल्ल-
 ह्वितवानेवेत्यर्थः । ग्रामश्च गन्तव्यः शीतञ्च । शीतात् कथं गम्यतइत्यर्थः ॥
 पादपूरणेऽपि । भीमः पार्थस्तथैव च ॥ वा विकल्पानवक्लृप्त्युपमानद्वन्द्वस-
 मुच्चयेषु ॥ यवैर्वा ब्रीहिभिर्वा यजेत ॥ शस्त्रवेदमधिगम्य तरवतः कस्य वेह
 भुजवीर्यशालिनः ॥ जातां मन्ये तुहिनमथितां पद्भिर्नीं वान्यरूपाम् ॥ सा
 वा शम्भोस्तदीया वा मूर्तिर्जलमयी मम । न तृतीयेत्यर्थः ॥ वायुर्वा दहनो
 वा ॥ ह । अह । इति विनियोगे । त्वं ह ग्रामं गच्छ । अयमहारणं गच्छतु ॥
 आचारातिक्रमेऽपि । स्वयं ह श्रोदनं भुङ्क्ते । उपाध्यायं सक्तून् पाययति ॥
 स्वयमह रथेन याति । उपाध्यायं पदातिं गमयति ॥ हः पादपूरणेऽपि ।
 इति ह स्माहुराचार्याः । अह शब्दः पूजायामपि भवति । यथा । अह मा-
 णवको भुङ्क्ते ॥ क्षेमार्थेऽपि शाश्वतः ॥ एव । इति नियमानियमौपस्योत्प्रे-
 क्षासु । अहमेव स्वयमिदं वदामि ॥ अद्येव ॥ इहेव ॥ श्रीस्तवैव मेऽस्तु ॥ तमेव
 मेनादुहितुः कथञ्चिद्विवाहदीक्षातिलकं चकार । तमेवेति अनौरथमिवेत्यर्थः ॥
 क्वेव भोक्ष्यसे । इत्यनवक्लृप्ताविरयेके ॥ एवमिति प्रकृतपरामर्शप्रकारे वार्थो-
 पदेशनिर्देशनिश्चयाङ्गीकारैवार्थेषु ॥ एवंवादिभि देवैर्वा ॥ एवं कुरु ॥ मैवं
 संस्थाः ॥ अग्निरेवं विप्रः ॥ एवं पठ ॥ एवं तावत् ॥ एवमेतत् कः सन्देहः ॥
 एवं कुर्मः ॥ आहार्यमेवं मृगनाभिपत्नमियानशेषेण लघोर्विशेषः ॥ नह । इति
 प्रत्यारम्भे । नह भोक्ष्यस इति ॥ नहि । नवा । नो । इति निषेधे ॥ नहि नहि
 नहिसानं प्राप्य तृप्यन्ति भूपाः ॥ यद्वा । अभ्यासो हि कर्मणां कौशलमाव-
 हति । नहि सकृन्निपातमात्रेणोद्विन्दुरपि ग्रावणि निम्नतामादधाति । अ-
 सकृदित्यर्थः ॥ नवा कुर्व्यात् ॥ व्यञ्जनमस्वरं परं वर्णं नयेत् । यद्वा । अविप्र
 इव भापसे । विप्रवन्न ब्रूय इत्यर्थः ॥ ददपि गिरमन्तर्बुध्यते नो मनुष्यः ॥
 चनेति चिदर्थे । किनो विभक्तिप्रत्ययान्तात् परएव ङस्य प्रयोगो भवति ।
 तद्यथा । कञ्चन । काचन । किञ्चन । केचन । क्वचन । कदाचन । कथञ्च-
 नेति ॥ हि । इति स्फुटार्थनिश्चयहेतुषु । कोत्तत्रालिशो हस्तगतं पादगतं
 कुर्व्यात् ॥ दाक्ष्यं हि सद्यः फलदं यदग्रतश्छाद दानेरसुवा वनावलीम् ॥

अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते ॥ यो हि दीर्घोसिताक्षस्येत्यादौ पादपूरणवि-
शेषावधारणादावपि ॥ हे । इति सम्बोधने । हे देवदत्त ! ॥ स्नाघाविस्मय-
योरपि ॥ स्वधा । स्वाहा । इति पितृदेवतासम्प्रदानयोः । स्वधा पितृभ्यः ।
स्वाहाऽग्नये ॥ रै । इत्यनादरदानयोः । त्वं ह रै किं करिष्यसि ॥ रै करोति ।
दानं ददातीत्यर्थः ॥ वै । इति पादपूरणे । यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः
स्यविरं विदुः ॥ बृहस्पतिर्वै देवानां पुरोहितइति विशेषेऽपि ॥ यदि । इति
पक्षान्तदे । यदि शमः किं तपसेति (१) ॥ यदुत । इति वाक्यार्थनिर्देशे । स त्वया
वाच्यो यदुतेहागम्यताम् ॥ नूनमिति तर्कनिश्चययोः । नूनं शरत् प्रफुल्ल
हि कांशाः ॥ नूनं सा तव प्रियेति ॥ उत्प्रेक्षायामपि ॥ उहि कमिति निषे-
धे । अस्ति ते किञ्चित् । न हि कमिति ॥ उताहो । इति वितर्क । गौरयमुताहो
गवय इति ॥ हा । इति विस्मयविषादशुग्जुग्मार्त्तिषु । हा लब्धं पाटलि-
पुत्रम् ॥ कन्यान्तःपुरमेव हा प्रविशति क्रुद्धो मुनिभार्गवः ॥ हा प्रिये जान-
कि । ॥ हा देवदत्त ! ॥ हा हतोऽस्मि मन्दभाग्यः ॥ ही । इति विस्मयविषा-
दयोः । इत विधिललितानां ही विचित्रो विपाकः ॥ शतकत्वोऽप्यधीयाना
हीं न विद्वो जषा वयम् ॥ हे । इति सम्बोधने । हे देवदत्तेति ॥ स्नाघावि-
स्मययोरपि ॥ किमुत । इति किं पुनरर्थेऽतिशये पक्षान्तरे च ॥ प्राकृतीपि
पुमान्नावमन्तव्यः किमुत राजेति । किमुत ब्रह्मविन्नेमिः ॥ किमुत । रज्जुः
किमुत सर्पः । यदि नाम । इति प्रकृतान्यथात्वे । विप्रोऽसि यदि नाम
मूर्खः ॥ कथं नाम । इत्याश्चर्यार्थ इति केचित् ।

सहावाताहतिभ्रान्तमेघमालातिपेलवैः ।

कथं नाम सहात्मानो ह्रियन्ते विषयारिभिः ॥

इवाइतीषदर्थोपमोत्प्रेक्षावाक्यालङ्कारेषु । कडारइवायम् । चन्द्रइव सुखम् ।
लिम्पतीव तसोऽङ्गानि । कथमिवैतद्भविष्यति ॥ तु । इति विशेषावधारणपू-
जावशावृत्तिपादपूरणाप्यर्थहेतुषु । मिष्टं पयो मिष्टतरं तु दुग्धम् । आत्माद-
यस्तु प्रमेयम् । यद्वा । भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः । यस्तु साणवको मुङ्क्ते ।
त्वं तु किं करिष्यसि । आख्यास्यामि तु ते ॥

(१) यदि वेत्यपि । यदिया स्युर्बहून्वपि ।

कारणात् फलयोगस्य वृत्तं स्यादाधिकारिकम् ।

तस्योपकरणार्थन्तु कीर्त्यते ह्यानुषङ्गिकम् ॥

आनुषङ्गिकमपि कीर्त्यते इत्यर्थः ॥ गृह्णीध्वं व्याकरणम् । भृशं तु दुर्ज्ञेयम् ॥

तथा । इति समुच्चयाभ्युपगमनिदर्शनसादृश्येषु । देवदत्तो ब्रजतु । तथा यज्ञदत्तः ॥ तथेति स प्रतिज्ञाय ॥ तथा हि ते शीलमुदारदर्शने ॥ इदमपि तथेति ॥ भगो । भोः । हंहो । हो । इति सम्बोधने । भगो ब्राह्मणाः । भोः शूद्राः । हंहो पान्य ! किमाकुलः । दुःसहो हो वियोग इति ॥ इतिहं । इति लोकप्रवादागमयोः । इतिहाकरोत् ॥ इतिह चकार ॥ इतिह स्तोत्राध्यायो ब्रूते पुनर्वसुरार्त्वेय इति ॥ नु इति प्रश्नप्रतिवचनोपमानवितर्कत्प्रेक्षाविषादपादपूरणेषु । को नु ? वाचसीरयत्यन्तरिक्षे ॥ अकार्षीः ? कटं देवदत्त ! अयं नु करोमि भोः ॥ वृक्षस्य नु ते पुरुहूतवयाः ॥ अहिर्नु रज्जुर्नु ॥ रज्जिता नु विविधास्तस्रुशैला नामितं नु गगनं स्थगितं नु ॥ क्व नु सां त्वदधीनजीविताम् । आख्यास्यामि नु ते । इति ॥ सह । अमा । इत्येकक्रियादि (१) योगे । पुत्रेण सहाधीते । पुत्रेण सह पण्डितः । पुत्रेण सह धनवानिति ॥ अमा सह भवतीत्यमात्यः ॥ सामीप्येऽप्यमा ॥ ननु । इति परस्मैपदानुज्ञैषणापृष्टप्रतिवचनप्रश्ननयेषु । ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः ॥ अथवा । आपदो नन्वहो वन्द्याः सारासारविवेचिकाः ॥ नन्वनुजानीहि माम् ॥ अकार्षीः कटं देवदत्त ? । ननु करोमि भोः ॥ एवं प्रश्ननययोरप्युदाहार्यम् । विरोधीक्तौ ननुवेत्यपि पठनीयम् ॥ नञ् । इति निषेधेपदर्थावक्षेपेषु । अब्राह्मणः । अब्राह्मणी । अनुदरां कन्या । अपचसि त्वं वृपलेति ॥ अकारो नञी न् इत्यत्र विशेषणार्थः ॥४॥

किंस्वित् प्रत्युत यच्च कञ्चन न कं तत्रा स्मं साकमः ;

साह्वं जातु कृतं यदा वदि वदूमाहो नवै यावतः ।

आहोस्वित् किल किंकिलात्मररे दिष्योः । चिरस्य प्रगे ;

ते मे येन चिराय तेन नहवै शश्वञ्छुभं कूपतः ॥५॥

(१) आदिपदेनात्र गुणद्रव्ययोगोऽपेक्षितः ।

किंस्विदिति वितर्कै । स्याणुरयं किंस्वित् पुरुषः ॥ प्रत्युत । इत्युक्तवै-
 परीत्ये । न दोषः पुनरुक्तेऽपि प्रत्युतेयमलङ्क्रिया ॥ यच्च । इत्येतदनवक्तृ-
 पत्यमर्षगर्हार्थेषु । भावकल्पयामि । न मर्षयामि । गर्हामहे । आश्चर्यं यच्च
 तत्रभवान् वृषलं याजयेदिति ॥ कच्चन । इति कामप्रवेदने । कच्चन जीवति
 ते माता ॥ न । इति निषेधोपमानयोः । आसवः प्रतिपदं प्रमदानां नैक-
 रूपरसतामिव भेजे ॥ मृगो न भीम इति । अयमुपमानवाची छन्दस्येव । स
 चीपमानपदीत्पर एव ॥ कमित्यनर्थकः पादपूरणे(१) । शिशिरं जीवन्नाय कम् ॥
 सत्रा । समम् । साकम् । सार्धमिति सहवत् (२) ॥ जातु । इति कदाचिदर्थे ।
 न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ॥ कृतमिति निवारणनिषेधयोः ।
 वत्स कृतं साहसेन ॥ कृतं पुरुषशब्देन जातिमात्रावलम्बिना ॥ यदा । इति
 हेतौ । यदा कृणैः सर्वगतस्त्वमुच्यस इति ॥ वदि । इति कृष्णपक्षे ॥ वदिति
 वियोगपादपूरणयोः ॥ वडिति टान्तं प्रशंसायां श्रीभोजः ॥ कृतमिति स्त्रीणां
 विकारवचने । ऊं नाहमेवं वेद्मि ॥ आहो । इति वितर्कै यद्यर्थे च । स्या-
 णुरयमाहो पुरुषइति ॥

अब्धेऽस्मिन्-स्य गितभुवनाभोगपातालकुक्षेः,
 पीतोपायादिह हि बहवो लङ्घनेऽपि क्रमन्ते ।
 आहो रिक्तः कथमापि भवेदेव दैवात्तदानीं,
 को नाम स्यादवटकुहरालोकनेऽप्यस्य कल्पः ॥

नवै । इति निषेधावधारणे विशेषनिषेधे च । नवै स्त्रीणानि सख्यानि
 सन्ति । नैव स्त्रीणां सौहार्दानीत्यर्थः ॥ नवा ष एतन्निश्रयसे न रिष्यसीति ॥
 यावदिति साकल्यावधिमानावधारण(३)कालावधिपु । यावत्कार्यं ताव-
 त्कुरु । सकलं कुर्वित्यर्थः ॥ यावद्गन्ता तावत्तिष्ठ । यावदमत्रं ब्राह्मणाणा-
 मन्त्रयस्य । यावद्दत्तं तावद्भुक्तम् (४) । यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति ॥ अन्य-
 त्नापि दृश्यते ।

यावद्भयत्वाहितसार्थकस्य भक्तासुं कस्यास्य निदेशवर्ती ॥

(१) पादपूरणेऽपि (२) एकद्रव्यगुणकर्मयोगइति यावत् (३) मानावधा-
 रणानवधारणफा० इति पा० (४) कियद्दत्तं कियद्भुक्तमिति नावधारयति ।

यावज्जीवमधीते ॥ आहोस्विदित्याहोवत् ॥ किल । इत्यागमारुचिन्यक्क-
रणसम्भाव्यहेत्वलीकेषु । जघान कंसं किल वासुदेवः । एवं किल केचिद्व-
दन्ति । त्वं किल येत्स्यसे । पार्यः किल विजेष्यते कुहून् । स किल कवि-
रेवमुक्तवान् । गोत्रस्खलितं किलाश्रुतं कृत्वा ॥ किंकिल । इति क्रोधाश्र-
द्धयोः । न सर्षयामि । न अदृधे । किंकिल तत्रभवान् वृषलं याजयिष्यति ॥ अ-
लमिति भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणनिषेधेषु । अलङ्कारः ॥ अलमस्त्यस्य घनम् ।
बह्वित्यर्थः ॥ अलं मल्लो मल्लाय ॥ अलमतिप्रसङ्गेन ॥ आलप्यालनिदं बभ्रौ-
र्यत्स दारानपाहरत् । न युक्तमेतदित्यर्थः ॥ अररे । इत्यवक्षेपसम्बोधने ।
अररे महाराजं प्रति कुतः क्षत्रियाः ॥ दिष्ट्या । इत्यानन्दे । दिष्ट्या वर्धा-
महे ॥ सभाजनदर्शनप्रातिलोस्येष्वित्येके ॥ निष्पत्तौ बाह्येति केचित्पठन्ति ॥
उमिति कोपनोक्तौ । उं सैवास्मि तव प्रिया ॥ चिरस्य । इति कुलभूयस्त्वे ।
चिरस्य याथार्थ्यमलम्भि दिग्गजैरिति ॥ प्रगे । इति प्रातरर्थे । प्रगे प्रबुध्यसे ॥
ते । मे । इति त्वया । मया । इत्यर्थे ॥ श्रुतं ते राजशार्दूल ॥ श्रुतं मे भर-
तर्षभेति ॥ येन । तेन । इति हेतौ ॥ वितर गिरमुदारां येन सूकाः पिकाः
स्युः ॥ क्षणमवहितश्च तां दिशं येन चक्षुः प्राहिणवम् ॥ नृदीं तेन जगाम ।
गमने नदीहेतुर्द्वितीयालक्ष्यात् ॥ तथाहि जाम्बवती हरणे ।

वाहैद्रथं येन विवृत्तचक्षुर्विहस्य सावज्ञमिदं (१) बभाषे । कादम्बर्याम्-
सप्रश्रयं मदलेखां तेन वलितप्रमुखो भूत्वा ॥ अपि च ।

हा कः पीडयते पयोधरतटे मातः किमीयः करो
नाभीं तेन क एष कर्षति मुहुर्नीवीमपश्यन्निव ॥

येन दाता तेन श्लाघ्यः ॥ चिराय । इति चिरस्यार्थे । चिराय निर्धनो
भूत्वा भवत्यह्ना महाधन इति ॥ न ह वै । इति निष्ठितनिषेधावधारणे ।
न ह वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्तीति ॥ शश्वदिति सार्वकाल्ये ।
शश्वच्चकारेत्यादि ॥ सातत्येऽपि । शश्वद्वक्ति कुशिक्षितः ॥ नित्यसहार्षयो-
रपि । शाश्वतं वैरम् । शश्वद्भुञ्जाते इति ॥ शुभमिति कल्याणं । शुभंयुः ॥
कूपदिति प्रश्रवितर्कप्रशंसात् । कूपदयं गायति ॥५॥

वाव त्वाव तुवै नुवै खलु चिराद् हेतावृतं तावतो,
मात्रायां मम हुं चिरेण पशवः प्राङ्गे शुकं माकिरः ।
अन्योन्यस्यं यथाकथाच वपटो मर्या स्म माङ्गाथकिं,
चेदहनाय ह्येऽय्यये नकिररे रात्रौ पुरा सीमदः ॥६॥

वाव । इत्येवार्थे । अशरीरं वाव सन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशत इति ॥
त्वाव । इति विशेषयुक्ते वावार्थे । अयं त्वाव प्रशस्यत इति ॥ तान्तावि-
भावनुमानप्रतिज्ञाप्राप्तिसमाप्तिष्विति केचित् । त्वावदित्यपि ॥ तुवै । इति
विशेषे । अयं तुव प्रकथ्यत इति ॥ नुवै । इति वितर्के । 'को नु वै गच्छती-
ति ॥ खलु । इति निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनयनियमनिश्चयहेतुविषा-
देषु । खलु कृत्वा । अथो खल्व्वाहुः ॥ स खल्वधीते वेदम् ॥ न खलु न खलु
सुग्धे साहसं कार्थ्यमेतत् ॥ प्रवृत्तिसाराः खलु सादृशां धियः । प्रवृत्तिसारा
एवेत्यर्थः ॥ खलु दानम् । त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम् । न विदीर्यं कठि-
नाः खलु स्त्रियः ॥ चिरादिति चिरायार्थे । चिराद्द्रष्टोऽपीति ॥ हेतौ ।
इति निमित्तार्थे । हेतौ ह्यप्यति ॥ ऋतमिति सत्यार्थे । ऋतं ब्रवीति ॥ ता-
वदिति तुल्ययोगितासाकल्यमानक्रमावधिषु । यावत्कार्यं तावत्कुरु । याव-
द्वृत्तं तावद्भुक्तम् । त्वमेव तावत्परिचिन्तय स्वयम् । तावदधीष्व यावद्बुध्य-
से ॥ यावत्तावच्छब्दौ परस्परसापेक्षावेव शब्दशक्तिस्वाभाव्यान्निजमर्थं गम-
यतः । क्वचित्तु केवली (१) ॥ मात्रायामित्यल्पपरिमाणे । मात्रायां भोजकः ॥
मम । इति प्रत्यगात्मसम्बन्धे । ममेत्यस्य भावो ममत्वं ममता । निर्गतो म-
मेत्यस्मादिति निर्ममः ॥ हुमित्यनिच्छाभयस्मरणभर्त्सनकोपेषु । हुं हुं मुञ्च ।
हुं राक्षसोऽयम् । हुं स त्वमसि । हुं निर्लज्जापसरेति ॥

आः कष्टं वत ही चित्रं हुं मातर्देवतानि धिक् ।

हा पितः ! क्वासि हे मुञ्चु ! बह्वैवं विललाप सः ॥

धिङ्मातः क्लेशि (२) । किं त्वयानुष्ठितमित्यर्थः ॥ चिरेण । इति चिरा-
यार्थे । चिरेण मित्रम्यसनी सुदनी दमघोषजः ॥ पशु । इति सम्पगर्थे । लोभं
न यन्नि पशु मन्यमानाः । दर्शनीयं ज्ञानं सम्पक् प्रतिपद्यमाना लोभं परि-

स्यजङ्गीत्यर्थः ॥ प्राह्णे । इत्यहः प्रारम्भे । प्राह्णे गच्छति ॥ शुकमिति
 शैध्रे । शुकं गच्छति ॥ साकिरिति निषेधवर्जनयोः । रक्षां मे साकिः कुर्विति ॥
 सान्तं तु शाकटायनः । तथा नकिःशब्दमपि ॥ अन्योन्यस्य । इति परस्पर-
 रार्थे । अन्योन्यस्य स्मरन्ति ॥ यथाकथाच । इत्यनादरे । यथाकथाच दीयते ।
 यथाकथाच दक्षिणेति ॥ वषडिति देवहविर्दाने । वषडिन्द्रायेति ॥ मर्या ।
 इति सीमबन्धने । मर्या आदीयते । इति मर्यादा । सीमबन्धनेन गृह्यत
 इत्यर्थः ॥ स्म । इत्यतीते वाक्यपूरणे च । इति ह स्तोपाध्यायः कथयति ।
 अङ्ग स्म विद्वन्माणवुकमध्यापयेति ॥ माङ् । सा । इति निषेधाशङ्कयोः । सा
 कार्षीत् । सा भवतु तस्य पापम् । सा भविष्यति शीतार्ता जानकी हृदय-
 स्थिता ॥ ङकारो लुङ्माङ्गीति (१) विशेषणार्थः ॥ अथ किमित्यभ्युपगमे । देव-
 दत्त ! गच्छसि । अथ किम् ॥ चेदिति यद्यर्थे । शान्तिश्चेदमृतेन भक्तिम् ॥ अ-
 ह्नाय । इति शीघ्रार्थे । अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्जेति ॥ ह्ये । अयि ।
 इति सम्बोधने । ह्ये जाये मनसा तिष्ठ घोरे । अयि विजहीहि दूढोपगू-
 हनम् ॥ अनुनयेऽप्ययि । अप्ययि साहसकारिणि ॥ अत्रे । इति स्मरणे । अत्रे
 रामो दाशरथिः ॥ नकिरित्यौपम्ये । मेघो नकिर्वर्षति ॥ प्रतिषेधवर्जनयो-
 रपि ॥ अरे । इति हीनसम्बोधने । अरे चौर ! ॥ रात्रौ । इति निशायान्ति-
 त्यस्यार्थे । रात्रौ वृत्तं तु द्रक्ष्यसि । रात्रौचरः ॥ पुरा । इति प्रबन्धभविष्य-
 दासत्तिचिरातीतेषु । उपाध्यायेन पुराधीयते स्म । अविरतमपाठीत्यर्थः ॥
 गच्छ पुरादेवो वर्षति । समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः ॥ पुरापि न नवम् । पुरा-
 णमिति ॥ कश्चिद्भविष्यत्यासत्तौ, चिरेऽतीते चेति पृथगाह ॥ सीमिति सर्व-
 तोभावे । सीमादित्यो असृजत् । सर्वत इत्यर्थः ॥ अदित्याश्चर्ये । कस्तद्देद
 यदद्भुतम् ॥६॥

श्रौषट् वौषट् प्याडहो नोहि वादः—

सुपत् कश्चिद् यत्र नेदङ्ग हन्ताः ।

त्वै न्वै छम्बट् पाडवरे वताथो—

कुं हं हिं कद् वेदधायो नुकं चाः ॥ ७ ॥

• श्रौषट् । वौषडिति वषट्शब्दार्थे ॥ प्याडिति प्रशंसामन्त्रणयोः । प्याट्
 शीघ्रं पठति । प्याट्पाठकाः ॥ हिंसासातत्ययोरपि शाकटायनः ॥ कश्चि-

च्चिरत्नेऽतीते काले । समीपेऽनागते चेति पृथगाह ॥ अहो । इति सम्बोध-
 नाश्रययोः । अहो अत महत्कष्टं चक्षुष्मानपि याचते । अहो रूपम् अहो
 रूपमिति ॥ नोहि । इति प्रतिषेधे । नोहि पठसि त्वम् ॥ वादिति वदर्थे ।
 वाडिति तु टान्तं वषडर्थे श्रीभोजः ॥ सूपदिति कूपदर्थे ॥ कच्चिदिति कच्चन-
 वत् ॥ यत्र । इति यच्चवत् ॥ नेदिति शङ्कायाम् । नेज्जिह्मायन्त्यो नरकं पतास ॥
 प्रतिषेधविचारसमुच्चयेष्विति श्रीशाकटायनः ॥ अङ्ग । इति पूजासम्बोधन-
 योः । (१) अङ्ग विद्वन्माणवकमध्यापय । तन्मन्ये क्वचिदङ्ग भृङ्गतरुणेगास्वादि-
 ता सालती ॥ समृद्ध्युपयोगप्रातिलोम्येष्विति श्रीशाकटायनः ॥ हन्त । इति
 हर्षानुकम्पावाक्पारम्भविषादेषु । हन्त जीविताः स्मः । पुत्रक हन्त ते धाना-
 काः । हन्त ते कथयिष्यामि । हन्त हताः पथिकगेहिन्यः ॥ दाननिश्चययोरपि ।
 भूरियं हन्तर्कारः । हन्त गच्छामः । निश्चयेनेत्यर्थः ॥ त्वै । इति विशेषवित-
 क्तयोः । अयं त्वै प्रकृत्यते । कस्त्वा एषोऽभिगच्छति ॥ न्वै । इति वितर्क-
 पादपूरणयोः । को न्वाएषोऽभिगच्छति ॥ छम्बडित्यन्तःकरणाभिमुखयोः ।
 छम्बट्संशुद्ध्या शर्वे जयति । छम्बटमुखो धावति ॥ पाडिति प्याडर्थे ॥ के-
 चित् पट् । इत्यपि सादृश्यासम्पत्तिसाकल्यग्रन्याधिकवचनेषु ॥ अवेरे । इत्यरे
 इत्यस्यार्थे । अत । इति हेतुखेदानुकम्पासन्तोषविस्मयामन्त्रणेषु । अतजेनेति
 बलं अतास्ति सत्त्वे । यस्मादित्यर्थः ॥ अहो अत महत्कष्टम् । हता अत वरा-
 की सा । अत प्राप्ता सीता । अहो अतासि स्पृहणीयवीर्य्यः । अत वितरत तोयं
 तोयवाहा नितान्तम् ॥ अघो । इत्यन्वादेशे । इमं वेदमध्यापय । अघो एनं
 उन्दोपि ॥ अन्येऽप्यर्था वक्ष्यमाणा अथशब्दवद्द्रष्टव्याः ॥ कुमिति प्रश्ने कुं त्वं
 करोपि ॥ हमित्यसम्मती । हं क एवमाह ॥ हिमिति स्तोभवचनः । हिं सा-
 म गीयते ॥ कदिति हर्षे । कद्रुद्राय प्रचेतसे ॥ वेदिति वदर्थे ॥ वेडिति वप-
 डर्थे टान्तं तु श्रीभोजः ॥ अध । इत्यथार्थे । अधा स वीरैर्दशभिर्विबूयाः ॥
 अघो इति भोषर्थे ॥ तु कमिति वितर्के । अहिर्नु कं रज्जुर्नु कम् । च ।
 इति चेदर्थे । त्वं च गमिष्यसि फलिष्यति नः कामः ॥ आद्यपदात्परएव
 प्रयोक्तव्यः । यदुक्तमन्यत्र । चो यद्यर्थे प्रथमात्पदात्परः ॥७॥

• ओमादकस्मादुत यत्तदन्यत्,
पर्याप्तमग्रे कुविदाम नामाः ।
• अन्यत्र घाथेद् विषु चित् सुकं किं,
स्विदन्तरेणैकपदेऽहहोत्रः ॥८॥

ओमित्यभ्यादानाभ्युपगमसमाप्त्यर्थे । मङ्गलप्रयोजनञ्च भवति । ओं ओ-
ग्निमीडे पुरोहितम् ॥

ओमित्बुक्तवतीऽथ शाङ्गिण इति व्याहृत्य वाचं नभस्-
तस्मिन्नुत्पतिते पुरः सुरमुनाविन्दीः श्रियं विश्रति ।

ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ आदित्यथार्थे । विश्वकर्मा विमना आद्विहाया
इति ॥ अकस्मादित्यतर्कितोपनते । कस्मादकस्मादमी ॥ उत^० । इति वित-
र्कवाढार्थप्रश्नसमुच्चयपक्षान्तरपादपूरणेषु । स्थाणुरयमुत पुरुषः । उत शिरसा
पर्वतं भिन्द्यात् । उत दण्डः पतिष्यति । स्वाभासो भरवानुत । एकमेव वरं
पुंसासुत राज्यसुताश्रमः । स सर्वलोकस्य शुभो भवत्युत ॥ अ्यत्तदिति हेत्वर्थे,
यदयमधीते तज्जानाति ॥ अन्यदित्यन्यार्थे । देवदत्त आयातोऽन्यच्च यज्ञदत्त
इति ॥ इतरार्थेऽपि ॥ पर्याप्तमिति सामर्थ्यवारणयोः । त्वयैव पर्याप्तम् ।
पर्याप्तमिहान्येन ॥ अग्रे । इति पुरस्तादर्थे । अग्रेसरः । अग्रेवणम् । कुवि-
दिति भूर्यर्थे । कुविदङ्ग यवमन्तः ॥ योगप्रशंसास्तिभावेष्वापि ॥ आस । इति
प्रतिवचनावधारणयोः । कटं कुरु । आस करोमि ॥ तथा—

घण्टानादो निस्वर्णो द्विषिडमानां—
ग्रैवेयाणामारवो वृंहितानि ।
आमेतीव प्रत्यवोचन् गजानां—
मुत्साहार्थं वाचनाधीरणस्य ॥

गच्छाम्याम ॥ अभ्युपगमेऽपि । आस मैथिलि ! ॥ नाम इति प्राकाश्यसंभा-
षनाक्रोधाङ्गीकारकुत्सनालीककथंचिद्विस्मयेषु । हिमालयो नाम नगाधिरा-
जः ॥ कथं नाम समेष्यसि ॥ स्मृतिः सम्भावनैव । स नामायं बन्धुः ॥ समापि
नाम दशाननस्य परैः परिश्रवः ॥ एवमस्तु नाम । को नामायं सवितुरुदयो
यत्र न स्त्रे स्फुरन्ति ॥ दष्टेव सा रोदिति नाम तन्वी ॥ यदि लेपनमेवेष्टं

लिम्पतिर्नाम कोऽपरः ॥ अन्धो नाम पर्वतमारोहति ॥ आमन्त्रणेऽपि ॥ अन्यत्र ।
 इति वर्जने । पतितान्त्र विभृयादन्यत्र नातुः ॥ घ । इति हिंसाप्रातिलोस्य-
 पादपूरणेषु । घ हिनस्ति मृगं व्याघः ॥ अथ । इति मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्न-
 कात्स्न्याधिकारप्रतिज्ञासमुच्चयेषु । अथ परस्मैपदानि । स्नातोऽथ भुङ्क्ते ।
 अथ शब्दानुशासनम् । अथ शक्तोऽसि भोक्तुम् । अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः ।
 अथ समासः । गौडो भवानथेति ब्रूमः । भीमोऽथार्जुनः । नित्यः शब्दोऽथा-
 नित्यः ॥ इदित्यनर्थकः । वक्ष्यन्तीवेदागनीगन्ति कर्णम् ॥ विषु । इति सर्व-
 तोभावे । विष्वञ्चतीति विष्वक् ॥ चिदिति साकल्याप्यर्थोपमानासंमतिषु ।
 आचार्यश्चिदिदं ब्रूयात् ॥ किञ्चित् प्रयच्छति । न किञ्चिद् ब्रवीति ॥ अग्नि-
 श्चिद् भायात् ॥ कुत्मापांश्चिदाहरेति ॥ सुकमित्यतिशये । सुकं शोभते ॥
 किमिति क्षेपप्रश्नेषुदर्थोतिशयेषु । किमयमपि ब्राह्मणः । किं गतोऽसि ? ।
 न किमप्यस्यास्ति । किमप्येष प्रगल्भते ॥ स्विदिति प्रश्नवितर्कयोः । कः
 स्विकेकाकी चरति । अधः स्विकेकासीदुपरि स्विकेकासीत् ॥ अन्तरेण । इति
 मध्यविनार्थयोः । यथाः

मृशालमूत्रामलमन्तरेण,

स्थितञ्चलञ्चामरयोर्द्वयं सः ।

भेजेऽभितः पातुकसिद्धिसिन्धो-

रभूतपूर्वा रुचमम्बुराशेः ॥

चलञ्चामरयोर्मेध्य इत्यर्थः ॥ अन्तरे । इत्यप्यमरसिंहः । यथा—आवयो-
 रन्तरे जाताः पर्वताः सरितो द्रुमाः ॥ अन्तरेण पुरूपकारं न किञ्चिद्व्यभ्यते ॥
 अन्तरेण मातापित्रोरित्यत्र तु प्रयोगे विनार्थेऽन्तरशब्दोऽनव्ययस्तेन द्विती-
 यात्ययः (१) ॥ एकपदे । इत्यकस्मादर्थे । अयमेकपदे तथा वियोगः ॥ अहह ।
 इत्यद्भुतसेदयोः । अहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः । अहह कष्टम-
 पण्डितता विधेः ॥ दीर्घान्तोपि । भिक्षित्वापि बुभुक्षिता यदहहा ॥ उज्जिति
 यितर्कसम्बोधनपादपूरणेषु । कउएति । उउत्तिष्ठ । तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ॥
 उ । इत्यम्परिरूपकोऽप्यस्ति । अस्य त्ययं विशेषः । उजो वेति । ऊं इति
 पत्ते भवति ॥ ८ ॥

सत् फट् क्विच्चिररात्राय विभापेति नचेत् पुतः ।

आः शप्समुपजोषं खोरठावाडां स्वरादयः ॥ ९ ॥

सदित्यादरे । सत्कृत्य । सत्कृतम् ॥ ऋडिति विप्रप्रतिहतोत्सारणे । हुं
फट् प्रतिहतोऽसि ॥ क्विदिति भर्त्सनपादपूरणयोः । क्वित् कितव ! कदर्योऽसि ।
क्वित् क्वैतदुपयुज्यते ॥ चिररात्राय । इति चिरस्यार्थे । चिररात्राय जनेन
चिन्तितम् ॥ विभापा । इति विकल्पार्थे । विभापाग्रेप्रथमपूर्वेषु ॥ इति ।
इति हेतुप्रकारप्रकर्षैवमर्थव्यवस्थास्वरूपविवक्षानियमसमाप्तिप्रकृतिवक्ष्यमा-
णापरामर्शमतेषु । हन्तीति पलायते ॥ गौरश्वो हस्तीति जातिः ॥ इतिपा-
णिनि । पाणिनिशब्दः प्रकर्षात् प्रसिद्ध इत्यर्थः ॥ क्रमादसुं नारद इत्यबो-
धि सः ॥ उवलितिकसन्तेभ्यो णः ॥ वृद्धिरित्येवं या वृद्धिः । शुणइत्येवं यो
गुण इति ॥ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मनुप् ॥ पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं काली
दिगात्मा मन इति द्रव्याणि ॥ इत्युक्तवन्तं परिरम्य दोर्म्याम् ॥ विनिश्चिता-
र्थासिति वाचमाददे ॥ इत्यापिशलिः ॥ प्रत्यक्षसंनिध्यवधारणपदार्थाविपर्णा-
सादिष्वपि द्रष्टव्यः ॥ नचेदिति निषेधे । नचेत् कर्त्तव्यम् ॥ निषेधार्थं नोचे-
दित्यपि पठनीयम् ॥ पुदिति कुत्सायाम् । पुत् कुत्सितं कसति गच्छति ।
पुत्कसः ॥ कान्तमिति तु शाकटायनः ॥ आः । इति कोपपीडयोः-

विद्यां मातरमाः प्रदर्श्य नृपशून् भिक्षामहे निस्त्रपाः ॥

शबिति प्रग्रहे । गां शप्करोति ॥ समुपजोषमित्यानन्दे । समुपजोषं
वर्त्तते ॥ उपजोषमिति निर्वाणनारायणः ॥ खोः कुत्सायाम् । खोः कटं क-
रोति ॥ अठ । अठ । इत्येते भर्त्सने । अठ करोतीत्यादि ॥ आमिति
प्रतिवचनावधारणयोः । आं किं मां ब्रवीषि । आं चिरस्य प्रतिबुद्धोऽस्मि ॥
स्वरादिरिति सम्बोधनभर्त्सनानुक्त्यापूरण(१)प्रतिषेधेषु यथासम्भवं भवति ।
अ अपेहि । आ एवं नु मन्यसे । इ इन्द्रं पश्य । ई ईदृशः संसारः । उ उत्ति-
ष्ठ । ऊ ऊषरे बीजं वपसि । ए इतो भव । ऐ वचं देहि । औ आवय ॥ अ
ऋ लृ औ । इत्येते मन्त्रस्तोभवचनाः ॥ आदिग्रहणात् कुं खुं गुं पुमित्याद-
योऽपि भवन्ति ॥

अहम् । शुभम् । कृतम् । पर्याप्तम् । येन । तेन । चिरेण । अन्तरेण ।
ते । मे । चिराय । अहाय । चिररात्राय । चिरात् । अकस्मात् । चिरस्य ।
अन्योऽन्यस्य । सप्त । एकपदे । अग्रे । प्रगे । प्राङ्क्ते । हेतौ । रात्रौ । वेला-
याम् । मात्रायाम् । इत्येतेऽहंप्रभृतयो यथाक्रमं प्रथमादिसुविविभक्त्यन्तप्रति-
रूपकार्ष्णन्दोषशाद् यथायथं न्यस्ताः ॥ ९ ॥

उत्तरपूर्वान्यतरा अपरान्यौ चेतराधरावुभयः ।

एद्युस्येते ज्ञेया उभयद्युश्चापि विद्वद्भिः ॥१०॥

एद्युसन्ता(१)एते चादयो भवन्ति । शेषं स्पष्टम् ॥ १० ॥

इत्थं तदानीं कथमः पुरस्तात्—

सद्योऽधुनाद्येह परेद्यविक्रवाः ।

पश्चादिदानीं परुतः परार्यै—

कथ्यं सदा द्युः पुरसः सदं च ॥११॥

सद्य इति तत्क्षणे । असूत सद्यः कुसुमान्यशोकः ॥ पश्चादिति प्रतीची-
चरमयोः । पश्चादस्ताद्विः । पश्चाद्याति ॥ द्युरिति वासरे ॥ तथा च श्रीभोजः ।
द्युर्दिनमिति ॥ यथा । द्युश्चन्द्रो द्योतते कथम् ॥ गगनेऽप्ययम् । असान्त-
मिति वररुचिः । नपुंसकमित्यन्ये ॥ सदमिति सदा । इत्यस्यार्थे । यथा ।
भुजङ्गमस्येव नणिः सदम्भाः । सततप्रमदइत्यर्थः ॥ शेषं स्पष्टम् ॥ पुरस्तादि-
त्युपलक्षणम् । सूत्रनिपातिता अधोऽधस्तादित्यादयो ज्ञेयाः ॥११॥

सुच् कृत्वस् त्रा तस् त्र दा कार्म् हि धैथाः—

स्तादाह्येनात् साच्च्विडाः स्युर्धमुञ् थाः ।

शस् वतू तुम् एम् क्त्वादयश्च प्रसाक्षाद्—

आद्यूर्ध्यादिश्चाव्ययीभावयुक्तः ॥१२॥

तद्वितादिप्रत्ययां सुजादयश्चादिगणे भवन्ति ॥ सुच् । द्विःकरोति । त्रिः-
पञ्चति ॥ कृत्वस् । पञ्चकृत्वोऽधीते ॥ त्रा । देवत्रा कृतम् । देवत्राकृत्य गतः ॥

(१) उत्तरेद्युः । पूर्वद्युः । अन्यतरेद्युः । अधरेद्युः । अन्येद्युः । इतरेद्युः ।
अधरेद्युः । उभयेद्युः ।

तैस्त्र अतः । ततः । अन्ततः । कुतः । एते पञ्चम्यर्थाः । पञ्चम्यर्थश्चोपलक्ष-
णम् ॥ अतः कारणीप्रदेशनिर्देशयोः । अतो गुणात् सर्वजनः पूजयति । अतो
गतः ॥ तत आदिकथान्तरप्रश्नानन्तर्येऽपि । ततः प्रयातो भानुदत्तः । आदौ गत
इत्यर्थः । ततः कथयति । ओदनं भुक्त्वा ततो मोदकान् भक्षयन्ति ॥ अन्ततः
शासनावयवे सम्भावनायाञ्च ॥ किञ्चिदप्यधीष्व । अन्ततः पूजां प्राप्स्यसि ॥
गुणवान् । अन्ततश्च मे दास्यसि ॥ कुतः प्रश्ननिह्वयोः । कुत आगच्छसि ।
कुतो मे हिरण्यम् ॥ अर्जुनतोऽभवन्देवाः ॥ उरस्तः । उरसैकंदिक् ॥ त्र ।
यत्र । तत्र ॥ दा । सर्वदा ॥ काम् । किन्तराम् ॥ हिं । एतर्हि ॥ तर्हीति
विशेषेऽपि । बलवानर्जुनः कृष्णस्तर्हि बलवत्तरः ॥ धा । पञ्चधा ॥ एधा ।
द्वेधा ॥ स्तात् । प्राग्ग्राप्तात् (१) ॥ आहि । उत्तराहि ग्रामात् ॥ एन । पूर्वेण
ग्रामम् ॥ आत् । उत्तराद्ग्रामस्य ॥ सात् । भस्मसात् स्यात् । भस्मसात्कृत्य ॥
च्चि । शुक्ली भवति ॥ डा । पटपटा करोति ॥ धमुञ् । द्वैधं वर्त्तते ॥ धा ।
इत्याकारप्रश्लेषो द्रष्टव्यः ॥ धा । यथा ॥ आ । दक्षिणा ग्रामात् ॥ शस् ।
अल्पशः । द्विशो देहि ॥ वत् । राजवत् (२) ॥ तुम् । कर्तुम् ॥ णम् । भोजं
भोजं व्रजति । चूर्णपेषं पिनष्टि ॥ क्त्वा । कृत्वा ॥ तदादेशोऽपि ल्यो ग्राह्यः ।
प्रकृत्य ॥ आदिग्रहणात् केकेन्यतवैत्वत्यादयोऽन्येऽपि द्रष्टव्याः ॥ प्रसाक्षा-
दादीति । आदिशब्दः प्रत्येकमभिसम्बध्यते । तत्र प्रादिर्वक्ष्यमाणो विंशति-
शब्दको गणश्चादिसञ्ज्ञो भवति । तत्रास्य प्रादिसञ्ज्ञा धातुसम्पृक्तस्यैव ना-
न्यत्र । चादिसञ्ज्ञा तु सर्वत्र स्वरूपनिबन्धना स्यात् । यथा । साधुर्देवदत्तो
मातरं प्रति । मातरमभीत्यादात्रैवं प्रयुक्तिः । एष कर्मप्रवचनीयइति पाणि-
नीये प्रसिद्धः ॥ प्राचार्य्यः । निष्कौशाम्बिरित्यादौ नामसमासे गतिसञ्ज्ञः ।
कुगतिंप्रादयएव पाणिनीयवचनात् ॥ साक्षादादिरपि वक्ष्यमाणो गणः ।
तस्य केवलस्यापि चादित्वम् । करोति साक्षाच्चैत्र इत्येवं प्रयोगः ॥ ऊर्यादि-
रपि तथा ॥ अव्ययीभावश्च चादित्वे तस्य प्रयोजनम् । उपपयस्कारः (३) ।
उपकुम्भमन्यः । अभ्यग्निमन्यइत्यादौ स्यादेशमुभागरूपप्रतिषेधइति वामनः ॥

(१) स्तादित्यनेनास्तातिप्रत्ययो ग्राह्यः । प्रागित्यत्राञ्चेलुंगित्यस्ताने-
र्लुक् । पुरस्तात् । प्राग्ग्राप्तादिति पा० (२) पुत्रवत् । भानुवत्-इति प्रा० ।
(३) उपपयःकार इति महाभाष्यानुकूलः प्रयोगः ।

शाकटायनः पुनराह । अव्ययीभावस्याव्ययत्वे स्वल्पमेव प्रयोजनम् । दोषास्तु
 बहवः । तथाहि । उपकुम्भमन्यम् । उपमणिकंमन्यमित्यत्र खित्यरुद्धिषत-
 श्चाजनव्ययस्येति मुमुप्रतिषेधः प्राप्नोति । यथा । दोषामन्यमहः । दिवाम-
 न्या रात्रिरिति । उपकुम्भीभूतमित्यत्र च्चौ चानव्ययस्येति । ईत्वप्रतिषेधश्च ।
 यथा । दोषाभूतमहः । दिवाभूता रात्रिरिति ॥ उपाग्निकमित्यत्र कादिश्चा-
 व्ययस्येति ॥ अक्च । यथा । उच्चकैः ॥ पाणिनिरपि स्वरादिगणात् पृथग-
 व्ययीभावश्चैत्यव्ययसंज्ञानिमित्तं सूत्रं कुर्वन् लुग्विधिर्मुखस्वरोपचारनिषेधा-
 विति त्रितयमेवाव्ययसंज्ञानिबन्धनं नान्यदिति प्रतिपादयति ॥ दुर्गस्तु ।
 अव्ययाच्चेति लुकि सिद्धेऽन्यस्माद्भुगिति यद्वचनं तज्ज्ञापयति । अव्ययीभाव-
 स्याव्ययत्वं नास्तीति ॥१२॥

आस ब्रूहि नयाति पश्यतयुतौ यात्यादहौ वर्तते-

स्यादातङ्कनवर्तते भवतयो मन्येऽस्तुनास्त्यस्मयः ।

आदङ्कैह्यसि पूर्यतेऽस्तिभवतू शङ्के तथा विद्यते-

पश्याहाविह् कीर्तितौ मतिमता सङ्ख्ये निपाताह्वये ॥१३॥

तिङ्ङन्तप्रतिरूपका एते चादिसंज्ञा भवन्ति । निपाताव्ययसंज्ञास्तु म-
 तान्तरे ॥ आस । इति बभूवार्थे । लावण्य उत्पाद्य(१) इवास यत्रः ॥ वा-
 मनस्तु । अस दीप्त्यादनयोश्चेत्यस्य साधयति ॥ बल्लभस्य तु तिङ्ङन्तप्रति-
 रूपको निपातइति न संभतम् । तादृशस्यैव तिङ्ङन्तस्याभावात् ॥ ब्रूहि ।
 इति प्रैपानुज्ञावसरेषु । ब्रूहि ब्राह्मणाः ॥ नयाति । इति न शक्यत इत्यर्थे ।
 इदं तु कर्तुं नयाति ॥ पश्यत । इति पूजाश्चर्ययोः । पश्यत साणवको
 भुङ्क्ते । पश्यत शिशुरपि विद्वान् । याति । इति शक्यतइत्यर्थे । इदमेव
 कर्तुं याति ॥ आदह । इति हिंसोपक्रमकुत्सनेषु । आदहारीन् पुरन्दर ।
 आदह भक्तस्य भोजनाय । कुर्वादह यदि केरिष्यसि ॥ वर्तते । इति शोभु-
 रटनाङ्गसंवरणे । वृहस्तेन विचारणीयचरितास्तित्यन्तु हुं वर्तते ॥ स्यादि-
 त्यनेकान्ते । स्याद्वादिनो जैनाः । स्यान्न तस्यादपि स्यादिति पक्षान्तरसम्भा-
 यनादावपि ॥ आतङ्क । इति कुत्साविनाशयोः । आतङ्कक्षीरं दधिभवनाय ॥

(१) लावण्यमुत्पाद्य-इति पा० ।

प्रतिग्रहेऽपि शाकटायनः ॥ न वर्तते । इत्यमङ्गलप्रतिषेधे । समराभिमुखे
 धैत्यम्बुश्रुनिपातो न वर्तते तस्याः ॥ भवति । इति सत्तायाम् । भवति नाम
 तत्रभवान् वृषलं याजयिष्यति ॥ मन्ये । इति वितर्के । मन्ये मार्त्तण्डगृह्याणि
 पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥ अस्तु । इति निषेधासूयाङ्गीकारयोः । अस्तु सान्ना ॥
 असूयापूर्वेऽङ्गीकारे । अस्तुंकारः । एवमस्तु को नाम दोषः ॥ नास्ति । इति
 सत्तानिवेधे । नास्ति वादशूरो नास्तिकः ॥ अस्मि । इत्यस्मदर्थानुवादे ।
 अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः ॥ अहमित्यर्थेऽपि । उडुपेनास्मि
 सागरम् ॥ आदङ्ग । इत्यातङ्गवत् ॥ एहि । इति प्रहासादौ । एहि मन्ये
 रथेन यास्यसि । एहि न त्वया सह जल्पिष्यामि ॥ असि । इति त्वगित्य-
 र्थवाक्यालङ्कारयोः । वेत्स्यसि पार्थिव त्वमसि(१) सत्यमभ्यधाः ॥ भोजस्तु
 युष्मदर्थानुवादे । यदपूपुजस्त्वमसि पार्थसुरद्विषमिति प्राह ॥ पूर्यते । इति
 निषेधे । पूर्यते प्राणायामेन ॥ अस्ति । इत्यस्मृग्धनसत्तासु । आस्तेयं चर्म-
 भाजनम् । अस्ति परलोके सतिरस्येत्यास्तिकः ॥ भवतु । इत्यस्तुवत् ॥
 शङ्के । इति वितर्के । शङ्के शशाङ्कोऽयम् ॥ विद्यते । इति भवत्यर्थे ॥ पश्य ।
 इति पश्यतवत् ॥ आह । इत्युवाचार्ये । अथाह वर्णी विद्वितो महेश्वरः ॥
 एते चोच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्तीति निपाताः । तत्र-

केऽप्येषां द्योतकाः केऽपि वाचकाः केऽप्यनर्थकाः ।

आगमाइव केऽपि स्युः संभूयार्थस्य साधकाः ॥

तत्र द्योतकाश्चवाहाहैवादयः । वाचकाः शश्वत् कुवित् प्राक्लिं प्रगइत्या-
 दयः । अनर्थकाः कनीसिदित्यादयः । संभूयार्थस्य साधका न ह वै न खलु
 मास्तेत्यादयः ॥ १३ ॥

स्वः सायं समया दिवा पुनररं कामं प्रकामं बहिर्-

दोषा ह्यो निकषान्तरासनुतरो नक्तं नसो भूयसः ।

अन्तः प्रातरसांप्रतं परभृते साक्षात् सनत् साचयः-

सत्यं मङ्गु विहायसाशु सहसा प्रायः स्वयं संवतः ॥१४॥

स्वरिति स्वर्गपरलोकयोः । स्वः सुखयति । एहि जाये स्वरारोहांव ।

स्वः संजानीते । स्वः स्पृहयति । स्वरागच्छति । लाघेव या स्वर्जलधेर्जलेषु ।

(१) पार्थिवस्त्वमसि-इति पा०

स्वर्वसतीति । स्वर्वातस्य ह्यपुत्रस्य ॥ आदित्यशर्मणोरित्येके ॥ सायं दिनाय-
साने । सायं संयमिनस्तस्य महर्षेर्महिषीसखः ॥ समया । इति समीपस्य-
योः । त्वां समयास्ते । ग्रामं समयास्ते । ग्राममध्य इत्यर्थः ॥ आदित्सापरो-
क्षयोरित्येके(१) ॥ दिवा । इति दिनार्थे । दिवाकरः ॥ पुनरिति भूयोर्य-
विशेषयोः । पुनरुक्तं वचः । किं पुनर्ब्राह्मणाः पुरया भक्ता राजर्षयस्तथा ॥
अरमिति शैष्यै । अरं पचति ॥ काममिति स्वाच्छन्दोगनिच्छाङ्गीकारे च ।
कामं भुङ्क्ते । कामं क्षाम्यतु यः क्षमी ॥ प्रकाममित्यतिशये । प्रकामसमी-
यंत यज्वन्तो प्रियः ॥ बहिरित्यन्तःप्रत्यनीके । बहिविकारं प्रकृतेः पृथग्
विदुः ॥ दोषा । इति रात्री । दोषामन्यमहः ॥ ह्यः । इत्यतीतेऽहि । ह्य-
स्तनः ॥ निकषा । इति समीपे । विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति ॥
अन्तरा । इति मध्यविनार्थयोः । अन्तरा त्वां च मां च कमण्डलुः । त्वामन्तरा
तामरसायताक्षि । ॥ सनुतरित्यन्तर्धाने । सनुतश्चौरो गच्छति ॥ हिंसानुबन्ध-
पूर्वाह्णेपु शाकटायनः ॥ नक्तमिति रात्री । नक्तं चरः ॥ नमः । इति पूजायाम् ।
नमोस्तु वर्धमानाय ॥ भूयः । इति पुनरर्थे । भूयः पचति ॥ अन्तरिति मध्ये ।
अन्तर्वोष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ ॥ प्रातरिति प्रत्यूषे । प्रातरेव समु-
त्थाय ॥ श्वस्तनेऽपि ॥ असांप्रतमित्यन्याद्ये । संप्रत्यसांप्रतं वक्तुमुक्ते मुसल-
पाणिना । विषवृक्षोऽपि संवर्धय स्वयं छेतुमसांप्रतम् ॥ युक्ते सांप्रतमित्यमर-
सिंहः ॥ परमिति किन्त्वर्थे । गुणवानसि परमहंकारी ॥ ऋते इति वर्जने ।
ऋते कशानोर्नहि मन्त्रपूतम् ॥ साक्षादिति प्रत्यक्षतुल्ययोः । साक्षाद्द्रष्टा
साक्षी । इयं साक्षाद्ब्रह्मी ॥ सनदिति नित्ये । सनत्कुमारः ॥ सान्तं तु
मुतिपरित्राणचिरन्तनहिंसाकल्बननिर्भर्त्सनेषु शाकटायनः ॥ साचि । इति
तिर्यगर्थे । साचि लोचनयुगं नभयन्ती ॥ सत्यमिति प्रश्नप्रतिषेधसत्येषु । सत्यं
करोपि ॥ ननु किमर्थमिदम् । सत्यम् ॥ सत्यं ह्यारिनितस्विनीकुचयुगं सत्यं
मनोज्ञाः श्रियः ॥ नङ्क्षु । इति शैष्यै मङ्क्षुदपाति परितः पटलैरलीनाम् ॥
विहायसा । इति विषदर्थे । विहायसा रम्यतमं विभाति । आशु । इति
शैष्यै । आश्वरेहि मय सीधुभाजनात् ॥ सहसा । इत्याकस्मिकादिनर्शयोः ।
शिवः प्रसूतं सहसा पपात । सहसा विदधीत न क्रियासविवेकः परमापदां

पदम् ॥ प्रायः । इति बाहुल्ये । प्रायः स इह नेष्यति ॥ स्वयमित्यात्म-
नेत्यर्थः । स्वयं प्रदुग्धेऽस्य वसूनि मेदिनी ॥ चन्द्रस्त्वात्मानमित्यर्थः ॥ संवदिति
वर्षे । संवत्सरः । संवत्तृतीये ॥ १४ ॥

उच्चैर्नीचैरवश्यं सपदि बलवतः प्रादुराविः पुरस्तात्-
तूष्णीं जोषं निकामं युगपदनिशमः साम्यभीक्षणं
सनोषाः । रोदर्यो भूर्भुवस् कं भटिति पुरतसोऽतीव
सुष्ठु प्रसह्य, द्राक् स्राग् मिथ्या वृथा शंकु मिथुनै-
मृधकोऽद्धाऽरुजसाऽवो मनाकः ॥ १५ ॥

उच्चैः । नीचैरिति महदल्पयोः । उत्कृष्टनिकृष्टयोरिति शाकटायनः । किं
पुनर्यस्तथोच्चैः । नीचैर्गच्छत्युपरि च दशाचक्रनेतिक्रमेण ॥ अवश्यमिति
निश्चये । अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वाऽपि विषयाः ॥ सपदि । इति वर्तना-
नतत्क्षणशीघ्रार्थेषु । सपदि विपदो विद्वद्देशमस्वनर्गलवृत्तयः । सपदि सुकु-
लिताक्षीं रुद्रसंरम्भभीत्या । सपदि प्रदहत्युपेक्षितोऽग्निः ॥ बलवदित्यति-
शये । बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥ प्रादुरिति नामप्राकाश्य-
योः । विष्णोर्दश प्रादुर्भावाः । मत्स्यकूर्मादीनि दश नामानीत्यर्थः ॥ प्रादुरा-
सीत् ॥ आविरिति प्राकाश्ये । आविर्भूतप्रथमसुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम् ॥
पुरस्तादित्यग्रतइत्यर्थः । रत्नच्छायाव्यतिकरइव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्तात् ॥ तूष्णी-
मिति मौने । राजनूराजसुता न पाठयति मां देव्योऽपि तूष्णीं स्थिताः ॥
जोषमिति सुखमौनयोः । जोषमास्ते जितेन्द्रियः । जोषमास्व ॥ उयोष-
मिति शाकटायनः ॥ निकाममित्यंतिशये । निकामं क्षासाङ्गी ॥ युगपदित्ये-
ककालार्थः । तद्वत्गुना युगपदुन्मिषितेन तावत् ॥ क्रियासमभिहारेऽपि ॥
अनिशमिति सातत्ये । यत्रानिशं कीर्त्यते ॥ सामि । इत्यर्थकुत्सयोः । सामि
सम्मीलिताक्षी । सामि कृतमकृतं स्यात् ॥ अभीष्टमिति पौनःपुन्यसातत्य-
योः । अभीष्टमास्फालयतीव कुम्भम् । अभीष्टं वक्ति ॥ नित्यमिति । सदा
सदिति । अजस्रं सन्ततमिति सातत्ये कश्चिदाह ॥ सना । इति नित्ये । एष
धर्मः सनातनः ॥ तान्तमपि ॥ उषा । इति रात्रौ । उषातनो वायुः ॥ रो-
दसी । इति द्यावापृथिव्यर्थः । द्यावापृथिव्यौ रोदसी रोदसी रोदसीति घ ॥

श्रीमिति ब्रह्मवाचि । श्रीमित्येकाक्षरं ब्रह्म ॥ भूर्भुवः । इति पृथिव्यन्तरिक्ष-
योः । भूर्लोको भुवर्लोकः ॥ भुवसश्च महाव्याहृतेरिति रेफो भवति ॥ कभिति
वारिसूर्द्धसुखनिन्दाव्योमसु । कंजं पद्मम् । कङ्गाः केशाः । कंयुः । कन्दर्पः ।
कङ्गामिनः खगाः ॥ ऋटिति । इति शैष्ये । आनीय ऋटिति घटयति वि-
धिरभिसतमभिमुखीभूतः ॥ ऋगितीत्यपि केचित् ॥ तरसादितासजलेष्विति
लक्ष्यात् तरसापि ॥ तूर्णं द्रुतं क्षिप्रं शीघ्रं लघ्विति क्रियाविशेषणम् ॥ पुर-
तः । इत्यग्रत इत्यर्थे । नीरसतरुरिह विलसति(१) पुरतः ॥ अतीव । इत्य-
तिशये । अतीव शोभते ॥ सुष्टु । इति प्रशंसानिर्भरयोः । सुष्टूक्तम् । सुष्टु-
विभाति ॥ प्रसह्य । इति शीघ्रार्थे हठार्थे च । प्रसह्य सिंहः किं तां चकर्ष ।
प्रसह्य वित्तानि हरन्ति चौराः ॥ द्राक् । स्रागिति शैष्ये । द्रागिद्रुतं कातरैः ।
स्राक् सरन्त्यभिसारिकाः ॥ मिथ्या । इत्यसत्ये । मिथ्यावादिनि दूति ! ॥
अनव्ययेऽपि । यथा । निर्मिथ्यः ॥ वृथा । इति विफलाविध्योः । प्रयुक्तम-
प्यस्त्रमितो वृथा स्यात् । प्रातिभाष्यं वृथादानभाषिकं सौरिकं च यत् ॥
शमिति दुःखोपशमे । शङ्करः । शम्भुः ॥ कु । इति कुत्सेपदर्थयोः । शास्त्रं
काप्रथघटनम् । प्रयः पूर्वं सनिःश्वासं कवोष्णमुपभुञ्जते ॥ पापार्थेऽपि ॥ मि-
थुनमिति द्वौ द्वावित्यर्थे । मिथुनं रमन्ते ॥ ऋधगिति सत्ये । ऋधग् वदन्ति
विद्वांसः ॥ वियोगशीघ्रसानीप्यलाघवेष्वित्यन्ये ॥ अद्वा । इति स्फुटार्थाव-
धारणयोः ॥ आराधितोऽद्वा भनुरप्सरोभिः ॥ सत्यतिशययोरित्येके ॥ अञ्ज-
सा । इति तत्त्वशीघ्रार्थयोः । वत्त्यञ्जसा मुनीश्वरः । सुतनु कथय कस्य
व्यञ्जयन्त्यञ्जसैव ॥ अवः । इति वह्निरित्यर्थे । अवो गच्छति ॥ सनागिति
स्तोके । यस्मिन्मनागपि नवाम्बुजपत्रगौरी ॥१५॥

मिथुर्मिथो विष्वगुपांशु ताजग्-

मनश्चनः प्रेत्य मिथः शनैसः ।

मुधाऽन्वगीषच्चिरमो सृपास्तं-

धिगानुपक् स्वस्ति पुरोऽन्न इद्धाः ॥१६॥

मिथुरिति द्वौ द्वावित्यर्थे । मिथुर्मेन्त्रयेते ॥ उकारान्तमप्यनृतार्थे केचित् ॥

मिथो । इति रहःसहार्थयोः । मन्त्रयन्ते मिथो ॥ विरहान्योऽन्यार्थयोरपि ॥

विष्वगिति समन्ततोभावे । कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ ॥ उपांशु ।
 इत्यप्रकाशोच्चारणरहस्ययोः । जपतः सदा जपमुपांशु वदन्नमभितो विसारि-
 णिः । परिचेतुमुपांशु धारणां कुशपूतं प्रवयास्तु विष्टरम् ॥ कथमुपांशुवधः ।
 उपचाराद्भविष्यति ॥ तोजगिति(१) शैद्रये । तोजग् जरामृत्युरुजा जयन्ति ॥
 मनः । इति नियमे । मनो वर्त्तते । नियमो वर्त्तत इत्यर्थः ॥ चनः । इत्य-
 न्ननाम । चनो दधिष्व पचतोत सोमम् ॥ अद्वायामिति श्रीवसुक् ॥ प्रेत्य ।
 इति भवान्तरे । अन्यो धनं प्रेत्यगतस्य भुङ्क्ते ॥ अमुत्र शब्दस्याप्यत्र पाठो
 द्रष्टव्यः ॥ मिथः । इति रहोऽन्योन्यार्थयोः । तथापि वाचालतया युनक्ति
 सां मिथस्त्वदाभाषणलोलुपं मनः ॥ शनैरिति क्रियामान्द्र्ये । शनैःशनैर्ददा-
 त्येष पादौ भूतानुकम्पया ॥ मुधा । इति निष्फले । प्रीतिकरण इत्यन्ये । किं
 पौलोमि मुधा क्रुधा मयि नतु स्वप्नेऽपि ते विप्रियम् ॥ अन्वगित्यानुकू-
 ल्ये । अन्वगययौ मध्यमलोकपालः ॥ ईषदित्यल्पे । ईषत्पचति (२) ॥ अत्रा-
 प्ते च ॥ चिरमिति कालविप्रकर्षे । किञ्चिन्नम्रमुखी(३) प्रियेण हसता बाला
 चिरं चुम्बिता ॥ सृषा । इत्यसत्ये । सृषा वदति दुर्जनः ॥ वृषा प्रबलार्थ इति
 केचित् ॥ अस्तमिति शैलविशेषादर्शनयोः । अस्तं भास्वान् प्रयातः । घृति-
 रस्तमिता रतिश्च्युता ॥ धिगिति निन्दाभर्त्सनयोः । धिगिसां देहभृतामसा-
 रताम् । धिक्ताकिंकान् ॥ आनुषगित्यानुपूर्व्ये । आनुषक् प्रविशतीह बन्धु-
 ता ॥ अनुमानेऽनुषगिति शाकटायनः ॥ आनुषदित्याकारं दकारं च केचित् ॥
 स्वस्ति । इति पुण्याशीःक्षेमसङ्कलप्रत्यभिवादानेषु । स्वस्त्यस्तु ते धार्मिक स-
 त्प्रसादात् । स्वस्ति तेऽस्तु लतथा सह वृक्ष । स्वस्त्यस्तु ते सौम्य चिराय
 जीव । स्वति श्रीकुसुमपुरात् । राज्ञा नमस्कृता विप्राः स्वस्तीत्येते प्रयुञ्ज-
 ते ॥ पुरा । इत्यग्रत इत्यर्थे । पुरःसरा धामवतां यशोधनाः ॥ अन्नः । इति
 शीघ्रसांप्रतिकयोः । अन्न एव गच्छति । अन्नरेवागच्छति । अन्नसूक्ष्मसूअवशां
 रो वेति रेफो विकल्पेन ॥ इहेति प्राकाशये । समिद्धमिद्देश सहो दधासि ॥
 सामीप्यस्मरणयोरपि ॥१६॥

(१) तोजगिति पा० । तोजक् पचति । तोजकमृत्युरुजा जयन्तीति च ।

(२) ईषदित्यल्पाकृच्छ्रयोः । ईषत्पचति । ईषत्करः कटो भवतेति पाठा-
 न्तरम् । (३) लज्जानम्रमुखी-इति पा० ।

स्थाने वरं दुष्टु हिरुग् बलातः—

प्रवाहुकं ज्योक्तिरसो मुहुः शु ।

युक्तं प्रशानार्थ्यहलं क्षमाऽर्वाग्—

विनाश्च नाना पृथकौ सुदिश्च ॥१७॥

स्थाने इति युक्ते (१) । स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः ॥ वरमिति हीनो-
त्कर्षे । वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ॥ दुष्टु । इति कृच्छ्रार्थे । दुष्टु वादी
खलः ॥ हिरुगिति धियोगहिंसावर्जनेषु । हिरुकरोति ॥ हिरुकर्मणां मोक्षः ।
कर्मवर्जनात् (२) मोक्षइत्यर्थः ॥ बलादिति हठार्थे । त्वद्भक्तिरेव मुखरी
कुरुते बलान्ताम् । शापयन्त्रितपौलस्त्यबलात्कारकचग्रहैः ॥ प्रबाहुकमिति
समकाले । प्रबाहुकं गृह्णीयात् ॥ ऊर्ध्वार्थे प्रबाहुः प्रबाहुक् चेति कैश्चित्पठ्य-
ते (३) ॥ ज्योगिति कालभूयस्त्वे (४) । ज्योग् जीवामः । ज्योक्कृत्य नृपतिं
गतः शीघ्रार्थे संप्रत्यर्थेऽपि ॥ तिरः । इत्यन्तर्धानतिर्यगर्थयोः । विश्वयोनि-
स्तिरोदधे । तिरः काष्ठं करोति । अवज्ञायामपि ॥ यथा—

तिरश्चकार अमराभिलीनयोः,

सुजातयोः पङ्कजकीशयोः श्रियम् ॥

मुहुः । इति पौनःपुन्ये । इह मुहुर्मुदितैः कलभैरवः ॥ मुहुर्मुहुर्मुह्यति
सा सृगाक्षी । इत्यादिलक्ष्यदर्शनान्मुहुर्मुहुरित्यपि ॥ शु । इति पूजायाम् । शु
नासीरमस्येति शुनासीरः ॥ शु अश्नुते । श्वशुरः ॥ क्षिप्रार्थेऽपि । शु क्षिप्रं नय-
त्यन्तरिक्ष इति वा । शुनो वायुः ॥ युक्तमिति न्याय्ये । यथा वीराचार्याणाम् ।

युक्तं सिताम्बराणां तुम्बग्रहणं कुटुम्बपरिहरणम् ।

कथमन्यथा तरीतुं शक्यः संसारतोयनिधिः ॥

प्रशानिति सप्तानार्थे । प्रशान्देवदत्तो यद्दत्तेन ॥ आर्य्यहलमिति बला-
त्कारे । आर्य्यहलं गृह्णाति ॥ आर्य्येति प्रीतिवन्धने । हलमिति च प्रतिपे-
धविषदयो रिति शाकटायनः ॥ क्षमा । इति क्षान्तौ । भवान् क्षमा ॥ अ-
र्वागित्यधरे । वर्षात्योडशादर्वाक् । अर्वाकालीनः ॥ विना । इति वर्जने ।

(१) इति—अवसरे—इति पा० । (२) कर्मक्षये—इति पा० । (३) ऊर्ध्वार्थे

प्रबाहुकेति कैश्चित्० इति पा० । (४) कालभूयस्त्वाम्रश्रयोः—इति पा० ।

तात ! नो दधिविलोडनं प्रति त्वविनाद्य वयमुत्सहामहे ॥

नाना । इत्यनेकविनार्थयोः । नानाविधं कृतकदेहभृतां समाजम् ॥ उभ-
यार्थत्वमनेकार्थत्वान्न व्यतिरिच्यते । तेन नानापक्षावमर्शः संशय इत्यभिहि-
तम् ॥ नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा ॥ पृथगिति विनार्थे । बहिर्विकारं
प्रकृतेः पृथग्विदुः ॥ सुदि । इति शुक्लपक्षे ॥१७॥

स्वरदीनां कारकशक्त्याश्रयसत्त्वाभिधायिनां स्वर्गन्ता स्वः स्मृह्यतीत्यादी
यथायोगमुत्पन्नाया द्वितीयादिविभक्तेर्लुक् । पञ्चकृत्वःप्रभृतयस्तु विभक्त्यर्थ-
प्रधानाः । स च विभक्त्यर्थः प्रातिपदिकार्थः सम्पन्नइति प्रातिपदिकार्थं
प्रथमैव भवति । सापि संख्याविशेषाभावान्न सर्वा किं तर्ह्येकवचनमेव तस्यो-
त्सर्गत्वात् । तथा चोक्तम् (१) । एकवचनमुत्सर्गः करिष्यत इति । एतन्नः
सम्मतम् ॥ सुधाकरस्त्वाह । अव्ययेभ्यस्तु निःसंख्येभ्योऽव्ययादाप्सुपइति ज्ञा-
पकाद्विभक्त्युत्पत्तिः ॥ अत्राहुः । का पुनरसौ । अत्रैके तसिलादीनामदूर-
विप्रकर्षादानुगुरयाच्च पञ्चम्यादय एवेत्याहुः । तन्न । अभिहितः सोऽर्थोऽन्त-
र्भूतः प्रातिपदिकार्थाभूत इति प्रथमैव निःसंख्येभ्योऽपि न्याय्या ॥ अपि च ।
ज्ञापकात्प्रयोजनस्य पदत्वादेः सिद्धये क्रमव्यतिक्रमे प्रयोजनाभावात् कपि-
ञ्जलाधिकरणन्यायेन प्रथमैव युक्ता । नहि कपिञ्जलानालभेतेति पञ्चषा आ-
लभ्यन्ते किन्तु त्रय एव । न हिंस्याद्भूतानीति वचनात् । अत्रैवमिति न
वाच्यं क्रमव्यतिक्रमे प्रयोजनाभावात् । न ह्योदकात्सात्प्रियं प्रोधमनुव्रजेदिति
द्वितीयाद्युदकान्तानुव्रज्या जयायसी । तदुक्तम् । प्रथमएव वा नियम्येत
कारणादतिक्रमः स्यादिति । प्रथमत्रित्वे बहुवचनं नियम्यत इत्यत्र सूत्रार्थः ॥
अंतञ्चोच्चैः शब्दादीनामधिकरणशक्तिप्राधान्येऽपि प्रथमा न्यायेति सत्त्वा
वृत्तिकारैः सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषेत्यत्र ग्राम उच्चैस्ते स्वम् । ग्राम उच्चै-
स्तव स्वमित्याद्युदाहृतम् । यस्तु तत्रेत्यत्र तत्रेति समस्यन्तं समस्यत इति
जयादित्यग्रन्थः स समस्यर्थाभिधानसाधर्म्यादेवमुक्तः । अथमन्तःशब्दात् स्व-
यंशब्दाच्च प्रथमैव न्याय्या ॥ एकवचनमुत्सर्गः करिष्यत इत्यप्युक्तम् । अर्थ-
कथनं चैषां चादीनामुपलक्षणमात्रं द्रष्टव्यम् । तथा चोक्तम्—

निपाताञ्चोपसर्गाञ्च धातवश्चेति ते त्रयः ।

अनेकार्थाः स्यूताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनमिति ॥
आकृतिगणौ चेतौ । तेनान्येऽपि लक्ष्यानुसारतोऽनुसर्तव्याः ॥
इति चादिस्वरादी ॥

कस्कायस्कुण्डसाद्यरक्राः सहकौतस्कुता मताः ।

सद्यस्सालानुनस्कर्णावयस्कान्तश्च भास्करः ॥१८॥

कृस्क आदिरित्यनेन कस्कइत्यादिः शब्दगणो निपात्यते ॥ किम् सु ।
किमः कः । रोरिति विसर्जनीयः । वीप्सायां द्विर्वचनम् ॥ कःक इति तत्र
पूर्वस्य विसर्जनीयस्य कस्क आदि(१) रित्यनेन सिः ॥ स च विसर्जनीयजि-
ह्वामूलीयोपध्मानीयानां बाधकः । उदा० । कस्कोऽन्तेत्युक्तिभिः कौतस्कुती-
भिर्यान्शे स्वभूः ॥ ननु कथं कःकोऽत्र भो इति नाटकादौ प्रयोगः । उच्यते ।
सन्धावित्यधिकारादधसानविषयो (२) विसर्जनीयोऽन्तेत्यदोषः ॥ अपरे पुन-
राहुः । रूढिविषयत्वान्निपातनानां वीप्सायामेवैतत् सित्वम् (३) । अतएव ।
तिष्ठति कः को वा गुच्छतीति वीप्साभावे सित्वं संहितायामपि न कृतम् ।
एवमिहापि वीप्साभावे क इति पदं पूर्वमन्तर्भूतसत्ताकं प्रयुज्यते । ततः
कोऽन्तेति ॥ न च क्रमविवक्षायां वीप्सेति संहितायां युक्तो जिह्वामूलीयः ।
कःकोऽन्तेति ॥ अयसः कुण्डम् । अयस्कुण्डम् ॥ सद्यः क्रीणातीति क्लिप् ।
सद्यस्क्रीः । तस्यापत्यमिदं चेत्यण् । एरितीकारलोपः । ङित्यक्त्वारैजित्य-
नेनारैच् । तदाविवक्षितार्थाभिधायी । यदा तु सद्यः क्रीयते क्रयणं वा सद्य-
स्क्रीस् तत्र भवस्तदा साद्यस्कः क्रतुः ॥ अपरे सद्यः क्रीयत इति साद्यस्कः
क्रतुः । तेषां करोतेः स्यादिभ्यः क इति कप्रत्ययः । मञ्जादिलक्षणस्याण् ॥
सहकौतस्कुता इति । सह कौतस्कुतेन । सहकौतस्कुताः ॥ सहस्य बहुव्रीहेः
स इत्यनेन विभाषितः सः ॥ किमः पञ्चम्याबहुद्व्यादिसर्वादिभ्य इत्यादिना
तत्प्रत्यये वीप्साभीक्ष्ण्येत्वादिना द्विरुक्तिः । ततः कुतःकुत आगत इति
विवक्षयामण् । तत्र सौ यादेरित्यन्ताजादिलोपः । कौतस्कुती ॥ नन्वत्र
सत आगत इत्यनेन पञ्चम्यन्तादुप्यमानः प्रत्ययः कथं तमन्तात् म्यात् । अयं

(१) कस्कादिरि० इति पा० । (२) अधिकारादयग्रहेऽप्यधसानविषये-
इति पा० । (३) सत्वमिति पाठान्तरम् ।

तृदर्थवृत्तेरपि समुदायात्सुबुत्पत्तावपि भविष्यतीति चेत् । न । ककुत्रेहामा-
 त्रतसस्त्यत्रिति स्यपा भवितव्यम् । कथमण् ? । गणपाठादिति ब्रूनः ॥ सद्य-
 स्कालेति समस्तमसमस्तं वा । उदा० । सद्यस्कालं युयुत्सुभिः ॥ शुनः कर्णः ।
 शुनस्कर्णः । श्लुकप्रतिषेधोऽतएव पाठात् ॥ उदा० । शुनस्कर्णोपमैर्मुक्ता
 मुष्टिभिश्चक्रपङ्क्तयः ॥ रत्नमतिस्तु शुनस्कर्ण इति वाक्यं समासे तु श्वकर्ण
 इति ग्राह्यं ॥ अयस आकर्षकः कान्तोऽयस्कान्तः । ननु कृकमीत्येव सिद्धः किम-
 र्थोऽस्य पाठः । तस्यैव प्रपञ्चार्थः समस्तार्थः कस्यर्थो वा ॥ उदा० ॥ अयस चकर्ष
 परस्वं तदयस्कान्त इवायसम् ॥ भासं करोतीत्येवं शीलो विभादेरटि (१) ।
 भास्करः ॥१८॥

मेदस्त्रिण्डतमस्काण्डायस्काण्डाहस्करास्तथा ।

रजःकर्णीरजस्कर्णौ आतुष्पुत्रदिवस्पती ॥१९॥

मेदसो वसायाः पिण्डो मेदस्त्रिण्डः ॥ तमसः काण्डं तमस्काण्डम् ॥ प्रशस्तं
 वा तमः । तमस्काण्डम् ॥ उदा० । क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः ॥ अयसः
 काण्डम्—अयस्काण्डम् ॥ प्रशस्तमयो वा । अयस्काण्डम् ॥ न जहाति, न
 त्यजति दिनकरमित्यहर्दिवा । तत्करोतीत्येवं शीलोऽहस्करः ॥ उदा० । अ-
 लञ्चकारास्य वधूरहस्करः ॥ रजसः कर्णी रजस्कर्णी । कृकमीत्यादिना नित्यं
 स्यादेशे (२) प्राप्ते विकल्पार्थः पाठः ॥ आतुः पुत्रो आतुष्पुत्रः । ऋतो वि-
 द्यायोनिस्सम्बन्धात्तेष्वित्यनेन षष्ठीसमासे श्लुकप्रतिषेधः ॥ दिवः पतिः । दिव-
 स्पतिः शक्रः । श्लुक प्रतिषेधोऽतएव पाठात् ॥ सर्पिष्कुण्डिका । धनुष्कपाल-
 म् । बहिष्कपालम् । यजुष्पात्रमित्येकेषां पाठ उत्तरपदस्यस्यापि षत्वं यथा
 स्यादिति । परमसर्पिःफलमित्येवसादिप्रत्युदाहरणं पारायणिका आहुः ।
 माघ्ये वृत्तौ नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्यस्येत्यत्र परमसर्पिःकुण्डिकेत्येतदेव प्रत्यु-
 दाहरणम् । अस्माकं चायमेव पक्षः संमतः ॥

आकृतिगणश्चायम् । तेनापरिगणितशब्दसमूहः । य आकृत्याकारेण लक्ष्यते
 स आकृतिगणः । अयमर्थः—यथा भास्करादिशब्दः, ज्ञाधुः स्वार्थप्रत्यायने

(१) दिवाविभेति ३ । २ । २१ सूत्रेण टः प्रत्ययः । एतद्ग्रन्थकारभते तु
 तन्नाह्वविधिः । बहुव्रीहिकर्मधारयसमासयोश्च टित्वे मेद इति ध्येयम् ।

(२) सादेशे—इति पा० ।

समर्थस्तद्वद्योऽन्योऽपि सिविधानाच्छिष्टसम्मतः स गणोऽस्मिन् प्रणिविष्टः सज्ञ
साधुत्वभाग् द्रष्टव्य इति ॥१९॥

इति कस्कादिः ॥

अहनः पतौ गणे पुत्रे पतिपुत्रे च गीर्धुरः ।

राज्ञि प्रचेतसो रः स्याद्विसृष्टस्योपसो (१) बुधे ॥२०॥

पत्यञ्जेहरादेर्वेत्यनेन विकल्पेन रेफादेशो विधीयते(२) ॥ उपसि रात्री
बुध्यते प्रकाशते-उषर्बुधः ॥ उषर्भुदित्यपि श्रीवसुकः ॥ शेषं तु सुगमम् ॥२०॥
इत्यहरादिपत्यादी ॥

सर्वान्यविश्वोभयनेमयत्तदः किंयुष्मदस्मद्भिभवत्यदेतदः ।

उभत्वदन्योऽन्यपरस्परेतराः समः सिमत्वान्यतरेतरेतराः ॥२१॥

सर्वादेर्गणात् । ए, असि, इ, इत्येतेषां स्थाने । सर्वादेरेभ्यः स्मै । स्मात् ।
स्मिन् । इत्यनेन यथाक्रमं स्मै । इत्यादय आदेशा भवन्ति ॥ सर्व इति सं-
ख्याप्रकारकलावद्विषये कात्स्न्ये ॥ तत्र संख्याकात्स्न्ये । यथा-सर्व आयाता
यावन्तो लिखिता दश द्वादश वा त-आयाताः । कात्स्न्येन समागता इत्य-
र्थः ॥ प्रकारकात्स्न्ये । यथा-सर्वाण्यन्तानि भुक्तानि । सर्वप्रकाराणीत्यर्थः ॥
कलावत्कात्स्न्ये । यथा-सर्व ओदनो भुक्तः । यो दत्त ओदनः स सकलो
भुक्त इत्यर्थः ॥ सर्वस्मै । सर्वस्मात् । सर्वस्मिन् ॥ तत्पुरुषस्योत्तरपदार्थप्रधा-
नत्वात् परमसर्वस्मै-इत्यादावपि ॥ असर्वस्मै । इत्यादी नञ्प्रसासेऽपि स्वा-
र्थोपरित्यागात् ॥ तथाहि-य एवाश्वशब्देन वक्तुमिष्टः स एव जात्यादिवि-
कलोऽनश्वशब्देनापि ॥ विश्वादीनामप्येवम् । अतो न सर्वादिव्याघ्रातः ॥
यदा पुनरुपसर्जनीकृतस्वार्थानामर्थान्तरवृत्तिर्यं तदा प्रियसर्वायेत्यादी न
स्यन्त । एतच्च सर्वादेरिति पष्ठीनिर्देशान्निश्चीयते ॥ अन्यस्मै । अन्यत् ।

(१) विसृष्टस्य-धिसर्गसंहितस्योपःशब्दस्येत्यर्थः । सिद्धानुवादीऽयं नि-
विसर्गोपाशब्दनिवृत्त्यर्थः । (२) अहर्पतिः । अहःपतिः । अहर्पुत्रः । अहः-
पुत्रः । गीर्पतिः । गीर्पतिः । धूर्पतिः । धूःपतिः । गीर्पुत्रः । गीःपुत्रः ।
धूर्पुत्रः । धूःपुत्रः । प्रचेता राजन् । प्रचेतो राजन् ॥

पृथग्बचनोऽयम् ॥ विश्वस्मिन् ॥ उभयस्मिन् ॥ नेम इति सर्वार्थार्थयोः । ने-
 मस्मिन् ॥ यदिति निर्देशे । यस्मिन् । यतते प्रयत्नं करोति । तेनार्थमुद्देशु-
 मिति व्युत्पत्त्या उद्देशेऽपि ॥ तदिति परोक्षे । तस्मिन् । तनोति विस्तृणाति
 प्रतिनिर्देशमिति व्युत्पत्त्या निर्देशेऽपि वर्तते ॥ किमिति प्रश्नक्षेपयोः (१) ।
 पृच्छते ज्ञीष्यतेऽनेनेति किं प्रश्नवाची । कस्मिन् ॥ युष्मदिति प्रत्यक्षे । युष्यते
 सेव्यत उपचारवतीभिर्वाग्भिरिति । त्वकम् ॥ अस्यते क्षिप्यते सत्कार इति ।
 अहकम् ॥ परमात्मवाचिनौ युष्मदस्मच्छब्दौ ॥ द्वकौ ॥ भवतुश्च परोक्षे ।
 भवकन्तः । उदिच्च च्छन्दोभङ्गभयान्नोपात्तः ॥ त्यस्मिन् ॥ एतदिति प्रत्यक्षे ।
 एतस्मिन् । एजति(२) कम्पतेऽनेन वचसा सामीप्यवाचिना सत्त्वमिति व्युत्प-
 त्त्या सामीप्येऽपि ॥ उभौ । उभाभ्यां हेतुभ्याम् । उभयोर्हेत्वोः । अस्य पाठः
 सर्वादेरबित्यनेन सर्वविभक्त्यर्थः ॥ त्वदिति समुच्चयवाचकः । त्वकत् ॥
 अन्योन्यपरस्परशब्दौ क्रियाविनिमये । अन्योऽन्यस्मै । परस्परस्मै ॥ इतरेति
 पृथगर्थे । इतरस्मिन् ॥ समसिमशब्दौ सर्वार्थे । समस्मिन् । सिमस्मिन् ॥
 सिमः शक्रः । सितः । अवबद्दु इत्यर्थे इत्येके । सिम इति मर्यादायामित्य-
 परे ॥ त्वान्यतरशब्दावन्यार्थे । त्वस्मै । अन्यतरस्मै । अस्य त्वस्मादेव गण-
 पाठात्सिद्धिः ॥ शाकटायनस्तु यत्तत्किमनयाद्द्वयोर्निर्धार्ये इतरः । वैकाद्
 बहूनां प्रश्ने इतमश्चेति सूत्राभ्यां इतरइतमौ । अन्यतराऽन्यतमौ सिद्धौ ।
 ततोऽन्यतरशब्दस्य इतरान्तद्वारेणैव ग्रहणे सिद्धेऽन्यतरग्रहणमन्यतमव्यवच्छे-
 दार्थमित्याह ॥ इतरेतरेति क्रियाविनिमये । इतरेतरस्मै ॥२१॥

एकेदमदसो ज्ञेया उतरो इतमस्तथा ।

स्वमज्ञातिधनेऽनास्मि कालदिग्देशवृत्तयः ॥२२॥

[पूर्वापरावरपरा उत्तरो दक्षिणाधरौ ।]

एकेति संख्यासहाययोः । एति गच्छति गणनामित्येकः । एति गच्छत्य-
 द्वितीय इति वा । एकस्मिन् ॥ इदमिति प्रत्यक्षे । अस्मिन् ॥ अद्स् । इत्य-
 प्रत्यक्षे । अमुष्मिन् ॥ इतरइतमौ प्रत्ययौ । तदन्तः सर्वादिर्भवति । यतर-
 स्मिन् । यतमस्मिन् । ततरस्मिन् । ततमस्मिन् । कतरस्मिन् । कतमस्मिन् ।

(१)प्रश्नाक्षेपयोरिति पाठः । (२) एजते—इति पाठः ।

युक्ततरस्मिन् । एकतमस्मिन् ॥ स्वमज्ञातिधन इति स्वशब्दोऽर्थचतुष्टयवृत्तिः
 स्तत्रात्मनि ज्ञातिधनयोश्च रूढितः । अस्य वृत्तिः । यथा हरिशब्दस्य तुरङ्ग-
 वानरददुरादिषु । आत्मीये तु सर्वत्र विशेषणरूपतया वृत्तिस्तत्रास्य सर्व-
 नामसंज्ञा । स्वे पुत्राः । स्वेषां गृहाणां स्वामी । आत्मीयानामित्यर्थः ॥ स्वस्मै
 बहुमानः । आत्मन इत्यर्थः ॥ स्वे पुत्रा इति न पुत्रा ज्ञातयः किन्तु पितृ-
 व्यमातुंलश्वशुरादयः सपरिच्छदाः । स्वे गाव इति न गावो धनं किन्तु रुक्म-
 राजतकार्णप्रणुरूपकादिकं धनमुच्यते ॥ ज्ञातिधनयोस्तु न भवति । स्वे रक्षा
 विधेया । ज्ञातावित्यर्थः ॥ स्वाय स्पृहयति । धनायेत्यर्थः ॥ तथा ज्ञातिधन-
 विशेषणत्वेऽपि स्वशब्दस्य निषेध एव । स्वा ज्ञातयश्चैत्रस्य । स्वे धने रक्षा ।
 आत्मीय इत्यर्थः ॥ अपरे तु स्वस्मै पुत्राय । स्वस्मै गव इति ज्ञातिधनार्थ-
 योः प्रतीती कथं न निषेधः । उच्यते । पुत्रगोशब्दयोर्हि सान्निध्यादेतदुभयं
 गम्यते स्वशब्दात् स्वात्मीयत्वमात्रमिति । स्वाय ज्ञातये । स्वाय धनायेत्यत्र
 च शब्दान्तरमनपेक्ष्य ज्ञातिधने स्वरूपेणैव स्वशब्देनाभिधीयेते । यद्विषं
 ज्ञातिधनयोरनुप्रयोगोऽपि नोपपद्यते पर्यायत्वात् । यथा वृक्षशब्दप्रयोगे
 तर्शब्दस्य । नैर्ष दोषः । पर्यायशब्दो हि यत्राऽनेकार्थः संदिग्धार्थो वा तत्र
 तदर्थस्य व्यक्तीकरणार्थः पर्यायान्तरस्यानुप्रयोगो न विरुध्यते । यथाऽकार्ण-
 नेकार्थवृत्तेर्हरिशब्दस्य प्रयोगे, सिंहशब्दस्य । यथा च संदिग्धार्थस्य पिकश-
 ब्दस्य प्रयोगे क्रीकिलशब्दस्य । स्वशब्दश्चायमनेकार्थ इति तत्रासत्यनुप्रयोगे
 किं विषयोऽयं प्रवृत्त इति संदेहः स्यात् । तन्निरासार्थो युज्यते ज्ञातिशब्द-
 स्यानुप्रयोग इति व्याचक्षते ॥ अनामि कालदिग्देशवृत्तय इति । पूर्वोदयः
 शब्दा असंज्ञायां वर्त्तमाना दिगादिवृत्तयः सर्वोदिकार्यभाजी भवन्ति । तदत्र-
 पूर्वापरादिशब्दानां केषांचित् प्रविभागतः ।

सामान्येनाभिधानेऽपि प्रवृत्तिर्देशकालयोः ॥

तथाहि—पूर्वापरावरपरोत्तरशब्दा मुख्यवृत्त्या दिक्कालयोर्वर्त्तन्ते । तद-
 यच्छिन्ने देशग्रानारासस्तम्भकुम्भादी च । तथाहि—पूर्वस्यां दिशि यमति ।
 पूर्वस्यां दिशि आगतः । पूर्वदिक् सम्यन्थात् पूर्वा वापी । पूर्वस्यां वाप्यां
 शीतमुदकम् । तथा पूर्वस्मिन् ग्रामे वने देशे वा सुसवासः ॥ पूर्वः कालो,
 रम्यः । पूर्वपालमस्यन्थात् पूर्वा गुरुः । पूर्वस्मिन् गुरी यमति । पूर्वस्यान्प्रा-
 षादागतः ॥ अपरापरशब्दत्रयस्य यिनापि दिक्कालसम्यन्त्यं देशवृत्तित्वं

ख्यात् । तथा हि—अपरदेशसम्बन्धादपरो ग्रामः । अवरो वा ॥ तस्मिन्
 परस्मिन् पर्वते वसति । सति संनिकर्षे विप्रकर्षे च सर्वासु दिक्षु तुल्योऽयं
 व्यपदेशः । ततो न दिग्भिसम्बन्धवृत्तिः । एकस्वामेव दिशि स्थितयोर्नि-
 कटाऽनिकटयोः पराऽवरादिव्यपदेशप्रवृत्तेरेतच्छब्दत्रयापेक्षया मुख्यवृत्त्या
 सार्थकं देशग्रहणं नत्वन्यस्य स्वतो देशवृत्तित्वम् । संनिकर्षासंनिकर्षयोर्देश-
 वत्कालोऽप्युपाश्रयः । ततः परः कालः । अपरोऽवरो वा । परस्मिन् काले
 जातः । अपरस्मिन् । अवरस्मिन् वा ॥ अथ परकालसम्बन्धात् परस्मिन् श्रीहर्षः ।
 अपरकालसम्बन्धादपरो भोजदेवः ॥ परः पाणिनिः । अपरः शिवस्वामी ॥
 परस्मिन् श्रीहर्षे भक्त इत्यादि ॥ दक्षिणाधरशब्दौ दिशि दिग्बच्छिन्ने च
 कलशादौ वर्तते न तु कालेनापि कालावच्छिन्ने । दक्षिणस्यां दिशि वसति ।
 दक्षिणस्मिन्पर्वते देशे वा तदवच्छिन्ने । तथाहि—अधरस्यां दिशि पर्वता-
 द्धसति । अधरदिक्सम्बन्धादधरस्मिन् प्रासादे देशे वा वसति ॥ अनाम्नीति
 किम् । उत्तराः कुरवः । संज्ञारूपेण रूढोऽत्रोत्तरशब्दः । विदेहवर्षवासिना-
 मेकस्यामेव दिशि देवकुरुत्तरवर्षे ॥ दिग्देशकालेभ्योऽन्यत्र । दक्षिणा गायकाः ।
 प्रवीणा इत्यर्थः ॥ एवम् अधरे ताम्बूलरागः । उत्तरे प्रत्युत्तरे वा शक्तः ॥
 दक्षिणायां कृतमतिर्विप्रः । इत्यदिग्देशकालवृत्तय इति विस्पष्टोऽयमर्थनिर्दे-
 शः ॥ ननु व्यवस्थायामसंज्ञायामित्येवमुपक्षिप्य स्वाभिधेयापेक्षोऽवधिर्नियमो
 व्यवस्येति यथाऽन्यैर्व्याख्याता । दुरवबोधत्वात् ॥ ननु, स्वेषां चैव परेषां च
 जायन्ते कम्पसम्पदः । क्षीणाः परे शत्रवः । इत्यङ्गुरपरे । इत्यादिप्रयोगेषु
 कथं जसादीनां सर्वादिकार्यविधिः । न ह्यत्र दिग्देशाद्यवच्छेदोऽस्तीति ।
 उच्यते—सारूप्योपचाराच्छिष्टाभीष्टेश्च न दुष्टता ॥२२॥

अन्तरं चोपसंव्याने बहिर्योगे तथाऽपुरि ॥२३॥

उपसंव्यान इति । उपसंवीयत आच्छाद्यते यत्तदित्युपसंव्यानम् । यद्वा,
 संवीयतेऽनेनेति संव्यानम् । तस्य समीपं उपसंव्यानम् । तस्मिन् ॥ बहिर्योग
 इति । बहिरित्यनावृतो देशः । तेन योगो बहिर्योगः । एतस्मिंश्च पूर्वजिते-
 ऽन्तरशब्दः सर्वादिर्भवति ॥ अन्तरस्मै शाटकाय । वस्त्रान्तरेणावृतायेत्यर्थः ॥
 अन्तरस्मै गृहाय । बाह्याय चाण्डालगृहायेत्यर्थः ॥ अपुरीति किम् । अन्तरायां

पुरि वसति । आह्वायामित्यर्थः ॥ अयमनयोरन्तरे तापसः प्रतिवसतीत्य-
दौ मध्यवृत्तित्वेन न भवति ॥२३॥

इति सर्वादः ॥

त्यत्तद्यदिदं युष्मद्द्व्येकादः स्यादथो भवत्वेतत् ।

अस्मत्किमौ च विबुधैर्विज्ञातव्यौ त्यदादिगणौ ॥२४॥

• एषां तस्मादित्वे यथास्थानं प्रयोजनं द्रष्टव्यम् ॥

इति त्यदादिः ॥

यस्कोत्कासवशिष्ठकुत्सखरपाः कुड्युत्रि(१) जङ्घारथाः—

पर्णाटोपरिमेखलौ विपपुटद्ब्रुह्याङ्गिरोविश्रयः ।

पिएडीजङ्घभलन्दनौ च भडिलः कर्णाटककर्णाढकौ—

जह्योभण्डिलशीर्षमायभृगवो रक्षोमुखो वर्षुकः ॥२५॥

यस्कादयः शब्दाः स्थगलपर्यन्ता यस्कादिभ्योऽपत्य (२) इत्यनेन सूत्रेण
विहिताऽपत्यप्रत्ययश्लुभाजो(३) भवन्ति बहुत्वेऽस्त्रियाम् ॥ यच्छति निगृ-
ह्णाति पापमिति यस्क ऋषिः । तस्यापत्यानि यस्काः । शिवादिपाठादुत्प-
न्नस्याणः ॥ उक्तसतीत्युत्कासः । तस्य—उत्कासाः । अत इजः ॥ वशिषु
तिष्ठतीति वशिष्ठः । तस्य—वशिष्ठाः ॥ कुत्साः । ऋष्यणः ॥ खरान् पातीति
खरपः । तस्य—खरपाः । तन्हादिफणः(४) ॥ कुड्येः—कुड्ययः(५) । गृह्यादि
ढञः ॥ अत्ति ग्रसते सर्वविद्या इत्यत्रिः । तस्य—अत्रयः । इतोऽनिज इत्य-
नेन विहितस्य ढणः । जङ्घे एव रथो यस्य स जङ्घारथः । तस्य जङ्घारथाः ॥
अन्ये । जङ्घे एव रथो यस्य स जङ्घेरथः । निपातनात्सुपः श्लुगभाषः ।
तस्य जङ्घेरथा इत्याहुः ॥ पर्णार्थमटतीति पर्णाटः । तस्य पर्णाटाः ॥
उक्त्ति त्रीघायां मेखला यस्य तस्योपरिमेखलाः ॥ विपं पुटो ओष्ठयोर्व्यस्य स
विपपुटो दुर्भाषी । तस्य विपपुटाः । एभ्योऽत इजः ॥ ब्रुहि साधुर्दुःख्यः ।

(१) सुड्युत्रि०—इति पा० । (२) ०भ्यो गोत्र इ०—इतिपाठान्तरम् ।

(३) लुगभाजो भ० इति पा० । (४) फकइति तु युक्तम् । (५) सुड्येः—
सुड्ययः—इति पा० ।

तस्य-द्रुह्याः ॥ शिवाद्यणः ॥ अङ्गिरा बृहस्पतिपिता । तस्य-अङ्गिरसः ।
 ऋष्यणः ॥ विभ्रेर्विश्रयः । गृष्ट्यादि ढजः ॥ पिण्डीयुक्ते जङ्घे यस्य तस्य
 पिण्डीजङ्घाः । अत इजः ॥ भलन्दनस्य भलन्दनाः । शिवाद्यणः ॥ कलन्द-
 निति भोजः ॥ भडिलस्य भडिलाः । अश्रवादिऽफस्य ॥ कर्णाटस्य कर्णाटाः ॥
 कर्णस्याढकं यस्य स कर्णाढकः । तस्य कर्णाढकाः । आभ्यामत इजः ॥ लक्ष्य-
 स्य लक्ष्याः । शिवाद्यणः ॥ भण्डिलस्य भण्डिलाः । अश्रवादिऽफस्य ॥ शीर्षं
 मिनाति-शीर्षमायः । तस्य-शीर्षमायाः । अत इजः ॥ अशुभकर्त्तृश्चि तपसा
 भृञ्जतीति भृगुः शुक्रपिता । तस्य भृगवः । ऋष्यणः ॥ रक्षस इव मुखस्य
 स रक्षोमुखः । तस्य रक्षोमुखाः ॥ वर्षतीत्येवं शीलो वर्षुकः तस्य वर्षुकाः ॥
 आभ्यामत इजः ॥ २५ ॥

वशीकपर्णाढकमिच्छका बहि-
 र्योगोऽजवस्तिस्तृणकर्णवर्ष्मकौ ।
 पटाकयुक्तौ वकसक्थगोतमौ-
 स्यात् क्रोष्टुमायः कटुमन्थमित्रयू ॥ २६ ॥

वशीकस्यापत्यानि वशीकाः ॥ पर्णास्याढकं यस्य स पर्णाढकः । तस्य
 पर्णाढकाः ॥ मिच्छतीति मिच्छकः । तस्य मिच्छकाः ॥ बहिर्योगो यस्य स
 बहिर्योगः । तस्य-बहिर्योगाः ॥ अन्येतु । अहिना योगो यस्येति । अहि-
 र्योगः । गणपाठाद्रेफ इत्याहुः ॥ अजवस्तयः । गृष्ट्यादिढजः ॥ तृणकर्णाः ।
 शिवाद्यणः ॥ वर्ष्मकाः ॥ पटाकाः ॥ वकसक्थाः ॥ गृभ्योऽत इजः ॥ गोत-
 मस्य गोतमाः ॥ ऋष्यणः ॥ क्रोष्टारं मिमीते । क्रोष्टोरिव मायाऽस्येति वा ।
 क्रोष्टुमायः । तस्य क्रोष्टुमायाः ॥ कटु मथनातीति कटुमन्थः । तस्य कटुमन्थाः ॥
 अपरे कटुकमन्थ इत्याहुः । अन्यस्तु कटुक मन्थकेति पृथक् शब्दद्वयमिद-
 नित्याह ॥ आभ्यामत इजः ॥ मित्रयोर्मित्रयवः ॥ औत्सर्गिकस्याणः ॥ २६ ॥

क्रोष्टुपादसदामन्ताऽयःस्थूणकृशभण्डिताः ॥

पदकः कषको हारः कम्बलात् स्थगलस्तथा ॥ २७ ॥

क्रोष्टोरिव पादौ यस्य स क्रोष्टुपादः । पाठसामर्थ्यात् पादस्य सन्नासन्ते
 लुग्न भवति । क्रोष्टून् पादयति निष्कासयतीति वा । क्रोष्टुपादः । तस्य

क्रोष्टुपादाः । क्रोष्टमानमिव मानं यस्य स कोष्टमान इति केचित् ॥ सृष्ट-
 मत्तस्य सदानत्ताः । आस्यामत इजः ॥ अयोमयी स्यूणा यस्य सोऽयःस्यूणः ।
 तस्यायःस्यूणाः ॥ शिवाद्यणः ॥ रुशस्य रुशाः । अत इजः ॥ भण्डितस्य
 भण्डिताः । अशवादिङ्फस्य ॥ पदं वेत्त्यधीते वा । पदकः । तस्य पदकाः ।
 कषतीत्यौणादिकेऽके । कषकः । तस्य कषकाः ॥ कडम इति भोजः ॥ हारः
 कम्बलादिति कम्बलपूर्वा हारशब्दो ज्ञेयः ॥ कम्बलं हरतीति कम्बलहारः ।
 तस्य कम्बलिहाराः ॥ स्थगतीति स्थगेरौणादिकेऽङ्गप्रत्यये । स्थगलः । तस्य
 स्थगलाः ॥ एभ्योऽत इजः ॥ एवं पुष्करसच्छब्दस्य बाह्यादीजः श्लुग् द्रष्टव्यः ।
 अन्ये तु भृगुकुत्सवशिष्टगोतनाङ्गिरोऽङ्गेरिति सूत्रं पृथग्विदुः । तेषां मते यजा-
 दित्वाद् यजादेर्द्व्येकेषु षष्ठ्यास्तत्पुरुष इत्यनेन भृगुकुलं भार्गवकुलमित्यादि
 सिध्यति ॥२७॥

इति यस्कादिः ॥

उपकलमकौ पिष्टोदङ्कौ कुपीतकर्णकौ

कमककलशीकण्ठौ कृष्णाजिनानुपदौ तथा ।

वधिरकखरीजङ्घावेतौ वटारकपर्णकौ-

गडुकजतुकौ लेखाभ्रूश्च प्रतानपतञ्जलौ ॥२८॥

उपकादयः शब्दा उपकादेरित्यनेन सूत्रेणापत्यप्रत्ययश्लुभाजो वा भ-
 वन्ति ॥ उपकस्यापत्यानि । उपकाः । औपकायनाः ॥ लसकाः । लामका-
 यनाः ॥ नडादिफणः श्लुक् ॥ पिष्टस्य पिष्टाः । पैष्टायनाः ॥ उदङ्कस्य । उद-
 ङ्काः । औदङ्कयः । अत इजः ॥ कुष्णाति भवबन्धनादात्मानन्निति कुपीतको
 नाम मुनिः । तस्य कुपीतकाः । कीपीतकयः ॥ कर्णयतीति कर्णकः । तस्य
 कर्णकाः । कार्णकयः ॥ कसेरीणादिकेऽके कमकः । तस्य कमकाः । कामकयः ॥
 कलशी कण्ठे यस्य तस्य कलशीकण्ठाः । कालशीकण्ठयः ॥ कृष्णमजिनं यस्य
 तस्य कृष्णाजिनाः । काष्णाजिनयः । अनुगतं पदं यस्य तस्य । अनुपदाः ।
 आनुपदयः ॥ वन्धेः किरः । वधिरः । वधिर एव वधिरकः । तस्य वधि-
 रकाः । वाधिरकाः । शिवाद्यणः ॥ भोजस्तु वधिरकाः । वाधिरकप इत्याह ।
 खरी जङ्घे यस्य तस्य खरीजङ्घाः । खारीजङ्घयः ॥ वटारको धैत्रयणभाक्तः ।
 तस्याऽपर्यानि वटारकाः । वाटारकयः ॥ पर्णानि करोतीति पर्णकः । तस्य

पर्णकाः । पार्णकयः ॥ गडुकस्य गडुकाः । गाडुकयः ॥ जतुकस्य जतुकाः ।
 जतुकयः ॥ लेखाकारे भ्रुवौ यस्य स लेखाभ्रुः । तस्य लेखाभ्रुवः । लेखाभ्रेयाः ।
 शुभ्रादि ढणः ॥ प्रतानस्य प्रतानाः । प्रातानयः ॥ पतञ्जलसि घनी भवति ।
 पतञ्जलः । अतएव निपातनात्तकारस्य सकारः । तस्य पंतञ्जलाः । पातञ्ज-
 लयः ॥ भोजस्तु पतञ्जलिशब्दमिकारान्तं मन्यमानः पतञ्जलयः । पातञ्जलाः ।
 श्रीत्सर्गिकाणः श्लुकीत्याह ॥२८॥

शलाथलाडारककृष्णपिङ्गलाः, कठेरणिः पिङ्गलकः कमन्दकः ।
 निदाघंचूडारककृष्णसुन्दराः, सुपिष्टपिञ्जूलकवर्णकास्तथा ॥२९॥

शले स्यलमस्य । शलाथलः । सकारलोपो दीर्घश्च निपातनात् । तस्य
 शलाथलाः । शलाथलयः ॥ थलाथल इत्यन्ये ॥ अडतीति—अडारकः । तस्य—
 अडारकाः । आडारकयः ॥ कृष्णश्चासौ पिङ्गलश्च । कृष्णपिङ्गलः । तस्य कृ-
 ष्णपिङ्गलाः । कार्ष्णपिङ्गलयः ॥ कठेरणेः कठेरणयः । काठेरणाः ॥ वामन-
 स्त्वीकारान्तं मन्वानः कठेरणय इत्याह । अत्राणः । अन्ये कठेरणेत्याहुः ।
 पिङ्गलकस्य पिङ्गलकाः । पैङ्गलकयः ॥ पिञ्जूलक इति शाकटायनः ॥ मन्द-
 एव मन्दकः । के शिरस्यात्मनि वा मन्दकः । कमन्दकः । तस्य कमन्दकाः ।
 कामन्दकयः ॥ निर्गतौ दाघो यस्मात् स निदाघः । तस्य निदाघाः । नैदा-
 घयः ॥ चूडारकस्य—चूडारकाः । चौडारकयः ॥ बडारक इति भोजः ॥ मटा-
 रक इति वामनः ॥ कृष्णश्चासौ सुन्दरश्च—कृष्णसुन्दरः । तस्य कृष्णसुन्दराः ।
 कार्ष्णसुन्दरयः ॥ शोभनं पिष्टं यस्य स सुपिष्टः । तस्य सुपिष्टाः । सौपिष्टाः ।
 शिवाद्यणः ॥ पिञ्जूलकस्य पिञ्जूलकाः । पैञ्जूलकयः ॥ वर्णयतीति वर्णको
 गणकः । तस्य वर्णकाः । वार्णकयः ॥२९॥

मसुरकर्णपदञ्जलजन्तुकाऽनभिहितप्रतिलोमकपिष्टलाः ।

जतुरकः कशकत्स्रसुधायुकौ जटिलकश्च मदाघकवन्तकौ ॥३०॥

मसुरइव कर्णावस्य मसुरकर्णः । तस्य मसुरकर्णाः । मासुरकर्णाः । शिवा-
 द्यणः ॥ अपरे मसूराविव कर्णावस्य—मसुरकर्णः । निपातनाद् ह्रस्व इत्या-
 हुः ॥ मसूरकर्णमपरे पठन्ति ॥ पदञ्जलस्य पदञ्जलाः । पादञ्जलयः ॥ जायत
 इति जन्तुः । ततः के जन्तुकः । तस्य जन्तुकाः । जान्तुकयः ॥ अभिपूर्वस्य

हिनातेर्द्धातेर्वा क्ते नञि च । अनभिहितः । तस्य—अनभिहिताः । आ-
नभिहितयः ॥ केचित् अभिहितेति नञा विना पठन्ति । तत्राऽभिहितः
आभिहितयः ॥ प्रतिगतानि लोमान्यस्य । प्रतिलोमः । प्रत्यन्ववात् साम-
लोम (५।४।७५) इत्यन्त समासान्तः । प्रतिलोमाः । प्रातिलोमयः ॥ कपीनां
स्थलन्निव स्थलमस्य—कपिष्ठलः । तस्य—कपिष्ठलाः । कापिष्ठलयः ॥ केचित्
कपिष्ठलाः । कापिष्ठलायनाः । नडादिफणन्तमुदाहरन्ति ॥ जतुरकस्य जतु-
रकाः । जातुरकयः ॥ कशाभिः कुन्तति । कृतेः क्स्ने । ड्याट्त्वे च ह्रस्वश्च
बहुलमित्यनेन ह्रस्वत्वे—कशकृत्स्नः । तस्य—कशकृत्स्नाः । काशकृत्स्नयः ॥
वामनस्तु कशकृत्स्नेत्याह ॥ सुधायुकस्य—सुधायुकाः । सौधायुकयः ॥ जटाः
सन्त्यस्य जटिलः । के जटिलकः । तस्य जटिलकाः । जाटिलकयः ॥ शाक-
टायनस्तु शिवाद्यणन्तमाह ॥ मदेनाचं यस्य स मदाघः । तस्य मदाघाः । सा-
दाघयः ॥ कवृवर्ण इत्यस्य क्विपि कव् । कव् अन्ते यस्य स कवन्तकः । तस्य
कवन्तकाः । कावन्तकयः ॥ एम्बोऽत इजः ॥३०॥

कमन्तकः कदामत्तः खरीखभ्रष्टकौ तथा ।

अपजग्धानुलोमौ च दामकण्ठोऽप्यबन्धकः ॥३१॥

कमु कान्तावित्यस्य विचि कम् । कम् अन्ते यस्य स कमन्तकः । तस्य
कमन्तकाः । कामन्तकयः ॥ कदामत्तस्य कदामत्ताः । कादामत्तयः (१) ॥ खरी
रासभी तां खनतीति विचि खरीखा । तस्य खरीखाणः । खारीखणाः ॥
सानान्याणः ॥ भ्रष्टकस्य भ्रष्टकाः । भ्राष्टकयः ॥ अपपूर्वस्यादेर्जग्धादेशे ।
अपजग्धः । तस्यापजग्धाः । आपजग्धयः ॥ भोजस्त्वपदग्धेत्याह ॥ अनुलो-
मस्य—अनुलोमाः । आनुलोमयः ॥ वामनस्तु गणपाठात् समासान्ताभावे-
ऽनुलोमानः । प्रतिलोमानः कुमारार्हत्याह ॥ दाम कण्ठे यस्य स दामक-
ण्ठः । तस्य दामकण्ठाः । दामकण्ठयः ॥ बन्धं करोतीति बन्धकः । न बन्ध-
कैर्बन्धकः । न विद्यते बन्धोऽस्येति वा । अबन्धकः । तस्य—अबन्धकाः ।
आबन्धकयः ॥ अबद्धक इत्येके ॥ एम्बोऽत इजः ॥३१॥

इत्युपकादिः (२।४।६९) ॥

(१) कदामन्तस्य—कदामत्ताः । कादामन्तय इति पा० ।

तिककितवौरसलङ्कटकृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः कथिताः ।

उपकलमकाश्च वङ्खरभण्डीरथपफकनरकाश्च ॥३२॥

तिककितवादयस्तिककितवादौ(१) द्वन्द्व(२)।(४)इत्यनेन बहुत्वापत्यप्रत्यय
(२)श्लुभाजो भवन्ति । तैकायनयश्च कैतवायनयश्च । तिककितवाः (३) । अत्र
तिकादेरित्यनेन विहितस्य फिजः श्लुक् (४) ॥ औरसायनयश्च लाङ्कटयश्च ।
औरसलङ्कटाः । अत्र तिकादिफिजोऽत इजश्च ॥ कार्णाजिनयश्च कार्णसुन्द-
रयश्च । कृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः । अत्रात इजः ॥ औपकायनाश्च लामकायनाश्च ।
उपकलमकाः । नडादिफणः ॥ वाङ्खरयश्च भाण्डीरथयश्च । वङ्खरभण्डीरथाः ॥
वङ्खरइत्यन्ये ॥ पाफकयश्च नारकयश्च । पफकनरकाः । अत इजः ॥ पफको
विकरथनः ॥ अनुकरण इत्यन्ये । पफ करोतीति पफकः ॥३२॥

वकनखगुदपरिणद्धाः शण्डिलकशकृत्सलङ्कशान्तमुखाः ।

प्रहितनरकोञ्जककुभाः प्रोक्ता भ्रष्टककपिष्ठलाश्चात्र ॥३३॥

वकनखयश्च गौदपरिणद्धयश्च । वकनखगुदपरिणद्धाः । आभ्यामत इजः ॥
शण्डिल्याश्च काशकृत्सयश्च । शण्डिलकशकृत्स्राः । अत इजः । बहुषु यजो
लुक्सिद्धैवेजो नित्यं श्लुगर्थं वचनम् ॥ लाङ्कयश्च शान्तमुखयश्च । लङ्कशान्तमु-
खाः । अत्रात इजः । शं सुखं तनोतीति शान्तनं सुखस्येति शान्तनमुख
इत्यन्ये ॥ प्राहितयश्च नारकयश्च । प्रहितनरकाः ॥ औञ्जयश्च काकुभाश्च ।
उञ्जककुभाः । अत्रात इजः शिवाद्यणश्च ॥ भ्रष्टकयश्च कापिष्ठलयश्च । भ्रष्ट-
ककपिष्ठलाः । अत इजः ॥३३॥

दशेरकाग्निवेशेभ्यो गडेरकदशेरकाः ।

कृष्णेभ्यः सुन्दराः प्रोक्ताः ककुभश्च पृथोर्जकात् ॥३४॥

दंशनशीलो दशेरः—सर्पः सारमेयश्च । स्वार्थे के सति तस्यापत्यान्ति ।
गडति सिञ्चति पर्वताङ्गमिति गडैरो निर्हरः । तद्योगात्पुरुषो गडैरः ।

(१) तिककितवादयः पृथोर्जककुभपर्यन्तास्तिककितवादाविति पा० ।

(२) ०प्रत्ययाश्च लुभाजो० इति पा० । (३) तिकस्य कितवस्य वा अपत्यानि
बहवः कुमारास्तिककितवाः—इति पा० । (४) फिजो लुगिति पा० ।

तस्यापत्यानि । दाशेरकयश्च गाडेरकयश्च । दशेरकगडेरकाः । अत इजः ॥
 अग्निवेशाश्च दाशेरकयश्च । अग्निवेशदशेरकाः । यजः पूर्वैणैव लुक् सिद्धा ॥
 परपदस्य दाशेरकिशब्दोपसङ्ग्रहार्थं त्विहोपादानम् ॥ कार्णयश्च सौन्दरयश्च ।
 कृष्णसुन्दराः । अत इजः ॥ पार्थीर्जकयश्च काकुभयश्च । पृथोर्जकककुभाः ।
 अत इजः ॥ ककुभशब्दस्य शिवादौ पाठः प्रायिकः ॥ पृथां पृथिवीमूर्जयति
 वर्धयति । पृथोर्जकः । पृथमूर्जक इति वा गणनिपातनात् कलोपः ॥

उपकलमकभ्रष्टककपिष्ठलकृष्णाजिनकृष्णसुन्दराणां निस्वार्थः पाठः । अ-
 न्मेषां तु-इन्द्रेऽपि पूर्वैण विकल्पः । तेन पिङ्गलककृष्णपिङ्गलाः । पैङ्गलक-
 कार्णपिङ्गलयः ॥३४॥ इति तिककितवादिः ॥

ज्ञेयो गोपवनो बिन्दुः शिशुश्यामाकभाजनाः ।

श्यामकाश्यावतानौ च श्यापर्णः सम्बकस्तथा (१) ॥३५॥

यज्जोश्चेत्यनेन लुक् प्राप्ता न गोपवनादिभ्य (२।४।६७)इत्यनेन निषिध्यते ॥
 गोपवनस्यापत्यानि । गोपवनाः ॥ ब्रैन्दवाः ॥ शिशुरिव शिशुर्निःसारः कश्चित् ।
 तस्य शैशवाः ॥ श्यामा लताः कायति(२) । श्यामाकः । तस्य श्यामाकाः(३)॥
 भाजयतीति भाजुः । तस्य भाजनाः ॥ श्यामं करोतीति श्यामकः । तस्य
 श्यामकाः ॥ श्यावक इत्यन्ये ॥ अश्वानवतनोति-अशवावतानः । तस्य—
 आशवावतानाः ॥ श्यामानि पर्णान्यस्य । श्यापर्णः । अतएव निपातना-
 न्नलोपः ॥ सम्बकस्य साम्बकाः । श्यवक इत्यन्ये ॥ बिन्दुभाजनस्यपणावन्धे
 पठन्ति ॥ वामनमते शिशुः प्रत्याहारः ॥ ३५ ॥

इति गोपवनादिः ॥

क्रौडिव्याड्यापक्षितिसौधातकिद्वैवदत्तिचैक्यताः ।

कापिष्ठलिचैटयतावापिशालिर्लाडिचौपयतौ ॥३६॥

क्रौड्यादीना(४)मित्यनेनैषां पौत्राद्ये स्त्रीलिङ्गेऽपत्येऽग्निजोऽर्था भवति ॥ क्रौडि-
 क्रौडोतीति । अचि ब्राह्मलकादोत्वे । क्रौडः । तस्यापत्यं स्त्री । क्रौड्या ॥ व्यडि ।
 विविधमडतीति व्यडः । तस्यापत्यं व्याड्या । स्वागतादेरित्यपवादादौज्

(१) श्यापर्णश्यावकौ तथा-इति पा० । (२) श्यामलताः कायति-इति,
 पा० । (३) श्यामकस्तस्य श्यामकाः-इति, पा० । (४) (४।१।५०)

न भवति ॥ आपक्षिति । दुष्टु मिथ्या क्षितोऽपक्षितः । तस्यापत्यं स्त्री ।
 अक्षित्या ॥ सौधातकि । शोभनं दधातीति सुधाता । तस्याऽपत्यं व्यासा-
 दीनामकञ् चेत्यनेनेऽयकजादेशे च विहिते । सौधातक्या स्त्री ॥ दैवदत्ति ।
 देवदत्तस्यापत्यं स्त्री । इजि । दैवदत्त्या ॥ चैकयत । चीकं आमर्षणे चुरादि-
 णिजन्तस्ततः शतुरणि स्त्री । चैकयत्या ॥ पाणिनिस्तु चितसंवेदन इत्यस्य
 चैतयत इत्याह ॥ कापिष्ठलि । कपिष्ठलस्यापत्यं स्त्री । कापिष्ठल्या ॥ चैग्र-
 त । चिट प्रैष्य इत्यतो णिचि शतरि । चेटयतोऽपत्यं स्त्री चैटयत्या ॥ आ-
 पिशलि । पिंशतीत्यौष्णादिककलप्रत्यये । पिशलः । न पिशलोऽपिशलः कुल-
 प्रधानम् । तस्यापत्यं स्त्री । आपिशल्या ॥ लाडि । लड विलास इत्यस्याचि ।
 लडः । तस्याऽपत्यं स्त्री । लाड्या ॥ चीपयत । चीपयतीति चीपयन् । त-
 स्यापत्यमण् स्त्री । चीपयत्या ॥ ३६ ॥

वैत्वयतोऽथ क्षत्रियवाच्यो भोजश्च सूतवाग्युवतौ ।

भौरिकिभौलिकिशालास्थलिशालमलिकौटिसैकयताः ॥ ३७ ॥

वैत्वयतः । बिल्ववन्तमाघष्ट इति णिचि । विन्मत्वोरिति मतुब्लोपे
 शतरि । वैत्वयतोऽपत्यमित्यणि स्त्री । वैत्वयत्या ॥ क्षत्रियवाच्यो भोज इति
 क्षत्रिये वाच्ये भोजशब्दः क्रौड्यादौ भवति स्त्रियाम् । भोज्या क्षत्रिया ॥
 यथा । भोज्यां प्रति व्यर्थमनोरथत्वात् ॥ भोज्याऽन्या ॥ सूतवाग्युवताविति सूत-
 शब्दो युवतौ वाच्यायां क्रौड्यादौ भवति । सूत्या युवतिः । प्राप्तयौवना
 स्त्रीत्यर्थः ॥ अन्ये तु सूताः सारथयः । तत्सम्बन्धिनी युवतिः सूत्या । न
 सर्वेत्याहुः ॥ सूत्याऽन्या ॥ भौरिकि । भूरिरेव भूरिकः । तस्यापत्यं स्त्री भौ-
 रिख्या ॥ भौलिकि । वारादेवेति लत्वे । भौलिकिः । तस्यापत्यं स्त्री । भौ-
 लिख्या ॥ शालास्थलि । शालास्थलस्यापत्यं स्त्री शालास्थल्या ॥ शालमलि ।
 शालमलेः शालमल्या ॥ कौटि । कूट दाहेऽच् । अत इजि । कौट्या ॥ भौ-
 रिकिभौलिकिशब्दयोर्गोत्रादिपठितादिति ड्ये प्राप्ते तद्व्यधनार्थं गौरादिषु
 पाठैः । क्रौड्यादिलक्षणस्तु ड्यो भवत्येव । अन्यथा पाठानर्थक्यं स्यात् ॥
 सैकयत । सैक गतावित्यतो णिचि शत्रा । सैकयन् । तस्यापत्यं स्त्री सैकयत्या ॥
 आकृतिगणोऽयम् । तेनाश्वक्या काश्या रौड्या याज्ञदत्त्या इत्यादयो द्रष्टव्याः ॥
 रौडिः । रूढस्यापत्यमणि स्त्री । रौड्या । केचिद् गोकक्षशब्दं यजन्तमत्र

पेतुः । तन्मते गौकक्ष्या । फलं तु गौकक्षीपतिः । गौकक्षीपुत्रः । षडः संप्र-
सारणं भवेदिति गोनर्दीयो मन्यते । अस्माकं तु मते पीतिमाष्यावत्सिद्धिः ।
तथा गौकक्ष्यापतिः । गौकक्ष्यापुत्र इत्येव भवितव्यम् । अत्रापाठात् । तथा
च सौनागाः पठन्ति । षडः संप्रसारणे गौकक्ष्या प्रतिषेध इति ॥ ३७ ॥

इति क्रौड्यादिः ॥

• अजपरभृताश्वकोकिलचटकैडकमूषिकाविलातश्च ।

कालः पाको मन्दः कन्यो वत्साम्बहोडाश्च ॥ ३८ ॥

• अदजादिभ्योऽस्वस्त्रादिभ्य आडित्यनेन । अकरान्ताच्छब्दात्स्वस्त्रा-
दिवर्जितादजादिभ्यश्च स्त्रियां स्वार्थे आट् प्रत्यये भवति ॥ अज गतिक्लेप-
णयोः । ततोऽधि । अदजादिभ्योऽस्वस्त्रादिभ्य आड् इत्यनेनाडि । अजा ॥
परभृता ॥ अश्नुते पृथिवीं व्याप्नोतीत्यौशादिके वप्रत्यये । अशवा ॥ कुक, वृक
आदाने । कोकले गृह्णाति सहकारमञ्जुरीमिति कोकिला ॥ चट, स्फुट भेदे ।
चटति भिनत्ति वस्तूनीति चटका ॥ ईड, स्तुतौ । आड्पूर्वः । एडयतीति ।
एडका ॥ मुष स्तेये । भुष्णात्यपहरति वस्तुजातमिति मूषिका ॥ एषां जाति-
लक्षणे ङीप्रत्यये प्राप्ते ॥ विपूर्वा रा ला दाने । ततः क्ते शीतादय इत्यौशा-
दिके वा ते । विलाता ॥ वल प्राणने । बलतीति ज्वलादर्णे इति णे । वाला ॥
पाति पिबति पायति वा तमाहाराचारानुसंस्कारैरित्यौशादिके कप्रत्यये ।
पाका ॥ मन्दते स्वपितीति मन्दा । यौवनस्था स्त्री ॥ यदा तु स्त्रीजातिनाम
तदा जातिलक्षणे ङीप्रत्यये ॥ कनति शोभते वपुषा कन्या ॥ अथवा । कनन्ति
गच्छन्ति तस्यां रागिननो नयनानीति कन्या । कुमारी ॥ वदति । आह्वयति
पयस्कामा मातरमिति वत्सा । पुत्रिका ॥ अवति पालयति गर्भाधानारम्भ-
त्याजीवितान्तात् पुत्रमिति । अम्बा माता ॥ होडा ॥ मन्दादन्ये षडपि
बाल्यवचनाः । अन्यमते तु मन्दोऽपि ॥ विषयस्वनन्त्य इति ङीप्रत्यये प्राप्ते
विज्ञातेत्यत्र । कादल्पोक्तावित्यनेन ङीप्रमावित्यन्ये ॥ ३८ ॥

• मध्यज्येष्ठौ मध्यमकनिष्ठपूर्वापहाणदंष्ट्राः स्युः ।

• अपरापहाणमुग्धौ पालान्ताः सम्प्रहाणश्च ॥ ३९ ॥

मां ध्यायतीति मध्या । मध्यस्य भाष्यार्थं वा । मध्या ॥ इयमनयो-
 र-
 द्विष्टयेन वृद्धा प्रशस्या वा । ज्येष्ठा ॥ ज्येष्ठस्य भाष्यार्थं वा । ज्येष्ठा ॥ मध्ये-
 भवा मध्यमा । मध्यान्म इति न प्रत्यये ॥ मध्यमस्य भाष्यार्थं वा । मध्यमा ॥
 अल्पतमा । कनिष्ठा । कनिष्ठस्य भाष्यार्थं वा । कनिष्ठा ॥ अयस्यनन्त्य इत्यनेन
 ख्याख्यादित्यनेन वा ङीप्रत्यये प्राप्ते ॥ अपह्रीयतेऽनयाऽस्यां वा । अपहा-
 णा । पूर्वस्यापहाणा । पूर्वापहाणा ॥ अथ समासात्प्रागेवात्र ङीः कस्मान्न
 भवतीति चेत् । न । वचनानर्थक्यप्रसङ्गः ॥ यद्वा । पूर्वश्चासावपहानश्चेति
 पूर्वापहानः । स्त्री चेत् पूर्वापहाणा । शतृन् निपातनादेव । टिल्लक्षणे ङीविधौ
 प्राप्ते ॥ अपरे शतृन् नाधीयते । ते हि । ओहाङ् गतावित्यस्मिन् कृतनिष्ठा-
 तकारनकारे पूर्वमपहानमस्या इति वाऽनाच्छादाज्जातेरित्यादिना ङीप्राप्ति-
 र्वाध्यत इत्याहुः ॥ एवम् अपरापहाणा ॥ केचित्तु परापहाणेति पठन्ति ॥
 परप्रहाणेत्यपि ॥ दृश्यतेऽनया । दंष्ट्रा ॥ सुग्धा । वयोलक्षणे ङीप्रत्यये प्राप्ते ।
 यदा त्ववयोवाचकत्वं तदाऽत एवाङ् भवति । एतत्तु पूर्वेष्वपि यथासम्भवं
 द्रष्टव्यम् ॥ पालान्ता इति पालोऽन्ते येषां ते पालान्ताः शब्दा अस्मिन् गणे
 द्रष्टव्याः ॥ गोपालकस्य भाष्यार्थं । गोपालिका । ख्याख्यादिति ङीप्राप्तौ ।
 या तु स्वयं प्रतिविधानेन गाः पालयति न तत्र प्राप्तिरुस्ति ॥ एवं पशुपा-
 लिका । द्वारपालिकेत्यादयो द्रष्टव्याः ॥ संप्रहाणेति पूर्वापहाणावत् ॥ भोजस्तु
 पूर्वापहायणा । अपरापहायणा । संप्रहायणेति पठति ॥ ३९ ॥

दिशा दृशा क्षुधा वाचा क्रुञ्चा देवविशोष्णिहा ।

विकल्पाडो बुधैर्लक्ष्या जातिः शूद्रोऽमहत्परः ॥ ४० ॥

दिशा । दिक् ॥ दृशा । दृक् ॥ क्षुधा । क्षुत् ॥ वाचा । वाक् ॥ क्रुञ्चा ।
 क्रुङ् ॥ निपातनान्नलोपाभावेऽन्त्याजादिलोपाभावश्च ॥ देवविशा । देववि-
 ट् । देवानां प्रजेत्यर्थः ॥ भोजस्त्वनयोर्विकल्पं नेच्छति ॥ उष्णिहा । उष्णिक् ॥
 पाणिनिस्तु त्रयाणां विकल्पं नेच्छति । भाष्यकारस्तु हलन्तान्नाप् कित्त्वका-
 रान्तादित्याह ॥ शूद्रा जातिः ॥ जातिरिति किम् । शूद्रस्य भार्या । शूद्री ॥
 अमहत्पर इति किम् । महाशूद्री । आभीरजातिः ॥ ४० ॥

संभस्त्रापिण्डाजिनशाणत्रिपूर्वं फलं नज्रो मूलम् ।

प्राक् शतसदेककाण्डप्रान्तात्पुष्पं परं ज्ञेयम् ॥ ४१ ॥

सफला ॥ भस्त्राफला ॥ पिण्डफला ॥ अजिनफला ॥ शशफला ॥
 ओषधिजातिविशेषाणां संज्ञा एताः ॥ त्रीणि फलानि समाहृतानि । त्रिफला
 द्विगोरिति ङीप्राप्ती ॥ अमूला । मूलान्तलक्षणे ॥ प्राञ्चि पुष्पाणि यस्याः ।
 प्राक्पुष्पा ॥ शतपुष्पा ॥ सत्पुष्पा ॥ एकपुष्पा ॥ काण्डपुष्पा ॥ प्रान्तपुष्पा ॥
 युष्पान्तलक्षणे ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन । गिरा । गीः ॥ बलाका । मङ्-
 वेत्यादयः सिद्धाः ॥

इत्यजादिः ॥

स्विसाभाताननान्दाऽथ दुहिता तिसृषुष्मदौ ।

स्तश्चतस्रस्मदौ याता नान्ता संख्यापि कीर्तिता ॥ ४२ ॥

स्वस्यति सम्यगाकर्षति कुलगृहद्रव्यं सोदर्यमनांस्यात्मनि प्रणयाद्वा ।
 स्वसा । भगिनी ॥ भान्यते पूजयतेऽप्रमेयोपकारितया सुतैरिति साता । जन-
 नी ॥ न नन्दति । न समृध्यति । ननान्दा । भर्तृभगिनी ॥ दोग्धि । अप-
 हरति सर्वस्वं नावकुलादिति दुहिता । सुता ॥ तिस्रः ॥ युष्मभ्यम् ॥ चतस्रः ॥
 अस्मभ्यम् ॥ यतत उत्सृहते हितप्रतिपादनेनेति याता ॥ पञ्च ॥ सप्त ॥

युष्मदस्मदौरादि प्राप्तेऽन्येषां तु ङी प्रत्यये प्राप्ते प्रतिषेधः । पाणि-
 निप्रभृतयस्तु युष्मदस्मदौर्गणे पाठं न प्रदर्शयन्ति । अलिङ्गत्वात् । एतच्चा-
 युक्तम् । यतो नान्ता संख्याऽप्यलिङ्गैव ततस्तेऽपि तत्प्रदर्शनं किमिति कृत-
 वन्तः । तस्मादत्र शब्दतत्त्वज्ञा एव प्रमाणम् ॥ ननु तिस्रश्चतस्र इत्यत्र त्रिच-
 तुरोर्विभक्तिसंनिपातेन तिस्रश्चतस्रावुच्येते तत्र संनिपातलक्षणो विधिरनि-
 मित्तं तद्विघातस्येति ङीर्न भविष्यति । सत्यम् एतदेव ज्ञापयति । अनित्येयं
 परिभाषा । तेन या सेत्यादौ विभक्तिसंनिपातलक्षणस्यदाद्यकार आह्वि-
 धिनिमित्तं स्यात् ॥ ४२ ॥

इति स्वस्रादिः ॥

क्रोडवालागलाभालभगोरवाः खुरसंयुताः ।

झाफो भुजो भुदो घोणाकरौ क्रोडादिनामनि ॥ ४३ ॥

क्रोडशब्दः स्त्रीलिङ्गः । विष्टा मञ्जिष्टा काष्ठेत्यादिलिङ्गकारिकासाम-
 प्यात् । कल्याणी क्रोडा यस्याः सा कल्याणक्रोडा गीः । न ना क्रोडं भुजा-

न्तरमिति वचनादपि च ॥ रत्नमतिस्तु कल्याणः क्रोडो यस्या इति विग्रहं दर्श-
 न् पुंल्लिङ्गतां ख्यापयति ॥ कल्याणा वालाऽस्याः । कल्याणवाला ॥ शोभने
 गलोऽस्याः । सुगला ॥ भव्यो भालोऽस्याः । भव्यभाला ॥ शोभने भगोऽस्याः
 सुभगा ॥ उत्खनतीति । उखा स्फिक् । गणपाठाद्दृष्टय उदो दलोपः ॥
 श्रीमत्युखा यस्याः । श्रीमदुखा ॥ कल्याणो गोखो यस्याः । कल्याणगोखा ।
 इत्यपि शाकटायनः ॥ कल्याणः खुरोऽस्याः । कल्याणखुरा ॥ गवादेः पादाग्रं
 शफः । पवित्रः शफोऽस्याः । पवित्रशफा ॥ मृणालवद्भुजावस्याः । मृणाल-
 भुजा ॥ कल्याणो गुदोऽस्याः । कल्याणगुदा ॥ कल्याणं गुदमस्य इति तु शाक-
 टायनः ॥ उन्नता घोणाऽस्याः । उन्नतघोणा ॥ किसलयकारो करावस्याः ।
 किसलयकरा ॥

आकृतिगणश्चायम् । तेन सुरङ्गाप्रभृतयोऽन्येऽपि द्रष्टव्याः ॥ ४३ ॥
 इति क्रोडादिः ॥

गौरारीहणखारकर्करचराः सारङ्गशृङ्गाढका-

द्रोणालिन्दवराहविम्बवदरा लोहाण्डपाण्टौ पुटः ।

नाटः पिएडसपाटचेटवरटा मूलाटसूपारटाः-

शूर्पासन्दनदाः पितामहमहौ मातामहो मालतः ॥४४॥

गौरादेरित्यनेन गौर इत्यादेः शब्दगणात् स्त्रियां ङी प्रत्ययो भवति ॥
 गौरी वर्णयुक्ता नामधेयं वा ॥ यथा । सरोजकर्णिका गौरी गौरीं प्रति सनेा
 दधे ॥ अरीहणी । ओषधिः काचित् । हरीकणीत्येके ॥ खारी । षोडशद्रोण-
 परिमाणा ॥ कर्करी जलभाजनम् ॥ ह्रस्वः कर्कः । कर्कटी । ग्रामटी । लौकि-
 कष्टप्रत्यय इति कश्चिदाह ॥ चरी दिगम्बरप्रसिद्धा ॥ तदन्तादपि । अनुचरी ।
 सहचरीत्यादि ॥ सारङ्गी । शवलवर्णयुक्ता ॥ वाद्यविशेषो वा ॥ शृङ्गयुक्तत्वा-
 त् । शृङ्गी । प्रतिविषा कर्कटशृङ्गी च ॥ आढकी । तुवरी ॥ आढजीति
 केचिदाहुः ॥ द्रोणी । जलक्षेपिका ॥ अत्यन्ते भूष्यते पुष्पप्रकरणे । अलिन्दी
 प्रघणः ॥ अथवा । अत्यन्ते निवार्यन्ते तस्यां पतनाद् भाजनानीत्यलिन्दी ।
 कोष्ठिका ॥ वराही । विम्बी । तुण्डिका ॥ विम्बेति कश्चित् । विम्बं वन-
 स्पतिजातिरित्येके ॥ वदुरी वृक्षः ॥ लोह इवाण्डमस्याः । लोहाण्डी नाम

शकुनिः ॥ स्त्रीविषय एवायम् ॥ पाण्टी पिच्छिका ॥ पाण्डोरपत्यमित्येके ॥
पुटी ॥ नाटयतीति नाटी ॥ नाटीसञ्ज्ञया द्वे काव्ये । एको भेदः प्रख्याते
नाटिकाख्यः । इतरस्त्वप्रख्यातः ॥ प्रकरणिकासंज्ञः । तथाच ।

अनयोश्च अन्ययोगादेको भेदः प्रयोक्तृभिर्ज्ञेयः ।

प्रख्यातस्त्वितरो वा नाटीसंज्ञाश्रिते काव्ये ॥

पिण्डी । सदनफलम् ॥ सर्पति गच्छति क्षुद्रद्रव्यसंघातमिति सुपाटी ।
उपान्तं कुर्यं क्षुद्रपुस्तकः परिमाणविशेषश्च ॥ चेटी ॥ बरटी । क्षुद्रधान्यम् ॥
वटरीति-कश्चित् ॥ मूलैरटतीति मूलाटी ॥ सूपी ॥ आरटी ॥ शूर्पी । परि-
वपनं मानं च ॥ आसन्दी । वेत्रासतम् । आनन्दीति पाणिनिः । नदी ॥
पितामही ॥ मही । पृथ्वी नदी च ॥ मातामही ॥ मलत्यामोदैर्बसुन्धराम् ।
मालती जातिः ॥

गौरसारङ्गचेटपितामहमातामहानामजातित्वात् ।

अन्येषां तु जातित्वेऽपि स्त्रीविषयत्वाद्भास्ते पाठः ॥ ४४ ॥

कदरकदलसूचा मण्डली मण्डकश्च-

प्लवभषकृषभङ्गा यूपतर्कारमत्स्याः ।

गवयमुक्यगाहा मेधशर्कारपुत्राः-

शबलगडुलगूर्दाः सूदकलमापदेवाः ॥ ४५ ॥

कदरी वृक्षविशेषः ॥ केन वायुना दस्यते । कदली । मोचा करिपताका ॥
च ॥ सूची । सूचिभेद्यैस्तमोभिरित्यादि दर्शनात् सूचिशब्दोऽप्यस्ति । पर-
मस्य पाठादिदं सिद्धम् ॥ पञ्चभिः सूचिभिः क्रीतः । पञ्चसूचः । तस्य तु पञ्च-
सूचिरिति स्यात् ॥ मण्डली । संहतिर्देशश्चतुरस्रता च ॥ मण्डकी ॥ म्लवत
इति प्लवी ॥ भपति पैशुन्येन वक्ति । भषी ॥ कृषी ॥ भङ्गी । वृद्धवैयाकरणा-
भिप्रायेण दर्शितम् । विवेचकास्तु भङ्गिभङ्गीशब्दौ विच्छित्तिपद्मार्थौ भङ्गश-
ब्दाप्येव धिवृत्तेराडेव स्यात् तिलमापोमाणुभङ्गाभ्यो वेति सौत्रनिर्देशादिति
मन्यन्ते । उमा । भङ्गी नाम काचिदोपधिरिति शाकटायनः ॥ यूपति उन्नरं
हिनस्तीति यूपी । मुद्गादिनिर्यासः ॥ यूपीति भोजः ॥ तर्कति । इयर्त्ति ।
शर्कारी । जया ॥ सत्सी । जलधरी ॥ सत्स्या नाम जनपदः । तदीश्वरश्च

क्षत्रियस्तन्नामधेयः । तत्र मत्स्यानां राज्ञी मत्स्यस्यापत्यं स्त्रीति वा । पुरु-
 दुग्मगधेत्यादिनाणि तस्यातोऽप्राच्यभर्गादेरिति श्लुचि । मत्सी ॥ गोरिवा-
 यो गमनमस्येति पृषोदरादित्वात् सिद्धौ । गवयी । गोप्रतिनिधिर्मृगः ॥
 मुकं वैवर्यं यातीति मुकयी । मृगजातिः । गर्दभ्यामश्वतराज्जातेत्येके ॥ गाहृत
 इति गाही ॥ मेधृ सङ्गमे वैत्यस्याचि । मेधी ॥ शर्कारी ॥ पुत्री । सूतीग्र-
 जमेरुभ्यो दुहितुः पुत्राद्वेति वक्तव्यमुशन्ति । तन्न । समासेऽप्यनेनैव सिद्धम् ॥
 शवति याति वर्णान् । शवली । शवलवर्णयुक्ता ॥ गडुली ॥ गूर्दी ॥ सूदत
 इति सूदी काचित् ॥ सूदं इत्यपि शाकटायनः ॥ कलयति वर्णान् र कल्पा-
 षी । कलेर्मापनासाविति वचनाद् सूर्थन्यदन्त्यौ ॥ देवी । कृताभिषेका ॥
 मत्स्यगवयमुकयानां जातित्वेऽपि योपान्त्यत्वात् । पुत्रशबलकल्पाषाणाम-
 णातित्वात् ॥ इतरेषां तु जातित्वेऽपि स्त्रीविषयत्वाद्प्राप्ते पाठः ॥ ४५ ॥

उभयहयमनुष्याः कुम्भदासौ पिशङ्गः—

कुवलहरिणयूथाः शूषमेथौ गुडूचः ।

अमरपिठरसूर्माः पिप्पलो वैजयन्तो—

विकलमठकरीरी केतकास्थानचोराः ॥ ४६ ॥

उभयी । स्थितिः ॥ पाणिनीयास्त्वयच्प्रत्ययविधानेन टित्वाद् डीप्
 प्रत्ययमाहुः ॥ हयी । अश्व ॥ मनुष्यी । शाकटायनस्तु मनोरपत्यमिति
 मनोर्जातौ पुक् चेति यप्रत्यये मत्स्यतद्धितहलो य इत्यनेन यलोपे मनुषी-
 त्याह ॥ कुम्भी । रसाधारत्वात् कुमुदिका । मृदादिपात्रवाची तु कुम्भशब्दः
 कुण्डादौ द्रष्टव्यः ॥ दासते प्रयच्छति स्वामिने वचनकाल इति दासी । चेट्टी ॥
 दासयन्ति प्रयच्छन्ति वेतनं तस्या नद्युत्तारणहेतोरिति दासी । म्हाविका ॥
 अथवा । दासते प्रयच्छत्यारोग्यमिति दासी । शैलेयद्रव्यम् । सकारस्तालव्यो
 दन्त्यो वा । दासःशचेत्कुणादिवचनात् ॥ पिशङ्गी । पिङ्गवर्णयुक्ता । यथा—

विभ्राणमानीलरुचं पिशङ्गीर्जरास्तडित्वन्तनिवास्त्रुवाहम् ॥

कुवली । क्षुद्रवदरी ॥ हरिणी । शुक्लवर्णयुक्ता ॥ यूथी । मागधी ॥ शूषी ॥
 मेधति हिनस्ति वातमिति मेधी ॥ गुडति रक्षति दोषेभ्यः । गुडूची । वत्सा-
 दनी ॥ अमति गच्छत्यष्टगुणमैश्वर्यमिति । अमरी ॥ पिठति हिनस्ति तगडु-

लानिति पिठरी । भाण्डम् ॥ सूर्मी । लोहप्रतिमा ॥ यत्स्मृतिः । सूर्मीञ्जवल-
न्तीमालिङ्गेन्मृत्यवे गुरुतल्पगः ॥ चुम्बिश्च ॥ पिपत्तिं । पिप्पनी । वैदेही-
वैजयन्ती । पताका ॥ विकली ॥ विकलनिष्कलपुष्कलशब्दस्यो वनस्पतिवृ-
त्तिभ्य एव ङीविधिः सम्भाव्यते रूढितः । अन्यत्र विगता कला यस्याः ।
विकला । निष्कला । पुष्कला धनद्विरित्येवं स्यात् ॥ वामने च । कृतीस्म
राज्ञा यदि पुष्कला स्याम् ॥ छित्तपस्तु ।

न पुष्कली ते स्वर्लोके जनता किन्तु सामरी ।

विकली शल्कमात्रेण महती निष्कलीप्यते ॥

इति सामान्येनाह ॥ कथं विकलाकालविशेषवाचिनो नित्यस्त्रीवि-
षयत्वादात्रैव भवतीति भोजोऽपि ॥ मठन्ति निवसन्त्यस्यामिति मठी ॥
करीरी । करिदन्तमूलम् ॥ केतकी ॥ आस्थानी । संसत् ॥ चोरयतीति
चोरी । तथा च ।

नृचित्तचोर्यः सुन्दर्यो दुरुद्वहकटीतटाः ।

नदीगाहीम्वीचर्य इव यद्भूप्रभाभसि ॥

हयमनुष्ययोजातिवेषि योपान्त्यत्वात् । उभयदासपिशङ्गहरिणामर-
चोराणामजातिरवात् । इतरेषां तु जातित्वेषि स्त्रीविषयत्वादप्राप्ते पाठः ४६

द्रुणविटसरसायः स्थूणसौधर्ममाचाः—

पटललवलपादा वह्नकालम्बिनाचाः ।

अतसपृथिवभृङ्गाः कन्दलारट्टिदोटाः—

शमतमकुटपेटा मञ्जरी निष्कलश्च ॥ ४७ ॥

द्रुणी । कच्छपस्त्रिय एवोच्यन्ते न कच्छपाः पुमांसः ॥ विटी । मह-
त्सरः ॥ सरसी । कर्णाटदेशे प्रसिद्धिरेषा हलन्तत्वादप्राप्ते ॥ अयोमयी स्थूणा
यस्य सोऽयःस्थूणः । तस्यापत्यं शिवाद्यणि । आयःस्थूणी । इयस्य प्राप्ती ॥
अयोमयी स्थूणा यस्याः सा । आयःस्थूणी । कुटी । तस्यान्यार्थे वृत्तिः स्वा-
र्थेत्वयःस्थूणेति स्यादिति कथिदाह ॥ आयस्थेणीति केचित् ॥ शोभनी धर्मा
यस्य स सुधर्मा । तस्यापत्यं स्त्री सौधर्मा । ऋष्यणि इयस्य प्राप्ती ॥ माची ।
अम्बुष्ठा ॥ पटली । महुतः ॥ लयली । लताविशेषः ॥ पादी ॥ यल्लकी ॥

अलम्बस्यापत्यं स्त्री । आलम्बी । अत इजि ड्यस्य प्राप्नो ॥ नाची ॥ अतति
गच्छति नीलैः कुसुमैः स्नेहवद्ब्रीजानीति । अतसी । उमा ॥ पृथिवी ॥
पाणिनिप्रभृतयस्तु ङीप्रत्ययान्तमाहुः ॥ भृङ्गी । भृङ्गराजः । लवङ्गी वा ॥
कन्दली । कन्दविशेषः ॥ अरट्टस्यापत्यमिजि स्त्री । आरट्टी । उफस्य
प्राप्नो ॥ दोटी ॥ शमयति दोषान् । शमी । सक्तुफला सिम्वा वा (१) ॥ ता-
स्यन्त्यस्यामिति तमी । रात्रिः ॥

विभूषणं के कुचमण्डलानां

हाराः

कीदृश्युमा चन्द्रमसः कुतो भाः ।

महादेवरता तमातः ।

सीता कथं रौद्रि दशास्यनीता

हा राम ! हा देवर ! तात ! मातः !

हारामहादेवरतातमातः ॥

इति लक्ष्यात् तमापि ॥ कुटी ॥ पेटी वृन्दं परिच्छदश्च ॥ मञ्जरी ।

पुष्पयष्टिः ॥ निष्कली ॥ विकलनिष्कलशब्दौ जनपदवाचिनौ । स्त्रीविषया-
विति शाकटायनः ॥ उक्तेभ्योऽन्यत्र जातित्वेऽपि स्त्रीविषयत्वादप्राप्ते ॥४७॥

ऋश्यो बन्धकधातकावनडुही शष्कण्डकोपातका-

ऽनड्वाहीवृसवेतसाः पटनटक्रोष्ट्योकाणाः काकणः ।

आलक्ष्यालजभिक्षुकोर्दसुषवा औद्गाहमानिर्गरो-

गायत्र्यामलकौ हरीतकशचावालब्धिमांसौ तरः ॥४८॥

ऋश्यी ॥ वध्नाति मनेा यूनामिति बन्धकी ॥ धातकी । ताम्रपुष्पी ॥

अनडुही । ङीप्रत्ययान्तपाठो गणेऽस्त्रीत्वप्रतिषेधार्थः । तेन । अनडुही ।

वन्दारिका ॥ वामनादयस्त्वनडुहीभार्य इत्युदाहरन्ति । तन्न युक्तम् । जातिप्रा-

यङ्ङ्योऽमान्यादाविति (२) नियमितत्वात् पुंवद्भावस्य निषेधः सिद्ध एव ॥

अथवा । पञ्चभिरनडुहीभिः क्रीतः । पञ्चानडुहिरित्यादौ ड्यः श्लुचीत्यनेन

श्लुक् प्राप्ता निषिध्यते । एवं सर्वत्र ॥ शष्कण्डी । हैमवतः कश्चिद्वृक्षः ॥

कोशातकी । पटोली ॥ अनड्वाही ॥ वृसी । व्रतिनामासनम् ॥ वेतली ।

(१) शिम्वा वा । इति पा० । (२) स्वाङ्गाञ्चेतोऽमानिनि । जातिश्चे-

त्येतयोरेव पाणिनिभूत्रयोः केनचिदेवं न्यासः कृत इत्यनुमीयते । भी० श०

वञ्जुलः । असूवेतसञ्च ॥ पटी । प्रच्छादनवस्त्रम् ॥ नटी ॥ क्रोष्टी । क्रोष्टी-
शब्दस्य पाठः सुखार्थः । क्रोष्टीः स्वयनी क्रोष्टृजिति । ऋदन्तन्वन्नुषिदेषु
इत्यनेन ङीप्रत्ययः सिद्धः ॥ ओकणी । पर्यन्तवनस्य-संज्ञा । उकणीत्यन्यः ॥
काकणी । पञ्चतुर्थभागः ॥ अलक्षस्यापत्यमिजि स्त्री । आलक्षी । ड्ये प्राप्ते ॥
आलक्षी ॥ भिक्षुकी ॥ उर्दी । विमानम् ॥ सुषुवति प्रेरयति दोषानिति सुष-
वी । कृष्णजीरकम् ॥ सुष्ठु सवतीति सुसवीति नन्दी प्राह ॥ उदगाहमानस्या-
पत्यमिजि स्त्री । औद्गाहमानी । ड्ये प्राप्ते ॥ गरी । देशविभागस्य संज्ञा ॥
गायतस्त्रायतेऽवश्यम् । गायत्री । छन्दोविशेषः खदिरो वा ॥ आसलति गु-
णाम् । आमलकी । वयःस्था ॥ हरति रोगान् । हरीतकी । पथ्या ॥ शचति ।
शची । इन्द्राणी ॥ अलव्यस्यापत्यमिजि स्त्री । आलव्यी । ड्ये प्राप्ते ॥ का-
लबधीत्यपि शाकटायनः ॥ सांसी । जटा ॥ तरी । नौः ॥

ऋश्यस्य जातित्वेपि योपान्त्यत्वात् । बन्धकनटभिक्षुकाणामजाति-
त्वात् । अत्रहुद्दे हलन्तत्वात् ॥ अन्येषां च स्त्रीविषयत्वादप्राप्ते ॥ ४८ ॥

कुसुम्भसुन्दरौ पूयः शङ्कुलो देहलस्तटः ।

तापसोऽथ सिनीवालः पूलसल्लकगौतमाः ॥४९॥

कुसुम्भी । ओपधिविशेषः ॥

अस्मिन् रतिअमजितञ्च सरोजवाताः ।

स्मर्त्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः ।

अत्र दिव्यस्त्रीविषयत्वाज्जातिलक्षणो ङीर्न भवति । गुणवचनात्
सुन्दरशब्दाच्च शोणादिपाठात् पाक्षिके ङीप्रत्यये कृते सुन्दरीणां सुन्दरा गिर-
इति भवति ॥ भोजस्तु सामान्येनैव ङीप्रत्ययं दर्शयति ॥ पूयी । दुर्गन्धा ॥
शक्यन्ते सृष्यन्ति तस्यां परस्परसम्बन्धं निस्तुपतिला इति शङ्कुली । भक्ष्य
विशेषः । अथवा । शक्नोति पर्याप्नोति पुद्गलविकारं शब्दं ग्रहीतुमिति
शङ्कुली । कर्णशङ्कुली ॥ दिक्ष्यते । देहली । द्वाराग्रस्थला ॥ तटी ॥ तपः-
शीलमस्याः छत्रादर्ण इति णे सति । तापसी ॥ सिनी सिता वाला कला
यस्यां सा सिनीवाली । दृष्टेन्दुरमाद्यास्या ॥ पूनी । वृणश्चातः ॥ असकल-
कृत आस्वाद्यते गर्जरिति मृल्लकी । गजप्रिया ॥ गौतमी । अस्य पाठः सुखा-
र्थः । मतान्तरे तु स्वरः प्रयोगनम् ॥ तटतापस्योरजातित्वात् । अन्येषास्तु
स्त्रीविषयत्वादप्राप्ते ॥ ४९ ॥

कटेटभौलिङ्ग्यधिकारदेहा, गवादनोद्वाहनतेजनाः स्युः ।

आपञ्चिको भौलिकिभौरिकी च काकादनः प्रत्यवरोहिणी च ॥५०॥

कटस्य ईटः । कटेटः । कटेटी ॥ भुवि लिङ्गं कीर्तिरस्येति भूलिङ्ग-
 ऋषिः । तस्यापत्यमिति शास्त्रांसेत्यादिना । इजि भौलिङ्गिः । स्त्री भौलि-
 ङ्गी । इज्यजि प्राप्ते ॥ अधिकः कारोऽस्या इति । अधिकारी । अधिक्रियत
 इति बहुलाधिकाराद्इज्यजि स्त्रियां यथा शोभेत्येके ॥ देही ॥ गवादनी ।
 इन्द्रवारुणी ॥ उद्वाहनी ॥ तेजयत्यग्निमिति तेजनी । कङ्कुणी ॥ आपञ्चिको,
 नाम जनपदः । समाननामा क्षत्रियः । तस्यापत्यं स्त्रीति राष्ट्राख्याद्राज्ञोऽजे-
 वेत्यनेनाजि तस्य च श्लुचि । आपञ्चिकी ॥ भूलिकस्यापत्यमिजि स्त्री । भौ-
 लिकी ॥ भूरिकस्यापत्यमिजि स्त्री । भौरिकी । गोत्रादिपठितादित्यनेन
 इज्यस्य प्राप्तौ ॥ काकादनी । गुञ्जा ॥ प्रत्यवरोहिणी ॥ टन्प्रत्ययान्तस्यास्या-
 न्येषां च टिट्द्वारेणैव डीप्रत्यये सिद्धे गणे पाठः पुंस्त्वद्वावप्रतिषेधार्थः । मता-
 न्तरे तु स्वरः प्रयोजनम् ॥ ५० ॥

वर्बरदाडिमचमसास्तरुणस्तलुनाग्रहायणीवन्दाः ।

पण्डरपुष्कललवणाः पिङ्गलमुसली विभीतकी नन्दः ॥५१॥

वर्बरी ॥ दाडिमी । वृक्षजातिः ॥ चमसी । सोमपात्रम् ॥ तरुणी ।
 सुरा ॥ तलुनी । सुरा ॥ अग्रं हायनमस्याः । आग्रहायणी पौर्णमासी । अत-
 एव निपातनाद्दीर्घत्वं णत्वञ्च ॥ वन्दी । हठहता स्त्री ॥ पण्डते याति मनो-
 ऽस्मिन् । पण्डरः । तद्योगात् पण्डरी । पटी ॥ पुष्कली । वनस्पतिः ॥
 लवणी । ओषधिः । समुद्रपार्श्वस्त्रोतो यत्र ब्रह्मनानि स्थाप्यन्त इत्येके ॥
 लवणा यवागूरिति गुणशब्दोऽजातौ द्रष्टव्यः ॥ पिङ्गली । पिशङ्गी ॥ मुसली ।
 ओषधिः ॥ विभीतकी ॥ नन्दति । ऋद्धिं यातीति नन्दी । प्रज्ञाद्यणि । नान्दी ॥
 पण्डरपिङ्गलनन्दानामजातित्वात् । अन्येषां तु स्त्रीविषयत्वाद्प्राप्ते ॥
 आकृतिगणोऽयम् । तेन देवदाली पटोलीत्यादयो द्रष्टव्याः ॥ ५१ ॥

इति गौरादिः ॥

शोणोऽथभरुजस्तूपकमलौ विकटाहनी ।

चान्द्रभागा भवेन्नद्यां तयर्थशून्यादिकारतः ॥५२॥

शोणादयः शब्दाः शोणादिरित्यनेन(१) ङीप्रत्ययभाजो वा भवन्ति ॥
 शोणी । शोणा । रक्तवर्णयुक्ता ॥ कश्चित्संज्ञायामपि शोणी शोणा वडवेन्द्रि-
 भरुजी । भरुजा । स्नेहभृष्टाः किल तरुडुलाः ॥ तूणी । तूणा । तूणीमुखो-
 दृतशरेणविशीर्णप्रप्लि । वीणा धिषणा तूणा स्थूणेत्यादि ॥ कमली । कमला
 नाम काचित् ॥ विकटी । विकटा । रचना ॥ दीर्घाङ्गी । दीर्घाहा शरत् ॥
 अहन्शब्दः केवलः स्त्रियां न सम्भवति नित्यं नपुंसकलिङ्गत्वात् । अतस्त-
 दन्त उदाहृतः ॥ अङ्गी । अहा । इति कश्चित् केवलस्य स्त्रियामुदाहरति ॥
 चान्द्रभागी वनराजिः । चान्द्रभागा नदी । टिह्णाणजित्यादिना ङीप्राप्तः स
 शोणमदिपाठान्द्यं निषिध्यान्यत्र विधीयत इतिविकल्पार्थः ॥ चन्द्रभागा
 नद्यामिति केचिदाहुः । यद्रूच्छया चन्द्रभागी चन्द्रभागा काचित् । नदी तु
 चन्द्रभागेति मतद्वयं वामनाचार्य्यस्य ॥ पाणिनिशकटाङ्गौ तु चन्द्रभाग इव
 भागो यस्याश्चन्द्रभागी चन्द्रभागा नाम नदी । अन्यत्र चन्द्रभागा नाम
 देवता स्त्री वा काचिदित्याहुः ॥ केचित्तु चन्द्रभागो नाम पर्वतः । ततः
 प्रभवतीत्यणि । चान्द्रभागी चान्द्रभागा नदी । चान्द्रभाग्यन्येत्युदाहरन्ति ॥
 भोजस्तु चान्द्रभागादनद्यामिति सूत्रं पपाठ ॥ त्वर्थशून्यादिकारतः । त्व-
 कणाविति क्तिप्रत्ययो भावाकर्त्रोर्विहितस्तदन्तस्तदर्थप्रत्ययान्तो वा यो न
 भवति । ततोऽनेन ङी विकल्पितः । अशनिः । अशनी ॥ शक्तिः । शक्ती ।
 शस्त्रम् ॥ आत्मम्भरिः । आत्मम्भरी । त्वर्थशून्यादिति किम् । शक्तिः सा-
 मर्थ्यम् ॥ कश्चिदस्मादपि ङी मन्यते । अहरणिः । कां त्वं कारिसकार्पीः ॥५२॥

चण्डः पद्धतिकल्याणपुराणकृपणध्वजाः ।

विशालारालमूपा हन्वहूदारविशङ्कटाः ॥५३॥

चण्डी । चण्डी । परुपा ।

सा किलाश्वसिता चण्डी भर्त्रा तत्संश्रुती वरी ॥

चण्डारालशब्दयोगैरादिलक्षणो ङीप्रत्यये सिद्धे बह्वादी पाठः सङ्ज्ञायां
 विकल्पार्थे इति शाकटायनः ॥ पादयोर्हतिः । पद्धतिः । पद्धती । त्वर्थः-
 पाठः ॥ कल्याणी । कल्याणः कथा ॥ पुराणी । पुराणा छाया ॥ कृपणी ।

(१) शोणारमाशामिति सूत्रं बह्वादिष्वेषान्तभूतं क्रियत इत्यनुमीयते ॥

कपशा नाम काचित् ॥ ध्वजी । ध्वजा । पताका ॥ विशाली । विशाला
स्तीर्तिः ॥ अराली । अराला । भूमिः ॥ मूषी । मूषा । सुवर्णाद्यावर्त्तनस्थानं
प्राणिविशेषो वा ॥ वृत्रघ्नी । वृत्रहा ॥ बह्वी । बहुर्नाम काचित् । गुणवच-
नादुक्तो वाऽखरोरित्यनेन गुणवचनाद्विकल्पः सिद्ध एव ॥ उदारी । उदारा
सूक्तिः ॥ विशङ्कटी । विशङ्कटा बुद्धिः ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन सुन्दरक-
न्दरादयो द्रष्टव्याः ॥ ५३ ॥ इति शोणादिः ॥

कुण्डः पात्रेऽकृत्रिमार्थे स्थलं च, भाजः पक्वे कामुकः स्याद्विरंसौ ।
नागः स्थूले कृष्णवर्णे च कालो, धान्याधारे सम्मतो गोणशब्दः ॥ ५४ ॥

कुण्डादयः शब्दाः पात्रादावर्थे पात्राद्ये कुण्डादेरित्यनेन ङीप्रत्ययान्ता
भवन्ति । पात्रे कुण्डी । कुण्डाऽन्या ॥ दाहक्रियैव तत्सम्बन्धादन्यद्वा तयोच्यते ।
यस्तु द्रव्यवचनः कुण्डशब्दः स नित्यं नपुंसक एव वर्त्तत इति न प्रत्युदाहर्तुं
युक्तः ॥ अकृत्रिमार्थे स्थली । स्थलाऽन्या ॥ पुरुषप्रयत्ननिष्पाद्या वेदिका इत्य-
न्ये ॥ पक्वेऽर्थे भाजी । भिक्षायामित्यन्यः । भाजाऽन्या । वक्रयष्टिः ॥ मैथुनेच्छौ
नायिकायां कामुकी । कामुकाऽन्या । धनाद्यभिलाषुका ॥ स्थूलेऽर्थे नागी ।
नागाऽन्या । दीर्घादिगुणयुक्ता सञ्ज्ञा वा काचित् । क्षयविशेष इत्यन्ये ॥ ह-
स्तिसर्पजातिवाचिनस्तु ङी भवत्येव । प्रत्युदाहरणं गुणवचनस्य ॥ कृष्णवर्णेऽर्थे
काली । छाया बलान्याशु ततान काली ॥ कालाऽन्या । धमनी ॥ रत्नमतिस्तु
कालशब्दस्य सञ्ज्ञावाचिनो ङी । न तु कृष्णवर्णवाचकस्य कृष्णत्वाव्यभिचा-
रादित्याह ॥ धान्याधारे गोणी । यस्याश्छाटीति प्रसिद्धिः । यथा-

गोणीं जनेन स्म निधातुमुद्गतामनुक्षणं नोक्षतरः प्रतीच्छति ।

गोणाऽन्या । वृणविशेषः ॥ ५४ ॥

कुशी लोहविकारे स्याद् घटः कुम्भश्च मृन्मये ।

कवरः केशविन्यासे नीलश्रौषधिदेहिनोः ॥ ५५ ॥

अयोविकारे कुशी । कृण्युपकरणम् । न सामान्येनायोविकारः ॥ कुशा-
ऽन्या । अलोहविकाराकृतिरेव काष्ठादिमयी ॥ भग्नस्याक्षय्य प्रतिष्ठम् इत्यन्ये ।
अपरे तु वल्लेति द्रुवते ॥ मृन्मये पात्रे । घटी ॥ घटाऽन्या । गजघटा । करि-
घटा ॥ कुम्भी । तैलादिस्थानं रत्नभाधारो वा । कुम्भान्या ॥ केशरचनार्थां
कवरी । वेणी । कवराऽन्या । वर्णविशेषोपेता । व्याकीर्णमाल्यकवरां कवरीं

तरुण्याः ॥ ओषधी प्राणिनि च । नीली—ओषधिः । नीली बहवा ॥ अन्यत्र । नीला शाटी ॥५५॥

सूचस्तीक्ष्णो भाजने पात्रपारौ, स्थालः कुम्भ्यां रेवती रोहिणीभे ।
जेयस्तालो लोहमय्यां विपञ्चः, स्याद्दीपायां लोकवृन्दे च गोष्ठः ॥६॥

तीक्ष्णाग्रा सूधी । सूचाऽन्या ॥ भाजने पात्री । काष्ठपात्री ॥ अन्यत्र ।
पात्रनियं ब्राह्मणी । पात्रं तपस्विसंहतिः ॥ पारी । गोदोहनी । यथा—
‘प्रीत्या विमुक्तांल्लिहतीः स्तनन्धयान्, निगृह्य पारीमुभयेन जानुन्धोः ।
वर्षिष्णुधाराध्वनिरोहिणीः पञ्चश्चिं निदध्या दुहतः स गोदुहः ॥
पाराऽन्या ॥ पिठरिकायां स्थाली । स्थालाऽन्या ॥ नक्षत्रे रेवती, रोहिणी ।
रेवता रोहिणान्या ॥ ननु कथं रेवती कन्या । रोहिणी कन्येति नक्ष्याभ्यां नक्षत्रं
वाच्यम् । सत्यम् । रै विद्यते यस्याः । निपातनादेत्वे कृते । रेवती ॥ रोहितस्य
रोहिणी ॥ रेवतरोहिणशब्दौ च नक्षत्रवाचिनौ प्रातिपदिकौ । पञ्चरोहियो
रेवत्यो वा देवता यस्य । पञ्चरोहिणः पञ्चरेवत इत्यादिप्रयोगदर्शनाद्विशेषो
द्रष्टव्यः ॥ लोहविकारे ताली लोकप्रसिद्धा । तालाऽन्या ॥ वीणायां विपञ्ची ।
विपञ्चाऽन्या ॥ लोकवृन्दे गोष्ठी । समानजातीयो जनसमुदायः । यथा—
गोष्ठेषु गोष्ठीकृतमखलासनान् ॥ गोष्ठाऽन्या । भूर्यत्र गावस्तिष्ठन्ति ॥५६॥

श्लेषद्रव्ये खलो लक्ष्यो विदारशठमोषधौ ।

दूतः सन्देशहारिण्यां कुट्टिन्यां शम्भलो बुधैः ॥ ५७ ॥

श्लेषद्रव्ये खली । खलाऽन्या ॥ विदारी । शठी । ओषधिः ॥ विदारा ।
शठाऽन्या ॥ दूती सन्देशहारिका । दूताऽन्या । यथा—

कृमपुष्पशयनाल्लतागृहानेत्य दूतिकृतमार्गदर्शनः ।

इत्यादि लक्ष्यदर्शनादिकारान्तोऽप्यनुमीयते ॥ शम्भं श्रेयोयुक्तं लालि
गृह्णातीति वा । शम्भली । कुट्टिनी ॥ यामनस्तु दूत्यां शम्भलीत्याह । न तद्-
स्मन्मनोरञ्जकं लक्ष्येष्वदर्शनात् ॥ शम्भलाऽन्या । देशविभक्तिः ॥

कश्चिश्शम्भलविदारशब्दौ गौरादावाह । कश्चिन्नायिकायां सुन्दरी । अ-
न्यत्र सुन्दरास्य बुद्धिरित्युवाच । तत्र समीचीनं गौरादावस्य दर्शनात् । अयं
चास्माभिर्लक्षपानुसारेण तत्रैव व्याख्यातः ॥ ५७ ॥

[मातङ्गानां स्नेहपानप्रकारे—

पीनः शालो बह्वभाया भगिन्याम् ।

फालः खण्डेऽथो खनित्रे कशश्च—

ज्ञेयः श्रोण्यां बुद्धिमद्भिः कटश्च ॥ ५८ ॥]

पीनी हस्तिनां स्नेहपानप्रकारः । पीनाऽन्या ॥ शाली कलत्रस्वसा ।
शालाऽन्या ॥ फाली खण्डम् । यथा—

कर्पूरस्फारफालीकलितकिसलयस्त्रस्तरीट्टामलीला ।

फालाऽन्या ॥ खनित्रे कशी । कशाऽन्या । अश्वताडनहेतुश्चर्ममयी यष्टिः ॥
श्रोण्यां कटी । कटाऽन्या । व्यवस्थास्थित्युपाश्रितिर्वा ॥

आकृतिगर्णाऽयम् । तेन । एषणी । नाराची वैद्यशलाका वा । एष-
णाऽन्या । इत्यादयोऽर्थाविभागेन ज्ञेयाः ॥ ५८ ॥ इतिकुण्डादिपात्रादी ॥

लोहितश्रुवकतालिंगुकक्षा बभ्रुवल्गुमनुसूनुतलुक्षाः ।

तण्डमण्डुकपिकन्धकवृक्षा मन्तुतन्तुतनुमङ्क्षुतरुक्षाः ॥ ५९ ॥

यज्ञलोहितादिशकलान्तयज्ञकौरव्यासुरिभारहूकाड्यायन् इत्यनेन स्त्रियां
नित्यं ङी भवति डायनादेशश्च ॥ लौहित्यायनी ॥ श्रौव्यायणी ॥ कात्यायनी ॥
आलिगव्यायनी ॥ काक्ष्यायणी ॥ वाभ्रव्यायणी । कौशिकी तु वाभ्रवी वाभ्र-
व्यायणी ॥ गर्गादौ तु बभ्रुः कौशिक इति पाठादिति नः सम्मतम् । वाम-
नस्तु बभ्रुपाठं मन्यते । कपिशब्दस्य च ॥ वासगव्यायनी ॥ मानव्यायनी ॥
सौनव्यायनी ॥ तालुव्यायणी ॥ तारव्यायनी ॥ मारव्यायनी ॥ काप्यायनी ।
आङ्गिरसी तु कापी काप्यायनी ॥ कान्यव्यायनी ॥ वाह्यायणी ॥ मान्तव्या-
यनी ॥ तान्तव्यायनी ॥ तानव्यायनी ॥ माङ्क्षुव्यायणी ॥ तारुव्यायणी ॥ ५९ ॥

गुहलुः संशितः शङ्कुमनार्यालिगुसम्भवः ।

वंतण्डः शकलो मङ्खुलतुः अङ्गजिगीषवः ॥ ६० ॥

गौहलव्यायनी ॥ सांशित्यायनी ॥ शाङ्कव्यायनी ॥ मानाव्यायनी ॥
लैवव्यायनी ॥ साम्बव्यायनी ॥ अनाङ्गिरसी तु वातण्ड्यायनी । शिवादिपाठात्
वातण्डी । आङ्गिरसी तु वतण्डी । अस्त्रीयपङ्ककणपेर्णपुष्पफलमूलवाला-
न्ताज्जातेरित्यनेन ङीप्रत्ययः ॥ शाकल्यायनी ॥ माङ्खुव्यायनी ॥ लातव्यायनी ॥
आह्यायणी । रौक्ष्यायणीत्युच्यः ॥ जैगीषव्यायणी ॥ ६० ॥ इति लोहितादिः ॥

यच्छब्दो मेनका चात्र दण्डकापिप्पकेष्टकाः ।

रेवकाधारका चैव हारकादेवकैरकाः ॥६१॥

यदादय एडकान्ताः ख्यातोऽयदाम् इत्यनेनाकारस्यैत्वं यत्प्राप्तं यदा
दिपर्युदासात् तद्भाषो न भवन्ति ॥ यका ॥ मनिपचिसचां नाम्नीत्यनेनाका
रस्यैत्वे । मेनका । अप्सराः ॥ दण्डका । अरण्यम् ॥

वर्षाणि तिष्ठतु चतुर्दश दण्डकायाम् ॥

प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेषु सञ्चिन्त्यमानानि सुखीषभूवुः ॥

इति रघुकाव्ये चिन्त्यम् ॥ पिप्पका ॥ इष्यते काम्यते प्राप्तादादिषु या सा ।
इष्टका मृद्विकारः ॥ रेवा नदी । ततः सञ्जायां के । कुत्सादी वा । रेवका ॥
धारयतीति धारका ॥ द्वारप्रकारा । द्वारका नगरी ॥ यथा धनञ्जयस्य—

चलत्पताकामुद्बद्धतोरणां तावविक्षताम् ।

द्वारकां गोपुरद्वारैः किष्किन्धनगरीमिव ॥

देवकाः । अप्सराः ॥ एरका । उदकवृणजातिः ॥ ६१ ॥

क्षिपका ध्रुवका चरका तत्सेवकया करकाचटके स्तः ।

अवकालहके अलका स्यात् कन्यकया ध्रुवकैडकया च ॥६२॥

क्षिपतीति क्षिपका । आयुधम् ॥ अथवा । अज्ञाता क्षिप । क्षिप-
का ॥ धू विधूनने । ध्रुवतीति ध्रुवका । आवपनविशेषः ॥ अथवा । अज्ञाता
ध्रुवा । ध्रुवका ॥ चरका ॥ सका ॥ सेवा मक्तिः । कुत्सिता वा सेवा । सेव-
का ॥ करका । वर्षोपलः—

तान्कुर्वीथास्तुमुलकरकावृष्टिहासावकीर्णान् ।

केचित्तु करकशब्दं पुंस्याहुः । कमण्डली च करक इति ॥ चटका ॥
अवतीति । अवका । शैवलम् ॥ लहका ॥ अलका । नगरी ॥ कन्यका ।

सवर्णकन्यका रूपयौवनारम्भशालिनी ॥

ध्रुवतीति ध्रुवका । आवपनविशेषः ॥ अथवा । कुत्सिता ध्रुवा । ध्रुवका ॥
एडका । अविजातिः ॥ वेगयतीच्छन्दः । त्रिसफारपरं गुरुकं चेद्वेगयतीति च
भादय भौ गौ ॥ आरुन्तिगणोयम् । तेन यथा दर्शनमन्येऽपि भवन्तीति ॥६२॥

इति यदादिः ॥

इति श्रीगोविन्दमृत्तिशिष्यपण्डितश्रीवर्द्धमानविरचितस्त्रीय-

गणरत्नमहोदधियन्यवृत्ती प्रथमो नामाध्यायः समाप्तः ॥

अथ द्वितीयोध्यायः ॥

अर्धर्चध्वजकुञ्जशीधुमधवो वर्चस्कूर्चाढकाः—

पङ्कानीकपिनाकनिष्ककपटाष्टङ्कः किरीटः कुटः ।

कूटः कङ्कटकर्वटाण्डशकटा वल्मीकसानू नटः—

खण्डोद्योगविडङ्गशृङ्गसरकाः पुङ्खव्रजौ मोदकः ॥६३॥

एतेऽर्धर्चादयः शब्दाः पुंसि नपुंके साधवो भवन्ति ॥ अर्धश्चासौ । ऋक् च ।

अर्धर्चः । अर्धर्चम् ॥ ध्वजं पताका ॥ कुञ्जो वनषण्डो हस्तिदन्तश्च । यथा—

अथोष्णभासेव सुमेरुकुञ्जान् विहीयमानानुदयाय तेन ॥

निकुञ्जोऽपि ॥ शेते सुह्यत्यनेनास्मिन् वा हिताहितप्रतिपत्तिरिति शीधुर्मद्यम् ।

सन्नोज्जगन्धं सहकारभङ्गं पुराणशीधुं नवपाटलं च ॥

सधुर्द्राक्षादिमद्यम् ।

विभ्रतौ सधुरतासधिपात्रं रागिभिर्युगपदेव पपाते ।

आननैर्मधुरसौ विकसद्भिर्नासिकाभिरसितोत्पलगन्धः ॥

वर्चस्कं शकत् ॥ कूर्चो दीर्घप्रसश्रु ॥ आढकं सानविशेषः ॥ पङ्कं कर्द-

सः । यथा—

पुरोगैः कलुषास्तस्य सहप्रस्थायिभिः कृशाः ।

पञ्चात्रयायिभिः पङ्काश्चक्रिरे मार्गनिन्नगाः ॥

अनीकं सैन्यं सङ्गामश्च ॥ पिनाको रुद्रधनुः । त्रिशूलं च ॥ निष्क आभ-

रणम् । कण्ठे निष्क इवार्पितः ॥ कपटं व्याजः ॥ टङ्कः पाषाणच्छेदनः ॥

किरीटो सुकुटम् ॥ कुटं घटः ॥ हलाङ्गविशेषश्च ॥ कूटम् । सङ्घातो माया

निञ्चलो मृगादिवधार्यं खलं कैतवम् अयोधनः शैलशृङ्गं सीराङ्गं च ॥ कङ्कटं

सन्नाहः ॥ कर्वटः । नद्यद्रिवेष्टितं खेटं कर्वटं शैलवेष्टितम् ॥

दुर्गस्तु कर्पटम् अल्पोपकरणस्थानमित्याह ॥ अण्डं पत्न्यादिप्रसवः ॥

शकटो गन्त्री ॥ वल्मीको वासलूरः ॥ सानु प्रस्थम् । सानूनि गन्धः सुरभी-

करोति ॥ नटो नर्तनविशेषः (१) । आनट इति शाकटोयनः ॥ खण्ड इत्यु-

विकारविशेषः शकलं च । यथा—

(१) नर्तकविशेष इति प० । एतदेव साधुभाति ।

जनस्य नूनं परिपूरणाय ताराः स्फुरन्ति प्रतिमानखण्डाः ॥
 खण्डनक्रियावाचिनस्तु वाच्यलिङ्गतैव । खण्डी घटी । खण्डो घटः ।
 खण्डं कुलम् ॥ चद्योग उत्साहः ॥ विडङ्ग औषधम् ॥ शृङ्गो विषाणाम् ॥ सरकं
 नद्यम् ॥ पुङ्खः शराङ्गम् ॥ ब्रजं पुञ्जः ॥ मोदकं भक्ष्यविशेषः ॥ ६३ ॥

शाको मस्तककल्कशूकनिकटाः शुल्कं निदाघो नखो-
 बाणद्रोणसुवर्णभूपणस्याः कार्षापणस्तोरणः ।

काण्डस्ताण्डवदण्डमण्डपिटकाः सक्तुस्तडागव्रणौ-

पटौ मश्वकवारबाणचरणां वस्त्राम्बरैरावताः ॥६४॥

शाकं भक्ष्यविशेषः ॥ मस्तको मूर्ध्ना ॥ कल्कम् । औषधानां निर्यासी दम्भः
 पातकं च ॥ शूकं धान्यादेः सूची । वृश्चिकादेः कण्टकोऽपि ॥ निकटः समीपम् ॥
 शुल्को मण्डपिकायाम्नायस्थानं स्त्रीधनं च ॥ निदाघं ग्रीष्मः ॥ नखं पाण्डिजः ।
 यथा रुद्रस्य त्रैलोक्यसुन्दर्या हस्तिवर्णने । ज्योत्स्नाजनितदन्तवेदनाशङ्कया
 प्रसादनार्थं पादलग्नानि चन्द्रमण्डलानीवोज्ज्वलानि नखानि धारयन्तम् ॥
 बाणं शरः ॥ द्रोणं चतुराढकोऽष्टाढको वा देशभेदात् ॥ सुवर्णं कनकम् ॥
 दुर्गस्तु स्त्रीनरङ्घ्रिङ्ग इत्याह । सुवर्णं इति शाकटायनः ॥ भूषणं अलङ्कारः ॥
 रणन्ति दुन्दुभयोऽन्तेति रणम् । यथा-रणे रभसनिर्भिन्नद्विपपाटविकासिनि ॥
 रभसेन निर्भिन्ना द्विपपाटविकानामसयो यत्र तदित्यर्थः ॥ कार्षापणं हिर-
 श्यप्रमाणम् । अणप्रत्ययं विनापि पुनपुंसकवाचीत्यर्थः ॥ तोरणं मन्दनमाला ॥
 काण्डः शरो नालं वर्गं वारि कुत्सितं च ॥ ताण्डवम् । चतुतनृत्तं तृणविशे-
 पश्च ॥ दण्डं यष्टिश्चतुर्थोर्पायो दमो मन्याश्च ॥ मण्डं सर्वरसानां द्रवद्रव्याणां
 सुगन्धम् ॥ पिटकं गण्डोलफः । विस्फोटवाची(१) तु त्रिलिङ्गः ॥ सक्तु यवा-
 दिविकारः ॥ तडागः सरः ॥ व्रणं क्षतम् ।

विपक्षचित्तोन्मथना नखव्रणान्तिरोहिता विभ्रममण्डनेन ये ॥

समाप्ते तु पुल्लिङ्गो यथा नाहीवृणः ॥ पेटं संहतिः परिच्छदश्च ॥ मञ्चकं
 शयनविशेषः ॥ धारम् आच्छादकं वानमस्य शयनग्न्यादेः प्राग्बदित्यनेन
 शब्दे । धारवाणं कञ्जुकुः ॥ बाणं धारणस्य(२) व्यत्ययो मयूरव्यंसकादित्वादिति
 श्रीभोजः ॥ चरणं पादः । यथा-

(१) विस्फोटकवाचीति पा० । (२) धारणं वाणस्येति पा० ।

स्खलति चरणं भूमौ न्यस्तं न चार्द्रतरा मही-
स्फुरति च तथा वामो बाहुस्तनुश्च विकम्पते ।
शकुनिरहितश्चायं तारं विरीति हि नैकशः-
कथयति महाघोरं वृत्तं न चात्र विचारणा ॥

वस्त्रो वासः ॥ अस्वरो वस्त्रम् ॥ ऐरावतम् । इन्द्रगजः ॥६४॥

चरकमठविटङ्कक्षवेडिता भूतवृत्त-

प्रयुतघृतवसन्ता हस्तबुस्तापराह्लाः ।

पलितफलककण्वा नामकर्माभिधाना-

ऽयुतशंतृणनीडा यौवनोद्यानधानाः ॥६५॥

चरकं शास्त्रविशेषः ॥ मठं व्रतिनां स्थानम् ॥ विटङ्कं कपोतपाली ॥
क्षवेडितो मुखध्वनितभेदः ॥ भूतः पिशाचः ॥ वृत्तः शीलम् ॥ प्रयुतम् ।
दश लक्षाः ॥ घृतः । आज्यम् ॥ वसन्तम् । ऋतुविशेषः ॥ हस्तं पाणिः ॥ बुस्तं
मांसशष्कुली ॥ अपराह्णं दिवसापरार्धभागः ॥ पलितः । पाण्डुराः केशाः ॥
फलकः खेटकम् ॥ कण्वं पापम् ॥ नासा ॥ अयं कर्तुं ॥ अभिधानं नाम श-
ब्दश्च ॥ अयुतम् । दश सहस्राणि ॥ शतः । सङ्ख्याविशेषः ॥ तृणः शष्पः ॥
नीडः कुलायः ॥ यौवनो द्वितीयं वयः ॥ उद्यान आरामः ॥ यानो वाहनम् ॥६५॥

तीर्थप्रोथौ नलिनपुलिनस्तेनयोधौषधानि-

स्थानं शूर्पं निधनशयनद्वीपपुच्छायुधानि ।

यूथं गूथं कुणपकुतपक्षेमवर्णासनानि-

छत्राकाशप्रतिसरमुखीष्ठापदारण्यवर्षाः ॥६६॥

तीर्थः पुरयस्थानम् ॥ प्रोथोऽश्वदीनां नासा ॥ नलिनः कमलम् ॥
पुलिनः सैकतम् ॥ स्तेनं चौर्यं चोरश्च ॥ योधं सुभटः । यथा सूर्याचार्याणाम् ।
योधैर्योधानि हन्यन्ते क्रोधान्यैः सिन्धुरैर्गजाः ।

न गणयते स्वपक्षोपि धिक् क्रोधमसमञ्जसम् ॥

श्रीषधो भेषजम् ॥ स्थानम् । आधारः ॥ शूर्पं मानविशेषः ॥ निधनो
मृत्युः ॥ शयनः शय्या ॥ द्वीपम् । अन्तरीपः ॥ पुच्छं लाङ्गूलम् ॥ आयुधो
हेतिः ॥ यूथः पशुसमूहः । द्वयोर्यूथयोः समाहार इति विग्रहे द्वियूथमित्यपि

शाकटायनः ॥ गूथो विष्टा ॥ कुणपं शवः ॥ कुं तपति सूर्योऽत्रेति कुतपः
आहुकालः । यस्मृतिः—

दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करः ।

स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम् ॥

यद्वा छागरोममयो वस्त्रविशेषः ॥ क्षेमः—कुशलम् ॥ वर्णम् । अक्षरम् ।

शुक्लादिद्विजादिश्रुतिवाची तु पुल्लिङ्गः ॥ आसनः पीठम् ॥ आचर्या ।
असनं वृक्षविशेषः ॥ छत्र आतपत्रम् ॥ आकाशो नभः ॥ प्रतिसरः । कङ्कणं
चाहिनीजघनं च ॥ मुखो वदनम् ॥ अष्टसु लोहेषु पदं प्रतिष्ठाऽस्येति सञ्ज्ञा-
यामष्ट इत्यनेनात्वे । अष्टौ पदान्यत्र । अष्टापदं शारीफलम् । अष्टापदः
सुवर्णम् ॥ अरण्यः । अटवी ॥ वर्षं वृष्टिः संवत्सरश्च । व्यथा—पुष्पवर्षं इव
सौक्तिकवर्षः ॥६६॥

कमण्डलुर्मण्डपकुट्टिमारुदाऽवतंसपाराः शतमानचन्दनौ ।

समानयूपौ दृढमूपिकौदना,दिनं विमानं च वितानलोहितौ ॥६७॥

कमण्डलुः करकं कुण्डिका च ॥ मण्डपं जनाश्रयः ॥ कुट्टेन निर्वृत्तः ।

घणव्भावादिम(१) इत्यनेन । इमप्रत्यये । कुट्टिनो बहुभूमिकम् ॥ अर्बुदो दश-
कोटिरक्षजो व्याधिश्च । पर्वते तु पुल्लिङ्गः ॥ अवतंसं शेखरम् ॥ पारः पर-
तीरम् ॥ शतं मानानामस्य । शतमानो भूभागविशेषः ॥ यद्वा । शतमानं
रूप्यपलम् ॥ यस्मृतिः—

द्वे कृष्णले रूप्यमाणो धरणं षोडशैव ते । शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ॥

चन्दनौ मलयजम् । समानः सदृशम् ॥ यूपो मुद्गनिर्यासः ॥ दृढोऽधि-
नष्टम् ॥ मूपिकम् । आसुः ॥ उद्यते मिश्रयते व्यञ्जनैरिति । औदनम् ॥
दिनो वासरः ॥ विमानो देवतायानं सप्तभूमिकगृहं च ॥ वितानो याग उल्लेची
धिस्तारश्च । तुच्छवाची तु त्रिलिङ्गः ॥ लोहितः शोणितम् । गुणवचनस्तु
वाच्यलिङ्गः । लोहितो गौः । लोहिता शाटी । लोहितं वस्त्रम् ॥ ६७ ॥

अंसर्जीरकपायविम्बविटपा नेत्राव्ययौ शेखरः,

केदाराश्रमशूल्यशूलबलया वालस्तमालो मलः ।

(१) भागप्रत्ययान्तादिप्रत्यय इत्यस्य वार्तिकस्यैव पाठान्तरमिदं विज्ञे-
यमिति भी० श० ।

गुल्माङ्गारविहारतोमररसाः पात्रं पवित्रं पुरं,

मध्यं बुधमृणालमण्डलनला नालप्रवालोत्पलाः ॥६८॥

अस्यते भारेण । असं स्कन्धः ॥ क्षीरं पयः ॥ कषायं तुवराख्यो रसो
निर्यासरागविशेषौ च ॥ बिम्बो मण्डलम् आकृतिश्च ॥ विटपं स्तम्भः । स्क-
न्धादूर्ध्वं तरीः शाखा ॥ नेत्रो नयनं परिधानपरिमाणविशेषौ च ॥ अव्ययम् ।
अलिङ्गसंख्यम् ॥ शेखरम् । आपीडः ॥ क्लिद्यति । आर्द्रीभवति पाकार्थं जले-
नेति केदारम् । क्षेत्रविशेषः ॥ आश्रमो मुनीनां स्थानम् ॥ शल्यं वंशादीनां
कीलविशेषः ॥ शूलं प्रहरणविशेषो रुजा च ॥ वलयो हस्ताभरणम् । यथा-
तनुत्वरमणीयस्य मध्यस्य च भुजस्य च । अभवन्नितरां तस्या वलयः कान्तिवृद्धये ॥

बालं शिशुः केशश्च ॥ तमालं वृक्षविशेषः ॥ मलः पापविट्किट्टानि ।

यथा सागरचन्द्रस्य—

मुष्णातु कल्मषमलानि मनोऽपकूलखेलन्मरालमिथुनात्तपनात्मजेव ॥

स्मृतौ तु । वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्रं विट्कर्णविगणखाः ।

श्लेष्माश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः ॥

गुल्मः प्रकाण्डम् । यद्वा । गुह्यन्ते व्याकुलीक्रियन्ते पथिकसार्थास्त-
स्मिन्निति गुल्मः । आयस्यानम् ॥ अङ्गति गच्छति निर्धूमकौलाग्नितामिति ।
अङ्गारो वह्निदग्धकाष्ठम् ॥ विहारं भिक्षुस्थानम् ॥ ताम्यन्ति काङ्क्षन्ति
तेनारीन् प्रहर्तुमिति तोमरं शर्बला ॥ रसम् । मधुरादिः शृङ्गारादिश्च विषं
वीर्यं रागश्च ॥ पात्रो भाजनम् । अत्रास्य पाठः प्रचुरप्रयोगापेक्षः ॥ पवित्रः
पावनम् ॥ पुरः पुरी ॥ मध्यः । उदरम् ।

आकर्षतेवोर्ध्वमपि क्रशीयानत्युन्नतत्वात् कुचमण्डलेन ।

ननाम मध्योऽतिगुरुत्वभाजां नितान्तमाक्रान्त इवाङ्गनानाम् ॥

बुधनम् अधोभागः ॥ मृणालो विसम् । मृणालीत्यपि द्रुश्यते महाक-
विलाक्ष्येषु ॥ विसाङ्गुर इत्यन्ये ॥ मण्डलो विम्बं भूभागविशेषश्च । यथा—

अयमनेन सहोदधिभोगिना वलयितो वसुधाफणमण्डलः ॥

* नलं शुषिरं(१) तृणम् ॥ नालः पुष्करादीनां दण्डः ॥ अमरमालायां तु
नालं नाला स्त्रियामिति स्त्रीलिङ्गोऽभिहितः ॥ प्रधोलं पल्लवो विद्रुमश्च ॥
उत्पलो जलजम् ॥६८॥

(१) सुषिरमिति पा० । ,

जृम्भो वज्रकबन्धकर्षककुदाश्वक्रान्धकाराङ्कुशा—

वक्तुं सङ्गमदेहदाडिमहिमाः पत्रं बलं वल्कलम् ।

कर्पासामिषकाशकोशकुसुमप्रथीवमासेक्कसा—

निर्यासः कलशाम्बरीषकलला माषः करीषं कुशः ॥६९॥

जृम्भो जृम्भणम् ॥ वज्रः कुलिशम् । यथा । वनस्पतिं वज्र इवावभज्य ॥ यथा
या । भिन्दानो हृदयमसाहि नोदवज्रः ॥ हीरकश्च ॥ कबन्धं रुण्डः । यथा—

साक्षांससं सक्तंसुराङ्गनः स्वं नृत्यत्कबन्धं ससरे ददर्श ॥

कर्षः पलचतुर्थभागः ॥ ककुदः । प्रधानं राजचिन्हं शङ्खं च ॥ चक्री
रथाङ्गम् ॥ अन्यकारस्तमः । यथा—प्रोषिताय्येक्षणं मेरोरन्धकारस्तटीनिव ॥

अङ्कुशः सृणिः । यथा—

प्रत्यन्यनागं चलितस्त्वरवता निरस्य कुण्ठं दधतान्यमङ्कुशम् ॥

वक्तो मुखं छन्दोजातिश्च ॥ वक्तृत्यपि शाकटायनः ॥ संगमं नद्यादि-
मेलः ॥ देहं शरीरम् ॥ दाडिमं फलविशेषः ॥ हन्ति हिनस्ति पद्मवनानीति
द्विमः । तुहिनम् ॥ पत्रं पर्णं वाहनं च ॥ बलं सामर्थ्यं सैन्यं च ॥ वल्कलं
तरुत्वक् ॥ कर्पासं तूलकारणम् ॥ आमिषो मांसम् ॥ काशं वृणभेदः ॥ कोशं
घनम् । अमरसिंहस्तु कोष इत्याह ॥ कुसुमः पुष्पम् ॥ प्रथीवं वातायनं
वास्तुनिमित्तधारणं च ॥ मासं त्रिंशदहीरात्रः ॥ इक्कसः । चिक्कसं यवपिष्टप-
र्यायम् अमरसिंहाद्याः ॥ निर्यासं वृक्षादेर्निस्यन्दः ॥ कलशं घटः । कलश-
स्त्रिष्वित्यमरसिंहः ॥ अमृत्तरीषं भ्राष्ट्रः । अमरसिंहस्तु क्लीबे ॥ कललं शुक्र-
शोणितपर्यायः ॥ माषं दशार्धगुञ्जी व्रीहिविशेषश्च ॥ करीषो गोमयाग्निः ।
शुष्कगोमयसङ्घात इत्येके ॥ कुशं दर्भः ॥६९॥

मुसलमुकुलमूलाः पार्श्वपात्रीवपूर्वाः—

कमलहलचपालाः खण्डलं कुण्डलं च ।

निगडफलपलाला मङ्गलं शालशीले—

विषचपकविशालाः पूलतैले कपालम् ॥७०॥

मुसलम् । आयुधविशेषः क्षौदनविशेषश्च ॥ मुकुलः कुङ्कुमलम् । यथा
विक्रमोर्वश्याम् ।

उष्णालुः शिशिरे निषीदति तरोमूलालवाले शिखी-

निर्भिद्योपरि कर्णकारमुकुलान्यध्यासते षट्पदाः ॥

मूलः । प्रतिष्ठा । आदिः । शिफा । नक्षत्रभेदश्च ॥ परशूनां समूहः ।
पाश्वर्यम् । कक्षयोरधः ॥ पात्रीवं यज्ञोपकरणम् ॥ पूर्वं रूढितोऽर्थोऽवगन्त-
व्यः ॥ दिक्कालयोगे त्वाश्रयलिङ्गः । पूर्वः पर्वतः । पूर्वा नदी । पूर्वं वनम् ॥
कमलंपद्मम् ॥ हलः सीरम् ॥ चषालं यज्ञपात्रम् ॥ खण्डलं खण्डम् ॥ कुण्डलः
कर्णवेष्टनम् ॥ निगडं पादबन्धः यथा कालिदासस्य—

मणिवन्धविगलितमिदं सङ्क्रान्तोशीरपरिमलं तस्याः ।

हृदयस्य निगडमिव मे मृणालवलयं स्थितं पुरतः ॥

फलं प्रयोजनं कुसुमादिसम्भवश्च ॥ पलालः । धान्यादेः शुष्कतृणम् ॥
मङ्गलः (१) प्रशस्तम् ॥ शालो वृक्षविशेषः ॥ शीलः । चरित्रम् ॥ विषः शृङ्गि-
कादिद्रव्यभेदः ॥ चषको मधुपानभाजनविशेषः । यथा—

अधिरजनि बधूभिः पीतमैर्यरित्तं, कनकचषकमेतद्रोचनालोहितेन ।

उदयदहिमरोचिर्ज्योतिषाक्रान्तमन्तर्मधुन इव तथैवापूर्णमद्यापि भाति ॥

विशालो विशङ्कटम् ॥ पूलं बहुवृणसञ्चयभेदः ॥ तैलुः । तिलादीनां
विकारः ॥ कपालः । शिरसोऽस्थि । घटादिखण्डोऽप्युपचारात् ॥७०॥

समरतिमिरवारा राजसूयोपवासौ-

चमसदिवसकंसा वाजपेयो हिरण्यम् ।

जठरदरशरीरारावकान्तारराष्ट्राः—

पटहृहकवाटाः कुकुटाद्रौ च धाम ॥ ७१ ॥

समरो रणम् ॥ तिमिरः । तमः ॥ वारं परिपाटिः ॥ राजसूयं क्रतुः ॥
उपवासं भोजनच्छेदः ॥ चमसं यज्ञपात्रविशेषः ॥ दिवसं दिनम् । यथा—
प्रविश्य हेमाद्रिगुहागृहान्तरं निनाय विभ्यद्विवसानि कौशिकः ॥

• कंसं परिमाणभेदः । लोहभेदो वा ॥ नृवाची तु पुल्लिङ्गः ॥ वरजपेयं
यागः ॥ हिरण्यो धनम् ॥ जठरम् । उदरम् ॥ दरं त्रासः श्वभ्रं च ॥ शरीरः
कायः ॥ आरावं शब्दः ॥ कान्तारो महारण्यं दुर्गपथश्च ॥ राष्ट्रम् । जनपद

उपद्रवश्च । पराद्राष्ट्रभयम् ॥ पटहं डिग्दिहमः ॥ गृहो वासः । गृहाः पुंसि
च भून्त्येवेति कश्चित् ॥ कं शिरः पाटयति प्रविशताम्(१) । जपादित्वात् ।
कवाटो द्वारपिधानम् ॥ कुक्कटं ताम्रचूडः । अमरसिंहस्तु कुक्कटः पुंस्त्वेवेत्या-
ह ॥ आर्द्रः शृङ्गवेरम् ॥ धाम्ना गृहं तेजश्च ॥७१॥

पद्मापाठकपित्थषष्टिककुलान्यम्भोजवाजामृताः—

स्थूलद्यूतखलीनलोहकवचाशोकक्षयानेकपाः ।

शङ्खस्तएडकधर्मचर्मरजतस्नेहासिंहंसापराः—

सारः सैन्धवमध्यमाध्वरधनुर्मानस्तनस्थाणवः ॥७२॥

पद्मो जलजम् । निधिवचनस्तु पुंस्त्रिङ्ग एव । यथा श्रीहर्षस्य ।

अच्छिन्नामृतविन्दुवृष्टिसदृशीं प्रीतिं दधत्या दृशां-

याताया विगलत्पयोधरपटाद्द्रष्टव्यतां कामपि ।

अस्याश्चन्द्रमसस्तनोरिव करस्पशोस्पदत्वङ्गता,

यन्नैते मुकुलीभवन्ति सहसा पद्मास्तदेवाद्भुतम् ॥

यथा वा कुमारिलस्य ।

सम्पिण्डवाङ्गावयवा उदीयुः पद्मा नवाः कण्टकितोर्ध्वदण्डाः ।

अन्तर्जलावासविवृद्धशीतत्रस्ता वसन्तातपकाश्चयेव ॥

आपाठम् । व्रतिनां दण्डं नासश्च ॥ कपित्थो वृक्षविशेषः ॥ षष्टिकं
त्रीहिभेदः ॥ कुलोऽभिजनी गृहं च ॥ अम्भोजः कमलम् ॥ वाजं पिच्छम् ॥
अमृतम् । सलिलं सुधा मेक्षो हृद्यं च ॥ स्थूलं दूढः ॥ द्यूतो दुरोदरम् ॥
खलीनं कविकम् । खलिर्नेति शाकटायनः ॥ लोहोऽयःप्रभृतिद्रव्यविशेषः ॥
कवचः सन्नाहः ॥ अशोकं तरुविशेषः ॥ क्षयं गृहम् ॥ अनेकपं हस्ती ॥ शङ्खं
कम्बुः । निधिललाटास्थिवचनस्तु पुंस्त्रिङ्ग एव ॥ तण्डकम् । छन्दोगयोग्यो
ब्राह्मणो ग्रन्थविशेषः परिष्कारो दण्डको वा ॥ धर्मोऽदृष्टार्थवाची । लत्साध-
नवाची तु नपुं कलिङ्गः । तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्(२) ॥ अमरसिंहस्तु।

(१) प्रविशतां कवाटो द्वारपट्टः जपादित्वाद्भुत्वम् । इति पाठ ।

(२) धारणाद्धर्मः । यागाङ्गे नपुंसकम् । तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥
फले तु पुमान् । एष धर्मः सनातनः । इति विशेषोऽस्य नेष्टः । लोकधर्मो
नात्यधर्मोति पारिभाषिकी धर्मो शब्दोऽप्यस्ति । इत्यधिकं क्वचित् ।

धर्ममस्त्रियामिति पठन् सामान्येनाह । धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसो-
मपा इति च(१) ॥ चर्माऽजिनम् ॥ रजतो रूप्यं श्वेतं च ॥ स्नेहं सौहृदम् ॥
असि खड्गः ॥ हंसं सितच्छदः ॥ अपरोऽपरमन्यत् ॥ सारो बलं चन्दनादि-
स्थिरांशञ्च । सारं न्यायादनपेतम्(२) । उक्कर्षवाचकस्तु त्रिलिङ्गः ॥ यत्तु जया-
दित्येनोक्तम् । उक्कर्षे सारशब्दः पुंलिङ्ग एवेति । तन्न समीचीनम् । सज्जा
सुतवती सारा दर्पिकाव्रतगर्धिनः ॥

तथा । जये धरित्र्याः पुरमेव सारम् । इत्यादि बहुतरलद्वयविरोधात् ॥
ननु वाच्यलिङ्गत्वोऽस्य । सारं सारङ्गलोचना ।

राज्ये सारं वसुधा वसुन्धरायां पुरं पुरे सौधम् ।

इत्यादौ कथं न विशेष्यपदलिङ्गपरिग्रहः । सत्यम् । सामान्यविशेषभावयो-
जनाया अङ्गीकृतत्वादिति न यथोक्तदोषप्रसङ्गः ॥ सैन्धवो लवणोत्तमम् । यौ-
गिकस्तु त्रिलिङ्गः । सैन्धवं वस्त्रम् । सैन्धवोऽश्वः । सैन्धवी शाटी ॥ मध्यमो
मध्यगं नातिप्रधानम् ॥ अध्वरं क्रतुः ॥ धनुः कीदण्डम् । यथा—

धनुर्वंशविशुद्धोऽपि निर्गुणः किं करिष्यति ॥

मानं दर्पः ॥ स्तनं पयोधरः ॥ स्याणुः कीलकः ॥ ७२ ॥

महिमनेत्रकपञ्चकदण्डकाः, क्रकचशम्बलकुण्डपकन्दराः ।

कटकमालकमर्मरदैवताः, शिखरकेशरदारुभगन्दराः ॥ ७३ ॥

महिम महत्त्वम् ॥ नेत्रकः शृङ्खलकम् ॥ पञ्चकः पञ्चकं विस्तारः ॥
दण्डकं छन्दोविशेषः ॥ क्रकचः करपत्रम् ॥ शम्बलं पाथेयम् ॥ कुण्डपं क्रतु-
विशेषः ॥ कन्दरं दरी ॥ कटकः सैन्यम् । यथा सागरचन्द्रस्य—

(१) पुण्यः । यागाद्यहिंसा वा ॥ यमो धर्मराजः । धर्मस्तु भीमवत् ॥ न्याये च ।
धर्माधिकारिणः ॥ स्वभावे यथा क्रूरधर्माः ॥ आचारे यथा धर्मशास्त्रम् ॥ सोमये
यथा । एष धर्मः सनातनः ॥ युधिष्ठिरपितापि तावदेव ॥ धर्मसाधने यागादौ
च क्लीवे । यच्छ्रुतिः—तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ इत्यधिकं क्वचित् ।

(२) बले यथा—सुसारः । घृतान्सांसन्तु सारकत् । स्थिरांशे—चन्दनसारो
नज्जासारः । न्याय्ये—नैतत्सारं चरेत् । जये धरित्र्याः पुरमेव सारम् ॥ इत्य-
धिकं क्वचित्पुस्तकान्तरे ॥ भी० श० ।

कटकः कण्टकान्यस्य दलयामास निर्दयम् ।

स हि न क्षमते किञ्चिद्बिन्दुनाप्यात्मनोऽधिकम् ॥

बलयं भूभृन्नितम्बश्च ॥ मालको ग्रामान्तरालाटवी ॥ मर्मरं शुष्कपत्र-

ध्वनिः ॥ दैवतो देवः ।

यथायं दारुणाचारः सर्वदैव विभाव्यते ।

तथा मन्ये दैवतोऽस्य पिशाचो राक्षसोऽथवा ॥

शिखरोऽग्रम् । यथा—

अगस्त्याज्ञासद्यःश्रनितविकलोच्छ्रायविषमान् ।

उदस्यन्तः सेतावलगितवतो विन्ध्यशिखरान् ॥

केशरः किञ्जल्कम् । यथा—

सम्पिण्डीकृतजीर्णजीरककणश्रेणीश्रियः केशरान्—

सन्नद्धे परितो निरन्तरदलद्रोणीनिवेशैस्त्रिभिः ॥

दारुः काष्ठम् । केचिद्दार्विंति नपुंसकमेवाहुः ॥ भगन्दरो रोगः ॥७३॥

दीपोद्यमब्रह्मपिधानभावा वास्तुव्रतार्थप्रवरापिधानाः ।

अर्मो मुहूर्त्तं धनवप्रसौधा रेणुस्तलं लोम पटो विहायः ॥७४॥

दीपं प्रकाशविशेषः ॥ उद्यमं उत्साहः । शाकटायनस्त्वस्मादेव पाठा-
दात्वे । उद्यामनित्याह ॥ ब्रह्म । प्रजापतिर्वेदाः शाश्वतं ज्ञानं तपश्च ॥

वेधसि पुंस्त्वमित्यन्यः ॥ पिधानः संवरणम् ॥ भावम् । स्वभावः शब्दविष-
योऽभिप्राय आत्मा योनिश्च ॥ वास्तुः । वैश्वभूगृहं च ॥ यतो ब्रह्मचर्यादि-

नियमः ॥ अर्द्धं समभागः । अर्धोऽसमभागः ॥ प्रघरः प्रकृष्टम् ॥ अपिधानः
स्यगनम् ॥ अन्नं चक्षुरोगविशेषः । अर्मन्निति दुर्गः ॥ मुहूर्त्तो द्वादश क्षणाः ॥

धनो वित्तम् ॥ वप्रं प्राकारः फेदारं तटं च । तत्र तटे—

यम्रेण पर्यन्तचरोद्बुचक्रः सुमेरुयप्रोऽन्वहमन्वकारि ॥

संध्या अर्कोपलोहसितवह्निभिरह्नि दीप्ता—

स्तीव्रं महाव्रणमिवास्य चरन्ति वप्राः ॥

सौधः सुधाधलितम् ॥ रेणुधूलिः ॥ तलोऽधो रूपं च ॥ लोमा
तनून्मृत् ॥ पटं यस्त्रविशेषः ॥ विहायः । आकाशम् ॥७४॥

उटजचापनपुंसकपातका भुवनकोटरपल्लवगोमयाः ।

अतिखरं हरिचन्दनमूलकौ भवनसंक्रमगाण्डिवपत्तनाः ॥७५॥

उटजः पर्णशाला ॥ चापो धनुः । यथा परिमलस्य-

विपक्षहृद्भङ्गकता नितान्तं भ्रूलेखया कुञ्चितयोत्तलसन्त्या ।

नाकारमात्रेण परंतपस्य यस्यान्वकारि क्रिययापि चापः ॥

नपुंसकं शरदः । स नपुंसकोऽभवदिति भाष्यकारवचनात्पुंस्यपि ॥

पातकः पापम् ॥ भवनो लोकः ॥ कोटरं निष्कुटः ॥ पल्लवं किशलयम् ।
यथा-

लोलौष्ठसौष्ट्रकमुदग्रमुखं तरुणाम् ।

अभ्रंलिहानि लिलिहे नवपल्लवानि ॥

गोमयः करीषः ॥ अतिखरम् । अर्थस्तु लोकाद्वसेयः ॥ हरिचन्दनम् ।

हरेरिन्द्रस्य चन्दनो हरिचन्दनः । स चातिपीतः शीतश्च देववृक्षश्च ॥ मूलकं
शाकविशेषः ॥ भवनो गृहम् ॥ सङ्क्रमः दुर्गसञ्चरः सेत्वादिः ॥ गाण्डिविद्यते
यस्य । गाण्ड्यजगात्सञ्ज्ञायामित्यनेन वप्रत्यये । गाण्डिवोऽर्जुनधनुः ॥
पत्तनोऽधिष्ठानम् ॥ ७५ ॥

कर्पूरकुर्पासकषट्युशीरा गाण्डीवनिष्ठेवसुपर्णभस्त्राः ।

पिण्याकपुस्तौ नखरेषुषण्डा वैनीतकं ह्रीपिनमारकूटम् ॥७६॥

कर्पूरं घनसारः ॥ कुर्परेऽस्यते । कुर्पासकः । स्त्रीणां कञ्चुकिकाख्यः ॥
षष्टिः सङ्ख्यावाची । अन्ये पुनः स्त्रियामेव मन्यन्ते ॥ उशीरो बालकम् ॥
गाण्डी विद्यते यस्य । गाण्ड्यजगात्सञ्ज्ञायामित्यनेन वप्रत्यये । गाण्डीवो-
ऽर्जुनधनुः ॥ निष्ठेवो निष्ठीवनम् ॥ सुपर्णं गरुडः ॥ भस्त्रम् ॥ पिण्याकः ।
सुगन्धिसल्लकीप्रभवधूपस्तिलकत्कं च ॥ पुस्तं लेप्यकर्म ॥ नखरं नखः ॥ इषु
शरः । स्त्रीपुंसयोरित्यन्ये ॥ षण्डः पद्मादीनां समुदायः ॥ वीट्टपरम्परया वा-
ह्ये यत्तद्विनीतानामिदम् । वैनीतकं यानम् ॥ ह्रीपिनं व्याघ्रः ॥ आरकूटं
पित्तलम् ॥ ७६ ॥

[मञ्जीरनूपुरशफाणुतरण्डमेढ्राः—

संसारचूर्णवतवासरजन्तुसत्त्वाः ।

कोलाहलः ककुभजानुभगाब्दवेषा—

वित्तस्वभूर्जलशुनाः शललं च गेहम् ॥७७॥]

मञ्जीरो हंसकम् ॥ नूपुरं तुलाकोटिः ॥ शफं खुरः ॥ अणुः सूक्ष्मपरि-
माणविशेषोऽन्नविशेषश्च ॥ तरण्डं ह्रवः ॥ मेढ्रं मेहनम् । यथा—ह्रस्वं वृत्तं मृदु-
स्थूलं मेढ्रं शस्तं महामुखम् ॥ संसारं जगत् ॥ चूर्णं क्षोदः ॥ घटं तुल्यता
गोलश्च ॥ वासरं दिनम् । यथा—

वासरणि कतिचित्कथञ्चन स्याणुना पदमकार्यत प्रिया ॥

जन्तुसत्त्वेति । जन्तौ प्राणिन्यभिधेये सत्त्वं पुंनपुंसकं भवति यथा—
अन्यान्विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान् ॥ जन्ताविति किम् । सत्त्वं द्रव्यं प्रकृतिगुणश्च ॥
कोलाहलम् । अव्यक्तो ध्वनिः ॥ ककुभो वीणावादनम् ॥ जानु । अष्टीयान् ।
यथा—जानुमस्य गृह्णीयात् ॥ भगं योनिः ॥ अब्दं संवत्सरः ॥ वेषो नेपथ्यम् ॥
वित्ते स्वम् । वित्ते वाच्ये स्वं पुंनपुंसकम् । स्वाः । स्वानि ॥ भूर्जो वृक्षवि-
शेषः ॥ लशुनः । रसोनः स्निग्धश्चीष्णश्च लशुनः कटुको गुरुः ॥ शललं सल्लक-
शूची ॥ गेहं वेश्म ॥ अरुणादत्ताभिप्रायेणैते दर्शिताः ॥ ७७ ॥

इत्यर्थर्चादिः ॥

राजदन्तार्पितोतावक्लिन्नपक्वपरःशतीः ।

नृवरोऽग्रेवणं भृष्टलुञ्चितो लिप्तवासितः ॥७८॥

राजदन्तादी समासे पूर्वनिपातो न भवति । दन्तानां राजा । राजदन्तः ।
प्रमुखदृश्यदन्तद्वयम् । अत्र षष्ठीत्यनेन(१) । यदा तु राजा च दन्तांश्चेति
समासान्तरं तदा न नियमः ॥ पूर्वसुतम् अतानवितानीकत्वं पश्चादपितम् ।
अर्पितोतम् । यथा—

ज्योत्स्नापटे तुहिनदीधितिनार्पितोते, द्यौरास नग्नमुपितेव हृतेऽरुणेन ।
व्योमोत्सगाढमिव भानुमरीचिसस्यं, विक्लिन्नपक्वफलानीफलवच्च वध्रे ॥

पूर्वं पक्वं पश्चादवक्लिन्नम् आर्द्रम् । अवक्लिन्नपक्वम् । अनयोरेकादिसू-
त्रेण ॥ शतात्परे । परःशताः । यथा—

(१) षष्ठीति सूत्रे षष्ठीति पदं प्रथमानिर्दिष्टत्वादुपसर्जनं तस्मात्तस्य पू-
र्यनिपाते प्राप्ते राजदन्तादित्वात्परनिपातः । १. भी० श० ।

स जवेन पतन्परःशतानां पततां ब्रात इवारवं वितेने ।
पृषोदरादित्वात्सकारागमः । अत्र पञ्चमीसूत्रेण(१) ॥ ना चासौ वरश्च । नृवरः ।
प्रधानपुरुषः ॥ वनस्याग्रे । अग्रेवणम् । अतएव पाठात्सप्तम्या अलुक् । अ-
म्भावश्चाव्ययीभावत्वात् ।

बहुधाभिन्नसर्माणो भीमाः खरणसादयः ।

अग्रेवणं वर्त्तमाने प्रतीच्यां चन्द्रमण्डले ॥

वनस्याग्रम् अग्रेवणमित्येके । निपातनासत्वम् । अत्र षष्ठीसूत्रेण ॥ पूर्वं
लुञ्जितम् अपनीतं पश्चाद्भृष्टं पक्वम् । भृष्टलुञ्जितम् । यथा—

यद्भृष्टलुञ्जितशशेव शशाङ्कपात्री ॥

पूर्वं वासितं भावितं पश्चात्क्षिप्तं दिग्धं लिप्तवासितम् । अनयोदेकादिसू-
त्रेण(२) । यथा—यत्क्षिप्तवासितमिव द्युसदोऽज्जवातैः ॥ ७८ ॥

उत्तगाढकुरुश्रेष्ठौ सिक्तसंमृष्टसंयुतौ ।

उत्तमर्षाधमर्षौ च परःसहस्र इत्यपि ॥७९॥

पूर्वं गाढम् अवलोडितं पश्चादुत्तम् उत्तगाढम् । अत्रैकादिसूत्रेण । यथा—
व्योमोत्तगाढमिव भानुमरीचिसस्यम् ॥

कुरुश्चासौ श्रेष्ठश्च । कुरुश्रेष्ठः ॥ पूर्वं संमृष्टं पश्चात्सिक्तम् । सिक्तसंमृष्टम् ॥
सिक्तसंमृष्टमित्यन्ये ॥ अत्रैकादिसूत्रेण । यथा—

यत्सिक्तमृष्टमसृष्टेव नभोऽङ्गणश्रीः ॥

ऋण उत्तमः । उत्तमर्णः ॥ ऋणेऽधमः । अधमर्णः । अत्र सप्तमीशौण्डैरि-
त्यनेन ॥ सहस्रात्परे । परःसहस्राः । अत्र पञ्चमीत्यनेन ॥ शतसहस्रावित्यु-
पलक्षणम् । तेन—परोरजोभिः स्वगुणैरगाधः सगाधिपुत्रोऽपि गृहानुपैति ।

इत्यपि सिद्धं भवति । पृषोदरादावप्येतद्भृष्टव्यम् ॥ ७९ ॥

कुंबेरकेशवौ श्रद्धातपसी विष्णुवासवौ ।

सोमरुद्रौ शिरोजानु चित्रास्वाती शिरोविजु ॥ ८० ॥

(१) पञ्चमी भयेनेति सूत्रे पञ्चम्याः प्रथमानिर्दिष्टत्वादुपसर्जनत्वेन शतप-
दस्य पूर्वनिपाते प्राप्ते राजदन्तादित्वात्परनिपातः ॥ एवमन्यत्रापि बीज्यम् ।

(२) पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणेति सूत्रेण वासितादीनां पूर्वं प्रयोगः प्राप्त इति
योज्यम् । भी० श० ।

कुबेरश्च केशवश्च । कुबेरकेशधौ । पूज्यद्वारेण(१) ॥ अद्वा च तपश्च । अद्वात-
पसी । लघुद्वारेण(२) ॥ विष्णुश्च वासवश्च । विष्णुवासधौ । वर्णभ्रातृणामनुपूर्व-
मित्यनेन(३) ॥ सोमश्च रुद्रश्च । सोमरुद्रौ । पूज्यद्वारेण ॥ शिरश्च जानुश्च ।
शिरोजानु ॥ चित्रा च स्वातिश्च । चित्रास्वाती ॥ शिरश्च विजुश्च । शिरोविजु ।
विजुर्ग्रीवा स्कन्धो वा । असखियुद्द्वारेण(४) ॥ भोजस्तु शिरोविजुइत्याह ॥८०॥
जम्पती दम्पती जायापती पुत्रपती तथा ।

गौपालिधानपूलासविष्वक्सेनार्जुना मताः ॥८१॥

जाया च पतिश्च । जम्पती । दम्पती । जायापती । इह पाठाज्जा-
याशब्दस्य जदंभावश्च ॥ पुत्रश्च पतिश्च । पुत्रपती । एवामसखियुद्द्वारेण ॥
गाः पालयतीति गोपालः । तस्यापत्यं गौपालिः । स धीयते यस्मिंस्तद्वी-
पालिधानम् । ग्रामोऽवस्थानं वा ॥ पूलानस्यतीति पूलासः ॥ गौपालिधानं
च पूलासश्च । गौपालिधानपूलासम् ॥ अल्पाज्द्वारेण(५) ॥ विष्वक्सेनश्चार्जुनश्च ।
विष्वक्सेनार्जुनौ । अजाद्यद्द्वारेण(६) । यदा पूज्यता न विवक्ष्यते तदा पर-
निपातार्थः पाठः । अथवा । विष्णोरन्यो विष्वक्सेनः ॥८१॥

वैकारिमनं तण्डुलकिण्वावन्यश्मकाश्च दारगवम् ।

केशश्मश्रु स्नातकराजानौ नममुषितश्च ॥ ८२ ॥

विकारस्यापत्यं वैकारिः । स च सतश्च । वैकारिमतम् । अल्पाज्द्वारे-
ण ॥ शाकटायनस्तु वैकारिर्मतो वैकारिमतः । गाजयतीति गाजः । वाज-
यतीति वाजः । गाजस्य त्वाजः । गाजवाजः । वैकारिमतश्च गाजवाजश्च ।
वैकारिमतगाजवाजमित्याह ॥ तण्डुलाश्च किण्वं च । तण्डुलकिण्वम् ॥ अक्ष-
न्तिर्नाम राजा जनपदो वा । अश्मका नाम जनपदः । अक्षन्त्यश्चाश्मकाश्च ।

- (१) अम्पहितं च पूर्वं निपततीति वार्त्तिकेन केशवपदस्य पूर्वनिपाते प्राप्ते ।
(२) लघ्वत्तरं च पूर्वमिति वार्त्तिकेन तपःपदस्य पूर्वनिपाते प्राप्ते ।
(३) भातुश्च ज्यायसइति वार्त्तिकेन वासवपदस्य पूर्वनिपाते प्राप्ते । (४) द्वन्द्वे-
घीति सूत्रेण जान्वादिपदानां पूर्वनिपाते प्राप्ते । एवमग्रेऽपि योज्यम् ।
(५) अल्पाक्षतरमिति सूत्रेण पूलासपदस्य पूर्वनिपाते प्राप्ते । (६) अजाद्य-
दन्तमिति सूत्रेण प्राप्ते । भी० श० ।

अवन्त्यश्मकम् । अजाद्यद्द्वारेण ॥ दाराश्च गौश्च । दारगवम् । अल्पाज्-
द्वारेण ॥ केशाश्च श्मश्रु च । केशश्मश्रु ॥ केशश्मश्रु इति भोजः ॥ असखियु-
द्द्वारेण । स्नातकः समाप्तवेदः । स च राजा च । स्नातकराजानौ । अल्पा-
ज्द्वारेण ॥ पूर्वं मुषितः पञ्चान्नग्नः । नग्नमुषितः । यथा—

द्वीरात् नग्नमुषितेषु हृतेऽरुणेन । एकादिसूत्रेण ॥८२॥

दूषदुपलं पुत्रपशू पूलासकुरण्डगाजवाजानि ।

आरट्वायनिचान्धनिसिञ्जास्थोशीरबीजानि ॥८३॥

दूषदुपलं च । दूषदुपलम् । अजाद्यद्द्वारेण ॥ पुत्रश्च पशुश्च । पुत्र-
पशू । असखियुद्द्वारेण ॥ पूलासश्च कुरण्डश्च । पूलासकुरण्डम् ॥ शाकटाय-
नस्तु कुरण्डानां स्थलं कुरण्डस्थलम् । कुरण्डस्थलं च पूलासश्च । कुरण्डस्थल-
पूलासमित्युवाच ॥ गाजश्च वाजश्च । गाजवाजम् ॥ अन्यस्तु । गजानां समूहो
गाजम् । वाजिनां समूहो वाजम् । गजं च वाजं चेति । गजवाजम् ।
तत्प्रत्ययस्तु गणपाठादेव न भवतीत्याह ॥ अनियमप्रसङ्गे वाजशब्दस्यैव
परनिपातः ॥ आरट्तीति । आरट्ती नाम कश्चित् । तस्यापत्यम् आरट्वाय-
निः । तिकादित्वात् फिञ् ॥ चम्यं भक्ष्यं धर्मस्य । तस्यापत्यं चान्धनिः ॥
आरट्वायनिश्च चान्धनिश्च । आरट्वायनिचान्धनि । अल्पाज्द्वारेण ॥ कश्चिद्
आरट्वायनिबन्धनीत्याह । पाणिनिस्तु । आरट्वायनिबन्धकीत्याह ॥ सिञ्जनं
सिञ्जा । आस्थानं आस्था । सिञ्जा चास्था च । सिञ्जास्थम् । अत्रानियमे
प्राप्ते नियमः ॥ उशीरं च बीजं च । उशीरबीजम् ॥ शाकटायनस्तु ।
उशीरं बीजं यस्मिन् । उशीरबीजो नाम पर्वतः ॥ सिञ्जायां तिष्ठतीति
सिञ्जास्थः पर्वतः । उशीरबीजश्च सिञ्जास्थश्च । उशीरबीजसिञ्जास्थम् ॥
अल्पाज्द्वारेण ॥८३॥

विषयेन्द्रियाधरौष्ठाः स्थलपूलासं च दारजारौ च ।

• भार्यापती उलूखलमुसलाक्षिभ्रुवगजाश्वशूद्रार्याः ॥८४॥

विषयाञ्चेन्द्रियाणि च । विषयेन्द्रियाणि । अजाद्यद्द्वारेण ॥ अधरश्चौ-
ष्ठश्च । अधरौष्ठम् । अल्पाज्द्वारेण ॥ स्थलं च पूलासश्च । स्थलपूलामम् ॥
दारयतीति हृदयमिति दारः । जरयतीति जारः । दारश्च जारश्च । दारजारौ ।

अत्रानियमप्रसङ्गे दारशब्द एकवचनान्तोऽपि दृश्यते । यथा । धर्मप्रजासम्पन्ने
 दारे नान्यं कुर्वीत ॥ भार्या च पतिश्च । भार्यापती । अमखियुद्दारेण ॥
 उल्लूपन्त इत्युल्बो धान्यानि । आप्ये(१) क्षिप् । उल्वः खल्यन्ते सञ्जीयन्ते प्र-
 क्षिप्यन्त इति । उल्लखलम् । तच्च मुसलं च । उल्लखलमुसलम् ॥ अक्षिणी च
 भ्रुवी च । अक्षिभ्रुवम् । अत एव पाठात्समासान्तः ॥ अनयोरल्पाज्द्वारेण ॥
 गजश्चाश्वश्च । गजाश्वी ॥ शूद्रश्चार्यश्च । शूद्रार्यौ ॥ अनयोरजाद्यद्द्वारेण ॥८४॥

काकमयूरौ मेधातपसी दारार्थपाण्डुधृतराष्ट्राः ।

नरंनारायणदीक्षातपसी चित्ररथबाल्हीकौ ॥८५॥

काकश्च मयूरश्च । काकमयूरौ ॥ मेधा च तपश्च । मेधातपसी । अन-
 योरर्च्यलघुद्वारेण ॥ दाराश्चार्यश्च । दारार्थम् । अजाद्यद्द्वारेण ॥ पाण्डुश्च
 धृतराष्ट्रश्च । पाण्डुधृतराष्ट्री । वर्णभ्रातृणामनुपूर्वभित्तयेन ॥ नरश्च नारा-
 यणश्च । नरनारायणौ ॥ दीक्षा च तपश्च । दीक्षातपसी ॥ अनयोरर्च्यलघुद्वारा-
 रेण ॥ चित्ररथश्च बाल्हीकश्च । चित्ररथबाल्हीकी राजानी । अल्पाज्द्वारेण ।
 पाणिनिषामनमतेन ॥ शाकटायनस्तु बल्होऽस्यास्तीति बल्ही । बल्हिकः ।
 सञ्ज्ञाप्रकृत्योरित्पत्नेन कौ । चित्ररथबल्हिकम् ॥ भोजस्तु चित्ररथबाल्हि-
 कावस्मिन् गणे पपाठ । उणादिसन्ध्ये तु सृष्टीकातिन्निहीकबाल्हीकबल्मी-
 ककल्मीकफिल्डिणीकापुण्डरीकचञ्चरीकसमीकप्रतीकपूतीकपर्फरीकादय इत्य-
 स्मिन् बाल्हीकमिति प्रादर्शयत् ॥ एतेषामेतैः सूत्रैः प्राङ्निपाते प्राप्ते
 परनिपातः क्रियते ॥ ८५ ॥

पूर्वोऽप्यर्थो धर्मतः शब्दकामात्—

इन्द्रार्कान्तेभ्योऽग्निचन्द्रादयोऽपि ।

भीष्मादित्यं द्रोणचन्द्राञ्च राहो—

श्वन्द्रो ग्रीष्मो वा वसन्ताद्भिभाव्यः॥८६॥

‘पूर्वोऽप्यर्थं इति न केवलं धर्मशब्दकामेभ्यः पूर्वोऽर्थशब्दः परोऽपि
 द्रष्टव्यो गणपाठसामर्थ्यात् । नगंश्च धर्मश्च । अर्धधर्मौ । धर्माधीनं ॥ अर्धग-
 प्ती । शब्दाधीनं ॥ अर्धकामी । कामाधीनं ॥ न केवलम् अग्निचन्द्रादयः पूर्व

भवन्ति परतोऽपि । अग्निश्चेन्द्रश्च । अग्नीन्द्रौ । इन्द्राग्नी ॥ चन्द्राकौ ।
अर्कचन्द्रौ ॥ आद्यन्तौ । अन्तादी ॥ भीष्मद्रोणौ । द्रोणभीष्मौ ॥ चन्द्रादित्यौ ।
आदित्यचन्द्रौ ॥ राहुचन्द्रौ । चन्द्रराहु ॥ ग्रीष्मवसन्तौ । वसन्तग्रीष्मौ ॥८६॥

शुक्रशुचिकरभरासभगुणवृद्धिसमीरणामिकुशकाशाः ।

सर्पिर्मधुदीर्घलघू सतपःश्रुतपाणिनीयरौढीयाः ॥८७॥

शुक्रशुच्यादयः शब्दाः शकन्मूत्रशब्दपर्यन्ता विपर्ययेणापि भवन्ति ॥
शुक्रश्च शुचिश्च । शुक्रशुची । शुचिशुक्रौ ॥ करभरासभौ । रासभकरभौ ॥ गुणः
वृद्धौ । वृद्धिगुणौ ॥ समीरणग्नी । अग्निसमीरणौ ॥ कुशकाशम् । काशकु-
शम् ॥ सर्पिर्मधुनी* । मधुसर्पिषी ॥ दीर्घलघू । लघुदीर्घौ ॥ सतपःश्रुतेति ।
सह तपःश्रुताभ्यां वर्तन्ते । सतपःश्रुताः । सतपःश्रुताश्च ते पाणिनीयरौ
ढीयाश्च ॥ तपःश्रुते । श्रुततपसी ॥ पाणिनीयरौढीयाः । रौढीयपाणिनीयाः ८७

भीमसेनार्जुनावेतौ कपित्थाश्वत्थसंयुतौ ।

शकन्मूत्रं कृतहन्द्वा व्यत्यासेन सतां मताः ॥८८॥

भीमसेनार्जुनौ । अर्जुनभीमसेनौ ॥ कपित्थाश्वत्थौ । अश्वत्थकपित्थौ ॥
शकन्मूत्रम् । मूत्रशकत् ॥ एतेषां स्वीयस्वीयसूत्रेण नियमे प्राप्ते गणपाठाद्वि-
कल्पः ॥ सतां मता इति साभिप्रायम् । तेन जित्याविषूयविनीयाः । विषू-
यविनीयजित्याः ॥ देवापिशन्तनू । शन्तनुदेवापी इत्यादयोऽपि भवन्ति ॥८८॥

इति राजदन्तादिः ॥

कडारः पिङ्गलो गौरौ भिक्षुकः खलतिस्तनुः ।

शौण्डः कुण्डो वृकः खञ्जो बठरो गडुलस्तथा ॥८९॥

कडारादयः शब्दाः कडाराः कर्मधारये वेत्यनेन पूर्वं वा निपतन्ति ।
कडारजैमिनिः । जैमिनिकडारः ॥ पिङ्गलमाण्डव्यः । माण्डव्यपिङ्गलः ॥
गौरगोतमः । गोतमगौरः (१) ॥ भिक्षुकदाक्षिः । दाक्षिभिक्षुकः ॥ खलतिखा-
रपायणः । खारपायणखलतिः ॥ तनुत्तणविन्दुः । तृणविन्दुतनुः । तनुशब्दः
कशवाची ॥ शौण्डलिगुः । लिगुशौण्डः ॥ कुण्डमाण्डिः । माण्डिकुण्डः ॥

(१) गौरगोतमः । गोतमगौरः । इति पा० ।

वृकशाण्डिल्यः । शाण्डिल्यवृकः ॥ खज्जुवात्स्यः । वात्स्यखज्जुः ॥ अठरच्छान्द-
सः । छान्दसवठरः ॥ गडुलगालवः । गालवगडुलः ॥ ८९ ॥

वृद्धखोडाविमौ काणः कूटखेलौ च कीर्त्तितौ ।

आहिताग्निगतार्थोऽढभार्यपीतघृतप्रियाः ॥९०॥

वृद्धमनुः । मनुवृद्धः ॥ खोडकहोडः । कहोडखोडः ॥ काणद्रीणः ।
द्रीणकाणः ॥ कूटदाक्षिः । दाक्षिकूटः ॥ खेलशाण्डिल्यः । शाण्डिल्यखेलः ॥
एतेषां गुणवचनत्वात्पक्षे परत्वार्थं वचनम् ॥ इतिकहारादिः ॥

एते शब्दा बहुव्रीहौ प्राप्तपूर्वनिपाताः सन्ती वाहिताग्न्यादावित्यनेन
पूर्वपदस्वभाजो वा भवन्ति ॥ आहितोऽग्निर्येन स आहिताग्निः । अग्न्या-
हितः । यथा च भट्टिकाव्ये ।

अग्न्याहितजनप्रहे विजिगीषापराङ्मुखे ।

कस्माद्वा नीतितीक्ष्णस्य संरम्भस्तव तापसे ? ॥

यथा वा । प्रतिशरणमशीर्णज्योतिरग्न्याहितानां

विधिविहितविरिञ्चैः सामिधेनीरधीत्य ।

कृतगुरुदुरितौघध्वंसमध्वयुर्वर्यै-

हुतमयमुपलीढे साधु सांनाव्यमग्निः ॥

गतोऽर्थो यस्यासौ गतार्थः । अर्थगतः ॥ ऊढा भार्या येन । ऊढभार्यः ।
मार्योऽढः ॥ पीतं घृतं येन । पीतघृतः । घृतपीतः ॥ प्रियशब्दस्य केवलस्ये-
होपदेशादुत्तरपदमनियतम् । तेन प्रियगुडः । गुडप्रियः ॥ प्रियविश्वः ।
विश्वप्रियः ॥ प्रियद्विः । द्विप्रियः ॥ एतेन वाहिताग्न्यादयो गणाधीता एव
ग्राह्या नाधिकप्रयोगाः । तेनाहितवसुरित्यादी यथाप्राप्तं स्यान्न विकल्पः ॥९०॥

जातादन्तः सपुत्रोऽथ तैलं मद्यं च पीततः ।

गड्वादेः सप्तमी क्तान्तं जातिकालसुखादितः ॥९१॥

जाता दन्ता अस्य । जातदन्तः । दन्तजातः ॥ पुत्रो जातोऽस्य । पु-
त्रजातः । जातपुत्रः ॥ तैलं पीतं येन । पीततैलः । तैलपीतः ॥ मद्यं पीतं
येन । मद्यपीतः । पीतमद्यः ॥ गड्वादेः सप्तमीति गड्वादिभ्यः सप्तम्यन्तो (१)

बहुव्रीहौ पूर्वं वा निपतति । गडुः कण्ठे यस्य । गडुकण्ठः । कण्ठेगडुः ॥
गडुशिराः । शिरसिगडुः(१) ॥ गुरुमध्यः । मध्येगुरुः ॥ गुर्वन्तः । अन्तेगुरुः(२) ॥
इन्दुमौलिः यस्य । इन्दुमौलिः । मौलीन्दुः । यथा च

मौलीन्दोमौलिभूषा मनसिजनृपतेरान्तरः केलिकेशः ।

प्राचीदिङ्नायिकायाः कनकविरचितप्रौढताडङ्कान्तिः ।

पीयूषासारवर्षी त्रिभुवननयनानन्दवृन्दैकपात्रं

देवः श्रीश्वेतभानुर्जयति कुमुदिनीबान्धवः सिन्धुजन्मा ॥

भोजस्तु नेन्द्रादिभ्य इत्यनेन निषेधान्मौलीन्दुरिति मन्यते ॥ समर्थ-
धिकाराद्बहेगडुरित्येव भवति । तथा शशिशेखरः । पद्मनाभः । ऊर्णनाभः ।
शङ्खपाणिः । पद्मपाणिरित्यादौ परनिपात एव ॥ क्तान्तमित्यादि । क्तान्तं
च वा पूर्वं निपतति ॥ जातेः । पलाण्डुभक्षिती । भक्षितपलाण्डुः ॥ सारङ्ग-
जग्धी । जग्धसारङ्गः ॥ पाणिगृहीती । गृहीतपाणिः ॥ कालात् ॥ मासजाता
जातमासा ॥ संवत्सरजाता । जातसंवत्सरा ॥ सुखादेः । सुखजाता । जातसु-
खा ॥ जातदुःखा । दुःखजाता ॥ तृप्तोत्पन्ना । उत्पन्नतृप्ता ॥ न्यासकृता सुखा-
दयो गुणवचना इत्युक्तम् । भोजस्तु सुखादयो दश व्यञ्जविधौ निरूपिता इत्यु-
क्तान् जातिग्रहणमकृत्वाकृतिग्रहणात् ॥ आकृत्या संस्थानेन व्यज्यते सा जातिः ।
तेनेह न भवति । आहूतब्राह्मणः । सेवितक्षत्रियः । तर्पितदाक्षिः । प्रीणित-
कट इत्येके ॥ जातिपरत्व आकृतेः पूर्वनिपातः । न व्यक्तिपरत्व इत्येके ॥१९॥

ज्ञेयो जातश्मश्रुः पीतदधिच्छिन्नशीर्षपीतविषाः ।

क्तः प्रहरणवाचिभ्यः सप्तम्यपि सम्मंता विदुषाम् ॥२०॥

जातं श्मश्रु यस्य । जातश्मश्रुः । श्मश्रुजातः ॥ पीतं दधि येन ।
पीतदधिः । दधिपीतः ॥ छिन्नं शीर्षं यस्य । शीर्षच्छिन्नः । छिन्नशीर्षः ॥ पीतं
विषं येन । विषपीतः । पीतविषः ॥ क्त इति । प्रहरणं घनुः खड्गाद्यर्थी येषां
तेभ्यः क्तान्तं सप्तम्यन्तं च पूर्वं निपतति । उद्यत उखातोऽसिर्येन स उद्य-
तासिः । अस्युद्यतः ॥ कलितप्रहरणः । प्रहरणकलितः ॥ दण्डः पाणौ यस्यासौ
दण्डपाणिः । पाणिदण्डः । विश्रान्तन्यासकृत्त्वसमश्रुत्वाद्दण्डपाणिरित्येव मन्यते ॥

(१) शिरोगडुरित्यपीति पा० । (२) मध्यगुरुः । अन्तगुरुः । इत्यपि क्वचित् ।

वज्रपाणिः । पाणिषज्जः । अविशेषोक्तावप्यसमर्थत्वात् । शूलपाणिः । शा-
ङ्गपाणिः । धनुष्याणिः ॥ पाशहस्त इत्यादौ परनिपात एव ॥ आकृतिगणो-
ऽयम् ॥२२॥ इत्याहितान्यादिः ॥

तिष्ठद्गु प्ररथं खलेबुसमधोनाभं समम्भूमि च—
प्राङ्गं पुण्यसमं वहद्गु विषमं प्रान्तं तथा निःषमम् ।
एकान्तं च समम्पदाति सुषमं तीर्थं समानात्परम्—
पूतेर्नान्वितपूयमानखलतो लूनाद्यवं वा बुसम् ॥१३॥

तिष्ठद्गु । इत्येवमादयः समासास्तिष्ठद्गूवादिरयमित्यनेनाव्ययीभाव-
सङ्घा निपात्यन्ते । अयमेव निपातितः समासो भवति नान्यः ॥ तिष्ठन्ति
गावो यस्मिन् काले दीहाय स कालस्तिष्ठद्गु । प्रथमरात्रेरर्धघटी । प्रावृत्-
काल इत्यन्ये । अयमेवेति वचनात्कथनमयं भट्टिकाव्ये प्रयोगः ।

आतिष्ठद्गु जपन्सन्ध्यां प्रक्रान्तामायतीगवम् ।

प्रातस्तरां पतत्रिभ्यः प्रबुद्गुः प्रणमन् रविम् ॥

तिष्ठद्गु पावद् आतिष्ठद्गूच्यते । भाष्योदाहरणात्तावदयं विजातीयः ।
न च समासमात्रेण न भवितव्यमित्युक्तम् । अभिधानप्रमाणश्च समासः ॥
प्रगतत्वं रथस्य । प्रगताः प्रभूताः वा रथा अस्मिन्देसे । प्ररथम् ॥ खले बुसानि
यत्र काले स कालः खलेबुसम् ॥ नाभेरधोऽधोनाभं प्रहृतवान् । गणपाठाद-
कारः समासान्तः ॥ समत्वं भूमेः । समम्भूमि । निपातनान्मुगागमः ॥ शाक-
टांयनस्तु समभूमीत्यप्याह । अन्यार्थत्वे तु । समभूमयो वीथय इत्येवं यौगि-
कत्वेनास्य लक्षणस्य प्रवृत्तिः । अन्यार्थत्वेऽपि समभूमीति केचित् ॥ प्रगतत्व-
मह्यं प्रगतसह इति वा । प्राङ्गम् । निपातनाद् अह्नादेशः ॥ पुण्यत्वं समायाः
पुण्या समेति वा । पुण्यसमम् । पुण्येन समं तृतीयासमासापवाद इति केचित् ।
वहन्ति गावो यस्मिन् काले स कालो वहद्गु । शरत्काल इत्यन्ये ॥ विगतं
समं विगतत्वं समस्य वा । विषमम् ॥ समाद्विप्रकृष्टो हीनो वा देश इति
केचित् ॥ प्रगतत्वमन्तर्क्ष्य प्रगृतोऽन्तोऽस्मिन्देश इति वा । प्रान्तम् ॥ निर्गतं
समं निर्गतत्वं समस्येति वा । निःषमम् ॥ समान्निष्क्रान्तो निःषममिति
केचित् ॥ एकोऽन्तो यस्य तद् एकान्तम् ॥ समत्वं पदातिः । समपदाति ।

निपातनान्मुगागमः ॥ समपदातीत्यपि शाकटायनः ॥ अन्यार्थत्वे तु । समप-
दातुयो राजान इति यौगिकत्वेनास्य लक्षणस्य प्रवृत्तिः ॥ शोभनाः समा यत्र
स कालः सुषमम् । शोभनत्वं समस्येति वा ॥ समानं तीर्थं तीर्थस्य समान-
त्वमिति वा, समानतीर्थम् ॥ पूताः पूयमानाश्च यथा यत्र काले स पूतयवम् ।
पूनयवमिति भोजः ॥ पूयमानयवम् कालः ॥ खलं रणजिरं धान्यावपनस्थानं
च । खलन्ति संघीयन्ते यशांसि शूरैर्धान्यानि वा यत्र तत्खलम् । खले यथा
बुशानि च यस्मिन् काले स खलेयवम् ॥ खलेबुशम् ॥ लूना यथा यस्मिन् काले
स लूनयवम् ॥ वा बुशमिति वा शब्दो व्यवस्थावाची । तेन बुशशब्दः खलः
शब्दादेव द्रष्टव्यः ॥ ९३ ॥

समपक्षं पापसमं समानतीरं प्रदक्षिणं प्रमृगम् ।

अपदक्षिणं च सम्प्रति वासंप्रति लूयमानयवम् ॥९४॥

समत्वं पक्षस्य समः पक्षोऽस्मिन्निति वा । समपक्षं देशः ॥ पापाः समा
यस्मिन्नुगे काले वा । पापसमम् ॥ समानं तीरं समानत्वं तीरस्येति वा
समानतीरम् ॥ प्रस्तुत्य दक्षिणतो भ्रमति । प्रदक्षिणम् । भोजस्तु प्रदक्षिणं
वानमित्याह ॥ प्रकृष्टत्वं दक्षिणाया वा । प्रदक्षिणम् ॥ प्रगता मृगा यत्र
काले यतो वाऽऽरण्यादेस्तत् प्रमृगम् ॥ अपगता दक्षिणा यत्र तत् अपदक्षिणम् ॥
सम्प्रतीति प्रादिसमुदायरूपः शब्दः । स एव नञ्सम्पर्काद् असम्प्रति ॥
लूयमाना यथा यत्र काले स लूयमानयवम् ॥९४॥

संहृतसंह्रियमाणाद् वुसं यवं चायतीगवाविषमे ।

अपरायत्योश्च समं दुःपममिःप्रत्ययोऽपि गणे ॥९५॥

संहृतानि संह्रियमाणानि च वुशानि यथाश्च यत्र काले स कालः संह-
तवुसम् । संह्रियमाणवुसम् ॥ संहृतयवम् । संह्रियमाणयवम् ॥ दोहार्थं जल-
पानार्थं निवासार्थं वायत्यो गावो यत्र काले स आयतीगवम् । यथा-आति-
ष्ठन्नु जपन्सन्ध्यां प्रक्रान्तामायतीगवम् ॥ न विषमम् । अविषमम् ॥ अपरा
आयत्यो वा समा यत्र काले सोऽपरसमम् । अवसरमिति भोजः ॥ आय-
तीसमम् ॥ दुष्टत्वं समाया दुष्टाः समा वा यत्र तद्दुःपमम् । गणपाठसाम-
र्थ्यात्स्त्रीत्वनिवृत्तिः ॥ इच्छुप्रत्ययोऽपीति । इच्छुद् इत्यनेन य इञ् विहित-

स्तदन्तः शब्दोऽत्र गणे द्रष्टव्यः । तेन परमं भीमं वा केशाकेशीति समासा-
रम्भकत्वं न भवति ॥

तिष्ठद्गु वहद्गुवायतीगवं लूनलूनमानपूतपूयमानयवाः खलेसंहृतसं-
ह्रियमाणयवबुसाश्च कालविशेषवाचिन एव गणे द्रष्टव्याः ॥ अन्ये तु देशवृ-
त्तित्वमपि सन्त्यन्ते । तेनान्यत्र पूर्वेण बहुव्रीहिः स्यात् । तिष्ठन्ति गावो यत्र
स तिष्ठद्गुः । तिष्ठद्गवो ग्रामाः ॥ वहन्त्यो गावो यत्र सा वहद्गुर्हलपङ्क्तिः ।
वहद्गवः कुटुम्बिनः ॥ आयत्यो गावो यत्र स आयद्गुः ॥ लूनयवेषु क्षेत्रेषु
वसतीत्यादि ॥ लूनयवादयस्तु प्रथमैकवचनान्ता एव प्रयोक्तव्याः । तेन द्वि-
तीयादिका विभक्तिर्न भवति ॥ समं भूमिपदातिभ्यामन्यपदार्थं प्राङ्हरथमृग-
दक्षिणाभिरित्येताभ्यां सूत्राभ्यां कालभावयोरेवान्यपदार्थं इष्यते । तेन समा
भूमिरस्मिन्ग्रामे । समभूमिर्ग्रामः । प्रगता मृगा अस्मात् । प्रमृगोदेशः । प्राल्लः ।
प्ररथः । प्रमृगः । प्रदक्षिणः ॥ अन्यपदार्थं एव । समा भूमिः । समभूमिरि-
त्यादौ तत्पुरुष एवेति भोजः ॥ आकृतिगणोयम् । तेन यत्प्रभृति तत्प्रभृती-
त्यादीनामपि क्रियाविशेषणवृत्तीनां व्युत्पत्तिरनेनैव द्रष्टव्या ॥ ९५ ॥

इति तिष्ठद्गुवादिः ॥

ऊरीभ्रंशकलोररीगुलुगुधाधूलीस्वधाविःसजू—

धूलीध्वंसकलोररीमसमसाविकलीफलीमस्मसाः ।

तालीसंशकला फलू च शकला स्वाहा वपट्श्रौषटौ—

वेताली च पशूपलीगुलुगुलातालीवितालीश्रुदः ॥ ९६ ॥

ठस्पुक्तेत्यादिना सूत्रेणोर्यादयः सुवन्ता भ्वादिना सह समस्यन्ते । स स-
मासस्तत्पुरुषो भवति ॥ ऊरीत्यङ्गीकारे विस्तारे च । ऊरीकृत्य । अङ्गीकृत्य
विस्तारं कृत्या वेत्यर्थः ॥ केचिद् अनुकरणविस्तारयोरिति पठन्ति । अपरे
भृशार्थशब्दप्रशंसासु । यथा—

तद्ऊरीकृत्य कृतिभिर्योचस्पत्यं प्रतायते ॥

अंशकलेति हिंसायाम् । अंशकलाकृत्य । हिंसित्येत्यर्थः ॥ उररी ।
ऊरीवत् ॥ गुलुगुधेति पीडायाम् । गुलुगुधाकृत्य (१) । पीडयित्वेत्यर्थः ।

(१) गुलुगुधेति० गुलुगुधाकृत्य । इति पा० ।

क्रीडायामित्यन्ये ॥ गुलूगुधेत्यन्ये ॥ धूमीति विस्तारे । धूमीकृत्य । विस्तार्य-
त्यर्थः ॥ धूमी कान्ताविति शाकटायनः । अपरे धूमी काङ्क्षायाम् । धूमीकृत्य ।
काङ्क्षां कत्वेत्यर्थः ॥ स्वधेति संप्रदाने । स्वधाकृत्य स्वधाशब्दोच्चारित-
मग्न्यादिकर्म कृत्वा गत इत्यर्थः ॥ तृप्तिप्रीत्योरित्यन्यः ॥ एवं स्वाहावषट्
श्रीषट् वीषटामर्थो द्रष्टव्यः । वषट् पूजायामित्यन्यः । एतेषां सम्प्रदानार्थ-
त्वात्करोतिनैव सम्बन्धः ॥ आविस् । इति प्राकाशये यथा—

तेषामाविरभूद्ब्रह्मा परिस्नानमुखश्रियाम् ॥

आविष्करोति । प्रकटयतीत्यर्थः । आविःशब्दस्येह पाठात्सूक्तत्वे
घातोः प्रागेव निष्पन्नः । एवं च योऽयं प्रयोगः । वारुणीमदविशङ्कमथावि-
श्वसुषोऽभवदसाविव रागः ॥ इति । तथा—

पृथुदर्विभृतस्ततः फणीन्द्रा, विषमाशीभिरनारतं वमन्तः ।

अभवन् युगपद्विलोलजिह्वा, युगलीढोभयसङ्गभागमाविः ॥

इति च सप्रसादज एव नास्त्यभ्युद्गारः । आविरभवद्रागः । आवि-
रभवन्फणीन्द्रा इति क्रियायोगस्य समीहितत्वात् ॥ सजूरिति सहार्थः । सजूः
कृत्य । सहितं साहित्येन वा कृत्वा गत इत्यर्थः । सहार्थत्वाद्यं कम्बुशितभि-
र्युज्यते । आविःशब्दश्च प्राकाशयार्थत्वात् ॥ धूलीति विदूरवयाकुलीभावे ।
धूलीकृत्य । विदूराकुलतां कत्वेत्यर्थः ॥ ध्वंसकला । अंशकलावत् ॥ उरुरी ।
ऊरीवत् ॥ मसमसेति ध्वंसकलावत् ॥ विक्ली फली । इति विकारे । हिंसा-
यामिति वामनः । विकारार्थत्वात् कम्बुशितभिर्युज्यते । विक्लीकृत्य ॥ अपर
आक्ली विक्लीति विचारे । विक्लीकृत्य विचार्येत्यर्थः ॥ फलीकृत्य ॥ मस्मसेति
मसमसावत् । अपरे तु मस्मसा, मसमसेति द्वौ सञ्चूर्णने संवरणे चेत्याहुः ॥
ताली विदूराकुलीभावे । तालीकृत्य ॥ ताली आताली वर्णे शाकटायनः ॥
अपरे तूत्तमार्थे । तालीकृत्य । उत्तमं कत्वेत्यर्थः ॥ विस्तारे तु भोजः ॥ संश-
कलेति मसमसावत् । असङ्कलेति भोजः ॥ फलू विक्लीवत् । फलू फलीति
क्रियासम्पत्तौ । फलूकृत्य । फलीकृत्य । क्रियां सम्पाद्येत्यर्थः ॥ शकला । म-
स्मसावत् ॥ अपरे शकला संशकला ध्वंसकला भू, शकलेति चत्वारः परिभवे ।
शकलाकृत्य । परिभूय गत इत्यर्थः ॥ वेतालीति तालीवत् । विस्तारे तु
भोजः ॥ पशू । इति हिंसायाम् । पशूकृत्य गतः । हत्वा गत इत्यर्थः ॥

फलीति विक्रीवत् ॥ गुलुगुला । गुलुगुधावत् ॥ आताली वितालीति तालीवत् ॥
श्रुदिति शीघ्रार्थे । श्रुत्कृत्य गतः । शीघ्रं कृत्वा गत इत्यर्थः ॥ अन्यस्तु श्रु-
दिति श्रद्धाने । श्रद्दाय । श्रद्दां कृत्वेत्यर्थः । अयं दधातिना युक्तः प्रयुज्यत
इत्याह ॥ ९६ ॥

प्रादुः पाम्प्यालम्बीपाम्पालीसङ्कलाश्च केवाली ।
आलोष्ठी केवासी सेवाल्याक्की च वार्दाली ॥९७॥

प्रादुः प्राकाशये । यथा समैव—

निः सीमाश्चर्गघाम त्रिभुवनविदितं पत्तनं यत्त्वदीयं—

तन्मध्ये वृद्धिभीयुः फलभरनमिताः शाखिनश्चूतानुखाः ।

नैतच्चित्रं विचित्राद्विहितकृतयुग त्वत्प्रभावात् क्षितीश—

प्रादुःपन्ति प्रभूता यदि सुरतरवश्चित्रमेतद्बुधानाम् ॥

श्वादिनेति सामान्योक्तावपि कृत्वस्तिभिरेव योग एतेषां समासः ॥

पाम्पी विस्तारविध्वंसमाधुर्येषु करुणविलापे च । पाम्पीकृत्य । विस्तारं
विध्वंसं माधुर्यं च कृत्वेत्यर्थः ॥ पाम्पीकृत्य । करुणं विलप्येत्यर्थः ॥ आल-

म्बीति प्राकाशये हिंसायां च । आलम्बीकृत्य ॥ पाम्पाली । सङ्कला । केवा-
ली । आलोष्ठी । केवासी । सेवाली । आक्की हिंसायाम् ॥ पाम्पालीकृत्य ।
हिंसित्वेत्यर्थं इत्यादि ॥ आक्कीशब्दो विकारेऽपि । आक्कीकृत्य ॥ वार्दा-
लीति प्राकाशये हिंसायां च । वार्दालीकृत्य ॥ वार्दालीति कश्चित् ॥

इत्यूर्यादिः ॥

साक्षाद्बीजरुहानमःप्रसहनेचिन्ताविसो रोचना—

बीजर्या लवणं सह प्रतपने भद्रार्थयग्नावमाः ।

अद्वा प्राजरुहोदकं विसहने मिथ्याद्रमास्योऽष्टमः—

प्राजर्या च विकम्पने विहसने शीतं वशे प्रादुसः ॥९८॥

साक्षादित्यादयः शब्दाश्चैव विषयाः करोतिना सह साक्षादाद्याच्चि-
दित्यनेन वा समस्पन्ते । स च तत्पुरुषसङ्गो भवति । साक्षात्कृत्य । सा-
क्षात् कृत्वा । असाक्षाद्भूतं साक्षात् कृत्वेत्यर्थः ॥ बीजरुहेति रुहिक्रियार्थः ।
बीजरुहाकरोति चैवकः ॥ शोभायामित्यन्ये ॥ नृमस्कृत्य ॥ प्रसहने । द्रयुत्सा-

हे सामर्थ्यं च । प्रसहनेकृत्य ॥ चिन्ता इति मानसे व्यापारे । चिन्ताकृत्य ॥
चित्तेति कश्चित् । स चाचित्ता चित्ताकृत्वा । चित्ताकृत्य । अव्ययत्वादसमासे-
ऽपि विभक्त्यश्रवणमव्ययत्वं च स्वरादेराकृतिगणत्वादित्याह । एवमन्येष्वपि ॥
आविष्कृत्य ॥ रोचना इति अद्भोत्पादने प्रशंसायां च । रोचनाकृत्य ॥ लो-
चनेति दीप्ती कश्चिदाह ॥ वीज्या इति जरणक्रियार्थः । वीजर्याकृत्य घनस्य
गतः ॥ शोभार्थ इत्यन्ये ॥ लवणमिति रुच्यर्थे । लवणंकृत्य ॥ सह इति
सम्बद्धार्थः । सहकृत्य ॥ प्रतपने इति तापार्थः । मिथ्याकृतां प्रतपनेकदथ
क्षितीशः ॥ वितपन इत्यपि वामनः ॥ भद्रा इत्यालोचनाप्रशंसामङ्गलेषु ।
अभद्राभद्राकरणं पूर्वम् । भद्राकृत्य ॥ केचित् अभद्रां भद्राङ्कृत्वेति विग्रहे
विभक्तिमुच्चारयन्ति ॥ अर्थेकृत्य श्लोकं पठति । सार्थकं कृत्वेत्यर्थः । यद्वा—
अर्थेकृत्य वदति । सप्रयोजनं कृत्वा वदतीत्यर्थः । यथा हित्तपस्य—

साक्षात्कृतेऽथ लवणंकृति दिङ्मुखानाम्—

उष्णंकृतीऽर्चिषि वशेकृदमाकृदास्ते ।

आस्थाकृताः कृतनमस्कृतयोऽर्थमर्थे—

कृत्य व्रती च नृपती च नृपस्य जग्मुः ॥

अग्नौकृत्य । अग्नौकृत्वा ।

अग्नौकृतमथ हुतैरुदकंकृदंशाव्—

आर्द्रकृते विहसनेकृति पद्मिनीनाम् ॥

अग्नाविति तैक्षये शाकटायनः ॥ अमा इति रहःसमवायसंयोगसा-
ल्येषु । अमाकृत्य ॥ अद्भुतकृत्य । यथा—

शीतंकृदर्चिषि तटीमपरास्बुधेः सं-

सर्वाचिकीर्षति रवावुदयाद्रिशृङ्गम् ।

प्रादुष्कृता मिलितकोकयुगे मुहूर्त्तम्—

अद्भुतकृतेव वियता सरसि स्वलक्ष्मीम् ॥

प्राजरुहा इति रुहिक्रियार्थः । प्राजरुहाकृत्य पर्जन्यो निवृत्तः ॥
शोभार्थ इत्यन्ये ॥ उदकंकृत्य ॥ विसहने । प्रसहनेवत् ॥ मिथ्याकृत्य ॥ आर्द्र-
कृत्य ॥ आर्द्रे इत्येकारान्तमपि कश्चित् । आर्द्रकृत्य ॥ आस्था इत्यादरे
प्रतिज्ञायां च । आस्थाकृत्य ॥ प्राजर्या इति वीजर्यावत् ॥ प्राजुरा इत्यपि
शाकटायनः ॥ चिन्ताकृताश्रितहितोरिविकम्पनेकृत् ॥ शाकटायनस्तु विकम्पने

फलीति विक्रीवत् ॥ गुलुगुला । गुलुगुधावत् ॥ आताली वितालीति तालीवत् ॥
श्रुदिति शीघ्रार्थे । श्रुकृत्य गतः । शीघ्रं कृत्वा गत इत्यर्थः ॥ अन्यस्तु, श्र-
दिति श्रद्धाने । श्रद्दाय । श्रद्दां कृत्वेत्यर्थः । अय दधातिना युक्तः प्रयुज्यत
इत्याह ॥ ९६ ॥

प्रादुः पाम्प्यालम्बीपाम्पालीसङ्कलाश्च केवाली ।

आलोष्टी केवासी सेवाल्याक्ली च वार्दाली ॥९७॥

प्रादुः प्राकाशये । यथा समैव—

निः सीमाश्चर्यघाम त्रिभुवनविदितं पत्तनं यरवदीयं—

तन्मध्ये वृद्धिनीयुः फलभरनमिताः शाखिनश्चूडलुख्याः ।

नैतच्चित्रं विचित्राद्विहितकृतयुग त्वत्प्रभावात् क्षितीश—

प्रादुःपन्ति प्रभूता यदि सुरतरवश्चित्रमेतद्बुधानाम् ॥

भ्वादिनेति सामान्योक्तावपि कश्चस्तिभिरेव योग एतेषां समासः ॥

पाम्पी विस्तारविध्वंसमाधुर्येषु करुणविलापे च । पाम्पीकृत्य । विस्तारं

विध्वंसं माधुर्यं च कृत्वेत्यर्थः ॥ पाम्पीकृत्य । करुणं विलप्येत्यर्थः ॥ आल-

म्बीति प्राकाशये हिंसायां च । आलम्बीकृत्य ॥ पाम्पाली । सङ्कला । केवा-

ली । आलोष्टी । केवासी । सेवाली । आक्ली हिंसायाम् ॥ पाम्पालीकृत्य ।

हिंसित्वेत्यर्थं इत्यादि ॥ आक्लीशब्दो विकारेऽपि । आक्लीकृत्य ॥ वार्दा-

लीति प्राकाशये हिंसायां च । वार्दालीकृत्य ॥ पार्दालीति कश्चित् ॥

इत्यूर्यादिः ॥

साक्षाद्बीजरुहानमःप्रसहनेचिन्ताविसो रोचना—

बीजर्या लवणं सह प्रतपने भद्रार्थयग्नावमाः ।

अद्वा प्राजरुहोदकं विसहने मिथ्यार्द्रमास्थोऽष्टमः—

प्राजर्या च विकम्पने विहसने शीतं वशे प्रादुसः ॥९८॥

साक्षादित्यादयः शब्दाश्चैवर्धविषयाः करोतिना सह साक्षादाद्याच्चि-
रित्यनेन वा समस्यन्ते । स च तत्पुरुषसङ्घो भवति । साक्षात्कृत्य । सा-

क्षात् कृत्या । असाक्षाद्भूतं साक्षात् कृत्वेत्यर्थः ॥ बीजरुहेति रुहिक्रियार्थः ।

बीजरुहाकरोति सेवकः ॥ शोभायामित्यन्ये ॥ नमस्कृत्य ॥ प्रसहने । इत्युत्सा-

हे सामर्थ्ये च । प्रसहनेकृत्य ॥ चिन्ता इति मानसे व्यापारे । चिन्ताकृत्य ॥
 चित्तेति कश्चित् । स चाचित्ता चित्ताकृत्वा । चित्ताकृत्य । अव्ययत्वादसमासे-
 ऽपि विभक्त्यश्रवणमध्ययत्वं च स्वरादेराकृतिगणत्वादित्याह । एवमन्येष्वपि ॥
 आविष्कृत्य ॥ रोचना इति श्रद्धोत्पादने प्रशंसायां च । रोचनाकृत्य ॥ लो-
 चनेति दीप्ती कश्चिदाह ॥ वीजर्या इति जरणाक्रियार्थः । वीजर्याकृत्य घनस्य
 गतः ॥ शोभार्थे इत्यन्ये ॥ लवणमिति रुच्यर्थे । लवणकृत्य ॥ सह इति
 सम्बद्धार्थः । सहकृत्य ॥ प्रतपने इति तापार्थः । मिथ्याकृतां प्रतपनेकृदथ
 क्षितीशः ॥ वितपन इत्यपि वामनः ॥ भद्रा इत्यालोचनाप्रशंसामङ्गलेषु ।
 अभद्राभद्राकरणं पूर्वम् । भद्राकृत्य ॥ केचित् अभद्रां भद्राङ्कृत्वेति वियहे
 विभक्तिसुच्चारयन्ति ॥ अर्थेकृत्य श्लोकं पठति । सार्थकं कृत्वेत्यर्थः । यद्वा—
 अर्थेकृत्य वदति । सप्रयोजनं कृत्वा वदतीत्यर्थः । यथा क्लित्तपस्य—

साक्षात्कृतेऽथ लवणकृति दिङ्मुखानाम्—

उष्णकृतोऽर्चिषि वशेकृदमाकृदास्ते ।

आस्याकृताः कृतनमस्कृतयोऽर्थमर्थे—

कृत्य व्रती च नृपती च नृपस्य जग्मुः ॥

अग्नौकृत्य । अग्नौकृत्वा ।

अग्नौकृतामथ हुतैरुदककंदंशाव्—

आर्द्रकृते विहसनेकृति पद्मिनीनाम् ॥

अग्नाविति तैक्षये शाकटायनः ॥ अमा इति रहःसमवायसंयोगसा-
 ल्पर्येषु । अमाकृत्य ॥ अद्वाकृत्य । यथा—

शीतकृदर्चिषि तटीमपराम्बुधेः सं—

सर्वाचिकीर्षति रखावुदयाद्रिशृङ्गम् ।

प्रादुष्कृता मिलितकोकयुगे मुहूर्त्तम्—

अद्वाकृतेव वियता सरसि स्वलक्ष्मीम् ॥

प्राजरुहा इति रुहिक्रियार्थः । प्राजरुहाकृत्य पर्जन्यो निवृत्तः ॥
 शोभार्थे इत्यन्ये ॥ उदककृत्य ॥ विसहने । प्रसहनेष्वत् ॥ मिथ्याकृत्य ॥ आर्द्र-
 कृत्य ॥ आर्द्रे इत्येकारान्तमपि कश्चित् । आर्द्रकृत्य ॥ आस्या इत्यादरे
 प्रतिज्ञायां च । आस्याकृत्य ॥ प्राजर्या इति वीजर्यावत् ॥ प्राजुरा इत्यपि
 शाकटायनः ॥ चिन्ताकृताश्रितहिनोरिविकम्पनेकृत् ॥ शाकटायनस्तु विकम्पने

प्रकपने वैरूप्ये । विकपने हिंसायाम् । प्रकपने सन्ताप इत्यन्ये । इत्याह ॥
विहसनेकृत्य ॥ शीतंकृत्य ॥ शीतमनादर इति शाकटायनः ॥ वश इत्यस्वा-
तन्त्र्ये । वशेकृत्य ॥ प्रादुष्कृत्य ॥

विकल्पनेप्रभृतीनामेजन्तत्वं लक्षणंप्रभृतीनां सान्तत्वं च गणपाठसाम-
र्थ्यादेव । अथवा । एते सप्तमीप्रतिरूपका द्वितीयाप्रतिरूपकाश्च निपाताः ॥
चादित्वाभावे । आस्थांकृत्वा । अग्नौ कृत्वा जलं तापयतीत्यादि स्यात् ॥
आकृतिगणोऽयम् । तेन पर्यटनं वृत्तिसंसर्ष्याप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ ९८ ॥

इति साक्षादादिः ॥

स्युर्याजकोद्वर्त्तककर्त्तृकारकाः—

प्रयोजकोत्सादकभर्त्तृवर्त्तकाः ।

अध्यापकस्नापकगोप्तृपूजका—

स्तुर्यः परेश्वारकवेषकाविमौ ॥ ९९ ॥

याजकादिभिः शब्दैः सुवर्तं पदम् अकयाजकादिभिरित्यनेन समस्थ-
ते । स समासस्तत्पुरुषसंज्ञो भवति ॥ ब्राह्मणानां याजकः । ब्राह्मणयाजकः ।
याजयिता ॥ शरीरस्योद्वर्त्तकः । शरीरोद्वर्त्तकः ॥ प्रणम्य सर्वकर्त्तारम् ॥ धर्मस्य
कारकः । धर्मकारकः ॥ तत्प्रयोजककर्त्तृत्वमुपैति मन जल्पतः ॥ रिपूणामुत्सा-
दकः । रिपूत्सादकः ॥ छद् अपवारण उत्पूर्वः । क्षत्रियस्योच्छादकः । क्षत्रियो-
च्छादक इति शाकटायनः ॥ भुषो भर्त्ता । भूभर्त्ता ॥ वर्त्तयतीति वर्त्तकः । भा-
ष्यस्य वर्त्तकः । भाष्यवर्त्तकः ॥ पुत्राणामध्यापकः । पुत्राध्यापकः ॥ स्नापयतीति
स्नापकः । राज्ञः स्नापकः । राजस्नापकः ॥ ध्यात्र्या गोपकः । धात्रीगोपकः (१)
साधूनां पूजकः । साधुपूजकः ॥ ब्राह्मणानां तुर्यः । ब्राह्मणतुर्यः ॥ परिचर-
तीति परिचारकः । गुरोः परिचारकः । गुरुपरिचारकः ॥ परिवेवेष्टि । परि-
वेपकः । राज्ञः परिवेपकः । राजपरिवेपकः ॥ यद्वा । घृतस्य परिवेपकः ।
घृतपरिवेपकः ॥ ९९ ॥

(१) मूले गोप्तृपदमुदाहरणे च गोपक इति धिरोधो नैव ज्ञेयः । यतो
मूलेऽपि गोप्तृपदेन गोपक एवाभिप्रेतः । छन्दोभङ्गमयात्तु तथापाठो न कृत
इत्यनुमीयते । भी० शं० ।

गणको रथपत्तिभ्यां चतुर्थोन्मादकौ तथा ।

होता हि त्रि च तीयान्तं तुरीयोऽपि सतां मतः ॥१००॥

रथानां गणकः । रथगणकः ॥ पत्तीनां गणकः । पत्तिगणकः ॥ आत्म-
नश्चतुर्थः । आत्मचतुर्थः ॥ चित्तस्योन्मादकः । चित्तोन्मादकः ॥ क्षीरस्य होता ।
क्षीरहोता ॥ राज्ञां द्वितीयः । राजद्वितीयः ॥ राज्ञां तृतीयः । राजतृतीयः ॥
राज्ञां तुरीयः । राजतुरीयः । तुरीयोऽपि सतां मत इति साभिप्रायम् । तेन
द्वितीयतृतीयेत्यादिभूतं बृहत्तन्त्रे व्यर्थम् । गणसमाश्रयणमेव श्रेयः ।

क्रियानुगतिमास्थाय लोके ख्यातिमुपागताः ।

ये कर्त्ताः पावकाद्यास्ते द्रष्टव्या याजकादिषु ॥

तेन गोमयानां पावकः । गोमयपावकः ॥ गृहस्य दीपकः । गृहदी-
पकः ॥ पिष्टस्य मोदकः । पिष्टमोदक इत्यादि ॥ न कर्त्तरीति प्रतिषेधे प्राप्ते
पाठः ॥ १०० ॥

इति याजकादिः ॥

शौण्डव्याडौ निपुणचपलौ पण्डितान्तःप्रवीणाः-

स्यात्संवीतः कुशलकितवाधीनधूर्तप्रधानम् ।

सव्यध्यानप्रवणविदिताः(१) सारगुर्वायसाः स्युः-

सिद्धो बन्धः कठकविरसौ शेखरः शुष्कपक्वौ ॥१०१॥

सप्तम्यन्तं शौण्डादिभिः सह सप्तमी शौण्डैरित्यनेन वा समस्यते । स
समासस्तत्पुरुषसंज्ञो भवति ॥ अक्षेषु प्रसक्तः शौण्डः । अक्षशौण्डः ॥ वृत्ती
प्रसक्तक्रियाया अन्तर्भावः शौण्डः प्रवीणः । यथा पण्डितश्रीसागरचन्द्रस्य-

द्रव्याश्रयाः श्रीजयसिंहदेवगुणाः कणादेन महर्षिणीक्ताः ।

त्वया पुनःपण्डितदानशौण्ड गुणाश्रयं द्रव्यमपि व्यधायि ॥

यद्यपि शौण्डशब्दो मद्यपि रूढस्तथापि लक्षणया प्रवीणोऽपि भग्यते ।
दुर्घसन्नो वा ॥

पानशौण्डः श्रियं नेता नात्यन्तीनत्वमुन्मनाः ॥ इति मुख्यार्थोऽपि
समासभाक् ॥ अस्त्रव्याहः ॥ आचारनिपुणः ॥ वाक्चपलः ॥ रथपण्डितः ॥

(१) प्रणवविदिता इति पा० ।

ते नालिकेरान्तरपः पिवन्तः । न चैतत् पृथ्वीसमासेन सिध्यतीति शक्यं प्रति-
 पत्तुमर्थभेदात् । न ह्यर्णवेऽन्तर् अर्णवस्यान्तरिति चैकोऽर्थः । किं चाव्ययत्वा-
 त्पृथ्वीसमासप्रतिषेधः ॥ श्रीभोजस्त्वन्तरशब्दं पपाठ ॥ शास्त्रप्रवीणः । शाक-
 टायनस्तु । अर्थप्रवीणः । अर्थविषये निपुण इत्याह ॥ लोकसंवीतः ॥ सेवाकु-
 शलः ॥ अक्षकितवः ॥ जिनवचनाधीनः । अधीनशब्दोऽस्मादेव गणपाठात्
 तस्याधीन इति ज्ञापकाद्वा स्वप्रत्ययान्तो वीद्व्यः ॥ अथवा । अधिगत इति ॥
 अधिगत, इतोऽनेनेति वा । अधीनः । यथा लोकाधीनः ॥ अक्षधूर्तः ॥ विबु-
 धप्रधानम् ॥ कार्यसव्यः । कार्यविषयेऽनिपुण इत्यर्थः ॥ कर्मध्यानः । कर्मसु
 युक्त इत्यर्थः ॥ पृथिवीप्रणवः(१) ॥ पृथिवीविदितः ॥ त्वर्चिर्गौरः ॥ मध्येगुरुः ॥
 कायायसः । कायविषय औदारिक इत्यर्थः ॥ कान्मिपत्यसिद्धः ॥ चक्रबन्धः ॥
 हस्तकटकः ॥ अवसानविरसः ॥ शिरःशेखरः ॥ छायाशुष्कः ॥ कुम्भीपक्वः ॥
 आकृतिगणोऽयम् ।

तेन व्यवहारपटुः । ज्ञातपरमणीय इत्यादयो द्रष्टव्याः ॥ १०१ ॥

इति शौण्डादिः ॥

ड्यन्तात्पात्रात्समितबहुलौ मेहगोष्ठात्प्रगल्भ-

क्ष्वेडिन्नर्दिन्विजितिपटवः पण्डितव्याडशूराः ।

गर्भाच्छूरः सुहितसहितस्तृप्तदृप्तौ च धीरः-

पिएडीशूरो व्रणकमिरथो कूपमण्डूकयुक्तः ॥ १०२ ॥

पात्रेसमितादयः सप्तमीतत्पुरुषा निपात्यन्ते । क्षेपे गम्यमाने पात्रेसमि-
 तादयोऽय(२)मित्यनेनायमेव निपातितः समासो भवति नान्यः । ड्यन्तादिति
 यथासम्भवं सर्वत्र सम्बध्यते ॥ पात्रेसमिता । अपचितक्षीरा धेनुर्या सा पात्र-
 संगतिमात्रपर्यवसितव्यापारा सत्येवमुच्यते । तद्वदन्योऽपि यः फलविकलव्या-

(२) पृथिवीप्रणव इति पा० ।

(३) पात्रेसमितादयोऽयमित्याकारकं सूत्रं पाणिनीयव्याकरणे नोपलभ्य-
 ते । पाणिनीयाष्टके तु-पात्रेसमितादयश्चेत्याकारकं सूत्रमस्ति । तेनानुमीयते
 तादृशं सूत्रमन्यव्याकरणस्यमादत्तम् । एवमन्यत्रापि यत्रयत्र सूत्रभेद उपलभ्यते
 तत्र तन्नान्यव्याकरणसूत्राणि श्रुतानीति बोध्यम् । इति-भी० श०

पाराडम्बरः स तदुपमानात्तथा वाच्यो यथा चञ्चा खरकुटी चैत्रं इति ॥ पात्रे
 वाहुल्येन संघटनात् क्षीरादिफलविकला । पात्रेवहुला । शेषार्थः पूर्ववत् ॥
 अथवा । पात्र एव समिता मिलिताः । पात्र एव बहुलाः प्रचुराः । नान्यत्र
 कार्ये, पात्रशब्देन साहचर्याद्भोजनं लक्ष्यते ॥ गेह एव प्रगल्भः । गेहेप्रगल्भः ॥
 एवं गोष्ठेप्रगल्भः ॥ गेह एव क्ष्वेडति विक्रमं दर्शयति । अन्यत्र भीरुः ।
 गेहेक्ष्वेडी ॥ गोष्ठेक्ष्वेडी ॥ गेह एव शौर्याडम्बरं प्रकाशयन् । गेहेनर्दी ।
 तत्तुल्यवृत्तिरन्योऽप्येवमुच्यते ॥ गोष्ठेनर्दी ॥ विजितमनेन विजिती । यद्वा ।
 विजितमस्यास्तीति विजिती ॥ गेह एव विजयते न शत्रुमध्ये । गेहेविजिती ॥
 एवं गोष्ठेविजितीति एवं गेहेपटुः । गोष्ठेपटुः ॥ गेहेपखिडतः । गोष्ठेपखिडंतः ॥
 गेहेव्याडः । गोष्ठेव्याडः ॥ गेहेशूरः । गोष्ठेशूरः ॥ गर्भ एव शूरः । गर्भान्निः
 सृत्य भीरुः । गर्भेशूरः ॥ गर्भ एव सुहितो न तु वहिर्निःसृतः । गर्भसुहितः ॥
 गर्भ एव द्रुप्तः * स्वमात्राहतेनाहारेण ततो निःसृत्य न कदाचिदुदरपूरं कृत-
 वानिति । गर्भद्रुप्तो दरिद्रः ॥ गर्भ एव द्रुप्तो मातुश्चेष्टया मातुरायासनेन वा
 ततोऽन्यत्र निस्तेजाः । गर्भद्रुप्तः ॥ अथवा गर्भसुहितादीनामयमर्थः—योऽली-
 काभिमानित्वादानुचितचेष्टः स एवमुच्यते ॥ गर्भ एव धीरो गर्भान्निःसृतश्च-
 पलः । गर्भधीरः ॥ पिण्ड्यां खादितव्ये वस्तुनि शूरः । कलहवर्धनादिकं कृत्वा
 खादितव्यं खादत्यन्यत्र कार्यान्तरे निर्विक्रमः । स पिण्डीशूरः ॥ ब्रह्मण्य
 एवकमिः । ब्रह्मकमिः । अल्पद्रुश्वा ॥ कृमिशब्दः संयोगादिः संयोगविकलो-
 ऽप्यस्ति । उदुम्बरे कृमिरिव । उदुम्बरकमिः । तस्माद्रसाद्विशिष्टं रसमन्यं न
 वेत्ति स एव मुच्यत इति कञ्चिदाह ॥ कूपे मण्डूक इव । कूपमण्डूकः । ततो-
 ऽन्यज्जलस्थानं सरः समुद्रं वाऽधिकं न पश्यति । तद्द्रव्यः पुरुषो ग्रामे नगरे
 वा शास्त्रे वा प्रतिबद्धः । ततोऽन्यत्र पश्यति विशिष्टं स एवमुच्यते ॥१०२॥

गेहेनन्दी गृहकलविङ्को गेहेमेह्याखनिकवकौ च ।

गेहेवादी ननु नगरश्वा ज्ञेयः कर्णेतिरितिखासौ ॥१०३॥

गेह एव नन्दति । गेहेनन्दी ॥ गेहेनर्तीत्यपि कश्चित् ॥ गृहे कलविङ्क
 इव । गृहकलविङ्कः ॥ गेह एव मेही । गेहेमेही । य आवश्यकार्यमपि वहिर्न
 निर्गच्छति भोजन एव च संरभते स एवमुच्यते ॥ आखनिकी जलस्रोतः खातं
 तस्मिन् वक इव । आखनिकवकः । यत्किञ्चिदासीत् आखनिके लभते

तद्भक्षयति नाम्यत्र गच्छति तद्दहन्योऽपि य आत्मीये गृहे यत्किञ्चिदस्ति
 तद्भक्षयति नान्यत्र गच्छति स एवमुच्यते ॥ अपरआह । आखनिरेव । अखि-
 निकः । कुत्साद्यर्थे कः । स्वल्पखातनिम्नप्रदेशो जलाधार उच्यते तस्मिन्
 वकः । आखनिकवकः । स हि जलाश्रयक्षुद्रजन्तुभक्षणानुसंधानेन संकुचितात्मा
 बहुलक्षस्तद्दहन्योऽप्येवमुच्यते ॥ गेह एव दहनशीलो नान्यत्र । गेहेदाही ॥
 नगरे श्वेष । नगरश्वा धृष्ट उच्यते ॥ टिरिटिरा चापलेनानुचितचेष्टोच्यते ॥
 मत्ता छन्दः । ज्ञेया मत्ता सभसगयुक्ता ॥ १०३ ॥

कर्णचुरचुरा कूपकच्छपावटकच्छपाः ।

गेहेमेली गृहात्सर्पो नगरात्काकवायसौ ॥ १०४ ॥

कर्णचुरचुरा चापलेनानुचितचेष्टोच्यते । टिरिटिरीति गत्यनुकरणम् ।
 चुरुचुर्विति वाक्यानुकरणम् । तत्करोतीति शयन्तादप्रत्ययो निपातनसामर्थ्या-
 द्वाऽनो न भवति ॥ शाकटायनस्तु कर्णेटिरिटिरिः कर्णेचुरुचुरित्याह । अन-
 योश्च व्याख्या । कर्णे किमपि जल्पित्वा जीवति । नास्य विक्रम इति क्षेपः ।
 टिरिटिरिचुरुचुर्वित्यनुकरणशब्दौ तदाकारिणि द्वयवह्नियेते ॥ कूपकच्छपाव-
 टकच्छपी कूपसर्पकृषत् ॥ गेह एव मिलनशीलो नान्यत्र । गेहेमेली ॥ गृह
 एवसर्पः । गृहसर्पः । दुष्ट इत्यर्थः । नगरे काक इव । नगरकाकः । नगरे
 वायस इव । नगरवायसः । स्वार्थनिष्ठः परवञ्चनानिपुण उच्यते ॥ अथवा ।
 नगरकाको न क्वचित्तिष्ठति सर्वमेव नगरं परिभ्रमति तद्दत्तत्रान्यत्र वाऽनव-
 स्थितः पुरुष उच्यते ॥ १०४ ॥

मातरिपुरुषोदुस्वरमशकौ गेहेविचिल्यपि प्रोक्तः ।

श्रमणाप्रव्रजिताथो कुलटा पटुनां च मृदुनापि ॥ १०५ ॥

मातरिपुरुषः । यः सदाचारं भिन्नति स एवमुच्यते । यद्वा । मातरि
 पौरुषमवलम्बमानो मातरिपुरुषः । तत्तुल्यवृत्तिरन्योऽप्येवमुच्यते ॥ पितरि-
 शूर इत्यपि भोजः । उदुस्वरे मशक इव । उदुस्वरमशकः । अल्पदृशक ॥
 अथवा । उदुस्वरमशकोऽल्पप्राणः सुकुमारश्च । तादृशो यः स उदुस्वरमशकः ।
 विचिह्नमनेन । विचिती । गेह एव विचिती । गेहेविचिती । अयमर्थः—गेहे
 स्थित्वेदं युक्तमिदमयुक्तमिति विचिनोति निरूपयति बुद्धिमत्तां प्रकाशयति
 न सभामध्ये कार्यं वा स एवमुच्यते । एतेषां यथासम्भवं गणपाठसामर्थ्यात्

सप्तम्या अलुक् ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन उदपानमण्डूक इत्यादयोऽनुसर्त-
व्याः ॥ इति पात्रेसमितादिः ॥

कुमारशब्दः अमणादिभिर्विशेष्यैः सह समस्यते । समासस्तु कर्मधारयः ।
आस्यतीति अमणा । कुमारी चासौ अमणा च । कुमारअमणा ॥ कुमार
प्रव्रजिता । कुमारकुलटा । कुमारश्चासौ पटुश्च । कुमारपटुः ॥ कुमारसृदुः ॥ १०५ ॥

तापसीनिपुणादासीगर्भिण्यध्यापकाः स्मृताः ।

कुशलः पण्डितश्चात्र चपलश्चाभिरूपकः ॥ १०६ ॥

कुमारतापसी ॥ कुमारनिपुणा ॥ कुमारदासी ॥ कुमारगर्भिणी ॥ कुमा-
राध्यापकः ॥ कुमारकुशलः ॥ कुमारपण्डितः ॥ कुमारचपलः ॥ कुमाराभिरूपकः ॥

लिङ्ग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणमिति न्यायात् कुमारशब्दः अम-
णादिभिः स्त्रीलिङ्गैः स्त्रीलिङ्ग एव समस्यते । पट्वादिभिस्त्वभिधेयलिङ्गै-
स्तस्मिङ्गैः । तेन कुमारपट्वी । कुमारसृद्वी । इत्यादि सिद्धं भवति ॥ १०६ ॥

इति अमणादिः ॥

किंशुकः किंवदन्ती स्यात् किंकिरातश्च किंनरः ।

किंपुरुषोऽथ किंदासः किंजल्काद्या बुधैर्मताः ॥ १०७ ॥

किंशुकादयस्तत्पुरुषसञ्ज्ञायां विषये साध्रवो भवन्ति किंशुकः=पला-
शः । किंवदन्ती=जनश्रुतिः ॥ किंकिरातः=कुरण्टकः ॥ किंनरः=मयुः ॥ किं-
पुरुषः स एव ॥ किंदासः=राजर्षिः ॥ किंजल्कः=पुष्परेणुः ॥

आद्यशब्दादन्येऽपि द्रष्टव्याः । अयं च गणः श्रीभोजदेवाभिप्रायेण ॥ १०७ ॥

इति किंशुकादिः ॥

व्याघ्रः क्रुश्रामहिषरुरवः कुञ्जरेन्दू वराहः—

सिंहो वज्रं वृषभकलशौ चन्दनं पुण्डरीकः ।

चन्द्रः कुम्भर्षभकिसलयं पल्लवस्तृक्षपद्मौ—

हस्तिश्वानावृषितरुवृका विम्बमप्यत्र लक्ष्यम् ॥ १०८ ॥

सुबन्तं पदं केनचिद्गुणेन परार्थं प्रयुक्तैर्व्याघ्रादिभिः सह गौणैर्व्याघ्री-
रित्यनेन समस्यते । समासः कर्मधारयसञ्ज्ञी भवति । व्याघ्र इव=व्याघ्रः ।

पुरुषश्चासौ व्याघ्रश्च=पुरुषव्याघ्रः ॥ स्त्रीक्रुञ्चा ॥ पुरुषमहिषः ॥ पुरुषरुहः ॥
 पुरुषकुञ्जः ॥ वदनेन्दुः ॥ पुरुषवराहः ॥ पुरुषसिंहः ॥ वाग्बज्रः ॥ पुरुषधृष-
 मः ॥ कुचकलशौ । मुनिचन्दनः ॥ मुखपुण्डरीकम् ॥ मुखचन्द्रः ॥ स्तनकुम्भौ ॥
 पुरुषर्षभः ॥ करकिंसलयम् ॥ पाणिपल्लवः ॥ पुरुषर्क्षः । पाणिपद्मम् ।
 पुरुषहस्ती ॥ वानरशवा ॥ राजानऋषय इव=राजर्षयः । वैरं तरुरिव समूल-
 त्वात् । वैरतरुः ।

वद्भूमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरोः स्त्रियः ।

पुरुष वृकः ॥ ओष्ठो लौहित्याद्विम्बनिव ।

ओष्ठेन रामो रामौष्ठविम्बचुम्बनचुञ्चुना ॥

आकृतिगणोऽयम् । तेन पुरुषवृषइत्यादयोऽपि भवन्ति ॥ १०८ ॥

इति व्याघ्रादिः ॥

श्रेणिः पूगो निधननिपुणब्राह्मणाः पण्डितोऽथो-

मन्त्रो मुण्डो निचयचपलक्षत्रियाध्यापकाश्च ।

इन्द्रो देवः कृष्णविशिपौ निर्धनोऽथो पटुर्वा-

राशिर्भूतश्रमणकुशलाः कुन्दुमः स्याद्द्वन्द्वः ॥ १०९ ॥

श्रेणीत्यादयः शब्दा अच्यन्ताः कृतादिभिः सह वा समस्यन्ते । समा-
 सः कर्मधारयो भवति ॥ अश्रेणयः श्रेणयः कृताः=श्रेणीकृताः पुरुषाः ॥

वणिकूपथे पूगकृतानि यत्र अनागतैरम्बुभिरम्बुराशिः ॥

अनिधनरूपाः निधनरूपाः कृताः=निधनकृताः शत्रवः ॥ निपुणो-
 दाहताः ॥ ब्राह्मणमताः ॥ पण्डितज्ञाताः ॥ मन्त्रमिताः ॥ मुण्डसंभाषिताः ॥
 निचयोच्चारिताः ॥ चपलापाकृताः ॥ क्षत्रियमताः ॥ अध्यापकोदिताः ।
 अधीतेऽध्यापक इति शकटाङ्गमः ॥ इन्द्रावधारिताः ॥ देवाच्चाताः । वेदेति
 रत्नमतिः ॥ कृष्णारयालाः ॥ विशिपं गृहम् । अविशिपं विशिपं कृतम्=
 विशिपकृतम् । भोजस्तु विशिष्ट इत्याह । वामनो गण इत्यपि ॥ निर्धनो-
 पकृताः ॥ ऊको राशिस्थानम् । किलिष्ठा इत्यपरे । ऊकायकल्पिताः ॥
 पटुक्ताः ॥ राशिकल्पिताः ॥ भूतनिराकृताः ॥ अमणविश्रुताः ॥ कुशलाख्या-
 ताः ॥ कुं भूमिं दुनोति=कुन्दुः=उन्दुरः । तं मीनाति । हिनस्ति । कुन्दुमो=

मार्जारः । कुन्दुमावकल्पिताः । अपरे तु कन्दुमेति पठन्ति । कन्दुः पाकस्या-
नम् । तस्मिन्मिनोतीति कन्दुमः । अकन्दुमाः कन्दुमाः कृताः कन्दुमकृताः
शालयः । कुङ्कुमेति रत्नमतिः । वदान्योदीरिताः ॥

कृतादयस्तु सर्वैरपि व्याघ्रादिभिः सम्बन्धमनुभवन्ति । अश्रेणयः श्रेणयो
विहिताः । श्रेणिविहिताः । श्रेणिनिरूपिताः । श्रेण्यासीना इत्यादयो भवन्ति ।
यत्र सामर्थ्यं नास्ति तत्रेति शब्दाध्याहारो द्रष्टव्यः । अनिर्धना निर्धना
इत्युपकृताः । अचपलाश्चपला इत्यपाकृताः । अभूता भूता इति निराकृता
इति । आकृतिगणोऽयम् । तेन तूलकृता इत्यादयोऽपि द्रष्टव्याः ॥ १०९ ॥

इति श्रेण्यादिः ॥

कृतादयस्तु यथायोगं व्याख्याताः । ते च—

कृतमितभूतोदाहृतविश्रुतकलितावधारितोपकृताः ।

आस्थितनिराकृतोक्ताः संभावितमतविकल्पितासीनाः ११०

अवकल्पितो निरूपितविहितोपाकृतसमाज्ञाताः ।

आम्नातोदितदृष्टावज्ञातोदीरिताख्याताः ॥१११॥

इति कृतादिः ॥

वृन्दारको वराहश्च नागकुञ्जरपुङ्गवाः ।

वृषभव्याघ्रशार्दूलहंससिंहर्षभादयः ॥११२॥

गौश्चासौ वृन्दारकश्च । गोवृन्दारकः । नृवराहः । पुंनागः । अश्वकु-
ञ्जरः । मुनिपुङ्गवः । रघुवृषभः । नरव्याघ्रः । राजशार्दूलः । राजहंसः ।
पुरुषसिंहः । भरतर्षभः ॥ आदिग्रहणात् । नवतमालनिभस्य नभस्तरोरित्या-
दयोऽपि भवन्ति ॥११२॥ इति वृन्दारकादिः ॥

मतल्लिकोद्धमिश्राः स्युः प्रकाण्डस्थलभित्तयः ।

हस्तपाशतटाः पादः पालीमचर्चिकादयः ॥११३॥

अश्वमतल्लिका । गोमतल्लिका । यथा—

अभ्याजतोऽभ्यागततूर्णतर्णकां—निर्याणहस्तस्य पुरो दुधुक्षतः ।

धर्गाद्वां हुंकृतिचारुनिर्यतीम्—अरिर्मधैरैक्षत गोमतल्लिकाम् ॥

साध्वीं गामपश्यदित्यर्थः । पुरुषोद्वाः । आर्य्यमिश्राः । गोप्रकाण्डम् ।
वक्षःस्यलम् । अंसभित्तिः । केशहस्तः । केशपाशः । स्तनतटम् । तातपद्माः ।
कपोलपाली । गोमचर्चिका । एतन्नाविष्टलिङ्गत्वान्मतल्लिकादयोऽन्यलिङ्गेपि
जातिशब्दे स्वलिङ्गोपादाना एव समानाधिकरणा भवन्ति । प्रशंसावचनत्वं
चैषां समास एवेति वाक्यं न भवति । आदिग्रहणात् तमस्काण्डः । उरःक-
वाटः । कुमारीतल्लजकादयो भवन्ति ॥११३॥

इति मतल्लिकादिः ॥

खसूचिखेटौ कितवोऽथ चौरमूर्खब्रुवास्तस्करदुर्दुरूटौ ।

धूर्तो विटः स्याद्धतकश्च भीरुश्चेलश्च जालमापस्तौ च धृष्टः ११४

कुत्सितवाचि पदमेतैः खसूच्यादिभिः सह समस्यते । तत्पुरुषश्च स-
मासः । वैयाकरणश्चासौ खसूची च । वैयाकरणखसूची ॥ यः पदपदार्थनिर्णयं
कर्तुमुचितं पृष्टः सन् निष्प्रतिभत्वात् खम् आकाशं सूचयति स एवमुच्यते ।
शाकटायनस्तु पृषोदरादित्वात् षत्वे खसूच्याह । वामनप्रभृतयस्तु खसूचिरि-
त्याहुः । मुनिखेटः । याज्ञिककितवः । कविचौरः । पाठकमूर्खः । ब्राह्मण-
ब्रुवः=जातिमात्रीपजीवी । रक्षकतस्करः । सीमांसकदुर्दुरूटः । सीमांसा-
ध्यनेन शौचाचारादिलक्षणं फलमनवाप्य वेदविस्मयनमद्यपानाद्यनुष्ठाननि-
रतो नास्तिको जातइत्यर्थः । मुनिधूर्तः । मुनिविटः । शिरस्तुण्डमुण्डनद-
ण्डादिमुनिवेषधारणाद्वेश्यागमनमद्यपानाद्यनाचारप्रवृत्त एवमुच्यते । राक्षस-
हतकः । क्षत्रियभीरुः । ब्राह्मणचेलः । ब्राह्मणजालमः । तापसापसदः ।
ग्राम्यधृष्टः ॥

आकृतिगणोऽयम् । तेन कागक्षीरकागक्षस्यपृच्छान्दसंबन्धरहत्यादयो द्रष्ट-
व्याः ॥ एतच्छय गणत्रयं श्रीभीमवैशाखिणीभ्यः प्रकृतम् । अन्यवैयाकरणमतेन
सूत्राण्येतानि ॥११४॥ इति शतस्यारिः ॥

मयूरच्छत्रतच्छात्राच्छर्मासकः प्रोहवाणिजा ।

कम्बोजाद्यवनान्मुण्डोऽथ प्रतिस्वागता तथा ॥११५॥

मयूरव्यंसकादयः समसंसा मयूरव्यंसकाणाम् । इत्यनेन कर्मधारयसंज्ञा
भाष्ये ॥ विगता अंसा यस्य । व्यंसकः । रमणीयाकारदेहनेपश्योपेतत्वाद्(१)

(१) दामपतिपुण्योपलम्भान्—इति पाठान्तरम् ।

मयूरवन्मयूरः पुमान् । स चासौ व्यंसकश्च बाहुसाध्यव्यापारपुरुषकारविकलः
 कश्चिदेवं प्रतिक्षिप्यते ॥ यद्वा । व्यंसयति च्छलयतीति व्यंसकः । स चासौ
 स च यो लुब्धकानां मयूरो गृहीतशिक्षोऽन्यान्मयूरांश्छलयति वञ्चयति स
 विप्रलम्भक उच्यते । छत्रवद्व्यंसकः । छत्रव्यंसकः । छत्रं हि प्रसारितं सत्
 सुन्दराकारमाभाति स्वयं तु स्यातुमशक्तमन्येन प्रयत्नवता धार्यते । एवमन्यो-
 ऽपि यः सदा परावष्टम्भवलस्थितिः सुन्दराकारोऽपि स एवमुच्यते । छात्रव-
 द्व्यंसकः । छात्रव्यंसकः । छात्रो हि यथा लब्धभिक्षामात्रवृत्तिकृतसंतीषो
 निर्व्यापारतया कार्यतो व्यंसकस्तद्वदन्योऽप्येवमुच्यते । छात्ररूपेण वञ्चको वा-
 लोकस्य । छात्रव्यंसकः । कम्बोजइव मुण्डः । कम्बोजमुण्डः । यवन इव
 मुण्डः । यवनमुण्डः । दीक्षितेन मुण्डितव्यम् । कम्बोजा यवनाश्च मुण्डा भव-
 न्ति । एवमित्तौ वृथा मुण्डावित्येकोऽर्थः । प्रेहि त्रियस्व वाणिजेति यस्यां
 सा प्रेहिवाणिजा । प्रपूर्वं इत्यनरणे । यथा प्रेतः ॥ अन्यत्वाहुः । प्रेहि । आ-
 दरेणागच्छेत्यर्थः । स्त्रीलिङ्गत्वादाङ्निपातनादेवाकारइति केचित् । प्रेहि
 स्वागतमस्याम् । प्रेहिस्वागता ॥ ११५ ॥

एह्यपेहि क्रियापूर्वा वाणिजा स्वागतापि च ।

द्वितीया विघसाचापि प्रघसा प्रकसा तथा ॥११६॥

एहि वाणिजेति यस्यां तिथौ क्रियायां वा सा । एहिवाणिजा । के-
 चिद् आयान्ति गच्छन्ति वाणिजा यस्यान्निति विगृह्य निपातनादेहिभावः ।
 अपेहि । अपसर वाणिजेति यस्यां सा । अपेहिवाणिजा । एवम् एहिस्वाग-
 ता । अपेहिस्वागता । एहिद्वितीया । अपेहिद्वितीया । एहिविघसा । अपे-
 हिविघसा । एहिप्रघसा । अपेहिप्रघसा । एहिप्रकसा । अपेहिप्रकसा ।
 अपेहिप्रकसं दूरनिति यस्याम् । अपेहिप्रकसा । इति तु शाकटायनः ॥११६॥

स्नात्वा कालकपीत्वास्थिरकाकिञ्चननिपत्यरोहिण्यः ।

आहरपूर्वाश्वेलावसनावनितास्तथा वितता ॥११७॥

स्नात्वा कालीभूतः कृष्णीभूतः । स्नात्वाकालकः । पीत्वा स्थिरीभूतः ।
 पीत्वास्थिरकः । न भवति किञ्चन क्वचित् किञ्चिदुपयुज्यत इत्यकिञ्चनं नि-
 षप्रयोजनम् । निपातनान्मुगागमः । नास्य वा किञ्चनास्तीति । अकिञ्चनम् ।
 अकिञ्चनः ।

अकिञ्चनः सन् प्रभवः स संपदानकिञ्चना ।

न किञ्चनं नास्य वा किञ्चनमस्तीति विग्रहेण किञ्चनशब्दोऽनव्ययोऽ-
प्यस्तीति चन्द्रदुर्गाभिप्रायो लक्ष्यते ॥ निपत्य भूमौ पतिता रोहिणी लोहि-
नीरक्ता भवति या सा निपत्यरोहिणी । आहर चेतनिति यस्यां सा । आ-
हरचेला । एवम् आहरवसना । आहर वनितामिति यस्यां क्रियायां सा ।
आहरवनिता । आहर विततं विस्तीर्णमिति यस्यां सा । आहरवितता ।
विततं जालमानाय इत्येके ॥ ११७ ॥

एहीडं पचलवणा प्रोहकपर्दा निकुच्यकर्णश्च ।

उद्गमचूडैहियवं भुक्त्वासुहितोद्धरावसृजे ॥११८॥

इडा स्त्री । यथा । महतीइला । सहेला ॥ एहि आगच्छ इडे स्त्रीति
यस्मिन् कर्मणि तत् एहीडं विवाहादिकर्म । शास्त्राध्यायादिको वा ग्रन्थप्रवि-
भागः । अन्यपदार्थत्वेपि शब्दशक्तेर्नपुंसकत्वमेव । पंच लवणमिति यस्यां
क्रियायां सा पचलवणा । प्रोहापनय कपर्दं केशकलापं वराटकं वेति यस्यां
सा प्रोहकपर्दा । निकुच्य कर्णो धावति । निकुच्यकर्णः । उद्गमोत्क्षिप चूडा-
मिति यस्यां सा । उद्गमचूडा । अभिभवनं निर्भयता वा वर्त्तत इत्यर्थः । एहि
यवेति यस्मिन् कर्मणि तद् एहियवम् । अन्यस्तु । एहि यवैरिति यस्मिन्
कर्मणीत्याह । भुक्त्वासुहितः । यो यत्किञ्चिदशित्वा तृप्तो भवति स एवमुच्यते ।
उद्धर कोष्ठाद्धान्यमन्यद्वा । अं वसृज देहीति यस्यां सा । उद्धरावसृजा ॥११८॥

उच्चावचप्रोहकटोच्चनीचनिश्चप्रचाः कृन्दिद्विविचक्षणा च ।

विचप्रचा चाचपराचयुक्ताऽकुतोभयाचोपचकांदिशीकाः ॥११९॥

उच्चं च तद्वचं च । उद्क् चावाक् चेति वा । उच्चावचम् । यथा-

भिन्नेषु रत्नकिरणैः किरणेष्विवेन्दो-

रुच्चावचैरुपगतेषु सहस्रसंख्याम् ॥

उच्चितं चावचितं च । उच्चावचमित्यन्ये । प्रोह कटमिति यस्यां सा
प्रोहकटा । प्रोहणं वीरणादेः कटादिभावाय विरचना ॥ उच्चैश्च नीचैश्च यत्तद्-
उच्चनीचम् । उच्चं च नीचं भिति वा । निश्चितं च प्रचितं च । निश्चप्रचम् ।
निश्चितं च प्रचितं च यस्यां क्रियायां सा निश्चप्रचा । निष्कुपितं च निस्त्वचं
च । निश्चत्वचमिति केचित् ॥ कृती वेष्टने । कृन्दिद्विविष्टं चक्षणमिति यस्यां

सा कन्दिद्विविचक्षणा । शाकटायनस्तु । कन्दिद्विविक्षिणीहीति यस्यां सा कन्दिद्विविक्षिणा । कर्पासविषया क्रिया । निपातनाद्धि लोपो विकरणस्य ह्रस्वत्वं चेत्याह । विकृतं च प्रकृतं च यस्यां क्रियायां सा विचप्रचा । आचितं च पराचितं च । आचपराचम् ॥ अवाक् च परस्ताच्च । आजपराचम् । नास्ति कुतोऽपि कस्मादपि भयं यत्र । अकुतोभयम् ।

अकुतोभयसञ्चाराः षट् कर्माणि प्रकुर्वते ।

आचितं चोपचितं च । आचोपचम् ॥ आगच्छ चोपगच्छ च यस्मिन् कर्मणि तद् आचोपचमित्यन्ये । कां दिशं ब्रजामीति कांदिशीकः । गणपाठसामर्थ्याद्रीकण् प्रत्ययः ॥ ११९ ॥

उद्धपनिवपाथोद्धमविधमाहोपुरुषिकेहपञ्चम्यः ।

अहमहमिकायदृच्छोत्पंचनिपचाः प्रोष्यपापीयान् ॥ १२० ॥

उद्धप निवपेति यस्यां सा । उद्धपनिवपा । उद्धम विधमेति यस्यां सा उद्धमविधमा । अहो पुरुषोऽहमित्यस्य भावः । आहोपुरुषिका । मनोज्ञादित्वादकञि ॥ इह पञ्चमीति यस्यां क्रियायां सा । इहपञ्चमी । इह पञ्चमीशब्दसम्पर्कात्प्रकरणमधिकारो वा । इहपञ्चमीत्यन्ये । अहं शक्तोऽहं शक्त इत्यस्ति यस्यां सा । अहमहमिका । स्वार्थिको मत्वर्थीयो वा काट् । अहमपूर्वम् अहंपूर्वं प्रवर्तते इति विगृह्य तद्भावोऽहमहमिका । पृषोदरादित्वादृद्ध्यभावादिरिति सुधाकरः । या ऋच्छाभिप्रायः । यदृच्छा । स्वभावाद् यथेच्छमित्यर्थे वृत्तिः । यथा—यदृच्छया सूयति यस्तपस्यते । उत्पच निपचेति यस्यां क्रियायां सा । उत्पचनिपचा । आख्यातमाख्यातेन सातत्येति सातत्ये समासः । असातत्यार्थेणैव पाठः । अन्ये तु । उत्पच । आख्यातोपसर्गसमुदायो नाख्यातग्रहणेन गृह्यते । पापं विद्यते यस्य स पापी । बहूनां पापिनां मध्येऽतिशयेन पापी । पापीयान् । प्रोष्य विद्युक्ती भूत्वा पापीयान् विरूपकः । यथा—
राघवः प्रोष्यपापीयाञ्जहीहि तसकिंचनम् ॥ १२० ॥

आख्यातेनाख्यातं सातत्येऽन्यक्रियापदस्यार्थे ।

कर्त्तारश्च ब्रूते हि कर्मणा बहुलमांभोक्षणे ॥ १२१ ॥

आख्यातं तिङन्तमाख्यातेन तिङन्तेन सह समस्यते । अन्यस्य क्रियापदस्यार्थे । अश्रीत पिवतेति सततं वाचो भवन्ति यस्यां भृत्यजनाच्चादानक्रि-

यायां सां अश्रीतपिबता । अत्रैषामाख्यातप्रतिरूपकाणामव्ययानामन्यपदार्थे
स्त्रीलिङ्गता । अर्शआदित्वाद्वादन्तता । एवं खादतमोदता । गणपाठसाम-
र्थ्यादतङ् । खादाचासायां को नाम कस्य न सहायः । पचतभृज्जतेत्यादि ॥
ह्यन्तं क्रियापदं कर्मणा ह्यन्तस्यैवाप्येन बहुलं समस्यत आभीक्ष्ण्ये गम्यमाने ।
स च समासः कर्त्तारमाचष्टे । जहि जोष्टं देवदत्त यो वक्ताभीक्ष्णं सातत्येन
ब्रवीति स वक्ता जहिजोष्टः । एवम् । उज्जहिजोष्टमित्यादि ॥ पचौदनमिति
बहुलवचनान्न भवति ॥१२१॥

. एहिरेयाहिराभिन्द्दिलवणोत्पत्यपाकलाः ।

स्याद्ग्रहंपूर्विका प्रोहकर्दमाथोद्धरोत्सृजा ॥१२२॥

एहि आगच्छ रे । याहि गच्छ रे । इति यस्यां क्रियायां सा एहिरेया-
हिरा । गणपाठादात्वम् । भिन्द्दु लवणमिति यस्यां सा भिन्द्दुलवणा । उत्प-
त्य । आकाशे भूत्वा । या पाकला पाण्डुर्भवति सा । उत्पत्यपाकला । अत्र
परकालक्रियाया अभावे क्त्वाप्रत्ययेऽपि । अनेनैव सूत्रेणैवं पूर्वेष्वपि ॥ अहं-
पूर्वम् अहंपूर्वमिति यस्यां सा । अहंपूर्विका । काटौ पूर्ववत् ।

साहंपूर्विकयाहि मे विदधतां सिंहासनाध्यासनम् ॥

प्रोहापनय । कर्दममिति यस्यां सा प्रोहकर्दमा । उद्धर किमपि द्रव्य-
मुत्सृजेति यस्यां सा । उद्धरोत्सृजां ॥ १२२ ॥

उत्पतनिपता श्यामा निषण्णपूर्वोन्मृजावमृजा ।

ज्ञेया त्वहंप्रथमिका प्रोद्यपदीहद्वितीये च ॥ १२३ ॥

उत्पत निपतेति यस्यां सा । उत्पतनिपता । निषण्णा सती श्यामा
जाता निषण्णश्यामा । निषद्यश्यामेति श्रीभोजः । अत्र विशेषणसमाप्ते पूर्व-
पदानियमः स्यात् । उन्मृद्धि अवमृद्धीति यस्यां क्रियायां सा । उन्मृजाव-
मृजा । अतएव निपातनादनयोरिहैव साधुत्वम् । अहं प्रथमो यस्यां सा ।
अहंप्रथमिका । प्रोद्य पादौ घावति । प्रोद्यपदि । इह द्वितीयेति यस्यां
क्रियायां सा । इहद्वितीया । शाकटायनस्तु । अद्यपञ्चमी । अद्यद्वितीये-
त्याह । वामनप्रभृतिभिरयङ्गिति वचनात्परमो मयूरव्यंसकः समासान्तरं न
भवतीत्युक्तम् । भोजस्तु न चानेन समास इति वचनादयमन्येन सह समस्य-
तएवेत्याह । मयूरव्यंसकप्रिय इति ॥

आकृतिगणोयम् । तेन शाकपार्थिवघण्टामाद्यच्छत्रभारविप्रभृतयो वे-
दिज्ञव्याः ॥ १२३ ॥

इति सयूरव्यंसकादिः ॥

दधिपयसी मधुसर्पिःसर्पिर्मधुरामलक्ष्मणां ज्ञेयाः ।

आद्यवसाने श्रद्धामेधे ऋक्सामवाङ्मनसे ॥१२४॥

न दधिपयआदीत्यादिना योगेन समाहारे प्राप्ते प्रतिषेधादितरेतर-
योग एव भवति । दधिपयसी । मधुसर्पिणी । सर्पिर्मधुनी । रामलक्ष्मणी ।
आद्यवसाने । श्रद्धामेधे । ऋक्सामे । वाङ्मनसे । यथा—

अतीतः पन्थानं तव च सहिमा वाङ्मनसयो—
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ॥

अस्मादेव गणपाठादेतयोः समासान्तः ॥१२४॥

मेधादीक्षाश्रुतश्रद्धाध्ययनेभ्यस्तपः परम् ।

प्रथोपसदौ स्कन्दविशाखौ हरिवासवौ ॥१२५॥

मेधातपसी । दीक्षातपसी । श्रुततपसी । श्रद्धातपसी । अध्ययनतप-
सी । शेषं स्पष्टम् ॥ १२५ ॥

सूर्याचन्द्रमसौ सोमरुद्रौ नारदपर्वतौ ।

शुक्लकृष्णौ पितापुत्रौ ज्ञेयौ भीमार्जुनौ तथा ॥१२६॥

मित्रावरुणौ मातापितरावथ कम्बलाश्वतरौ ।

सोलूखलमुसलाविहं सपरिज्याकौशिकौ च गणे ॥ १२७ ॥

सुहोळूखलमुसलाभ्यां वर्त्तते सह परिज्याकौशिकाभ्यां च । उलूखलमु-
सले ॥ परिज्याकौशिकौ ॥१२७॥

नरनारायणशिववैश्रवणा ब्रह्मप्रजापती चापि ।

अग्नीपोमाविध्मावहिर्याज्यानुवाक्याद्याः ॥ १२८ ॥

एषोऽपि स्पष्टः । आद्यशब्दः प्रकारे । तेषां लोक इतरेतरयोग एव
द्वन्द्वो वृष्यते तेषामिह ग्रहणं भवति । यथा—चन्द्रार्कविति ॥ १२८ ॥

इति दधिपय आदिः ॥

गवाश्वजाविकं कुब्जवामनं तु गवाविकम् ।

दर्भशरं श्वचण्डालं स्त्रीकुमारं तृणोलपम् ॥ १२९ ॥

पूर्वपदेत्यादिना सूत्रेण गवाश्ववादीनां समाहार एव द्वन्द्वो भवति ॥
गौश्व अश्वश्च । गवाश्वम् ॥ अजा च अविकश्च । अजाविकम् ॥ अजश्च अ-
विका चेति वा । कुब्जश्च वामनश्च कुब्जवामनम् ॥ अन्ये तु कुब्जाश्च स्त्रियो
वामनाश्च स्त्रियः । अतएव वचनारपुंभावे कुब्जवामनमित्याहुः । गौश्व अ-
विकश्च । गवाविकम् ॥ दर्भश्च शरश्च । दर्भशरम् ॥ श्व च चण्डालश्च श्वच-
ण्डालम् ॥ शाश्वतिकवैराभावे समाहारः । चण्डालपरिग्रहीतानामेव शुना
सहैकत्रावस्थानम् ॥ स्त्रियश्च कुमाराश्च । स्त्रीकुमारम् ॥ अन्ये तु स्त्रियश्च
कुमार्यश्च । उत्तरपदस्यातएव निपातनाद् ईकारनिवृत्तौ स्त्रीकुमारमित्याहुः ।
तृणानि च । उलपाश्च । तृणोलपम् ॥ १२९ ॥

दासीदासाजैडकदासीमाणवकपुत्रपौत्राणि ।

कुब्जकिरातोष्ट्रखरे मूत्रपुरीषं यकृन्मेदः ॥ १३० ॥

दासी च दासश्च । दासीदासम् ॥ अजश्च अजा च वा । एडकश्च ।
अजैडकम् ॥ दास्यश्च माणवकश्च । दासीमाणवकम् ॥

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः ।

नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः ॥

स्वार्थिकश्च कः । अन्ये दासीमाणवमित्येव पठन्ति । पुत्रश्च पौत्रश्च ।
पुत्रपौत्रम् ॥ कुब्जश्च किरातश्च । कुब्जकिरातम् ॥ कुब्जाश्च कैरातकाश्च । कु-
ब्जकैरातकम् ॥ किराता जनपदः । तत्र भवाः कैरातका इति शाकटायनः ।
विश्रान्तन्यासस्तु किरात एव कैरातो श्लेच्छइत्याह । उष्ट्रश्च खरश्च । उष्ट्रखरम् ॥
मूत्रं च पुरीषं च । मूत्रपुरीषम् ॥ यकृच्च मेदश्च । यकृन्मेदः ॥ १३० ॥

अर्जुनपुरुषं शाटीपट्टिकम् उष्ट्रशशमूत्रशकती च ।

भागवतीभागवतं तृणकाष्ठकुटीकुटे चापि ॥ १३१ ॥

अर्जुनश्च पुरुषश्च । अर्जुनपुरुषम् ॥ अर्जुनपुरुष इति (१) शाकटायनः ।

(१) अर्जुनश्च शिरीषं चार्जुनशिरीषम् ॥ द्वावपि वृक्षविशेषवाचिनौ ।
अर्जुनः पार्थः पुरुषो वासुदेवः—अर्जुनपुरुषम् । यद्वा अर्जुनः समच्छदः पुरुषः
पुत्रागः । इत्यधिकं पुस्तकान्तरे ।

शाटी च पट्टिका च । शाटीपट्टिकम् ॥ शाटीप्रच्छदमिति भोजः । उष्ट्रश्च
शशश्च । उष्ट्रशशम् ॥ मूत्रं च शकञ्च । मूत्रशकत् ॥ भगवान् देवताऽस्याः ।
भगवत इयं वा । भागवती । भागवती च भागवतश्च । भागवतीभागवतम् ।
तृणं च काष्ठं च । तृणकाष्ठम् ॥ कुटी च कुटश्च । कुटीकुटम् (१) ॥ कश्चित्
कुडी वाला । कुडो वालः ॥ कुडी च कुडश्च । कुडीकुडमित्याह ॥ १३१ ॥

मांसशोणितशब्दोपि दर्भपूतिकसंयुतः ।

बालवृद्धं बुधैर्ज्ञेयमुपाध्यायश्च याजकात् ॥ १३२ ॥

मांसं च शोणितं च । मांसशोणितम् ॥ दर्भश्च पूतिकश्च । दर्भपूती-
कम् ॥ वामनस्तु दर्भपूतिकमित्याह (२) ॥ बालश्च वृद्धश्च । बालवृद्धम् ॥ याजकश्च
उपाध्यायश्च । याजकोपाध्यायम् ॥

गवाश्वप्रभृतिषु यथोच्चारितरूपग्रहणादिह न भवति । गोऽश्वौ ।
गोऽश्वम् ॥ नियतश्चायं गणः ॥ १३२ ॥

इति गवाशवादिः ॥

हस्ती महेला गणिका कुसूलङ्कटोलगण्डोलकटोलकाश्च ।
गण्डोलकाजौ च कपोतगण्डौ कण्डोलकण्डोलकजालयुक्तौ १३३

पादस्याहस्त्यादेर्लुगित्यनेन हस्त्यादेर्वर्जितत्वाद्भुक् समासान्तो न
भवति । हस्तिन इव पादावस्य असी हस्तिपादः ॥ महेलापादः । गणि-
कापादः । कुसूलपादः । कटोलपादः । गण्डोलपादः । कटोलकपादः ।
गण्डोलकपादः । अजपादः । कपोतपादः । गण्डस्येव पादावस्य । गण्ड-
पादः ॥ कण्डोलसिव पादावस्य । कण्डोलपादः ॥ कण्डोलक इव पादावस्य ।
कण्डोलकपादः ॥ गण्डोलगण्डोलकशब्दावपि वामनः । जालपादः ॥ १३३ ॥

इति हस्त्यादिः ॥

० (१) कुटी कुम्भदासी कुटः कुम्भः । यद्वा कुटी पर्णशाला कुटो गृहम् ।
इत्यधिकं क्वचित् । (२) दर्भश्च पूलीकं च दर्भपूलीकम् । वामनस्तु दर्भपूती-
कमित्याह । पूतिका वनौषधिविशेषो या सीमध्वनीप्रतिनिधित्वेनोपादीयत
इत्यधिकं पुस्तकान्तरे ॥

कुम्भस्थूणाशतविकलशीविष्णुगोधैकदासी—
द्रोणीसूचीमुनिशुचिशक्तकृष्णजालार्द्रनज्जरेः ।

सूत्राष्टभ्यां कुण्णिगुणनिरः सूकरहेः षषश्व-

ड्यन्तं पादं सुविहितपदादेशमेनं विदन्तु ॥१३४॥

कुम्भाविष पादावस्थाः। कुम्भपदी ॥ स्थूणापदी । शतं पादा यस्याः । शतपदी ॥ खर्जूरकजन्तुः(१) । विगतौ पादौ यस्याः। विपदी ॥ कलशीव पादावस्थाः। कलशीपदी ॥ विष्णोरिव पादावस्थाः। विष्णुपदी ॥ एवं गीघापदी । एकं पादो यस्याः । एकपदी ॥ केचिन्न पठन्ति । एकस्यदित्यपि हि स्त्रियां दृश्यते । अन्ये तु व्यवस्थितवानुवृत्तेरिहैकस्मिञ्छब्दे विकल्पं वर्णयन्ति । दासीपदी । द्रोणीपदी । सूचीपदी । मुनिपदी । शुची पवित्रौ पादौ यस्याः । शुचिपदी । शक्तपादी यस्याः । शक्तपदी ॥ कृष्णौ पादौ यस्याः । कृष्णपदी ॥ जालनिव पादौ यस्याः । जालपदी ॥ आर्द्रौ पादौ यस्याः । आर्द्रपदी ॥ अविद्यमानौ पादौ यस्याः । अपदी ॥ त्रिपदी । यथा—त्रिपदीच्छेदनामपि । सूत्रमिव पादावस्थाः। सूत्रपदी । अष्टौ पादा अस्याः। अष्टापदी ॥ सञ्ज्ञायामष्टन इत्याख्ये । कुणी पादावस्थाः । कुणिपदी । गुणस्तन्तुः । तद्वत्पादावस्थाः गुणपदी । निर्गतौ पादावस्थाः । निष्पदी ॥ सूकरस्येव पादावस्थाः । सूकरपदी ॥ द्वौ पादावस्थाः । द्विपदी ॥ छन्दोविशेषजातिः ॥ षट् पादा यस्याः । षट्पदी ॥ ड्यन्त इति पाद इत्यनेन डीप्रत्ययान्तं सुविहितपदादेशमिति कुम्भपद्यादिरित्यनेन पदादेशे कृते ग्यसुट्शिणिक्येऽपदस्य पादः पदित्यनेन सुविहितः पदादेशो यस्य तमिति । उपमानसङ्ख्यापूर्वपदस्येह पाठो नित्यञ्चर्थः । कुम्भपदादिशब्दानां प्रवृत्तिनिमित्ताभावेपि रूढितः शतपुष्पादिशब्दवत्स्वाभिधेये प्रवृत्तिर्द्रष्टव्या । यथा—त्रिपादः काष्ठमयोपकरणविशेषः । नहि तस्यापि त्रयएव पादाः किन्तु पादचतुष्टयसङ्गावेऽपि तादृग्व्यपदेशो यादृक्पादत्रये सति । आकृतिगणनायम् । तेन । शितिपदी । अशीतिपदी । शाक्यपदी । इत्याद्यो द्रष्टव्याः ॥ १३४ ॥

{ इति कुम्भपद्यादिः ॥

(१) शतपदी—श्रीपधिविशेषो जन्तुविशेषो वेति पा० ।

शरदिपाशौ हिमवत्कियत्सदो यद्दृग्विदो द्यौर्विडनोमनस्त्यदः ।
दिवपथ्युपानच्चतुरस्तदाऽनडुज्जरा जरोऽक्षि प्रतिसंपरानुतः ॥ १३५ ॥

शरदादिभ्योऽव्ययीभावादित्यनेन शरदादिभ्यष्टच् समासान्तो भवति ।
शरदः समीपम् । उपशरदम् ॥ विपाशो नद्याः समीपम् । उपविपाशम् ॥
हिमवत आ आहिमवतम् । कियन्तं कियन्तं प्रति । प्रतिकियतम् ॥ सदःसदः
प्रति । प्रतिसदम् ॥ ययं प्रति । प्रतियदम् ॥ दृशं दृशं प्रति । प्रतिदृशम् ॥
विदं विदं प्रति । प्रतिविदम् ॥ द्यौरित्यनेन दिव्शब्दो द्यौशब्दश्च संगृहीतः ।
दिवं दिवं प्रति । प्रतिदिवम् ॥ द्यां द्यां प्रति । प्रतिद्यवम् ॥ विशं विशं प्रति ।
प्रतिविशम् ॥ अनन्तः समीपम् । उपानसम् ॥ मनो मनः प्रति । प्रतिमनसम् ॥
त्यंत्यं प्रति । प्रतित्यदम् ॥ दिशं दिशं प्रति । प्रतिदिशम् ॥ यथा—प्रतिदिशं
क्रियते कलभैरवः । पन्थानं पन्थानं प्रति । प्रतिपथम् ॥ अनुपथम् । ऋक्पू-
रब्धूः पथादित्यनेनैव समासान्तस्य सिद्धत्वादस्य पाठो न संगतः प्रतिभाति परं
वृद्धवैयाकरणमतानुरोधेन पठितः । उपानहः समीपम् । उपोपानहम् ॥
घतुर्णां समीपम् । उपचतुरम् । उपतदम् । अनड्वाहननड्वाहं प्रति । प्रत्य-
नडुहम् । जराजर इति जराशब्दोऽत्र पठ्यते । तस्य च स्थाने जरसादेशः ।
जरायाः समीपम् । उपजरसम् । अक्षयक्षि प्रति । प्रत्यक्षम् । एवं समीपमक्षणः ।
समक्षम् । परोक्षम् । भोजस्तु परसमानार्थः परः शब्दोऽव्ययम् । अक्षयोः
परम् । परोक्षम् । अव्ययेऽव्ययीभावः । कथं प्रत्यंक्षोऽर्थः परोक्षः काल इत्या-
देरव्ययीभावस्य सत्त्ववचनताऽर्शं आदित्वादतो भविष्यतीत्याह(१) ॥ अन्वक्षम् ॥
आकृतिगणोऽयम् । तेन । हिरूक् । इत्यस्यांनतिक्रमो यथाहिरूकमि-
त्यादयो वेदितव्याः ॥ १३५ ॥

इति शरदादिः ॥

उरः सर्पिर्मधूपानद्वधि शालिः पयः पुमान् ।
अनड्वान्नौस्तथा लक्ष्मीर्नऽपूर्वान्नित्यमर्थतः ॥ १३६ ॥

ऋन्नित्यादुर आदिभ्यद्वत्यनेनोरःप्रभृतिभ्यः शब्देभ्यः कच् भवति ।
व्यूहोरस्कः । बहुसर्पिष्कः । प्रियमधुकः । भारीस्तु—

(१) अर्शं आदित्वादचू भविष्यतीत्याहेति पा० ॥

प्रियमधुरसनानि षट्पदाली-मलिनयतिस्म विनीलवन्धनानि ॥

इति चिन्त्यम् । प्रथमं लीढमधवः पिबन्ति कटुभेषजम् ॥ इत्यादिषु ।

अथमुक्तोपानत्कः । प्रियदधिकः ॥

रक्षतु वः क्षिप्तकरः क्षोभितदधिभाण्डगलितदधिकस्य ॥

वामनवृत्तौ प्रियदध्न्य इति चिन्त्यम् । सम्पन्ना शालयो यस्य । सम्प-
न्नशालिकः ॥ प्रियं पयो यस्य । प्रियपयस्कः । प्रियपुंस्कः ॥ प्रियानडुत्कः ।
प्रियनौकः ॥ प्रियलक्ष्मीकः ॥ पय आदीनामेकवचनान्तानां पाठाद्वचनान्तरे
विकल्पः । द्वे बहूनि वा पयांसि यस्य स द्विपयः । द्विपयस्कः ॥ बहुपयाः ।
बहुपयस्कइत्यादि । यथा—

क्षीणपयस्युपेयुषि भिदां जलधरपटले ।

समुद्रमध्ये गतनौः स्रवमाना इवास्मसि ॥

नात्र नाथो विपत्तिमात्रविवक्षा किं तर्हि कृत्स्नानां नावां निवृत्तिः ।

अकृशमकृशलक्ष्मीश्चेतसा शंसितं सः ॥

अत्र बह्व्यो लक्ष्म्यः शोभा विवक्षिताः । केचिल्लक्ष्मीद्रीशब्दौ प्रातिप-
दिकौ पठन्ति नित्याद्द्वयैव सिद्धे तुल्ययोगेऽपि कवर्थम् । सलक्ष्मीको विना-
शितः । सदरीकः खातः । अत्र लक्ष्म्या सह पुरुषो विनाशितः । दर्या सह
पर्वतः खात इति तुल्ययोगः । लक्ष्मीपाठ ऋन्नित्याडौऽयं विधिर्न भवति ।
बहुतन्त्री । बहुतन्त्रीक इत्येके ॥ नञ्पूर्वादिति । न विद्यतेऽर्थो यस्य सोऽनर्थको
नीचव्यापारः श्लोको वा । नञ्पूर्वादिति किम् । व्यर्थो व्यर्थकः । सनञ्पूर्वा-
दक्षणादुदीचामिति गणसूत्रमत्र यामनो मन्यते । सह क्षणेन वर्तते । सक्षणकः ।
अविद्यमानः क्षणो यस्य सोऽक्षणकः । प्राचां सक्षणः । अक्षणः ॥ १३६ ॥

इत्युर आदिः ॥

ज्ञेयौ द्विदण्डसंहतपुच्छी द्विमुसलिनिकुच्यकर्णी च ।

आच्यपदिप्रोह्यपदी अन्तेवास्येकपदिसपदी ॥ १३७ ॥

द्विदण्डीत्यादयः समुदाया इचममासान्ता निपात्यन्ते । द्वौ दण्डा
यस्मिन्प्रहरणे । द्विदण्डि प्रहरति ॥ संहतानि पुच्छान्यस्मिन्प्रहरणे । संहत-
पुच्छि धायति । द्वे मुसले यत्र प्रहरणे । द्विमुसलि प्रहरति । निकुच्य कर्णी
धायति । निकुच्यकर्णि । आच्य पादौ शेते । आच्यपदि शेते । अन्ये तु ।

आच्यौ पादावस्मिञ्छयने । अतएव वचनाद् अञ्जतेर्घ्यणि नलोपं प्रतिपन्नाः ।
प्रोह्य प्रेर्य पादौ । प्रोह्यपदि हस्तिनं वाहयति ॥ मतान्तरं प्राग्बद्धेदित्यम् ।
अन्ते वासोऽस्मिन्निति । अन्तेवासि तिष्ठति । अन्तेवासी गुरोरित्यन्यएव
शब्दः । अन्ते वसति तच्छीलइति णिनन्तः । एकः पादोऽस्मिन्गमने । एक-
पदि । समानौ पादावस्मिन् । सपदि गच्छति ॥ १३७ ॥

अञ्जलिदन्तात्पाणेः कर्णाद्वाहोश्च हस्ततश्चापि ।

उभयोभध्वनिपूर्वादिज्विज्ञेयः परो गणतः ॥ १३८ ॥

उभयोभशब्दपूर्वभ्योऽञ्जलत्यादिशब्देभ्य इच् परो वेदितव्यः । उभावञ्जली
यत्र पाने । उभयाञ्जलि ॥ उभाञ्जलि पिबति । उभौ दन्तावस्मिन्खादने । उभ-
यादन्ति । उभादन्ति खादति । उभयापाणि । उभापाणि । उभयाकर्णौ । उभा-
कर्णौ शृणोति । उभयावाहु । उभावाहु प्रहरति ॥ अत्र निपातनादिजलोपः ।
प्रत्ययलोपलक्षणेनाव्ययीभावसञ्ज्ञा । यदिह लक्षणेनानुपपन्नं तत्सर्वं निपात-
नात्सिद्धम् । उभयाहस्ति । उभाहस्ति । उभौ हस्तिनौ यत्र सङ्गामादिविधाने
तदुभयाहस्तीत्यजितदेवाचार्यः । क्रियाविशेषणत्वाच्चान्यत्र न भवति । द्वौ
दण्डावस्यां शालायाम् । द्विदण्डा । द्विसुसला । केचिद्द्वौ दण्डौ यस्मिन्सङ्गामे ।
उभौ कर्णावस्य प्रासादस्य । उभाकर्णीत्यादौ क्रियाया अन्वत्राप्यन्यपदार्थं
प्रतिपन्नाः । स्वद्विवचनं विनाप्युभशब्दस्य वृत्तौ प्रयोगो गणपाठात् ॥ १३८ ॥

इति द्विदण्डादिः ॥

प्रियाकान्तामनोज्ञास्वाकल्याणीभक्तिर्दुर्भगाः ।

सचिवावामनाक्षान्ताचपलानिचितासमाः ॥ १३९ ॥

सुभगा दुहिता बाल्या वामाथ तनया तथा ।

कुक्कुटाण्डमृगक्षीरकाकशावादयो मताः ॥ १४० ॥

पुंस्त्रयनूडित्यादिना प्रियादिषूत्तरपदेषु पुंस्त्री न भवति ॥ कल्याणी
प्रिया यस्य कल्याणीप्रियः । दर्शनीयाकान्तः । भव्यामनोज्ञः । कल्याणीस्वः ।
प्रियाकल्याणीकः । वाग्देवताभक्तिः । कथं दूढभक्तिः । दूढं भक्तिरस्येति नपुं-
सकमत्र पूर्वपदम् । भोजस्तु भक्तौ च कर्मसाधनायामित्यनेन सूत्रेण भवानी-
भक्तिरित्यादि भवति भाद्रसाधनायां तु स्थिरभक्तिर्दृष्टभक्तिर्भवान्येत्यादि

भवतीत्याह । कल्याणीदुर्भंगः । प्रियासचिवः ॥ प्रियावामनः । प्रियाक्षान्तः ।
प्रियारक्षान्त इत्यपि कश्चित् । प्रियाचपलः । प्रियानिचितः । दर्शनीयासप्तः ॥१३९॥

कल्याणीसुभगः । कल्याणीदुहितृकः । कल्याणी वाल्या यस्य । कल्या-
णीबाल्यः । भोजस्तु कल्याणीबालइत्याह । प्रियावामः । कल्याणीतनयः ॥
अस्वार्थ इत्येव । कल्याणप्रिया । कल्याणमनोज्ञा । इत्यादि । भट्टे-
श्वराचार्यस्तु-

किञ्च स्वा दुर्भंगा कान्ता रक्षान्ता निचिता समा ।

सचिवा चपला भक्तिर्बाल्येति स्वादयो दश ॥

इति स्वादौ वेत्यनेन विकल्पेन पुंवद्भावं मन्यते ॥

इति प्रियादिः ॥

कुक्कुट्यादयोऽणडादिषु वेत्यनेन कुक्कुट्यादयः शब्दाः स्त्रीलिङ्गा अणडा-
दिषूत्तरपदेषु पुंवद्भा भवन्ति । कुक्कुट्या अण्डम् । कुक्कुटाण्डम् ॥ कुक्कुट्यण्डम् ।
मृगक्षीरम् । मृगीक्षीरम् । काकशावः । काकीशावः । आदिशब्दस्य व्यवस्था-
वाचित्वात् । मयूराण्डम् । मयूर्यण्डम् । काकाण्डम् । काक्यण्डम् । मृगपदम् ।
मृगीपदम् । मृगीव चपला । मृगचपला । मृगीचपला ॥ हंसगद्गदा । हंसी-
गद्गदा । इत्यादयो भवन्ति । अयं विकल्पो भोजदेवाभिप्रायेण शाकटायनस्तु
नित्यमिच्छति ॥ १४० ॥

इति कुक्कुटाण्डादिः ॥

कोटरमिश्रकसिध्रकसारिकपुरगा गणे समाख्याताः ।

अञ्जनभञ्जनकिंशुकलोहितखञ्जा नलः शाल्वः ॥१४१॥

सञ्ज्ञायां गिरिवनेऽञ्जनकोटरादेरित्यनेनैतेषां शब्दानामग्दीर्घा भवति ।
कोटराणां वनम् । कोटरावणम् । मिश्रकावणम् ॥ सिध्रकावणम् । सारिका-
वणम् । पुरगावणम् । इति कोटरादिः पञ्चको गणः ॥

अञ्जनेनोपलक्षितो गिरिः । अञ्जनागिरिः । भञ्जनस्य राज्ञो गिरिः ।
भञ्जनागिरिः । शाकटायनस्तु भाञ्जनागिरिरित्याह ॥ किंशुकागिरिः ।
लोहितवर्णो गिरिः । लोहितागिरिः । खञ्जस्य गिरिः । खञ्जागिरिः । नलस्य
गिरिः । नलागिरिः । शाल्वर्षनाम जनपदो राजानश्च । तेषां गिरिः । शाल्व
गिरिः ॥ १४१ ॥

किंशुलकशल्बपिङ्गलकुक्कुटयुक्तः शराहिवंशकुशाः ।

ऋषिकपिहनुमुनिधूमा वार्दः पद्मं शुचिमृगो वेटः ॥ १४२ ॥

किंशुलको रामा । तस्य गिरिः । किंशुलकागिरिः ॥ किंशुलकः शिला-
पुष्पमिति केचित् । शल्बानां गिरिः । शल्बागिरिः । पिङ्गलागिरिः । कुगिति
शब्दं कुर्वन्तोऽटन्तीति कुक्कुटाः । तेषां गिरिः । कुक्कुटागिरिः ॥

इत्यञ्जनादिः ॥

शराद्यनजिरादिबह्वचो मतावित्यनेन शरादीनामजिरादिवर्जितेष्व
बह्वचो मतौ सञ्ज्ञायां विषयेऽगूदीर्घो भवति । शरावती नाम नदी । अही-
वती । वंशावती । कुशावती । ऋषीवती । कपीवती । हनूमान् । वसन्तकालो
हनुमानिवागतः । इत्यादौ दीर्घत्वं विनापि सञ्ज्ञा प्रतीयते शब्दशक्तिस्वा-
भाव्यात् । हनुहनूशब्दावित्यन्ये (१) । मुनीवती । धूमावती । वार्दावानाम
पर्वतः । पद्मावती । शुचीवती । मृगावती । वेटावान् पर्वतः । आकृतिग-
णोऽयम् । तेन । भोगावती । वातावतीत्यादि ॥ १४२ ॥

इति शरादिः ॥

अजिरस्थविरौ खदिरौ मलयालङ्कारचक्रवाकाश्च ।

खपुरः शशाङ्कपुलिने हिरण्यकारण्डवकरीराः ॥ १४३ ॥

अजिरवती । स्थविरवती । खदिरवती । मलयवती । अलङ्कारवती ।
चक्रवाकवती । खानि पृणन्ति । खपुराः पूगाः सन्त्यस्यामिति । खपुरवती ।
शशाङ्कवती । पुलिनवती । हिरण्यवती । कारण्डववती । करीरवान् पर्वतः (२) ।
घातुरर्थिको मनुः । चत्वारोऽपि गणाः सञ्ज्ञायां वेदितव्याः । कोटराणां वनं
कोटरवनम् । अञ्जनस्य गिरिरञ्जनगिरिः । शरवतीतूणः ॥ १४३ ॥

इत्यजिरादिः ॥

(१) हनु हनू इति द्विरूपं शब्दद्वयमेकार्थमित्यन्ये । इति पा० ।

(२) अजिरवती, खदिरवती, कारण्डववती, हंसवती, पुनिलवती,
चक्रवाकवती । एता अपि पुरीविशेषस्य नदीविशेषस्य सञ्ज्ञा एव । वदुंमा-
नस्तु अजिरस्थविरौ इति पठित्वा काशिकाद्यपेक्षयाऽधिकं सप्तकसूरीचकारे-
त्यधिकं क्वचित् ॥

पृषोदराश्वत्थनखाः पलाशकपित्थदूणाशपिशाचदूह्याः ।

विडौजसोलूकमृगौ गभस्तिबृहस्पतिहापरकांदिशीकाः ॥ १४४ ॥

पृषोदरादीनि यद्योपदिष्टमित्यनेन पृषोदरादयः शब्दा अविहितलो-
पागमवर्णविकाराः शिष्टैः प्रयुज्यमानाः साधवो भवन्ति । पृषते(१) उदरम् ।
पृषोदरम् । पृषद् उदरे यस्य स पृषोदरो देवताविशेषः । पृषच्छब्दो घृतसं-
मिश्रदध्यादिहविष्यवृत्तिः । यद्वा । हूयमानपृषद्विधानसहचरितो ग्रन्थोऽप्यभे-
दोपचारात् पृषच्छब्दवाच्यः ॥ अश्वइव तिष्ठति अश्वत्थः । पिप्पलः । न
खनतीति नखः । पलमश्रातीति पलाशः । कपिरिव तिष्ठतीति कपित्थः ।
कप्रयस्तिष्ठन्त्यस्मिन्निति वा कपित्थः । कपिरिव लम्बतेऽधश्च पततीति कपि-
त्थः । रुच्छ्रेण नाश्यते निन्दितो वा नाश इति दूणाशः । दूर उत्त्वम् । उत्तर-
पदे दुत्वं च । पिशितमशित्वा चन्दतीति पिशाचः । दुष्टु ध्यायतीति दूह्यः ।
वेवेष्टीति विड् व्यापकम् ओजो यस्य । विडौजाः पाकशासनः । ऊर्ध्वौ
कर्णावस्येति । उलूकः ॥

मृदूकुर्वन्ति गच्छन्ती मृगास्तेन प्रकीर्त्तिताः ॥

गां वभस्ति दीपथतीति गभस्तिः । बृहतां पतिः बृहस्पतिः । तकार-
रस्य सकारे । द्वाभ्यां कृतत्रेताभ्यां परम् । द्वौ परौ मुख्यावत्रेत्युभयकोटिस्पृ-
क्त्वात् । द्वापरं युगं संशयश्च । कां दिशं ब्रजामीति कांदिशीकः (२) ॥ १४४ ॥

पृषोद्धानवलीवर्ददूडाभवानमन्तराः ।

परःसहस्रदूडाशपोढातस्करपोडशाः ॥ १४५ ॥

पृषत उद्धानं शुष्कम् । पृषोद्धानम् । उत्पूर्वाद्वातेष्टनप्रत्यये । उद्धानमिति
शाकटायनः । बलं वर्धयतीति बलीवर्दः । रुच्छ्रेण दभ्यते निन्दितो वा
दाभः । दूहाभः । उत्वं दुत्त्वमनुनासिकलोपश्च । पाणिनिभोजौ तु दूडभ
इत्याहतुः । वनानामन्तराणि । वनान्तराणि । वनान्तरेषु भयाः । वानमन्तरा

(१) पृषत—उदरं यस्य । पृषते हरिणस्योदरं पृषोदरम् । पृषत उदर-
निचोदरं यस्येति वा विग्रहः । पृषच्छब्दो घृतमिश्रदध्यादिहविष्यवाची तदु-
दरे यस्य स पृषोदरो देवविशेष इति यदुक्तं नानः ॥

(२) कां दिशं यातीति कां दिशीको भयद्रुतः ॥

देवाः । सहस्रात्परे परःसहस्राः । लुच्छ्रेण दाश्यते निन्दितो वा दाश इति
दूडशः । षड्भिः प्रकारैः षोडश । उत्वे टुत्वे च । तत्करोतीति तस्करः ।
षट् च दश च षोडश । षष उत्वे दस्य टुत्वे ॥ १४५ ॥

अवटकुलटे प्रायश्चित्तं परःशतधूर्जटी—

पुरुषमहिषावश्वत्थामा बिडालबलाहकौ ।

अमरवडवासीमन्ताश्च श्मशानमनीषिते—

मुसलकितवौ प्रायश्चित्तिः सृगालवनस्पती ॥१४६॥

अघागटन्त्यस्मिन्निति अवटः । कुलान्यटतीति कुलटा । प्रायस्य
पापस्य चित्तम् । प्रायश्चित्तम् । अतिचारशोधनम् । आलोचनादि । शतात्परे
परःशताः । भोजस्तु परशब्दसमानार्थं परः शब्दमाह । धूर्जङ्गा जटास्वस्य ।
धूर्जटिः । महेश्वरः । पूः शरीरम् । तत्र शेते । पुरुषः (१) । सच्यां शेते ।
सहिषः । अश्व इव तिष्ठति अश्वत्थामा द्रोणपुत्रः । यथा—
अश्वत्थामा हत इति किल व्याहृतं सत्यवाचा ॥

बिलं दारयतीति बिडालः । ललोपो टुत्वं रस्य लट्वं च । यथा—
विभ्युर्बिडालेक्षणभीषणाभ्यः । वारिणो वाहकः । बलाहको मेघः । यथा समैव—
नतिमतां सधुरं कवितामृतं—ददति सन्त्रिललामवलहके ।

विदधती निखिलार्थविवेचनं—जयति कल्पलता चिरदीधितिः ॥

अमन् रौतीति अमरः । अश्वस्याम्बा । वडवा । अश्लोपे डक्यनुना-
सिकलोपश्च । सीम्नोऽन्तः । सीमन्तः । केशविन्यासः । शवानां शयनम् ।
श्मशानम् । मनसद्दृष्टम् । मनीषितम् । यथा—मनीषितं द्यौरपि येन दुग्धा ।
यथा वा समैव—

दूरादपि रिपुलक्ष्यो मनीषितं यन्त्रयन्ति सावेगाः ।

अविधसिवेतरभूभृन्निरुद्गतयोऽपि कूलिन्यः ॥

(१) पुरुषो जीवात्मा नरो वा ॥

पुरि ब्रह्माण्डे शेते पुरुषः । अन्येषामिति दीर्घः पुरुषः । इत्थं—समैव—

श्वरस्यापीमे नाम्नी इति । श्री० श० ॥

मनस ईष्टे । मनीषी । शिनि मनसौऽन्त्याजादिलोपः । शकारस्य
 यकारः । स्तृत्यर्थदयीशामित्यनेन षष्ठी । इति शाकटायनः । मुहुः स्वनं ला-
 तीति मुसलम् । किं तवास्तीति कितवः । प्रायस्य चित्तिः । प्रायश्चित्तिः ।
 अतिचारशोधनम् । असृज्यालीयते । असृगिलति । असृगाळेढीति वा ।
 सृगालः । वनस्य पतिः । वनस्पतिः । अपुष्यो वृक्षो न्यग्रोधादिः । सर्वोऽपि
 हरितकायो वनस्पतिरिति केचित् ॥ १४६ ॥

आशीविषपुरोडाशषड्ढानिल्र्वयनीस्वराः ।

हेरम्बारग्वधावाद्यषोडहाड्वलिमन्मथाः ॥ १४७ ॥

आश्वस्य विषमिति आशीविषः । आशुविषयोर्बहुव्रीहावाशुशब्दस्य
 आशीभावः । आशिषि दंष्ट्रायां विषमस्येति वा । तथा च । शाश्वतकोशे-
 दंष्ट्राशौरनिलाशिनाम् । अजयेऽपि—

आशीरिष्टस्याशंसायां दंष्ट्रायामनिलाशिनाम् ।

आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तथा विद्धो न जीवति ॥

तस्यां विषमस्य । आशीविषः । इत्येके । पुरो दाश्यतइति पुरोडाशः ।
 पिष्टपिण्डः । यथा । पुरोडाशभुजामिष्टमिष्टं कर्तुमलन्तराम् ॥ षड्भिः प्रकरैः
 यद्वा ॥ नितरां लूयते स्वशरीराद्बहिः क्रियते सरीसृपैरिति निल्र्वयनी ।
 भुजङ्गमुक्ता त्वक् । स्वयं राजन्त इति स्वराः ॥ प्रत्यूहे रम्बते शब्दायते ।
 हेरम्बो गणपतिः । आराद् रोगान् हन्तीति आरग्वधः । आध्यायन्ति जना-
 स्तमिति आढ्यः । घणर्थे कः । यद् दन्ता अस्या षोडन् । षोडती । वाग्वाद्-
 स्यापत्यम् । अत इजि । वाड्वलिः । यूनं मनो मथ्नातीति मन्मथः ॥१४७॥

उलूखलोदूखलकुञ्जरालुग् मृणालजीमूतमयूरसिंहाः ।

शकन्धुकर्कन्धुदधित्थवृस्यो महित्थपारापतमेखलाश्च ॥१४८॥

ऊर्ध्वं सं विलं वास्यास्तीति । उलूखलम् । उदूखलम् । यत्र व्रीह्यादयः
 फुट्यन्ते । ऊर्ध्वं सं लातीति वा । उदूखलम् । कौ पृषिव्यां जीर्यतीति कुञ्जरः ।
 लुच्यतेऽपनीयत इति लुक्/ताम लोपः । यथा । प्रत्ययलुकां चानाम् । मृद-
 मालीयते । मृणालः । जीवनं जलं तस्य मूतः । पुटवन्धुः । जीमूतः । मथ्नां
 रीतीति मयूरः । हिनस्तीति सिंहः । शकस्यान्धुः । शकन्धुः । कर्कस्यान्धुः ।

कंकन्त्युः—वदरी । दग्नि तिष्ठतीति—दधित्थः । ब्रुवन्तः सीदन्त्यस्यामिति ।
वृषीः । मुनीनामासनम् (१) । सच्यां तिष्ठतीति सहित्थः । पारे पततीति
पारापतः । मेहनस्य खस्य भाला । मेखला ॥ १४८ ॥

दिवः स्थाने दिवोऽचि स्याद् दिव् च दीर्घे पुनः परे ।

उकारोकारयोरुच्च पश्चातोर्धादिके तलुक् ॥ १४९ ॥

दिवः स्थाने दिवोऽचि स्यादिति । दिवाधीश्वरः । दिवाङ्गना ।
दिवीकसः । दीर्घोऽचि पुनर्न केवलं दिवः स्थाने दिवो भवति दिव् च
दिवीश्वरः । दिवेश्वरः । दिवूढा । दिवोढा । दिवूतिः । दिवोतिः । उका-
रोकारयोरुच्चेति । द्यूद्यानम् । दिवोद्यानम् । यथा—

उद्यद्यूद्यानवाप्यां बहुलतमतसः पङ्कपूरं विदार्य ॥ दिवोद्गतिः ।
द्यूद्गतिः । द्यूहा । दिवूहा । दिवोहा । उकारे रूपत्रयम् ॥ पश्चातोर्धादिके
तलुक् । पश्चाच्छब्दस्यार्धादावुत्तरपदेऽन्त्यतकारस्य लुभ्रभवति । पश्चार्धम् ।
पश्चिमाधमित्यर्थः । यथा—

पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम् ।

पश्चानुपूर्वी । पश्चाभिमुखः । पश्चिमाभिमुखइत्यर्थः । आदिग्रहणात् ॥
कलिं विन्दति । कलविद्धः । कृतकेन शलतीति ककलाशः (२) । ऊरु अश्रुते ।
नारायणस्योरुप्रभवत्वात् । उर्वशी ॥ तथा च—

ऊरुद्गवा नरसखस्य मुनेः सुरस्त्री । यथा—

दधत्युरोजद्वयमुर्वशीतलं—भुवो गतेव स्वयमुर्वशी तलम् ।

वभौ मुखेनाप्रतिमेन काचन—श्रियाधिकां तां प्रति मेनका चन ॥

धीत्करोति खलं च भवति । चिखलः । द्वौ प्रवेशनिर्गमौ रातीति
द्वारम् । इत्यादयो द्रष्टव्याः । अत्र च—

येषामुणादिशास्त्रेण व्युत्पत्तिर्न प्रकल्प्यते ।

द्वित्रादिपदसंपर्कात्सा तेषां स्यान्निरुक्तितः ॥ १ ॥

समासशेषभूतं स्यान्निरुक्तपदसाधनम् ।

द्वित्रादिपदसंपर्कालोपागमविकारजम् ॥ २ ॥

(१) बृहन्तोऽस्यां सीदन्त्युपविशन्तीति वृषी ऋषीणामासनम् । इति पा०।
(२) ककं शिरोग्रीवं लासयति ककलासः । ककिलास इत्यपि पाठः क्वचित् ॥

उणादिशास्त्रे सयूरसहिषप्रभृतीनां व्युत्पादितानामपि पुनरत्र व्युत्पा-
दनसनेकधापि सञ्ज्ञाशब्दानां व्युत्पत्तिर्भवतीति प्रदर्शनार्थम् ॥ १४९ ॥

इति पृषोदरादिः ॥

पारस्करो देशविशेषवर्ती करस्करो राजतरौ गिरौ च ।

नद्यां रथस्पा प्रमितौ तु किष्कुः प्रतिष्कशः प्रष्टसहायदूते १५०

पारस्करादयः शब्दाः सषान्तपूर्वपदाः पारस्करादयो नाञ्जीत्यनेन सा-
प्तो वेदितव्याः । देशविशेषादिष्वर्थेषु । पारं करोतीति पारस्करो देशः ।
पारस्करं नाम आनर्तेषु जनपदे नगरमित्येके । अन्यत्र । पारकरः । करं
करोतीति करस्करः (१) । राजवृक्षो गिरिश्च । रथं पाति पिबतीति वा । रथ-
स्पा नाम नदी । रथपाण्य । किं करोतीति करोतेर्ङुप्रत्यये किमो सकारस्य
पादेशे च । किष्कुः । प्रमाणं हस्तो वितस्तिर्वा । प्रतिकशतीति प्रतिष्कशः ।
अग्रेसरः सहायो दूतो वा । प्रतिगन्तर्येषुऽपि कञ्चिन्मन्यते ।

ग्राममद्य प्रवेक्ष्यामि भव मे त्वं प्रतिष्कशः ।

अतोऽन्यत्र । प्रतिगतः कशाम् । प्रतिकशोऽश्वः ॥ १५० ॥

स्तः प्रस्कर्णवहरिश्चन्द्रावृषावाश्रय्यमद्भुते ।

वर्चस्केऽवस्करो ज्ञेयो रथाङ्गे स्यादपस्करः ॥ १५१ ॥

प्रकृष्टः कण्वः । प्रस्कण्वः । ऋषिः । हरिश्चन्द्रोऽस्येति हरिश्चन्द्रो नाम
ऋषिः । कञ्चिद् राजन्यप्याह । आर्चयत इति । आश्चर्य्यम्—अद्भुतम् । अन्यत्र ।
आचर्यं व्रतम् । अवकीर्यत इति । अवस्करः । वर्चस्कम् । अन्नमलमित्यर्थः ।
अन्नमलविसर्जनदेशोऽपि तत्सम्बन्धाद् अवस्करः । अन्यो यः कञ्चिदवकीर्यते
सोऽवस्करः ॥ अपकीर्यत इति अपस्करो रथावयवः । अपकरोऽन्यः ॥ १५१ ॥

कास्तीराजस्तुन्दारकथानि नगरे गिरौ तु किष्किन्धैः ।

मस्करिमस्करकारस्करास्तु मुनिवेषुवृक्षेषु ॥ १५२ ॥

अल्पं तीरं कास्तीरम् । अजस्य तुन्दम् । अजस्तुन्दम् । आहूताः
कथा अस्मिन्निति आस्कर्यं नाम नगरम् । अन्यत्र कातीरम् । अजतुन्दम् ।
आकथम् । किंकिं दधातीति किष्किन्धैः पर्वतः । साकरणशीलः । मस्करी

(१) कारस्करोराजवृक्षो गिरिश्चेति पाठान्तरम् ।

परिव्राजकः । सद्येवमाह । मा कृषत कर्माणि शान्तिर्वः श्रेयसीति ॥ साक्रि-
यते, प्रतिविध्यतेऽनेनेति सस्करो दण्डः । येन हस्तिनः शमं नीयन्ते दस्यन्ते
स वेणुर्मस्कर इत्यन्ये । कारं करोतीति कारस्करः । वृक्षः ॥ १५२ ॥

आस्पदं स्यात्प्रतिष्ठायां क्रियाभीक्ष्येऽपरस्पराः ।

आयुधे किष्कुरुः प्रोक्तः स्यात्कुस्तुम्बुरुषुषधे ॥ १५३ ॥

यूजितं पदम् । आस्पदम् । अन्यत्र । आ ईषत् पदम् । आपदम् । अपरे
च परे च । अपरस्पराः सार्धां व्रजन्ति । सातत्येन यान्तीत्यर्थः । कस्य कुरुः ।
किष्कुरुः । आयुधम् । कुत्सितं तुम्बुरु । कुस्तुम्बुरुः । धान्यकम् । यथाक-
थञ्चिद्विग्रहः । कुस्तुम्बुरोः फलानि कुस्तुम्बुरुणि ॥ १५३ ॥

कन्दरा पृश्च किष्किन्धा कृतान्नमथ शष्कुली ।

गोष्पदं स्यात्प्रमाणादौ विकिरो विष्किरः स्वगे ॥ १५४ ॥

किंकिं दधातीति किष्किन्धा । गुहा नगरी च । शष्कुली । भक्ष्यवि-
शेषः । गवां पदम् । गोष्पदम् । गोष्पदपूरं वृष्टो देवः । अत्र गोपदमन्यस्ये-
यत्तां परिच्छेत्तुमुपादीयमानं प्रमाणं भवति । आदिग्रहणात् सेवितासेवित
परिग्रहः । तत्र सेवितो गोष्पदो देशः । यत्र गावः पद्यन्ते स गोभिः सेवितो
ग्रामसमीपादिदेश उच्यते ॥

असेविते । अगोष्पदेश्वरशयेषु विश्वासमुपजग्मिवान् ॥

विकिरति चञ्चा विक्षिपतीति विकिरो विष्किरश्च पक्षी । उभयोरु-
पादानं विकल्पितसकारप्रतिपत्त्यर्थमिति ॥ १५४ ॥

इति पारस्करादिः ॥

नभ्राणागनपान्नमेरुनकुला नासत्यनक्रौ तथा—

नाराचो नखनान्तरीयकयुतौ नक्षत्रनाकाविमौ ॥

नारङ्गश्च नपुंसकेन कलितः स्यान्नाचिकेतस्तथा—

नग्नो नास्तिकनापितावपि नभो ज्ञेयो नवेदा गणे ॥ १५५ ॥

नभ्राडादिषु शब्देषु नभ्राडादिषु नऽप्रकृत्येत्यनेन नऽप्रकृत्या तिष्ठति ।
न आगतइति । नभ्राट् । क्विबन्तः । न अगः । नागः । न पातीति नपात् ।

शत्रन्तः । न मीयतेऽसाविति नमेरुः । गणा नमेरुप्रसवावतंसाः । नास्य कुल-
मस्तीति नकुलः । सत्सु साधुः । सत्यः । न असत्यः । नासत्यः । नअसत्याः ।
नासत्याः साधवः । केचित्तु । न अस्यतः साधून् । नासत्यावश्विनीकुमारावि-
त्याहुः । न क्रामति नक्रः । न अरमञ्चति नाराचः । यथा समैव क्रियागुप्तके-

उद्यत्तीव्रानङ्गनाराचविदुः—स्वप्राणेश्यो वल्लभं त्वामद्रष्ट्वा ।

वेगादेषा चक्रवाकी वराकी—तीरात्तीरे प्रातरैव प्रयाति ॥

नास्य खमस्तीति नखः । नखरो गन्धद्रव्यं च । अनन्तरेण भवतीति
नान्तरीयकम् ॥ न क्षीयते न क्षरति वा । नक्षत्रम् । त्रन्यत्वम् अन्त्यलोपो वा
निपातनात् ॥ नास्त्यस्मिन्नकं दुःखमिति नाकः । न अविद्यमानो विरिञ्ची
यत्र वा । न अरं गच्छति स्वयमिति नारङ्गः । न स्त्री न पुमान् नपुंसकः ।
अतएव निपातनात् स्त्रीपुंसयोः पुंसक आदेशः । न न धिकेत्ति नाधिकेतो
नाम राजा । अस्मादेव निपातनात् कि कितञ्चान इत्यस्माच् शप्रत्ययो गुण-
श्च भवति । न विद्यन्ते ग्नाः स्त्रियश्छन्दासि वा यस्य । नरगः । नास्तीति
मतिरस्य । नास्तिकः(१) । न आप्यतेऽसाविति नापितः । न वमस्ति । नमः ।
न वेत्ति । नवेदाः । असुनि ॥

आकृतिगणत्वात् । न विद्यते भागोऽस्य नभागः । पदभ्यां न गच्छति ।
पन्नगः । न नन्दति अधूमिति ननान्दा । तनुं न पातयति देहधर्तृत्वात् ।
तनूनपात् । इत्यादयो द्रष्टव्याः । अयं च गणश्चन्द्रदुर्गाद्यभिप्रायेण ॥१५५॥

इति नभ्राडादिः ॥

पक्षज्योतिर्जनपदपत्नीकरमानबन्धुगन्धाः स्युः ।

देशो रात्रिः पिण्डो नाभिः कुक्षिस्तथा वेणी ॥१५६॥

समानस्य पक्षादिष्वित्यनेन समानस्य सभावो भवति । पक्षस्तु समानः ।
पक्षोऽस्येति वा । सपक्षः । सज्योतिः । सजनपदः । समानः पतिरस्याः ।
सपत्नी । सकरः समानं मानं यस्य समानः सबन्धुः ॥

सागन्ध्यं दधदपि काममङ्गनानाम् ॥

सदेशः । सरात्रिः । सपिण्डः । सनाभिः ।

भूयुग्मस्य सनाभिर्नमधनुजयोर्त्स्तास्मितस्याञ्जलः ॥

(१) नास्ति परलोकमतिरस्येति पाठान्तरम् ।

सकुक्षिः । सवेणी । कश्चिन्नोहितशब्दमप्यधीते । तीर्थशब्दस्तु न पठितो मत्तान्तरस्याभ्युपगतत्वात् ॥१५६॥ इति पक्षादिः ॥

रूपं वर्णो नामस्थाने जातीयधर्मवचनानि ।

गोत्रं वयोऽपि लक्ष्यं चन्द्रादिमते तु रूपादौ ॥१५७॥

रूपादिब्रूत्तरपदेषु रूपादौ वेत्यनेन समानस्य सभावो वा भवति ॥ समानं रूपं सरूपम् । समानं रूपं यस्य वा । सरूपः । समानरूपः । एवं सवर्णः । समानवर्णः । सनाम । सनामा । सस्थानम् । सस्थानः । समान्ता जातिरस्येति जातेरीय इतीयप्रत्यये । सजातीयः । समानजातीयः । सधर्मा । सधर्मः । समानधर्मः । समानधर्मा ।

सत्पत्स्यतेऽस्ति सम कोऽपि समानधर्मा ।

कालोच्चयं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥

सवचनम् । सवचनः ॥ सगोत्रम् । सगोत्रः ॥ सवयः । सवयाः ।

आदिग्रहणाद् भोजादेः परिग्रहः । शाकटायनवामनाचार्यौ तु सभावं नित्यं सामान्येनाहतुः ॥ १५७ ॥ इति रूपादिः ॥

सुषामदुःषामनिषेधदुष्टवो दुःषन्धिदुःषेधसुषेधसुष्टवः ।

नौषेचिकादुन्दुभिषेचनान्तिपन्निःषामनिःषन्धिसुषन्ध्यपष्टवः ॥१५८॥

सुषामादीनां प्राग्वत् ष इत्यनेन सुषामादीनां सकारस्य षत्वं भवति । शोभनं साम प्रियवचनं यस्यः । सा सुषाम्णी यथा—भट्टिकावये ।

सुषाम्णीं सर्वतेजः सुतन्वीं ज्योतिष्टमं शुभाम् ।

निष्टपन्तीनिवात्मानं ज्योतिःसात्कुर्वतीं वनम् ॥

शोभनं साम । सुषाम् । शोभनं सामास्येति वा सुषामा । ब्राह्मणः सौम्यो दुष्टं साम । दुःषाम् । दुष्टं सामास्येति वा । दुःषामा । नितरां सेधः । निषेधः । दुष्टु निन्दितम् । सुजूसूसास्तुस्तुमस्यासेनसेधतिसिचसञ्जस्व-ज्जामित्यनेनैव दुष्टुशब्दस्य षत्वे सिद्ध इह पाठः षत्वस्यानित्यत्वज्ञापनार्थः । तेन सुस्थितम् । दुःस्थितमिति सिद्धम् । यदा तु दुःशब्दो निन्दायामनुपस-र्गस्तदा विधानार्थम् । दुष्टः सन्धिः । दुःषन्धिः । दुष्टः सन्धिरस्येति वा । दुःषन्धिः । निन्दितः सेधः । दुष्टः सेधोऽस्येति वा । दुःषेधः । शोभनः सेधः शोभनः सेधोऽस्येति वा । सुषेधः । सुष्टु शोभनम् । सिञ्चतीति सेचिका ।

नाथः सेचिका । नौषेचिका । काचित्स्त्री । वामनस्तु । नाथं स्यति । नौषा ।
 नौषिकेत्याह (१)॥ अपरे तु नौषेचनमिति टनान्तं पठन्ति । पिचक्षरण इत्यस्य
 टनप्रत्यये । सेचनम् । दुन्दुभ्याः सेचनं दुन्दुभिसेचनम् । विद्युत्तन्तुसन्ताने ।
 केवृषेवृइत्यस्य वा टनप्रत्यये । सेवनम् । दुन्दुभेः सेवनं दुन्दुभिषेवणमिति
 शाकटायनः । अन्तिके सीदति । अन्तिषत् । कादेर्वहुलमित्यनेन कलोपः ।
 साम्नो निर्गतः । निर्गतं सामास्येति वा । निःपामा । निर्गतः सन्धिः । नि-
 र्गतः सन्धिरस्येति वा । निःषन्धिः । शोभनः सन्धिः । शोभनः सन्धिरस्येति
 वा । सुषन्धिः । यथा त्रिभुवनमाणिक्यचरिते—

सुवृत्तमप्युज्ज्वलवर्णरूपं सुषन्धिसूरुद्वयसर्गवन्धसू ।

विधाय तस्याः स कविः पुराणो रुरोध वाचः प्रसरं कवीनाम् ॥

अपतिष्ठतीति । अपष्टुरङ्कुशः प्रतिकूलं च ॥१५८॥

परमेष्ठी निःषेधः सव्येष्ठातामतश्च सव्येष्ठा ।

सुषमा सुषीमदिविषट्प्रतिष्णिकागौरिपक्थाश्च ॥१५९॥

परमे स्थाने तिष्ठतीति परमेष्ठी । पितामहः । निर्गतः सेधः निर्गतः
 सेधोऽस्येति वा । निःषेधः । सव्ये स्थाने तिष्ठतीति सव्येष्ठाता । सारथिः ।
 सव्ये तिष्ठतीति सव्येष्ठा । सव्यादेश्चोणादिरूढात्परेत्यनेन ऋप्रत्ययः । कश्चिद्
 अकारान्तमपि दर्शयति । सुष्ठु समा । सुषमा । प्रकृष्टा कान्तिः । शोभना
 सीमा यस्य । सुषीमो नागः । दिधि सीदन्ति । दिविपदा देवाः । हलतः
 सप्तम्या इत्यनेन सप्तम्या अलुक् । प्रतिस्तान्त्यस्यामिति प्रतिष्णिका । द्वीशी ।
 गौर्याःसकधीव सकथ्यस्येति गौरिपक्थः(२)। डगाट्त्वे च ह्रस्वञ् बहुलमित्यनेन
 ह्रस्वत्वे कस्यचिदिदं नाम ॥

आकृतिगणोऽयम् । तेन जलापाहम् । भीरुष्ठानम् । अग्निष्टुत् ।
 इत्यादयोऽपि भवन्ति ॥ १५९ ॥

इति सुषामादिः ॥

(१) नाथः सेचनं नौषेचनम् । बर्हमानस्तु नौषेचिकां पवाठ । अन्ये
 पुनर्नाथं स्यतीति नौषिका क्षेपणीदण्डइत्याहुः ।

(२) गौरपक्थः । कस्यचिन्मुनेः सञ्ज्ञेति ॥

गिरेर्नदी नखो नद्धो नितम्बो वक्रतो नदी ।

नितम्बस्तूर्यमाणस्तु माषो नार्गयणावपि ॥१६०॥

गिरिनद्यादीनामित्यनेन गिरिनद्यादीनामुत्तरपदनकारस्य णत्वं वा भवति । गिरेर्नदी । गिरिनदी । गिरिणदी । एवं गिरिणखः । गिरिनखः । गिरिणा गिरौ वा नद्धः । गिरिणद्धः । गिरिनद्धः । गिरिनितम्बः । गिरिणितम्बः । वक्रनदी । वक्रणदी । वक्रो नितम्बो यस्याः । वक्रनितम्बा । वक्रणितम्बा । तूर्यस्य मानमिव मानस्य । तूर्यमाणः । तूर्यमानः । माषेणोनः । माषोनः । माषोणः । ऋचामयनम् । ऋगयनम् । ऋगयनस्य वोद्वाऽध्येता वा वेत्त्यधीत इत्यनेनाणि । अथवा । ऋगयनस्य व्याख्यानं तत्र भवो वा । ऋगयनेभ्योऽणित्यणि । आर्गयणम् । आर्गयनम् । गिरिनद्यादयः प्रयोगतो-
ज्जुसर्त्तव्याः ॥ १६० ॥ इति गिरिनद्यादिः ॥

क्षुभ्नात्प्रू नन्दननर्त्तननृत्तमननिवासनृत्तानि ।

नन्दी निवेशनगरे गहनाग्नी सर्वनामनटौ ॥१६१॥

क्षुभ्नादीनां शब्दानां नकारस्य न क्षुभ्नादेरित्यनेन णत्वं न भवति । क्षुभ्नाति । क्षुभ्नीतः । क्षुभ्नन्ति । क्षुभ्नन् । क्षुभ्नानः । क्षुभ्नता । यथा । भट्टिकाव्ये—

रोषभीममुखेनैवं क्षुभ्नतोक्ते प्रवंगमः ।

प्रोचे सानुनयं वाक्ष्यं रावणं स्वार्थसिद्धये ॥

क्षुभ्नता कलुषीभवतेत्यर्थः । त्प्रोति । त्प्रुतः । त्पुवन्ति । त्प्रु । इत्यतएव ~~गणपाठाच्छुनुः~~ । हरेर्नन्दनम् । हरिनन्दनम् । इन्द्रोद्यानम् । परितो नर्त्तनम् । परिनर्त्तनम् । नृत्तप्रयोगः । नुर्त्तनम् । नृत्तमनम् । नृत्तमनो नाम कश्चिद्यस्य नान्मनिः पुत्रः । स्वरूपपदमेतत् । केचित्तु नृत्तमयति । नृत्तम इत्युदाहरन्ति । शराणां निवासः । शरनिवासी देशः । परितो नृत्तम् । परि-
नृत्तम् । कुमारानन्दयतीत्येवं शीलः । कुमारनन्दी । शराणां निवेशः । शरनि-
वेशः । तूणीरः । हरिनगरम् । परितो गहनम् पद्मिगहनम् । शबराणामग्निः । शबराग्निः । हरिः शक्रस्तस्याग्निः । हर्यग्निः । विद्युत् । सर्वेषां नाम । सर्वनाम । सूत्रप्रधानो नटः । सूत्रनटः । परिनटो नाम कश्चिद्धिप्रः ॥ १६१ ॥

ज्ञेयौ निवेशनानूपौ नदनो नरवाहनः ।
स्वर्भानुर्नदनयो च क्षुभ्नादौ स्यान्नृतेर्यङि ॥१६२॥

शराणां निवेशनम् । शरनिवेशनम् । शरधिः । अनूपान्निष्क्रान्तः ।
निरनूपः । दर्भानूपं नाम स्यानम् । भेर्या नदनमिष नदनं शब्दनमस्य ।
भेरी नदनो नाम कश्चित् । नरो वाहनमस्य नरवाहनः । वाहणं वाह्यादि-
त्यनेन नरस्यावाह्यासत्त्वं नास्ति । प्राक्स्याद्यन्तेऽपूनामित्यनेन न प्राप्तिः ।
स्वर्भानुः सैहिकेयः । गयनगन्यादेरित्यनेन गत्वप्राप्तिः । केचिद् अन्तःपूर्वप-
दात्सञ्ज्ञायामित्यनेन गत्वमिच्छन्ति । चारवो नदा यस्मिन् ग्रामे नगरे वा स
घारुनदः । सुराणां नदी । सुरनदी । नृतेर्नकारस्य यङि परे गत्वं न भवति ।
नरीनृत्यते । नर्नर्त्ति । नरिनर्त्ति । नरीनर्त्ति । नर्नृतीति । यङ्ङीति किम् ।
हरिरिव नृत्यतीति । हरिणर्त्ती नाम कश्चित् ॥

अग्न्यादिक्षुभ्नाद्योरेकत्वं प्रतिपन्नाः । सामान्येन विशेषामावात् ॥
आकृतिगणोऽयम् । तेन चतुर्हायनं कर्मेत्यादयो द्रष्टव्याः ॥ १६२ ॥

इति क्षुभ्नादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्द्धमानविरचितस्वीयगणरत्नसहोदधि-
ग्रन्थवृत्तौ समासप्रक्रियानिर्णयो नाम द्वितीयोऽध्यायः
समाप्तः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

ब्रह्मा कलापितैतलिशिलालिलाङ्गलिशिखण्डजाजलिनः ।

सूकरसद्मा कुथुमी सुपर्वणा पीठसर्पा च ॥१६३॥

ब्रह्मादीनामित्यनेन ब्रह्मन्त्रित्येवसादीनामेवाणि परेऽन्त्याजादेर्लुग्भव-
ति । ब्रह्मणोऽपत्यम् । ब्राह्मो नारदः । ब्रह्मण इदम् । ब्राह्मसस्त्रम् । ब्राह्मो
मन्त्रः । ब्राह्मणोपधिः । शाकटायनादयस्तु जातावभिधेयायामनपत्य एवाण्य-
न्त्याजादेर्लुचमिच्छन्ति नापत्ये । तेन ब्रह्मणोऽपत्यम् । ब्राह्मणः । कलापिना-
प्रोक्तमधीयानाः । कालापाः । तैतली । आचार्य्यः । तत्कृतो ग्रन्थोपि तच्छ-
वदेनोच्यते । तमधीयते तैतलाः । एवं लाङ्गलाः । जाजलाः । शिलालिनइमे
शैलालाः । एवं शैखण्डाः । सौकरसद्माः । कौथुमाः । सौपर्वाः । पैठसर्पाः ॥

चशब्दस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् तेन सा ब्रह्मचाराः । दाण्डम् । चाक्रम्
इत्यादयो भवन्ति ॥१६३॥ इति ब्रह्मादिः ॥

अनुशतिकपरस्त्रीसर्वलोकासिंहत्याः—

कुरुकतशतकुम्भागारवेएवस्यहत्याः ।

अनुरहदनुहोडावस्यहेतीहलोकाव्-

अभिगमपरलोकौ सर्वभूमिप्रयोगौ ॥१६४॥

परस्य चानुशतिकादीनामित्यनेनानुशतिकादीनामेव शब्दानां परपदस्य
पूर्वपदस्याचामादेरचः स्थानेऽणादौ ङिति पर आरैज् भवति । शतेन क्रीतः ।
शतिकः । अनुगतः शतिकेन । अनुशतिकः । तस्येदम् । आनुशतिकम् ।
परस्य स्त्री । परस्त्री । तस्या अपत्यम् । पारस्त्रैण्यः । सर्वलोके विदितः ।
सार्वलौकिकः । यथा—भट्टिकाव्ये ।

भवन्तं कार्तवीर्यो यो हीनसन्धिसचीकरत् ।

जिगाय तस्य हन्तारं स रामः सार्वलौकिकम् ॥

आसिंहत्यायां भवम् । आसिहात्यम् । कुरुकतस्यापत्यम् । कौरुकात्यः ।
शतकुम्भो नाम पर्वतः । तत्र भवं शतकौम्भं सुवर्णम् । केचिच्चाद्रूष्यव्याकरणा
लक्ष्यमेव केवलमनुसरन्तः शतकुम्भमित्याहुः । अतएव भोजः शतकुम्भस्य

विकारः शातकौस्ममित्याह । अगारवेणूनासिदम् । आगारवैणवम् । वामन-
स्त्वङ्गारवेणोरपत्यम् । आङ्गारवैणवमित्याह (१) । अधेनुशब्दमपि केचित्प-
ठन्ति (२) । अस्यहत्याशब्दोऽस्मिन्नस्तीति विमुक्तादित्वादणि । आस्यहात्यः ।
भोजस्त्वस्यहत्यशब्दं पठति । असिहत्य इत्यन्यः ॥ अनुरहतोऽपत्यम् । आनु-
राहतिः । अनुहोडः शकटविशेषः । तेन चरति । आनुहौडिकः । अस्यहेतिः
प्रहरणमस्य । आस्यहैतिकः । गणपाठसामर्थ्यात्पदसमुदायादपि ठण् विभक्तौ-
श्चालुक् । अस्यहेत्विति केचित् । इह लोके भवम् । ऐहलौकिकम् । अयं लोकः,
इहलोकः । प्रथमान्तादपि हप्रत्ययोऽस्मादेव गणपाठाद्व्यधिकरणसमाप्ती वा ।
अभिंगममर्हति । आभिगामिकः । परलोके भवम् । पारलौकिकम् । सर्वभूम्यां
विदितः सार्वभौमः । प्रयोगमर्हति प्रयोगे भवं वा । प्रायोगिकम् । वामनस्तु
संयोगं प्रायोगिकमित्याह ॥ १६४ ॥

सुखशयनसर्वपुरुपावनुसंवत्सरयुतानुसंवरणम् ।

सूत्रनडचतुर्विद्याकुरुपञ्चालाधिदेवाश्च ॥ १६५ ॥

सुखशयनं पृच्छन्ति । सौखशयनिकाः । यथा—

भृग्वादीननुगृह्णन्तं सौखशयनिकानृषीन् ।

सर्वपुरुपाणामिदम् । सार्वपौरुपम् । अनुसंवत्सरं दीयते । आनुसांव-
त्सरिकम् । कालात्कार्यं च भवदित्यतिदेशात् । कथाकालाद्वृजिति ठञ् । अ-
नुसंवरणेन दीयते आनुसांवरणम् । व्युष्टादित्वाद्दण् । सूत्रप्रधानो नडः सूत्र-
नडः । तस्यापत्यं सूत्रनाडिः । कश्चित् सूत्रनट इत्याह । चतस्र एव विद्याः ।
घातुर्वैद्यम् । कुरुपश्च पञ्चालाश्च तेषु भवः । कौरुपाञ्चालः । बहुत्व इत्यनेना-
कञ् न भवति तत्र देशव्यक्तेर्विवक्षितत्वात् । अत्र तु देशसमुदायः । देवम-
धिकृत्य भवम् । आधिदैविकं दुःखम् ॥ १६५ ॥

वध्योगोदकशुद्धौ पुष्करसत्सङ्क्रमाधिभूताः स्युः ।

प्रतिभूरजांतशत्रुः परिमण्डलराजपुरुषौ च ॥ १६६ ॥

• (१) अङ्गारवेणुवंशजातिविशेषः । आङ्गारवैणवं पात्रविशेषः ।

(२) केचित्तु—अगारधेनुशब्दमत्राधीयाना अगारधेनोरपत्यमागारधेनवो
यत्स एतमाहुः ।

(३) वध्योगस्य ऋषेरपत्यं विदादित्वादिणि । वाध्यौगः । उदकशुद्ध-
स्यापत्यम् । औदकशौद्धिः । पुष्करसदोऽपत्यम् । पौष्करसादिः । सङ्क्रमम-
हन्ति । साङ्क्रामिकाः ।

तिलाश्चम्पकसम्पर्कात्प्राप्नुवन्त्यधिवासताम् ।

रसो न भक्ष्यस्तद्गन्धः सर्वे साङ्क्रामिका गुणाः ॥

यथा वानर्घ्यराघवे । कश्चित्साङ्क्रामिकोऽपि विशेषो नैसर्गिकमति-
शीते । अधिभूते भवम् । आधिभौतिकं सुखम् । प्रतिभुवो भावः कर्म वा ।
प्रातिभांष्यम् । अजातशत्रोरियम् । अजातशात्रवी । यथा—

उपेयिवांसि कर्त्तारः पुरमाजातशात्रवीम् ।

परिमण्डलस्य भावः कर्म वा । पारिमाण्डल्यम् । राजपुरुषस्य भावः
कर्म वा । राजपौरुष्यम् ॥१६६॥

एषोऽपि स्यात्सर्ववेदः सहएयो द्वारस्वः श्वोव्यल्क-
सस्वस्तयः स्वः । स्वग्रामश्वस्वादुमृद्द्वारपालाः श्वादंष्ट्रा
स्वाध्याययुक्तः स्वरश्च ॥१६७॥

एषोऽपीति न केवलं प्रतिभूपरिमण्डलराजपुरुषशब्दा रयडन्ता एवात्र
गणं द्रष्टव्याः । सर्ववेदशब्दोऽपीति । सहयय इति रयटा रयेन च सह वर्त्तत
इत्यर्थः । सर्ववेदाएव । सार्ववेद्यम् । रयइति किम् । प्रातिभवम् । पाणिम-
ण्डलम् । राजपुरुषायणिः । सार्ववेदिकम् । आकृतिगणश्चायम् । तेन वैतुलीक्यं
मानैषादिरित्यादयो भवन्ति । इत्यनुशतिकादिः ॥

द्वार इति द्वारादेरित्यनेन द्वारादीनां शब्दानां यकारवकाराभ्यामुत्तर-
स्याचामा ~~ः~~ स्थान आरिज् न भवति । तयोस्तु खोष्ट्रिज् भवति ॥ द्वारे नि-
युक्तः । दौवारिकः । स्वर्भवः । सौवः । श्वो भवम् । शौवस्तिकम् । व्यल्क-
सेऽत्यन्ताधनभक्ष्ये भवः । वैयल्कसो व्याधिः । यद्वा । व्यल्कसो नाम देशो
ग्रामादिर्वा । स्वस्तीत्याह । सौवस्तिकः । स्वस्येदम् । सौवम् । स्वग्रामे
भवः । सौवग्रामिकः । शुनो विकारः । शौवनं नांसम् । शौवः सङ्कोचः ।

(३) उं शंभुं गच्छत्यभियाति—उगः कन्दर्पः । वध्यो । निग्राह्य उगो
येन स वध्यो गो नामर्षिरित्यधिकं क्वचित् ॥

स्वादुमृदइदम् । सौवादुमृदम् । कच्छादिदर्शनादण् । स्वाद्वी चासौ मृच्च सास्मि-
न्देशेऽस्तीति । सौवादुमृदो देशः । पाणिन्यादयस्तु सौवादुमृदवमित्याहुः ।
द्वारपालस्यापत्यम् । दौवारपालिः । केचिद् द्वारपालशब्दं रेवत्यादिध्वधीया-
ना दौवारपालिक इत्युदाहरन्ति । श्वादंष्ट्रायां भवः । शौषादंष्ट्रो मणिः ।
शुनोदन्तादाविति दीर्घत्वम् । स्वाध्यायेन चरति । सौवाध्यायिकः । स्वरस-
धिकृत्य कृतो ग्रन्थः । सौवरः । द्वारपालादीनामुपादानं सुसार्थम् । यतो
द्वारादेः केवलस्य तदादेश्च परिग्रहः । आकृतिगणोऽयम् । तेन स्फ्यो यज्ञायुर्ध
तेन कृतः । स्फैयकृतो नामर्षिः । स्फयकृदित्यपि सङ्गृहीतः ॥ १६७ ॥

इति द्वारादिः ॥

स्वागतस्वध्वरव्यङ्गा व्यवहारो व्यडस्तथा ।

व्यायामस्वपतिस्वङ्गस्वजनाश्चात्र कीर्तिताः ॥ १६८ ॥

पदान्तरयोः स्वागतादेष्टैव इत्यनेन स्वागतादिशब्दानां टैजागमो न
भवति ॥ स्वागतमित्याह । स्वागतिकः । शोभनोऽध्वरः स्वध्वरः । स्वध्वरेण
चरति । स्वाध्वरिकः । व्यक्तान्यङ्गानि यस्यासौ व्यङ्गः । व्यङ्गस्यापत्यं व्याङ्गिः ।
व्यवहारेण चरति । व्यावहारिकः । व्यङ्गो नामर्षिः । तस्यापत्यं व्याङ्गिः ।
व्यायामः प्रयोजनमस्य व्यायामिकः । स्वपतौ साधुः । स्वापतेयः । स्वङ्गस्यापत्यं
स्वाङ्गिः । स्वजनात्प्रयोजनमस्यं । स्वाजनिकः । येषां टैजागमो न दृश्यते तेऽत्र
द्रष्टव्याः ॥ १६८ ॥ इति स्वागतादिः ॥

पैलौदञ्ची राहवी रावणिश्च दैवस्थानी राणिराहक्षिती च ।
ऋदभृजिः सात्यकिश्चौदमेधिः सात्यंकाभिः पैङ्गलोदायनिश्च १६९

पैलाद्यविप्रतौरवल्यादिरित्यनेन पैलादेर्विहितस्यार्पत्यप्रत्ययस्य श्लुग्
भवति । पीलाया अपत्यं पैलः । पीलामशङ्काद्वेत्यण् । पैलस्यापत्यमिति द्वार-
चोऽण इति फिञ् तस्य श्लुक् । पैलः पिता । पैलः पुत्रः । उदञ्चोऽपत्यम् ।
बाह्वादित्वादिञ् । ऋदञ्चिः पिता । ऋदञ्चिः पुत्रः । राहौरत्यम् । राहविः
पिता । राहविः पुत्रः । रवणस्यापत्यम् । रावणिः पिता । रावणिः पुत्रः ।
दैवस्थानस्यापत्यम् । दैवस्थानिः पिता । दैवस्थानिः पुत्रः । रणस्यापत्यं राणिः
पिता । राणिः पुत्रः । रहेण क्षिती हिंसितो रहक्षितः । तस्यापत्यम् ।

राहस्रितिः पिता । राहस्रितिः पुत्रः । उदके भृज्जतीति । मूलविभुजादि-
त्वारके । उदभृज्जः । तस्यापत्यम् । औदभृज्जिः पिता । औदभृज्जिः पुत्रः ।
सत्यएव सत्यकः । तस्यापत्यं सात्यकिः पिता । सात्यकिः पुत्रः । उदमेघस्या-
पत्यम्—औदमेघिः पिता । औदमेघिः पुत्रः । सत्ये कामोऽस्य सत्यंकामः ।
अतएव निपातनान्मुक् । सत्यमिति निपातो वा शपथपर्यायः । तस्यापत्यं
सात्यंकामिः पिता । सात्यंकामिः पुत्रः । पिङ्गलोदायनस्यापत्यं पैङ्गलोदायनिः
पिता । पैङ्गलोदायनिः पुत्रः । शाकटायनस्तु पैङ्गलोदयनिरित्याह ॥ १६९ ॥

शालङ्क्यौदकशुद्धी भौलिङ्ग्यौदव्रजी तथौदन्यिः ।

औद्वाहमानियुक्तौदमज्जिरपि चौजिहानिः स्यात् ॥ १७० ॥

शालङ्कोरपत्यम् । शालङ्किः पिता । शालङ्किः पुत्रः । उदकशुद्धस्याप-
त्यम् । औदकशुद्धिः पिता । औदकशुद्धिः पुत्रः । औदशुद्धिरिति भोजः ।
भौलिङ्गस्यापत्यम् । भौलिङ्गिः पिता । भौलिङ्गिः पुत्रः । उदव्रजस्यापत्यम् ।
औदव्रजिः पिता । औदव्रजिः पुत्रः । उदन्यस्यापत्यम् । औदन्यिः पिता ।
औदन्यिः पुत्रः । तिकादिषु पठ्यमानस्याप्यस्यातएव पाठात् अफिज् विज्ञायते ।
तेन रूपद्वयम् । औदन्यिः । औदन्यायनिः । उद्वाहमानस्यापत्यम् । औद्वाह-
मानिः पिता । औद्वाहमानिः पुत्रः । उदमज्जस्यापत्यम् औदमज्जिः पिता ।
औदमज्जिः पुत्रः । उज्जिहानस्यापत्यम् । औज्जिहानिः पिता । औज्जि-
हानिः पुत्रः । कश्चिद् औज्जिहानिरिति मन्यते । एस्य इजन्तेभ्यः फकः
श्लुक् ॥ १७० ॥ इति पैलादिः ॥

तौत्वल्लिवैरकिधारणिपौष्पि बैत्वकिबान्धकिरावणिवैङ्कि ।

आसुरिनेमिषिनेवकियुक्तं दैवतिवार्कलिवैहतिभिश्च ॥ १७१ ॥

तौत्वल्यादेः पर्युदासादपत्यस्यापत्यादित्यनेन प्राप्ता श्लुग् न भवति ।
तुत्वलो नामर्षिः । तस्यापत्यं तौत्वलिः । तदपत्यं तौत्वलायनः । तैत्व-
लिरित्यन्यः । वीरकस्यापत्यम् । वैरकिः पिता । वैरकायणः पुत्रः । वैरकि-
रिति शाकटायनः । धरणस्यापत्यम् । धारणिः पिता । धारणायनः पुत्रः ।
पुष्पो नाम कश्चित् । तस्यापत्यम् । पौष्पिः पिता । पौष्पायणः पुत्रः
वित्त्वकस्यापत्यम् । बैत्वकिः पिता । बैत्वकायनः पुत्रः ।

बान्धकिः पिता । बान्धकायनः पुत्रः । खणस्यापत्यम् । खणः पिता ।
 खणायनः पुत्रः । शाकटायनस्तु खणिरित्याह । विङ्कस्यापत्यम् । वैङ्किः
 पिता । वैङ्कायनः पुत्रः । न सुरोऽसुरः । तस्यापत्यम् । आसुरिः पिता ।
 आसुरायणः पुत्रः । निमिषस्यापत्यम् । नैमिषिः पिता । नैमिषायणः पुत्रः ।
 नैमिशिरिति शाकटायनः । निवकस्यापत्यम् । नैवकिः पिता । नैवकायनः
 पुत्रः । दैवतस्यापत्यम् । दैवतिः पिता । दैवतायनः पुत्रः । दैवोतिरिति
 शाकटायनः । वृकलाया अपत्यम् । वार्कलिः पिता । वार्कलायनः पुत्रः ।
 दोधकं छन्दः । भौतु भगौगिति दोधकमेतत् ॥ १७१ ॥

पौष्करसादिवैकर्ण्यहिंसिकारेणुपालयः ।

आसिबन्धकिवैशीतिदैवयज्ञासिनासयः ॥ १७२ ॥

पुष्करसदोऽपत्यम् । पौष्करसादिः पिता । पौष्करसादायनः पुत्रः ।
 विभूषितौ कर्णौ यस्य । विकर्णः । तस्यापत्यम् । वैकर्णिः पिता । वैकर्णायनः
 पुत्रः । न विद्यते हिंसाऽस्य । अहिंसः । तस्यापत्यम् । आहिंसिः पिता ।
 आहिंसायनः पुत्रः । करेणुं पालयतीति करेणुपालः । तस्यापत्यम् । कारेणु-
 पालिः पिता । कारेणुपालायनः पुत्रः । असिना युक्तो बन्धः । असिबन्धः ।
 असिबन्ध एवासिबन्धकः । तस्यापत्यम् । आसिबन्धकिः पिता । आसिबन्ध-
 कायनः पुत्रः । अस्यतीति । असः । तस्यापत्यम् । आसिः पिता । आसा-
 यनः पुत्रः । बध्यतेस्म बद्धः । बद्ध एव बद्धकः । तस्यापत्यम् । बाद्धकिः पिता ।
 बाद्धकायनः पुत्र इति शाकटायनः । विशीतस्यापत्यम् । वैशीतिः पिता ।
 वैशीतायनः पुत्रः । देवानां यज्ञो देवयज्ञः । तस्यापत्यम् । दैवयज्ञिः पिता ।
 दैवयज्ञायनः पुत्रः । असिरिव नासाऽस्येति असिनासः । तस्यापत्यम् । आसि-
 नासिः पिता । आसिनासायनः पुत्रः ॥ १७२ ॥

दालीपिशानुतिश्च प्रादोहन्यानुराहती चापि ।

चाफट्टकिनैमिश्चिप्राडाहतिदैवमतयोऽपि ॥ १७३ ॥

दिलीपस्यापत्यम् । दालीपिः पिता । दालीपायनः पुत्रः । निपातना-
 दात्वम् । अपरे दलीप इति प्रकृत्यन्तरमाहुः । चन्द्रादयस्तु दैलीपिरित्याहुः ।
 आनुतिः पिता । आनुतायनः पुत्रः । प्रदोहनस्यापत्यम् । प्रादोहनिः पिता ।

प्रादोहनायनः पुत्रः । अनुरहतोऽपत्यम् आनुराहतिः पिता । आनुराहता-
यनः पुत्रः । चाफट्टकशब्दोऽनुकरणम् । तदुच्चारणात्पुरुषोपि चाफट्टकः । तस्या-
पत्यम् । चाफट्टकिः पिता । चाफट्टकायनः पुत्रः । कुर्वादावस्य क्षत्रियस्य ग्रह-
णम् । इह तु ब्राह्मणवाचिनस्तेनेज् सिद्धः । निश्चयेन मिश्रो निमिश्रः । तस्या-
पत्यम् । नैमिश्रिः पिता । नैमिश्रायणः पुत्रः । पृच्छत्याहन्ति च । प्राडा-
हतः । तस्यापत्यम् । प्राडाहतिः पिता । प्राडाहतायनः पुत्रः । प्राडाहतिरि-
त्यपि वामनः । देवमतस्यापत्यम् । दैवमतिः पिता । दैवमतायनः पुत्रः ॥१७३॥

इति तीत्वल्यादिः ॥

प्रज्ञश्रोत्रपिशाचचौरमारुतो रक्षश्वरित्रोशिजः—

प्रत्यक्षासुरशत्रुसंतपनसत्साधारणानुष्टुभः ।

चण्डालाशनिगोरजेतृजगतीसत्वद्(१)हितादेवता—

श्वक्षुर्व्याकृतबन्धुयोधमधवो विद्यामनोजुह्वतः ॥ १७४ ॥

प्रज्ञादेरणित्यनेन प्रज्ञादेः शब्दगणादण् वा भवति स्वार्थे । प्रज्ञएव
प्राज्ञः ॥ प्राज्ञी स्त्री । प्रज्ञाज्योत्स्नेत्यादिना णप्रत्यये ऽसिद्धम् । प्राज्ञः । प्राज्ञी
तु न सिध्यति । णप्रत्यये हि प्राज्ञा स्यात् । अर्थभेदश्च । तथा च । वृद्धा
पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ श्रोत्रमेव श्रौत्रम् ।

तं कूजत्क्रौञ्चसंहृष्यच्चाक्षुषश्रोत्रमानसः ॥

वामनाद्यास्तु श्रोत्रं शरीरं चेदित्यर्थेनियमसाहुः । पिशाच एव पै-
शाचः । एवं चौरः । मारुतो देवो वायुश्च । राक्षसः । चरित्रमेव चारित्रम् ।
उशिक् कान्तः स एव । श्रौशिजः । यथा—

चीर्णमांतपनैर्वैद्यवैदतैर्जैर्हृतवृत्तम् ।

शार्णाजिनौशिजैर्विप्रैः प्रात्यक्षसिक् दैवतम् ॥

प्रत्यक्षा एव प्रात्यक्षाः पदार्थाः । असुर एव आसुरः । शत्रुरेव शान्रवः ।
सन्तपनमेव सान्तपनम् ॥ सन्नेव सान्तः । अण् प्रत्ययसन्नियोगेन निपात-
नान्तुंगागमः । साधारणी साधारणा वा भूमिः । अनुष्टुबेव आनुष्टुभम् ॥
केचिद् आनुष्टुभादीनां छन्दो नाम्नां पुंलिङ्गतासाहुः । चण्डम्—उग्रकर्म अलति
पर्याप्नोति । चण्डालः । स एव चाण्डालः । तथा च—

(१) शश्वदिति पाठ ।

ब्रान्धकिः पिता । ब्रान्धकायनः पुत्रः । रवणस्यापत्यम् । रावणिः पिता ।
 रावणायनः पुत्रः । शाकटायनस्तु रावणिरित्याह । विङ्कस्यापत्यम् । वैङ्किः
 पिता । वैङ्कायनः पुत्रः । न सुरोऽसुरः । तस्यापत्यम् । आसुरिः पिता ।
 आसुरायणः पुत्रः । निमिषस्यापत्यम् । नैमिपिःपिता । नैमिषायणः पुत्रः ।
 नैमिशिरिति शाकटायनः । निवकस्यापत्यम् । नैवकिः पिता । नैवकायनः
 पुत्रः । दैवतस्यापत्यम् । दैवतिः पिता । दैवतायनः पुत्रः । दैवोतिरिति
 शाकटायनः । वृकलाया अपत्यम् । वार्कलिः पिता । वार्कलायनः पुत्रः ।
 दोधकं छन्दः । भौतु भगौगिति दोधकमेतत् ॥ १७१ ॥

पौष्करसादिवैकर्ण्यहिंसिकारेणुपालयः ।

आसिबन्धकिवैशीतिदैवयज्ञासिनासयः ॥ १७२ ॥

पुष्करसदोऽपत्यम् । पौष्करसादिः पिता । पौष्करसादायनः पुत्रः ।
 विभूषितौ कर्णौ यस्य । विकर्णः । तस्यापत्यम् । वैकर्णिः पिता । वैकर्णायनः
 पुत्रः । न विद्यते हिंसाऽस्य । अहिंसः । तस्यापत्यम् । आहिंसिः पिता ।
 आहिंसायनः पुत्रः । करेणुं पालयतीति करेणुपालः । तस्यापत्यम् । कारेणु-
 पालिः पिता । कारेणुपालायनः पुत्रः । असिना युक्तो बन्धः । असिबन्धः ।
 असिबन्ध एवासिबन्धकः । तस्यापत्यम् । आसिबन्धकिः पिता । आसिबन्ध-
 कायनः पुत्रः । अस्यतीति । असः । तस्यापत्यम् । आसिः पिता । आसा-
 यनः पुत्रः । बध्यतेस्म बहुः । बहुएव बहुकः । तस्यापत्यम् । बाहुकिः पिता ।
 बाहुकायनः पुत्र इति शाकटायनः । विशीतस्यापत्यम् । वैशीतिः पिता ।
 वैशीतायनः पुत्रः । देवानां यज्ञो देवयज्ञः । तस्यापत्यम् । दैवयज्ञिः पिता ।
 दैवयज्ञायनः पुत्रः । असिरिव नासाऽस्येति असिनासः । तस्यापत्यम् । आसि-
 नासिः पिता । आसिनासायनः पुत्रः ॥ १७२ ॥

दालीपिरानुतिश्च प्रादोहन्यानुराहती चापि ।

चाफट्टकिनैमिश्रिप्राडाहतिदैवमतयोऽपि ॥ १७३ ॥

दिलीपस्यापत्यम् । दालीपिः पिता । दालीपायनः पुत्रः । निपातना-
 दात्वम् । अपरे दलीप इति प्रकृत्यन्तरमाहुः । चन्द्रादयस्तु दैलीपिरित्याहुः ।
 आनुतिः पिता । आनुतायनः पुत्रः । प्रदोहनस्यापत्यम् । प्रादोहनिः पिता ।

प्रादोहनायनः पुत्रः । अनुरहतोऽपत्यम् आनुराहतिः पिता । आनुराहता-
यनः पुत्रः । चाफट्टकशब्दोऽनुकरणम् । तदुच्चारणात्पुरुषोपि चाफट्टकः । तस्या-
पत्यम् । चाफट्टकिः पिता । चाफट्टकायनः पुत्रः । कुर्वादावस्य क्षत्रियस्य ग्रह-
णम् । इह तु ब्राह्मणवाचिनस्तेनेऽसिद्धः । निश्चयेन मिश्रो निमिश्रः । तस्या-
पत्यम् । नैमिश्रिः पिता । नैमिश्रायणः पुत्रः । पृच्छत्याहन्ति च । प्राडा-
हतः । तस्यापत्यम् । प्राडाहतिः पिता । प्राडाहतायनः पुत्रः । प्राटाहतिरि-
त्यपि वामनः । देवमतस्यापत्यम् । देवमतिः पिता । देवमतायनः पुत्रः ॥१७३॥
इति तील्वल्यादिः ॥

प्रज्ञश्रोत्रपिशाचचौरमरुतो रक्षश्वरित्रोशिजः—

प्रत्यक्षासुरशत्रुसंतपनसत्साधारणानुष्टुभः ।

चण्डालाशनिगोरजेतृजगतीसत्वद्(१)हितादेवता—

श्वक्षुर्व्याकृतवन्धुयोधमधवो विद्यामनोजुह्वतः ॥ १७४ ॥

प्रज्ञादेरणित्यनेन प्रज्ञादेः शब्दगणादण् वा भवति स्वार्थे । प्रज्ञाएव
प्राज्ञः ॥ प्राज्ञी स्त्री । प्रज्ञाज्योत्स्नेत्यादिना णप्रत्यये सिद्धम् । प्राज्ञः । प्राज्ञी
तु न सिध्यति । णप्रत्यये हि प्राज्ञा स्यात् । अर्थभेदश्च । तथा च । वृद्धा
पलिवनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ श्रोत्रमेव श्रौत्रम् ।

तं कूजत्क्रौञ्चसंहृष्यच्चाक्षुषश्रौत्रमानसः ॥

वामनाद्यास्तु श्रोत्रं शरीरं चेदित्यर्थनियममाहुः । पिशाच एव पै-
शाचः । एवं चौरः । मरुतो देवो वायुश्च । राक्षसः । चरित्रमेव चारित्रम् ।
उशिक् कान्तः स एव । श्रौशिजः । यथा—

चीर्णसांतपनैर्वैद्यवैदतैर्जौह्वतवृतम् ।

श्रौशिजिनौशिजैर्विप्रैः प्रात्यक्षमिव दैवतम् ॥

प्रत्यक्षा एव प्रात्यक्षाः पदार्थाः । असुर एव आसुरः । शत्रुरेव शात्रवः ।
सन्तपनमेव सान्तपनम् ॥ सन्नेव सान्तः । अण् प्रत्ययसन्नियोगेन निपात-
नान्मुंगागमः । साधारणी साधारणा वा भूमिः । अनुष्टुबेव आनुष्टुभम् ॥
केचिद् आनुष्टुभादीनां छन्दो नाम्नां पुंलिङ्गतामाहुः । चण्डम्—उग्रकर्म श्रुति
पर्याप्नोति । चण्डालः । स एव चाण्डालः । तथा च—

(१) शश्वदिति पा० ।

षण्डालप्रवमातङ्गदिवाकीर्त्तिजनङ्गमाः ।

निषादप्रवपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्रसाः ॥

अशनिरेव आशनः । वज्रम् । गोरएव गौरः । सितः पीतोऽरुणश्च
वर्णः । जेत्रेव । जैत्रं धनुः । जैत्री शरश्रेणिः । जगत्येव जागतम् ॥ सत्वानेव
सात्वतः (१) । चन्द्रस्तु सत्वन्निति नान्तं कृततलोपं पठन् सत्वानेव सात्वन्
इत्याह । द्वयोर्भावो द्विता । द्वितैव द्वैतम् ॥ यथा—

निदानं निद्वैतं प्रियजनसदृक्षं व्यवसितिः ॥

देवतैव देवतम् । चक्षुरेव चाषक्षुम् , व्याकृतमेव वैयाकृतम् । बन्धुरेव
बान्धवः । स्त्रियामणन्तस्यासामर्थ्यान्न वृत्तिः । शुद्धप्रकृतिस्तु वर्त्ततएव । यथा—
बन्धुरियं ब्राह्मणी । एवं सर्वत्र । योधएव योधः । सधुरेव साधवः । विद्यैव
वैद्यम् । नपुंसकत्वमेव । कश्चिद् विद्यासम्बन्धात्पुरुषोऽपि विद्या । सएव वैद्य
इत्याह । मन एव मानसम् । जुह्वदेव जौह्वतः ॥१७४॥

निगमवणिजौ गन्धर्वश्चाग्रहायणषोडशौ—

प्रकृतविदतौ क्रुड् रक्षोघ्नो विघातचिकीर्षितौ ।

ततवसुकैराग्नीध्रं विश्वानरो वरिवस्कृतौ—

नुषुकविकृते विड्वानुष्णिक्चरश्च कुतूहलम् ॥ १७५ ॥

नितरां गम्यन्ते पदार्थां अनेनेति निगमः । निगम एव नैगमः । नयः ।
यणिगेव वाणिजः । वाणिजी स्त्री ।

यस्यैतं व्याधकार्कश्यसङ्कुले वित्तवत्तमाः ।

रान्नावपि महारण्ये वडचं वज्रन्ति वाणिजाः ॥

गन्तव्यं गच्छन्तीत्यर्थः । गन्धर्व एव गान्धर्वः । अग्रहायण एव अग्र-
हायणः । मार्गशीर्षः । षोडशेव षोडशः । प्रकृतमेव प्राकृतम् । विदन्नेव विदतः ।
विद्वान् । क्रुड्ङेव क्रौडुः । रक्षांसि हन्तीति रक्षोघ्नः । रक्षोघ्न एव राक्षोघ्नः ।
विहननं विघातः । विघात एव वैघातः । चिकीर्षितमेव चैकीर्षितम् ।
चिकीर्षन्नेव चैकीर्षत इति भोजः ।

ब्रह्मपीडितमैघायसाधुसाधारणद्वये । लङ्केशयौधायेवास्मै हिताप्रचैकीर्षितक्रियाः ॥

तनोति कुलम् । ततः । तत एव तातः जनकः । वसुरेव वासवः ।
सुरप्रतिः । करएष कारः । राजदेयो भागः । अग्निमिन्द्रे । अग्नीत् । तस्य
शरणम् । आग्नीध्रम् । ततोऽग्नि प्रत्यये । आग्नीध्री शाला । आग्नीध्रा वा
शाला । विश्वानर एव वैश्वानरः ॥ वरिवस्कृत एव वारिवस्कृतः । अनुषुव-
तीत्यनुषूः । तं कायतीत्यनुषुकः । केऽवेति ह्रस्वत्वे । अनुषुक एव आनुषुकः ।
विकृतमेव वैकृतम् । विकृतिरेव वैकृतमिति नन्दी ॥

पच्छो वैयाकृतैः सूक्तैर्जागतानुष्टुभौष्णिहैः ।

• राक्षसासुरपैशाचवैकृतानां निवर्त्तकम् ॥

विद्वानेव वैदुषः । उष्णिगेव औष्णिहम् । चरएष चारः । कुतूहलमेव
कौतूहलम् ॥१७५॥

नन्दामात्यडहालसंप्रतिवजाः कर्षापणत्रिष्टुभौ—

गायत्रीरवणोपचेयककुदैकाग्रयाटरूषास्तथा ।

संनारयाग्रयणौ विधेयकुतुकागारद्विदत्पङ्कयः—

सत्वन्तुप्रतिभाविथातसहसा वार्त्ता विद्वन्तोऽपि च ॥१७६॥

नन्दति वृद्धिं यातीति नन्दा । नन्दैव नान्दी । अमात्यं एव आमात्यः ।

डहाल एव डाहालः । सप्रत्येव सारप्रतम् । वजतीति वजः । स एव वाजः ।
कर्षापण एव कार्षापणः । त्रिष्टुवेव त्रैष्टुभम् । गायत्रेव गायत्रम् । छन्दसां
पूर्वम् । रवण एव रावणः । उपचेयएष । औपचेयः । ककुदमेव काकुदम् ।
शब्दशक्तिस्वाभाव्यात्स्वार्थिकारप्रत्ययान्तस्यापि काकुदशब्दस्यार्थभेदो द्रष्टव्यः ।
एकमग्रयं पुरोगतं ध्येयमस्य एकारयः । सएव ऐकाग्रयः । अनन्यवृत्तिः ।
अटन् रूषतीति । अटरूषः । सएव आटरूषः सिंहास्यः । यथा—

वासिके सिंहपर्णी च वृषो वासाथ सिंहका ।

आटरूषः सिंहमुखी भिषङ्माताटरूषकः ॥

सन्नाय्यमेव । सांनारयम् ॥ अग्रयणमेव आग्रयणः ॥ चन्द्रस्तु । अग्रौऽय-
नस्य । अग्रयणम् । राजदन्तादित्वात् प्राङ्निपाते शकुन्धवादित्वाद्कारलोपे
च । अग्रयणमेव आग्रयणमित्याह ॥ आग्रायणीत्यन्यः (१) । विधेयएव विधेयो

(१) आग्रयणमेवेति श्रीभोज इति पा०

मूर्खः। विधाया भीजनस्यापत्यमिव वैधेय इत्यन्ये ॥ कुतुकमेव कौतुकम् । अ-
गारमेव आगारम् । द्वौ दन्तावस्य द्विदन् । वयसि दन्तस्य दत् । दन्नादेशे ।
द्विदन्नेव द्वैदतो बालः । पङ्क्तिरेव पाङ्क्तम् । सत्वन्तुरेव सात्वन्तयः । प्रतिभैष
प्रातिभम् ॥

प्रातिभं त्रिसरकेण गतानां वक्तृवाक्यरचनारमणीयः ।

गूढसूचितरहस्यसहास्यः सुश्रुवां प्रवृत्ते परिहासः ॥

वियातएव वैयातो घृष्टः । सहसैव साहसम् । अविचार कृतं कर्म ॥
अन्यस्तु । साहसं तु दनो दण्डः । सहसि बले भवं साहसमित्याह ॥ वार्त्तैव
वार्त्तम् । यथा—

हरिराकुमारसखिलाभिधानवित्-स्वजनस्य वार्त्तमयसन्वयुङ्क्त सः ॥

विगता दन्ता अस्य विदन्तः । विदन्तएव वैदन्तः बालादिः ॥ १७६ ॥

वयश्चतुष्प्राश्यदशार्हयुक्तः परिप्लवः पुष्पकसंयुतश्च ।

कृष्णः कुरङ्गेऽनिमिषे विसारी स्यादौषधं भेषजएव कामम् ॥ १७७ ॥

वयएष वायसः काकः । वयःशब्दः सामान्येन पक्षिवाच्यपि विशेषे
वर्त्तते शब्दशक्तिस्वाभाव्यात् । एवं वसुशब्दोऽपि द्रष्टव्यः । प्राश्नन्ति प्राश्नुवते
वा तदिति प्राश्यम् । चतुर्भिः प्राश्यं चतुष्प्राश्यम् । तदेव चातुष्प्राश्यम् ।
दश नामान्यर्हति । दशार्हः । सएव दशार्हः केशवः । परिप्लवते परिप्लवः ।
सएष पारिप्लवः । चञ्चलः । पुष्पप्रकृतिः (१) पुष्पकम् । पौष्पकम् । कुसुमा-
ञ्जनम् । कृष्णएव कार्णः कुरङ्गः । अन्योगवादिः कृष्णः । विसारिणः । सरस्यः ।
अन्यो विसारी । देवदत्तादिः । ओषधिरेव । औषधम् । त्रिफलादि । अन्य-
त्रौषधयः । क्षेत्ररूढाः शङ्खपुष्पीप्रभृतयः । आकृतिगणश्चायम् । तेनान्येऽपि
प्रयोगा द्रष्टव्याः ॥ १७७ ॥ इति प्रज्ञादिः ॥

अनन्तसोमेतिहसर्ववेदाः सुखैकभावौ मणिकान्यभावौ ।

समीपसेनावसथद्विभावा मालोपमाभेषजसर्वविद्याः ॥ १७८ ॥

ययोऽनन्तादेऽित्यनेनानन्तादेः शब्दगणात्स्वार्थं ययप्रत्ययो भवति । न
अन्तोऽनन्तः । अनन्त एव आनन्त्यम् ॥ न विद्यतेऽन्तो यस्य । अनन्तः

कालः । अनन्ता पृथ्वी । अनन्तं व्योम । आनन्त्यः काल इत्यादि । सोम एव सौम्यः । यथा—

तेनाथ नाथदुरुदाहरणात्पेन—सौम्यापि नाम परुषत्वमपि प्रपन्ना ।

ज्वाल तीक्ष्णविशदासहस्रोद्गिरन्ती—वागर्चिपस्तपनकान्तशिलेव सीता ॥

सौम्यम् । सोमइवाह्लादकत्वात् सौम्य इत्यपि शाखादेराकृतिगणत्वात् ।

यथा— अपेतयुद्धाभिनिवेशसौम्यो—हरिर्हरिप्रस्थमथप्रतस्थे ॥

इतिहेत्येव । ऐतिह्यम् । इतिहेति निपातसमुदाय उपदेशपारंपर्यं वर्तते । इतिह स्तोपाध्यायः कथयति । इतिह षटे यक्षः प्रतिवसति । सर्व-वेदाएव सार्ववैद्यम् । सुखमेव सौख्यम् । एको भावो यस्य एकभावः । एकस्य वा भावः । एकभावः । स एव ऐकभाव्यम् । मणिप्रकारो मणिकः । मणिक एव माणिक्यम् । रत्नविशेषः । अन्यो भावो यस्यासावन्यभावः । अन्यस्य वा भावोऽन्यभावः । अन्यभावएव आन्यभाव्यम् । यथा । आन्यभाव्यं तु कालशब्दव्यवायात् (१) । समीपमेव सामीप्यम् । सहेनेन वर्तते सेना । सेनैव सैन्यम् । एतय वसन्त्यस्मिन्निति आवसथो गृहम् । आवसथ एव आवसथ्यम् । द्वयोर्भावो द्विभावः । द्विभावएव द्वैभाव्यम् । सालैव साल्यम् । सूक् । उपसैव । औपस्यम् । भिषजइदम् । भेषजम् । यद्वा भिषजयतीति भेषजः । करणस्यापि कर्तृत्वे पचाद्यचि यलोपे च निपातनादेत् । भेषजमेव भेषज्यम् । सर्वविद्या एव सार्ववैद्यम् । यथा—सर्ववैद्यविदधाभृतचातुर्वैद्यवैद्य इव तं विरहात्तम् ॥ १७८ ॥

सर्वलोकचतुर्विद्याचतुराश्रमषड्गुणाः ।

भावशब्दस्वरा विद्यालोककालास्त्रितः परे ॥ १७९ ॥

सर्वलोकाएव सार्वलौक्यम् । चतस्र एव विद्याः चातुर्वैद्यम् । अथवा । चत्वारएव वेदाः । चातुर्वैद्यम् (२) । उभयत्राप्यनुशक्तिकादिदर्शनादुभयपदादावैच् । चत्वार एवाश्रमा ब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थयतिस्रक्षणाः । चातुराश्रम्यम् । षड्गुणा एव सन्धिविग्रहयानासनद्वैधीभावसंप्रयत्नलक्षणाः । षड्गुण्यम् । यथा—अषडक्षीणषड्गुण्यमन्त्रीमकरकेतनः ॥

(१) महाभाष्ये—अइउणित्यस्य व्याख्याने ।

(२) चतुरो वेदानधीते चतुर्वेदः स एव चातुर्वैद्य इत्यधिकम् ।

त्रयो भावाः । त्रयाणां वा भावाः त्रिभावाः । त्रिभावाएव त्रैभाव्यम् ।
 त्रय एव शब्दाः त्रैशब्दम् । तथाहि—पञ्चसु कपालेषु संस्कृत इत्येकः । प-
 ञ्चकपाल इत्यपरः । पञ्चकपाल्यां संस्कृतस्तृतीयः । पाञ्चकपालमित्यवधाना-
 न्नास्ति चतुर्थः शब्द इति । त्रय एव स्वरा उदात्तानुदात्तस्वरितलक्षणाः ।
 त्रैस्वर्यम् । तिस्रएव विद्या आन्वीक्षिकीत्रयीवार्त्तालक्षणाः । त्रैविद्यम् ।
 द्विविद्य इत्यप्यन्यः । कश्चित् तिस्रएव विद्याः । त्रय एव वेदा इति वा ।
 त्रैविद्यमित्याह । त्रयएव लोकाः त्रैलोक्यम् । त्रयएव काला वर्त्तमानभूतम-
 विष्यल्लक्षणाः । त्रैकाल्यम् । त्रितइति त्रिशब्दादित्यर्थः ॥ १७९ ॥

हासप्रधानकवयः समानसन्निधितदर्थसमयुक्ताः ।

अथ चतुरो वर्णयुगौ शीलं शकटाङ्गजः प्राह ॥१८०॥

हासएव हास्यम् । यथा—गूढसूचितरहस्यसहास्यः सुभ्रुवां प्रवृत्ते परि-
 हासः । प्रधानमेव प्राधान्यम् ॥ कविरेव काव्यः । दैत्यगुरुः । कुर्वादिभ्यो शये
 सति काव्य इति च । समानमेव सामान्यम् । सन्निधिरेव सान्निध्यम् । सोऽ-
 र्थोऽस्येति तदर्थः । तदर्थ एव तादर्थ्यम् । तच्छब्देन प्रकृत्यर्थो निर्दिश्यते ।
 सममेव साम्यम् । चत्वारएव वर्णाः चातुर्वर्ण्यम् । विप्रक्षत्रियविद्भूद्राः । चा-
 तुर्युग्मम् । शाकटापनस्तु षण्प्रत्ययमानयज्ञशीलमेव शैलीयमाचार्यस्येत्याह ॥
 जिनेन्द्रबुद्धिरनन्तरशब्दमप्यत्राधीते । तथा च तेन । अनृष्यानन्तर्ये विदादि-
 भ्योऽजित्यत्र नह्ययं भावे ष्यञ् विहितः किंतिर्हि स्वार्थएव चातुर्वर्ण्यवदिति
 दर्शितम् ॥ आकृतिगणश्चायम् ॥ तेनान्येऽपि वेदितव्याः ॥ १८० ॥

इत्यनन्तादिः ॥

आदिमध्यमुखान्ताद्यप्रमाणपार्श्वयत्तदः ।

सर्वविश्वोभयैकान्यवक्षःपूर्वेदमः स्वरः ॥१८१॥

आद्यादेरित्यनेनाद्यादिभ्यः सस्भवद्विभक्त्यन्तेभ्यो यथासम्भवं तसुप्रत्ययो
 भवति । आदौ । आदितः । मध्ये मध्याद्वा । मध्यतः । एवं मुखे । मुखतः ।
 अन्ततः । अग्रतः । प्रमाणेन प्रमाणाद्वा । प्रमाणतः । पार्श्वेन । पार्श्वती-
 र्के निषेवेत । येन धस्तिन् वा । यतः । एवं ततः । सर्वतः । विश्वतः ।
 उभयतः । एकतः । अन्यतः । वक्षस्तः । पूर्वतः । इतः । यथा—प्रयुक्तमप्य-
 स्तमितो वृथा स्यात् ॥ स्वरेण । स्वरतः ॥

आकृतिगणश्चायम् । तेन वर्णतः । शब्दतः । अर्थतः । अभिधानत इत्यादयो द्रष्टव्याः । का पुनरत्र संभवन्ती विभक्तिः । तथाहि । याप्येषाश-
वित्यत्र प्रयुक्तम् । शरीरतः कृशः । शरीरेण कृशइत्ययं तत्रार्थः । तेन तृतीया-
न्तादनेन तसिः । तथा दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वेत्यस्य विवरणे भर्तृहरिः ।
आद्यादित्वात्तसिः । स्वरवर्णाभ्यां दुष्टइति तत्रापि तृतीयान्तादेव । एवंभूत-
विषयमेवैतलक्षणनिष्ठ्युपसंख्यानानां नियतविषयत्वात् । नच सर्वविषयाऽय-
मिति स्मृतिरस्ति नापि सर्वविषयत्वे प्राक्सूत्रप्रपञ्चस्यानेकलक्षणस्यापादाना-
दिग्रहणस्यात्र फलमस्ति सुवन्तात्तसित्युच्यमाने सर्वस्य संग्रहात् । तस्मादा-
द्यादिभ्य इत्येतस्य सामान्यलक्षणत्वासंभवाद् यावदुदाहृतमिह शास्त्रे प्रमाण-
तयोपगतैः शिष्टैस्तावानेव विषयो नापरः । एवं च यएते तर्कग्रन्थेषु हेतुप-
ञ्चम्यर्थे किंसर्वनामत्रहुभ्योऽन्यत्र तसन्ताः प्रयोगाः । तेषु यत्रापादानपञ्चमी
सम्भवति तत्र साधुत्वम् । येषु तु न संभवति ते कालदष्टाएवापशब्दाः । न
च तत्राद्भुतं बाहुल्येन तर्कग्रन्थेषु शब्दानां लक्षणविकलानामेव दर्शनात् ।
यस्त्वयं वेदविदामलंकारभूतो वेदाङ्गत्वात्प्रमाणितशब्दशास्त्रः सर्वज्ञमन्य उप-
सीयते तेन कथमेतत्प्रयुक्तम् । नहि स्मरणतो यत्प्राक्प्रत्यक्षसितीरितं वचनं
राजकीयं वा वैदिकं वापि विद्यतइति तत्र हि दिग्योगलक्षणा दिक्शब्द
इत्यनेनोपपदविभक्तिः पञ्चमी केन तस्यास्तसिः स्यात् । अन्ये तु हेतुपञ्चम्य-
न्तादपि तसमिच्छन्ति । यथा—प्रमाणाद्धेतोः । प्रमाणातः । तथा च सार्व-
विभक्तिकस्तसिति तार्किकाः शतशो व्यवहरन्ति ॥१५१॥ इत्याद्यादिः ॥

स्थूलश्चत्पत्रमूलाणुमापाश्चश्चित्रं गन्धहस्तेषुचूर्णाः ।

पानं वर्णो मूलमुद्गार्थपादांः पिष्टः शूलं पल्लवः सूत्रपत्रे ॥१८२॥

स्थूलादेरित्यनेन स्थूलादिभ्यः शब्देभ्यः प्रकारवत्यर्थे को भवति जाती-
यरोऽपवादः । स्थूलत्वविशेषयुक्तः पटः । स्थूलकः । तत्र स्थूलसदृशः स्थूलकः ।
स्थूलसामान्यस्य वायं भेदः स्थूलकः । चञ्चतीति चञ्चन् । चञ्चत्प्रकरः । चञ्चत्कः ।
चञ्चता गत्वरेण सदृशः । चञ्चत्कः । बृहता सदृशः बृहत्कः । मणिर्मण्डूकः
खद्योतो वा । खद्योतस्तावदुन्मेषनिसेषाभ्यां चञ्चन्निवेत्युपसीयते मण्डूकोऽपि ।
श्वासप्रबन्धेन गत्वरइति मुणिः स्पन्दमानप्रभत्वात्तथोत्प्रेक्षयते । तथात्पोऽपि

प्रविकाशिप्रभत्वान्महानिष य उपलक्ष्यते तत्र मणौ बृहत्कशब्दो लोके प्रयु-
ज्यते । तदाह ॥ चञ्चत्प्रकारश्चञ्चत्को बृहत्कइति चापरे ।

मणिमण्डूकखद्योतान्साद्रूपेण प्रचक्षते ॥

तत्रोन्मेषनिमेषाभ्यां खद्योत उपभोयते ।

श्वासप्रवन्धैर्मण्डूकः स्पन्दमानप्रभो मणिः ॥

प्रविकाशिप्रभोऽप्योऽपि महान्य उपलभ्यते ।

बृहत्क इति तत्रैव मणौ शब्दः प्रयुज्यते ॥

पत्रमूले प्रकारोऽस्य पत्रमूलकः ॥ अणुः प्रकारोऽस्य अणुकः । पटः ।

ह्रस्वणुकादिः पदार्थो गवाक्षाद्यन्तरप्रविष्टरविकिरणप्रकाशितो रेणुर्वैत्यन्यः

सुवर्णस्य षोडशांशो माषः । स प्रकारोऽस्य माषकम् । हिरण्यम् । भोजस्तु ।

अणोर्माषेषु । माषात्परिमाण इति सूत्रद्वये । अणुका माषाः । माषकः सुव-
र्णपरिमाणमित्याह । चञ्चतीति चञ्चः । चञ्चः प्रकारोऽस्य चञ्चकः । चित्रप्रकारः

चित्रकः । द्वीपी । गन्धप्रधानः । पाषाणो गन्धः । गन्धः प्रकारोऽस्य गन्धकः ।

हस्तप्रकारः । हस्तकः । पताकत्रिपताकादिनृत्ताभिनयविषयप्रसिद्धः । इषुप्र-

कारः—इषुकः । वृणविशेषः । इषुप्रकारोऽस्याः । इषुका । गोलिका । चूर्णप्र-

कारः चूर्णकः । तालीशादिस्तांबूलाङ्गं वा । पानप्रकारः पानकम् । द्राक्षाश-

र्करादिनिर्मापितम् । वर्णप्रकारः वर्णिका । गैरकादिः । परीक्षार्थं सुवर्णादि-

मात्रा वा । मूलप्रकारः मूलकः । शाकविशेषः । स्त्रीत्वविवक्षायां मूलिका ।

शङ्खपुष्पादिः । मुद्राप्रकारः मुद्रिका । अङ्गुल्याभरणम् । अर्धप्रकारः अर्धिका ।

पादप्रकारः पादिका । पिष्टप्रकारः पिष्टका । माषादिद्विदलधान्यचूर्णः ॥

शूलप्रकारः शूलिका । पल्लवप्रकारः पल्लविका । चणकादिपत्रं संस्कारयोग्यं

मक्ष्यम् । सूत्रप्रकारः सूत्रिका ॥ पत्रप्रकारः पत्रकम् । तमालपत्रमेव । लिखि-

तलधुमूर्जखण्डवाचि तु ह्रस्वात्पविवक्षायां कप्रत्यये सिद्धुर्न चिथासंभवं सर्वत्र

प्रकारे विवक्षिते शब्दशक्तिस्वाभाव्यात्स्त्रीत्वमेव ॥ १८२ ॥

हरितध्रुववाद्येक्षुमठमण्डपसंकलाः ।

वाद्यकालावदातास्तु सुरायामुदितास्त्रयः ॥ १८३ ॥

हरितप्रकारः हरितकम् । अश्वदीनां यवादिघासः । ध्रुवप्रकारः

ध्रुवकः । तिष्यादिगणनेऽविचलितोऽङ्गसङ्घातः । वाद्यप्रकारः वाद्यकः ।

अवदातात् सुरायां वाट्यकालाभ्यां सामान्येन कप्रत्ययइति यन्मतं तदपि स्वीकृतम् । इक्षुप्रकारः इक्षुकः (१) । मठप्रकारः मठिका । जानादेशगतानां द्रव्यरक्षास्थानम् । मण्डपप्रकारः मण्डपिका । शुल्कादायग्रहीतस्थानम् । संकलाप्रकारः संकलिका । वाटशब्देन विशिष्टं भाजनमुच्यते । तत्र साधुः । वाट्या । तत्प्रकारवती वाट्या सुरा भाजनपतिता वर्णोत्कर्षवती वाटिका(२) ॥ एवं कालिकावदातिकार्यो (३)ज्ञेयः ॥ १८३ ॥

तिलकालधान्यकालास्तिलमणिपुण्ड्रं बृहन्महच्चन्द्राः ।

एरण्डमधु कुमार्याः पुत्रश्वशुरौ च सञ्ज्ञायाम् ॥१८४॥

तिलकालयोः प्रकारः तिलकालकः(४) । धान्यप्रकारः—धान्यकम् । कालप्रकारः कालकः । तिलप्रकारः तिलकः । मणिप्रकारः मणिकः । मणिः प्रका-रोऽस्येति मणिकः । मणिरिव यो रत्नभूतः प्रधानं मनोज्ञश्च स मणिक इत्यन्ये । पुण्ड्रकः—इक्षुविशेषः । बृहत्कः । ग्राम्यसमाजे श्रेष्ठः । महत्कः । चन्द्रकः । एरण्डकः । इक्षुविशेषः । मधुकः(५) । कुमारीपुत्रकः । कुमारीश्वशुरकः । यथा-प्रतिवसति कुमारीपुत्रका वा कुमारी—श्वशुरकसदृशी वा ग्राम्यदेशे समृद्धिः । मणिकमधुकभासं पुण्ड्रकैरण्डकेक्षु, स्तवकितककुभस्तां तद्बुधोऽस्मै शशंसुः ॥

(१) इक्षुक एरण्ड इत्यधिकमेकत्र । (२) पादार्थमुदकं पाद्यं तत्प्रकारा पाद्यिका सुरा । यथा प्रियातिथेः सत्काराय पाद्यं प्रदीयते । तथा कदाचित् केनचित् सुरापि । ततः सा पाद्यसदृशी पाद्यिकाशब्देन व्यपदिश्यते । गण-रत्नमहीदधौ तु वाट्यकालावदातास्तु सुरायामुचितास्त्रय इति पठित्वा वाट-शब्देन विशिष्टं भाजनमुच्यते तत्र साधुर्वाट्यो द्रवद्रव्यविशेषः । तत्प्रकारा वाट्यिका सुरा भाजनपतिनी वर्णोत्कर्षवतीत्युक्तमिति संस्करणकर्त्रा ज्यू-लियसएग्जेलिडितिनान्ना साहवेन टिप्पण्याभिदमुक्तम् ॥

(३) कालः श्यामलः प्रकारोऽस्य इति कालिका । अवदातो धवलः । प्रकारोऽस्या इत्यवदातिका सुरैवेत्यधिकं क्वचित् ॥ (४) शंरीरे कृष्णविन्दुरूपं चिह्नम् ॥ (५) यत्तु एरण्डमधुकुमार्याः पुत्रः श्वशुरश्च संज्ञायामिति पठित्वा वर्द्धमानेनोक्तम् । एरण्डक इक्षुविशेषः । मधुकं नालिकेरासवम् । इति टिप्पण्यामुपलभ्यते ॥

कुमारीपुत्रः प्रकारोऽस्य कुमारीपुत्रकः । यथा कुमारीपुत्रः कश्चित्स-
भायां प्रविशंलज्जते तथान्योऽपि य एवंविधः स कुमारीपुत्रकः । कुमारी-
श्वशुरः प्रकारोऽस्य कुमारीश्वशुरकः । यस्य पुत्रः कुमार्या सह दृष्टः स
कुमारीश्वशुरः । यथा—पुत्रदोषेण स लज्जते तथान्योऽपि लज्जमानः कुमा-
रीश्वशुरकइत्यन्यो व्याचष्टे (१) ॥

संज्ञायामिति गणसूत्रम् । तस्यार्थः । स्वप्रकृत्यर्थस्य प्रवृत्तिनिमित्तमन-
पेक्ष्य यः शब्दः संज्ञारूपतयार्थान्तरे वर्तते तस्यानेन कप्रत्ययः । फलम् आम-
लकादि फलकं तु काष्ठादिमयम् । शूद्रशब्दो जातौ प्रसिद्धः । शूद्रको नाम वीरः ।
संतानः समानजातीयप्रवाहः । संतानकः सुरतरुः । कुब्जं वक्रं काष्ठादिवस्तु ।
कुब्जकस्तरुविशेषः । कुरवः कुत्सितो ध्वनिः । कुरवकस्तरुविशेषः (२) । कद-
म्बस्तरुः । कदम्बकं संघातः । भ्रमरः षट्पदः । भ्रमरकः क्रीडोपकरणम् ।
करभः क्रमेलकः । करभको धनुष्कोटिर्गृहैकदेशो वा कटकुड्यलक्षणः । नेत्रम्
अक्षि । नेत्रकं मन्थानाकर्षकम् । कणो माषादिधान्यव्यक्तिरूपः । कणको
लोहोपकरणम् । दण्डो यष्टिः । दण्डकश्छन्दो विशेषः कृशमार्गो वा । जम्बु-
स्तरुविशेषः । जम्बुकः शृगालः । स्त्रीत्वमपि केषांचित् । कुम्भी घटो
मानविशेषो वा । कुम्भिका स्तम्भाधानी । नौरन्या । नौकाऽक्षितारका । ये तु
कप्रत्ययमासाद्य स्वार्थत्यागेन जात्यन्तरे किञ्चिदाकारसाम्याद् यवाद्यास्तेषां
प्रतिच्छन्देऽनर्चादेरिति कप्रत्ययो न पुनरनेन यवको ब्रीहिः (३) । न यव
प्रकार एव जात्यन्तरत्वात् । एवमन्यत् । गोमूत्रम् । तद्वर्णमाच्छादनं गोमू-
त्रिका । अन्या सुरा । अन्यस्तद्वर्णः सुराकोऽहिः । प्रकारः सादृश्यमिति
बहुसंमतम् । सामान्यस्य भेदको विशेषः प्रकारइत्यन्येषामभिनिवेशः । यदाह—

सादृश्यमेव सर्वत्र प्रकारः कैश्चिदिष्यते ।

भेदेऽपि तु प्रकाराख्या कैश्चिदभ्युपगच्छते ॥

आकृतिगणोऽयम् ॥ १८४ ॥

इति स्थूलादिः ॥

(१) कुमारीश्वशुरकः । यस्य पुत्रः कुमार्या संगतः स यथा शिष्टसभां
प्रवेष्टुं लज्जते तथा धो लज्जमानः । स एवं व्यपदिश्यत इत्यधिकम् ।

(२) कुरवकः—ग्रहविशेषइत्यधिकम् । (३) यव (ब्रीहिषु) गोमूत्र
(आच्छादने) सुरा (अहौ) कृष्ण (तिलेषु) जीर्ण (शालिषु) [सुराप्रकारः
सुरावर्णोऽहिः सुराकः । गोमूत्रिका गोमूत्रवर्णा आटी] ।

अर्चासु पूजनार्थासु चित्रकर्मनटध्वजे ।

चञ्चाखरकुटीदासीवध्रिका नरि काश्यपः ॥१८५॥

प्रतिच्छन्देऽनर्चादेरित्यत्रार्चादेर्वर्जनात् को न भवति ॥ अर्चासु शिवा-

कारः । शिवः । अर्हन् । स्कन्दः । आदित्यः । चित्रकर्मणि । दुर्योधनः । भीमः । नटे रामः । ध्वजे-गरुडः । मनुष्येऽभिधेये । क्षेत्रे सस्वरक्षणार्थं तृण-मयः पुरुषश्चञ्चा । चञ्चैव चञ्चा मनुष्यः । खरकुटी नापितमुण्डनशाला । खरकुटीव खरकुटी । दासीव दासी । वध्रिका चर्ममयी वरत्रा । वध्रिकैव वध्रिका । मुखपवलिङ्गसङ्ख्ये इति वचनात् पुंलिङ्गेऽप्यर्थे स्त्रीलिङ्गतैव । काश्यपइव काश्यपः (१) ॥ १८५ ॥

देवराजाजशङ्कुभ्यः करिसिन्धुशतात् पथः ।

सिद्धोष्ट्राभ्यां गतिग्रीवे वामाद्रज्जुः स्थलात्पथः ॥१८६॥

देवानां पन्थाः देवपथः । स यादृशः सद्गुणोपेतस्तरुनिकरच्छायाकलितः समतलः सजलो निरुपद्रवश्च तादृशोऽन्योपि देवपथः । एवं राजपथः (२) । अजपथः । शङ्कुपथः (३) करिपथः । सिन्धुः समुद्रो नदी वा । तत्पन्थाइव सिन्धुपथः । शतं पन्थानो यत्र शतपथः । तत्तुल्यः शतपथः । सिद्धानां गतिः सिद्धगतिः । तत्तुल्यः सिद्धगतिः । उष्ट्रस्य ग्रीवा उष्ट्रग्रीवा । तत्तुल्य उष्ट्रग्रीवा । वामा कुटिला रज्जुः । वामरज्जुः । तत्तुल्यो वामरज्जुः (४) । स्थलरूपः पन्थाः स्थलपथः । तत्तुल्यः स्थलपथः । इह पठितानामप्यन्यैः शाब्दिकैर्हस्त-पुरूपमत्स्यशब्दानां(५) न युक्तः पाठः । तथाहि । हस्ताकारफाष्टलोहाद्युपकरणं

(१) अर्चासु पूजनार्थासु चित्रकर्मध्वजेषु च । इवे प्रतिकृतौ लोपः कनी देवपथादिष्विति काशिकायाम् । (२) राजपथसदृशस्य सद्गुणवहारादेः संज्ञा राजपथः ।

(३) शङ्कुसहितः संकटः पन्थाः शङ्कुपथस्तत्सदृशस्य दुराचारादेः सञ्ज्ञा शङ्कुपथः । रथपथः । हंसपथः । वारिपथः इत्यधिकम् ॥ (४) तत्सदृशस्य खलादेः सञ्ज्ञा वामरज्जुः ॥ (५) हस्तइव हस्तः । एवमिन्द्रः । पुष्पं पुष्पतुल्या अतिमा । दण्ड इव दण्डः । मत्स्यइव मत्स्यः । कुण्डसिद्ध्यादिग्रन्थेषु कुण्डनिर्माणक्रियायां मत्स्याकारा रेखाः प्रतन्ति ता मत्स्यपदेन व्यवहियन्ते ॥

हस्तकः। पुष्पको विमानं भाजनं वा पुष्पकम्। सत्स्याकारश्चर्मचीवरादिच्छेदो
सत्स्यकः। भोजीऽपि न हस्तदण्डपुष्पादिभ्य इत्यनेन कप्रत्ययस्थितिमाह।
आकृतिगणञ्चायम्। तेनेन्द्रप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ १८६ ॥ इत्यर्चादिः ॥

अन्येषां तु मते देवपथादिः ॥

यावाभिन्नतराविवत्समणयो लान्द्रप्रवालौ वट-

ज्ञाताज्ञातपटा घटो बहुतरः स्तम्बोऽथ पूलः पुटः।

पीतप्रष्ठकुटाश्च नित्यवयसी सत्वदशार्हाविमौ—

भिन्नुस्तब्धपिटास्थिपुण्यबधिरा दोलाभृतौ जानु च ॥ १८७ ॥

यावादेरित्यनेन यावादेः शब्दगणात्स्वार्थे कप्रत्ययो भवति वा। यवानां
विकारो यावः। यावएव यावकः ॥

गोमूत्रयावकाहारोदस्थिकोज्जानुकद्विजे।

त्नापतिः क्षीणिमाणिवये स वसिष्ठाश्रमेऽगमत् ॥

अलक्तक इत्यन्यः(१)। अतिशयेनाभिन्नम्। अभिन्नतरम्। अभिन्नतर-
मेव अभिन्नतरकम्। यथा—अभिन्नतरके नाकाट्टानकेभ्यः पराङ्मुखे।

ज्ञातके सर्वलोकानामज्ञातकविकर्मणि ॥ अविरेव। अविकः। यथा—

लूनकाविकलोमोत्थाङ्घ्र्यस्कान्कन्दुकान् करे।

कुषान् हृदि बंहन्तीभिः स कुमारीभिराकुले ॥

वत्सएव वत्सकः। मणिरिव मणिकः। लान्द्रमेव लान्द्रकम्। विरसं
जलम्। प्रवालमेव प्रवालकम्। विद्रुमः पल्लवश्च। वटमेव वटकम्। भक्ष्य-
विशेषः। ज्ञातएव ज्ञातकः। अज्ञातएव अज्ञातकः। पटएव पटकः।
घटएव घटकः। बहुतरएव बहुतरकः। अभिन्नतरबहुतरशब्दौ तरवन्तावुप-
लक्षणम्। तेन सुकरतरोपपन्नतरादयो द्रष्टव्याः। स्तम्बएव स्तम्बकः। शा-
ल्यादिकलापः(२)। पूलएव पूलकः तृणसंचालः। पुटएव पुटकः पत्रनि-
र्मितः। पीतएव पीतकः पटादिः।

(१) याव एव यावकः। स्तोकपक्षा यवा यावकशब्देन व्यवह्रियन्ते।

अलक्तकरसौ यावक इत्यन्य इत्यधिकम्।

(२) एषोदरादित्वादनुस्वारलोपे स्तम्बकोऽपि स एव ॥

वृते वियातकैणानुग्रहाणुकबुद्धिभिः । तनुकापीतकब्रह्मसूत्रैराजर्षिसूनुभिः ॥

• प्रष्टएव प्रष्टकः । कुटएव कुटकः घटः । नित्यमेव नित्यकम् । वय-
एव वयस्कः । प्रज्ञाद्यणि वायसश्च । सत्त्वानेव सत्त्वकः । दशार्हएव दशार्हकः ।
सात्वतो दाशार्हश्च । भिक्षुरेव भिक्षुकः । स्तब्धएव स्तब्धकः ।

शीतके वीष्णके वर्त्तौ समाधिः स्तब्धके रहः ।

महो बृहतिकाच्छिन्नैश्छन्नीपान्ते महर्षिभिः ॥

पिटो वंशदलादिमयं भाण्डम् । स एव पिटकः । अस्थयेव अस्थिकम् ।
पञ्चमधातुः । पुण्यमेव पुण्यकम् । बधिर एव बधिरकः । दौलैव दौलकः ।
भृतएव भृतकः कर्मकरः । जान्वेव जानुकम् ॥ १८७ ॥

दानस्नातौ कुत्सितवेदसमाप्योरणुर्मतो निपुणे ।

लूनवियातौ च पशौ शीतोष्णमृतावनौरसे पुत्रः ॥ १८८ ॥

अनौरसइति कृत्रिमइत्यर्थः । कुत्सितं दानम् दानकम् । दानमन्यत् ।
स्नातएव स्नातकः । वेदं व्रतानि वा समाप्य यो वर्त्तते सएवमुच्यते ।
यत्स्मृतिः—गुरवे तु वरं दत्त्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया ।

वेदं व्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव वा ॥

केचित् पुण्यस्नातवेदसमाप्ताविति पठन्ति । तत्तु न हृदयहारि ॥
अणुको निपुणः । अन्यत्र । अणुब्रीहिः । लूनकः पशुः । वियातकः पशुः ।
विहानात्पशावित्यन्यः । अन्यत्र लूनो यवः । वियातो वटुः । शीतकः ।
उष्णक ऋतुः । अन्यत्र शीतो वायुः । उष्णः स्पर्शः । कृत्रिमः पुत्रः पुत्रकः ।
पुत्र एवान्यः ॥ १८८ ॥

आच्छादने च वृहती शून्यं रिक्ते तनुश्च सूत्रे स्यात् ।

क्रीडनकं च कुमार्याः सञ्ज्ञाशब्दस्तथेयश्च ॥ १८९ ॥

बृहतिका । आच्छादनविशेषः । नित्यं कः । अन्यत्र वृहती । ओप-
धिश्छन्दश्च । शून्यकम् । रिक्तम् । अन्यत्र शुने हितम् शून्यम् । तनुसूत्रम्
तनुकम् । अन्यत्र तनुर्वत्सः । कन्दुकः । अमरकः । गिरिकः । शृङ्गकम् ।
देवदत्तकः (१) । गुणनमेव गुणनिका । यथा—

(१) क्रीडोपकरणवासकानि । यथा शालभञ्जयेव शालभञ्जिका इत्यधिकम् ।

हेतुः परिचयस्थैरे वक्तुर्गुणनिकैव सा ॥

तथेयश्चेति द्वैयसप्रत्ययान्तः शब्दः कप्रत्ययभाक् । श्रेयानेव श्रेयस्कः ।
जयायानेव जयायस्कः । भूयानेव भूयस्कः । श्रेयएव श्रेयस्कम् । भूयस्कम् ।
जयायस्कमित्यादि । आकृतिगणोऽयम् । तेन पिष्टातकादयो(१)द्रष्टव्याः ॥१८९॥
इति यावादिः ॥

शाखास्कन्दमुखाग्राणि शरणं चरणोरसि ।

जघनं शृङ्गमेवाभ्रद्रुशिरः स्कन्धमेव च ॥१९०॥

शाखाशर्करादिभ्यां याणावित्यनेन शाखादेः शर्करादेश्चेवार्थं याणी
भवतः । पुरुषस्कन्धस्य वृक्षस्कन्धस्य वा तिर्यक् प्रसृतमङ्गं शाखेत्युच्यते । यथा
शाखा पाश्र्वायता तथा कुलस्य यः पाश्र्वायतोऽङ्गभूतः स शाखेव शाख्यः ।
अन्ये तु शाखायास्तुल्यः शाख्यः । यथा—शाखा वृक्षस्य शोभाकरी तथा कुलस्य
शोभाकरः पुरुषः शाख्य इति तुल्यत्वमाहुः । स्कन्दः स्वामी । तत्तुल्यः स्क-
न्द्यः(२) । मुखमिव मुख्यः । यथा—मुखं हस्तपादादिभ्योऽवयवैभ्यः प्रथमम-
वलोक्यते तथाऽन्योऽप्येवमुच्यते । कश्चिन्मुख्यं नालिकेरमित्याह ॥ अग्रमिव
अग्रः । प्रधानभूतः । शीर्यते भयमस्मादिति शरणम् । आर्त्तत्राणम् । तत्तु-
ल्यः शरण्यः परित्राता । चरणाविव चरण्यः । यथा—चरणौ शरीरस्य प्रक-
र्षकौ तद्वत् कुलस्य प्रकर्षकएवमुच्यते । उर इव उरस्यः । यः कार्यपूषगतेषु
ससत्त्वं उरः प्रयच्छति स एवमुच्यते । जघनमिव निकृष्टी यः स जघन्यः ।
शृङ्गमिव यः सर्वस्याप्युपरिवर्त्ती स शृङ्ग्यः । मेघइव यः सन्तापापनेता स
मेघ्यः । अश्रमिव य आल्लादकः सोऽश्रयः । द्रुमिव द्रव्यम् अयं राजपुत्रः ।
यथा—द्रुमः फलपुष्पपङ्गवादिभिरर्थिनः कृतार्थयति स हि भवनमर्हतीति
भव्यो भवत्यात्मवानिति द्रव्यमुच्यते (३) । क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्य-
मिति । पुरुषार्थसाधकत्वाद्द्विगयादिकमपि द्रव्यम् ॥

(१) तेन पिष्टातकादयोऽप्यत्र द्रष्टव्या इति वर्द्धमानसूरिराह । पिष्टातः
सुगन्धिचूर्णं स एव पिष्टातकः ॥

(२) स्कन्द इव यः शत्रुशोषकः स स्कन्द्य इत्यधिकम् ॥

(३) कृतार्थयति तथा स इत्यर्थः । भवमर्हति भव्यः । यथा द्रुमः फल-
पुष्पपङ्गवादिभिः स्वाश्रितान् कृतार्थयति । एवमर्थिनः स्वसम्पदा कृतार्थय-
न्नात्मवान् पुरुषो द्रव्यमित्युच्यते इति प्रा० ॥

निर्द्रव्यो ह्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः ।

निस्तेजाः परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापत्यते ॥

शकटाङ्गजस्तु द्रुणस्तुल्यं द्रव्यं द्रुशब्दं नपुंसकमाह ॥ शिरद्वय शीर्षणयः । प्रधानभूतः । शिरसः शीर्षण्णादावित्यनेन शीर्षण्णादेशः । स्कन्धद्वय यो बलस्याश्रयः स स्कन्धः ॥ १९० ॥ इति शाखादिः ॥

शर्करा लोमगोपुच्छगोलोमानि कपालिका ।

नराची शतपत्रं च पुण्डरीककपाटिके ॥ १९१ ॥

शर्करेव शर्करं दधि मधुरत्वात् । शर्करी मृत्तिका कठिनत्वात् ॥ शर्कराशब्द इक्षुविकारे सिकतास्वपि वर्तते । लोमेव कोमलस्पर्शत्वात् । लौमनं वस्त्रम् । गोपुच्छमिव गौपुच्छो दण्डः । गोलोमेव गौलोमनम् । ब्रह्मादीनामित्यनेन नियमितत्वाद्न्त्याञादिलोपाभावः । भोजेन गौलौममित्युदाहृतम् । तत्तु न संगच्छते । न लोपस्य नियमेन व्यावर्त्तितत्वात् । कुत्सितम् अज्ञातं वा कपालम् कपालिका । कपालिकेव कापालिकं कंसादिपात्रम् । नरानञ्जति नराची । तत्तुल्यं नाराचम् । शतपत्रमिव शातपत्रम् । पुण्डरीकमिव पौण्डरीकम् । ह्रस्वः कपाटः कपाटिका । कपाटिकेव कापाटिकम् ॥ वामनः कपिष्टिकेत्याह ॥ कंवाष्टिकेति शकटाङ्गजः । आकृतिगणोऽयम् । तेन सिकतानकुलादयो ज्ञातव्याः ॥ १९१ ॥ इति शर्करादिः ॥

अङ्गुली रुरुहरी कपिवभ्रू कर्कमण्डरतरोमुनयश्च ।

शङ्कुली कुलिशलोहितगोणी-वल्गुमण्डलखला भरुजश्च १९२

अङ्गुल्यादेष्टणित्यनेनाङ्गुल्यादिगणादिष्वर्थे ठण् भवति । वामनस्य तु तदादेष्टणिति सूत्रम् । अङ्गुलिरिव दीर्घायते आङ्गुलिकः । आङ्गुलिकी । मणिशलाका । रुरुरिव रौरुकः । हरिरिव हारिकः । कपिरिव कापिकः । वभ्रुरिव वाभ्रुकः । कर्कद्वय कार्किको गौर्गवयो वा । कार्किकं यशः ॥ यथा समैव सिद्धराजवर्णने-

प्रत्युप्तमुक्ताफलपद्मरागप्रस्पर्धिभिस्तोपितविश्वलोकैः ।

यशोऽनुरागैस्तथ सिद्धनाथ चक्रे जगत्कार्किकलौहितीकम् ॥ ।

पक्षे कर्कलोहितशब्दयोष्ठीकणपि । कर्कलोहिताट्टीकण् वेति शकटाङ्गजमतं स्वीकृतम् । मण्डरद्वय मण्डरिकः । तरद्वय तारसिकः । मुनिरिव

हेतुः परिचयस्थैर्यै वक्तुर्गुणनिकैव सा ॥

तथेयश्चेति ईयस्प्रत्ययान्तः शब्दः कप्रत्ययभाक् । श्रेयानेव श्रेयस्कः ।

जयायानेव जयायस्कः । भूयानेव भूयस्कः । श्रेयएव श्रेयस्कम् । भूयस्कम् ।
जयायस्कमित्यादि । आकृतिगणोऽयम् । तेन पिष्टातकादयो(१)द्रष्टव्याः ॥१८९॥

इति यावादिः ॥

शाखास्कन्दमुखाग्राणि शरणं चरणोरसि ।

जघनं शृङ्गमेघाभ्रद्रुशिरः स्कन्धमेव च ॥१९०॥

शाखाशर्करादिभ्यां याणावित्यनेन शाखादेः शर्करादेश्चेवार्थे याणी
भवतः । पुरुषस्कन्धस्य वृक्षस्कन्धस्य वा तिर्यक् प्रसूतमङ्गं शाखेत्युच्यते । यथा
शाखा पार्श्वायता तथा कुलस्य यः पार्श्वायतोऽङ्गभूतः स शाखेव शाख्यः ।
अन्ये तु शाखायास्तुल्यः शाख्यः । यथा—शाखा वृक्षस्य शोभाकरी तथा कुलस्य
शोभाकरः पुरुषः शाख्य इति तुल्यत्वमाहुः । स्कन्दः स्वामी । तत्तुल्यः स्क-
न्द्यः(२) । मुखमिव मुख्यः । यथा—मुखं हस्तपादादिभ्योऽवयवेभ्यः प्रथमम-
वलोक्यते तथाऽन्योऽप्येवमुच्यते । कञ्चिन्मुख्यं नालिकेरमित्याह ॥ अग्रमिव
अग्रः । प्रधानभूतः । शीर्यते भयमस्मादिति शरणम् । आर्त्तत्राणम् । तत्तु-
ल्यः शरणयः परित्राता । चरणाविव चरणयः । यथा—चरणौ शरीरस्य प्रक-
र्षकौ तद्वत् कुलस्य प्रकर्षकएवमुच्यते । उर इव उरस्यः । यः कार्यपूषगतेषु
ससत्त्व उरः प्रयच्छति स एवमुच्यते । जघनमिव निकृष्टो यः स जघन्यः ।
शृङ्गमिव यः सर्वस्याप्युपरिवर्त्ती स शृङ्ग्यः । मेघइव यः सन्तापापनेता स
मेघ्यः । अश्रमिव य आच्छादकः सोऽश्रमः । द्रुरिव द्रव्यम् अयं राजपुत्रः ।
यथा—द्रुमः फलपुष्पपङ्गवादिभिरर्थिनः कृतार्थयति स हि भवनमर्हतीति
भव्यो भवत्यात्मवानिति द्रव्यमुच्यते (३) । क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्य-
मिति । पुरुषार्थसाधकत्वाद्विशयादिकमपि द्रव्यम् ॥

(१) तेन पिष्टातकादयोऽप्यत्र द्रष्टव्या इति वर्द्धमानसूरिराह । पिष्टातः
सुगन्धिचूर्णं न एव पिष्टातकः ॥

(२) स्कन्द इव यः शत्रुशोषकः स स्कन्द्य इत्यधिकम् ॥

(३) कृतार्थयति तथा स इत्यर्थः । भवमर्हति भव्यः । यथा द्रुमः फल-
पुष्पपङ्गवादिभिः स्वाश्रितान् कृतार्थयति । एवमर्थिनः स्वसम्पदा कृतार्थय-
न्नात्मवान् पुरुषो द्रव्यमित्युच्यत इति पा० ॥

निर्द्रव्यो ह्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः ।

निस्तेजाः परिभूयते परिभवान्निर्वैदसापत्स्यते ॥

शकटाङ्गजस्तु द्रुणस्तुल्यं द्रव्यं द्रुशब्दं नपुंसकमाह ॥ शिरइव शीर्षण्यः । प्रधानभूतः । शिरसः शीर्षन्तणादावित्यनेन शीर्षन्नादेशः । स्कन्धइव यो बलस्याश्रयः स स्कन्ध्यः ॥ १९० ॥ इति शाखादिः ॥

शर्करा लोमगोपुच्छगोलोमानि कपालिका ।

नराची शतपत्रं च पुण्डरीककपाटिके ॥१९१॥

शर्करेव शार्करं दधि मधुरत्वात् । शार्करी मृत्तिका कठिनत्वात् ॥ शर्कराशब्द इक्षुविकारे सिकतास्वपि वर्तते । लोमेव कोमलस्पर्शत्वात् । लौमनं वस्त्रम् । गोपुच्छमिव गौपुच्छो दण्डः । गोलोमेव गौलोमनम् । ब्रह्मादीनामित्यनेन नियमितत्वादन्याणादिलोपाभावः । भोजेन गौलौममित्युदाहृतम् । तत्तु न संगच्छते । न लोपस्य नियमेन व्यावर्तितत्वात् । कुत्सितम् अज्ञातं वा कपालम् कपालिका । कपालिकेव कापालिकं कंसादिपात्रम् । नरानञ्चति नराची । तत्तुल्यं नाराचम् । शतपत्रमिव शातपत्रम् । पुण्डरीकमिव पौण्डरीकम् । ह्रस्वः कपाटः कपाटिका । कपाटिकेव कापाटिकम् ॥ वामनः कपिष्टिकेत्याह ॥ कंवाष्टिकेति शकटाङ्गजः । आकृतिगणोऽयम् । तेन सिकतानकुलादयो ज्ञातव्याः ॥ १९१ ॥ इति शर्करादिः ॥

अङ्गुली रुरुहरी कपिवभ्रू कर्कमण्डरतरोमुनयश्च ।

शङ्कुली कुलिशलोहितगोणी—वल्गुमण्डलखला भरुजश्च १९२

अङ्गुल्यादेष्टणित्यनेनाङ्गुल्यादिगणादिवार्थं ठण् भवति । वामनस्य तु तदादेष्टगिति सूत्रम् । अङ्गुलिरिव दीर्घायते आङ्गुलिकः । आङ्गुलिकी । मणिशलाका । रुरुरिव रौरुकः । हरिरिव हारिकः । कपिरिव कापिकः । वभ्रुरिव वाभ्रुकः । कर्कइव कार्किको गौर्गवयो वा । कार्किकं यशः ॥ यथा समैव सिद्धराजवर्णने—

प्रत्युप्तमुक्ताफलपद्मारागप्रस्पर्धिभिस्तोषितविश्वलोकैः ।

यशोऽनुरागैस्तव सिद्धनाथ चक्रे जगत्कार्किकलौहितीकम् ॥ .

पक्षे कर्कलोहितशब्दयोष्ठीकणपि । कर्कलोहिताष्टीकण् वेति शकटाङ्गजमतं स्वीकृतम् । मण्डरइव माण्डरिकः । तरइव तारसिकः । मुनिरिव

मौनिकः । शङ्कुलीव शाङ्कुलिकः । कुलिशमिव कौलिशिकः । लौहितमिव लौहितिकः—स्फटिकः । स्वयमलोहित उपाश्रयवशात्तथावभासते । गोष्ठीव गौणिकः । बल्गुरिव बाल्गुकः । मण्डलमिव माण्डलिकः । खलइव खालिकः । भरुजइव भारुजिकः । विद्वान् ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन उदशिवद्भूरुमण्डवा-
दयोद्रष्टव्याः ॥ १८२ ॥ इत्यङ्गुल्यादिः ॥

विनयविशेषसमूहाः समयात्ययसम्प्रदानसङ्गतयः ।

व्यवहारसमुत्कर्षाकरमादनुगादिसङ्गामाः ॥१९३॥

विनयादेरित्यनेन विनयादेः शब्दगणादृष्णं भवति स्वार्थं । विनयएव
वैनयिकः । विशेष एव वैशेषिकः । समूहएव सामूहिकः । समयएव साम-
यिकः । एवम् आत्ययिकः । साम्प्रदानिकः । साङ्गतिकः । सङ्गतमेव साङ्ग-
तिकम् । साङ्गतिक आलापः । साङ्गतिकी व्यवस्थेति वामनः । व्यावहारिकः ।
सामुत्कर्षिकः । आकस्मिकः । आनुगादिकः । साङ्गामिकः ॥१९३॥

सपदातिसमाचाराः समायमुक्ताकथञ्चिदुपचाराः ।

निर्मितह्रस्वादेशो बुधैरुपायध्वनिः कथितः ॥१९४॥

पदातिरेव पादातिकः । समाचारएव सामाचारिकः । समायएव सा-
मायिकः । मुच्यते शुक्तिभिः मुक्ता । मुक्तैव मौक्तिकम् । कथञ्चिदेव काथञ्चि-
त्कम् । उपचारएव औपचारिकः । उपायएव औपयिकम् ॥

स वैनयिकयान्सामयिकस्यात्ययिकं त्यजन् ।

तमौपयिकवान्सेनां निवेश्य वहिराविशत् ॥१॥

स सामूहिकमुत्सृज्य मुनिसाङ्गतिकाय यान् ।

पिप्रिये पादयोः पृथ्व्याः पतिः प्रेम्णेव पीहितः ॥२॥

अनौपचारिकैः सामाचारिकव्यावहारिकैः—

यान्ति वैशेषिकैः सामुत्कर्षिकं सत्सु साधवः ॥३॥

काथञ्चित्केन कतिचित्सोऽनुमेने तु सञ्चरान् ।

नृवीरो वीरसेनादीन्मनोमुत्साम्प्रदानिकान् ॥४॥

अथाकस्मिकमाहानुगादिको याचिकस्य तम् ।

आकृतिगणोऽयम् । तेन त्रिवर्णप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥१८४॥

इति विनयादिः ॥

काकतालं च खल्वाटविल्वे चान्धकवर्त्तकम् ।

• अर्धाच्च जरतीशयेनात्कपोतो घुणतोऽक्षरम् ॥१९५॥

काकतालइत्येवं प्रकारेभ्यः शब्देभ्यः काकतालीयादय इत्यनेनेवार्थे छप्रत्ययो निपात्यते । काकश्च तालञ्च काकतालमिति द्वन्द्वे लक्षणया पततः काकस्य निपतता तालेन चित्रियमाणः संयोग उच्यते । तत्तुल्यः काकताली-
यः(१) । खल्वाटविल्वयोरिव खल्वाटविल्वीयः । यथा-खल्वाटः पर्यटन्नतर्कितं श्रीफलतरोरधस्तादागतो दैवशशाच्च विल्वसुपरि पतितं तद्दन्वोऽप्युभयवस्तु-
संयोग एवमुच्यते । अन्यकश्च वर्त्तका च अन्यकवर्त्तकम् । अन्यकस्य वर्त्तकाया उपर्यतर्कितः पादन्यास उच्यते । तत्तुल्यम् । अन्यकवर्त्तकीयम् । अर्धजरती-
शब्दोऽर्धजरतीकामने वर्त्तते । तदिव यत्तद् अर्धजरतीयं कार्यम् । यथा स्त्री न तरुणी श्लथस्तनत्वात् कृशकेशत्वान्न जरती वक्तुं शक्यते तद्दत्सिद्धासिद्धं प्रयोजनम् ॥ श्येनकपोतयोरिव श्येनकपोतीयो दुर्योगः । यथा-कपोतोऽत-
र्कितमागतेन श्येनेन गृहीतस्तथाकस्मिको यो दुर्योगः स एवमुच्यते । घुणो-
त्किरणात्कथञ्चिन्निष्पन्नमक्षरम् । घुणाक्षरम् । तदिव यद्कुशलेन दैवान्निष्प-
द्यते (२)तद्घुणाक्षरीयम् ॥ १९५ ॥

पुरुषः शरतो ज्ञेयो गोमयात्पायसं मतम् ।

कृपाणः स्यादजातश्च शर्करोन्मज्जनं तथा ॥१९६॥

शरश्च क्षिप्तः प्राकाराच्च पुरुष उस्थितः स तेन हतः । तत्तुल्यं शरपु-
रुषीयम् । गोमयपायसयोरिव गोमयपायसीयम् । यथाऽजया भूमिं खनन्त्या-
त्मवधाय कृपाणो दर्शितस्तत्तुल्यं वृत्तं केनचिदात्मविनाशाय कृतम् । अजा-

(१) काकतालीयम् । अजाकृपाणीयम् । अन्यकवर्त्तकीयम् । अतर्कितो पततं चित्रीकरणमुच्यते । तत्कथम् । काकस्यागननं यादृच्छिकं तालस्य पतनं च । तेन तालेन पतता काकस्य वधः कृतः । एवमेव देवदत्तस्य तत्रागमनं दस्यूनां घोपनिपातः । तैश्च तस्य वधः कृतः । तत्र यो देवदत्तस्य दस्यूनां च समागमः स काकतालसमागमसदृश इत्येक उपमार्थः । 'यश्च देवदत्तस्य वधः स काकतालवधसदृश इति द्वितीय उपमार्थः । तत्र प्रथमः समासार्थः । द्वि-
तीये प्रत्यय इत्यधिकम् ॥ (२) निष्पाद्यतइति पा० ।

कृपाणीयम् । शर्करा च क्षिप्त्वा पुस्तपस्य चीन्मज्जनं तत्तुल्यं शर्करोन्मज्जनीयम् ।
आकृतिगणश्चायम् । तेन तिन्दुकज्योतिषीयमित्यादयो द्रष्टव्याः ॥१९६॥ •

इति काकतालादिः ।

पश्वसुरभरतरक्षोबह्लीकवयःपिशाचवसुमरुतः ।

सत्वदुशीनरकर्षापणास्त्रिगर्ताशनिदशार्हाः ॥ १९७ ॥

पशुभ्योऽण् शस्त्रजीविसङ्घादित्यनेन पश्वर्दिर्गणादस्त्रिधां स्वार्थोऽण्
भवति ॥ पशोरपत्यं पार्श्वः शस्त्रजीविसङ्घः । पार्श्वी । पश्वः । आसुरः ।
आसुरी । असुराः । भारतः । भारतौ । भरताः । भोजस्तु भार्त्तः । भार्त्तौ ।
भर्त्ता इत्याह । यथा—पार्श्ववाशनबाह्लीकपिशाचासुरराक्षसान् ।

शिष्याः सभार्त्तत्रैगर्तान्सकार्षापणवायसान् ॥

राक्षसः । राक्षसौ । रक्षसः । रक्षांसीत्यन्यः । बाल्लीकः । बाल्लीकौ ।
बाल्लीकाः । बाल्लिक इत्यन्यः ॥ वायसः । वायसौ । वयसः । पैशाचः ।
पैशाचौ । पिशाचाः । एवं मारुतः । सात्वतः । औशीनरः ॥ कार्षापणः ।
त्रैगर्त्तः । आशनः । दशार्हाः ॥

अस्त्रियांमिति किम् । पशूः स्त्री । ऊडयुतोऽरज्ज्वादेश्चेत्यूङ् । रक्षाः ॥
शस्त्रजीविसंघादिति किम् । असुरः(१) ॥१९७॥ इति पश्वर्वादिः ॥

दामनिवैन्दवितुलभाः शान्त्रुंतपि सार्वसेनिकाकन्दि ।

सावित्रीपुत्रौडविमौञ्जायनकाकदन्तकयः ॥१९८॥

दामनिभ्यश्छ इत्यनेनैभ्य आयुधजीविसङ्घवाचिभ्यश्छी भवति । दाम-
नयः शस्त्रजीविसंघः । दामनीयः । दामनीयौ । दामनयः । वैन्दवीयः ।
वैन्दवीयौ । वैन्दवयः । तुलया भान्तीति तुलभाः । शस्त्रजीविसङ्घः । पृषोद-
रादिः तुलभीयः । शान्त्रुंतपीयः । सार्वसेनीयः । काकन्दीयः । काकन्दकिरिति
भोजः । सावित्रीपुत्रीयः । औडवीयः । औड्वायनीयः । काकदन्तकीयः ॥१९८॥

औलपिराच्युतदन्तिः शाकुन्तकिराविदन्तिरौदङ्किः ।

ज्ञेश्व वैजवापिर्विन्दुश्चात्राच्युतन्तिश्च ॥१९९॥

श्रौलपीयः । आच्युतदन्तीयः । शाकुन्तकीयः । आविदन्तीयः ।
 श्रौदङ्कीयः । श्रौदकिरित्यन्यः । वैजवापीयः । बिन्दवः शस्त्रजीविसंघः ।
 बिन्दवीयः । बिन्दवीयौ । बिन्दवः । अच्युतोऽन्तो यस्यासौ । अच्युतन्तः ।
 पृषोदरादित्वात्पररूपे । आच्युतन्तीयः । मौञ्जायनशब्दो नडादिफणन्तः ।
 तुलभबिन्दुशब्दावप्रत्ययान्तौ । शेषास्त्वजन्ताः ॥१९९॥

ब्राह्मगुप्तस्त्रिगर्तेषु कौण्डोपरथजानकी ।

दाण्डकिर्जालमानिश्च षष्ठः स्यात्कौष्टुकिस्तथा ॥२००॥

ब्राह्मगुप्तीयः । ब्रह्मगुप्त इति वाननः । कौण्डोपरथीयः । कुण्डोऽतीक्ष्ण
 उपरथः समीपवर्ती रथो यस्य स कुण्डोपरथः । तस्यापत्यं शिवाद्यणि ।
 कौण्डोपरथ इति शाकटायनः । जानकीयः । दाण्डकीयः । जालमानीयः ।
 कौष्टुकीयः । एषां प्रथमद्वितीयौ शिवाद्यणन्तौ । अन्ये त्विजन्ताः । त्रिगर्ते-
 ष्विति किम् । कौण्डोपरथयः । कौण्डोपरथ्यौ ॥२००॥ इति दामन्यादिः ॥

कम्बोजोजवनश्रौलो मुरलः केरलः शकः ।

खसो जर्तो व्युपापेभ्यो धारयश्च मतो बुधैः(१) ॥२०१॥

कम्बोजादेः प्रलुगित्यनेन कम्बोजादेर्गणाद्राष्ट्राख्यात् क्षत्रियवाचिनस्त-
 स्यापत्यं राजा वेत्यर्थं जातस्याजादेः प्रलुग्भवति ॥ कम्बोजस्यापत्यं राजा वा ।
 कम्बोजः । एवं जवनः । चोलः । मुरलः । केरलः । शकः । खसः । जर्तः ।
 चोलशकखसजर्तानां द्वयवां पुरुद्वयज्जगधेत्यादिना, कृतस्याणः प्रलुक् शबेभ्य-
 स्त्वजः ॥ चोलकेरलनाथं तमापतन्तं विलोक्य सः ।

शकं मशकवन्मेने कम्बोजमगवन्नृपः ॥

भयोल्लुष्टविभूषाणां तेन केरलयोषिताम् ।

अलकेषु चसूरेणुश्चूर्णप्रतिनिधीकृतः ॥

विधारयः । उपधारयः । आधारयः । अपधारयः ॥२०१॥ इति कम्बोजादिः ॥

(१) कम्बोजश्चोलयवनौ मुरलः केरलः शकः । खसो जर्तो व्युपापेभ्यो
 राधयश्च मतो बुधैरिति कम्बोजादिसङ्ग्रहपद्यं गणरत्नमहोदधी पद्यतइति
 टिप्पण्यमुपलभ्यते ।

भर्गः करूपसुस्थालकश्मीराः केकयोरसौ ।

त्रिगर्तशाल्वकौरव्या भरतोशीनरौ क्वचित् ॥२०२॥

अतोऽप्राच्यभर्गादेरित्यनेन प्राच्यभर्गादिवर्जिताद्राष्ट्राख्याद्राजवाधिनः
स्त्रियामतः श्लुग् भवति ॥ शूरसेनस्यापत्यं शूरसेनानां वा राज्ञी शूरसेनी ।
उशीनरी ॥ भर्गादिभ्यः । भार्गी । कारूपी । करूशद्वत्यन्यः । सौस्थाली ।
सुस्थल इति भोजः । कश्मलमीरयत्यपनयतीति कश्मीरः । ततोऽञ् । का-
श्मीरी यथा—काश्मीरीकुचकुम्भविभ्रनकरः शीतांशुरभ्युद्गतः ॥

केकयस्यापत्यं केकयानां वा राज्ञी । मित्रयुप्रलयकेकयस्यैय् यादेस्त्विति ।
आरैजियादेरिति च । कैकेयी ॥

तं कर्णमूलमागत्य रामे श्रीर्न्यस्यतामिति ।

कैकेयी शङ्खयेवाह पलितच्छद्मना जरा ॥

उरसस्यापत्यम् श्रीरसी । उरसद्वत्यन्यः । त्रिगर्तस्यापत्यं त्रिगर्तानां वा
राज्ञी त्रैगर्ती ॥ शाल्वस्यापत्यं शाल्वानां वा राज्ञी । द्वृत्त्वाद्गणि नेज्प्रत्यये
शाल्वाद्दि स उच्यते । शाल्वी । कौरवी । कौरव्यशब्दः क्षत्रियसमानवचनो-
ऽस्ति तस्मादञ् क्वचिदिति शाकटायनेन भरतोशीनरशब्दावुत्सादिषु पठ्येते ।
तयोरिहोपादानात्सत्यप्यणपवादे चेत्यस्मिन्नुत्साद्यञं बाधित्वाजेव भवतीति
ज्ञाप्यते । तेन भरतानां राजानो भरताः । उशीनराणाम् उशीनरा इति
राज्ञि श्लुक् सिद्धा । उत्साद्यञि त्वर्गोत्रत्वान्न स्यात् । स्त्रीणां राज्येऽनधि-
काराद्राजनि प्रत्ययो न भवतीति भोजः ॥ २०२ ॥ इति भर्गादिः ॥

बाहुः स्यात्खरनादिपुष्करसदौ प्राकारमर्द्यर्जुनौ—

जङ्घाशृङ्खलतोदिबिन्दुशिरसः संकर्षणोदशिवतौ ।

चूडारामसुधामलोमवृकलाजीगर्तकृष्णानडुद्—

विज्ञेयाश्च वचाकुसुमजलडाः साम्बोप्रवाकूपणी ॥२०३॥

अद्वाह्यादेरितिजित्यनेन बाहुशब्दप्रभृतिभ्यस्तस्यापत्यमित्यर्थं इज् भव-
ति ॥ बाधते परवलमिति बाहुर्नाम कश्चिदाद्यपुरुषः । तस्यापत्यं बाह्विः ।
खरवन्नदतीति खरनादी । तस्यापत्यं खरनादिर्नृपः । पौष्करसादिर्मुनिः ।
प्राकारं मर्दयतीति प्राकारमर्दी । तस्यापत्यं प्राकारमर्दिर्नृपः । अर्जुनस्य
आर्जुनिः । जङ्घायाः जाङ्घिर्नृपः । शृङ्खलानि तुहति मोचयतीति शृङ्खलतोदी

नृपः । तस्य शाङ्खलतीदिः । शृङ्खलनोदीति भोजः । विन्दोः । वैन्दविर्त्त-
 षिः० । शिरसशब्दस्तदन्तः केवलस्यापत्यप्रत्ययासंभवात् । हस्तिशिरसोऽपत्यं
 हास्तिशीर्षिः । यथा—कादम्बर्याम् । श्रूयते हि पुरा किल स्थूलशिरा नाम
 महातपा मुनिरखिलत्रिभुवनललामभूतामप्सरसं रम्भाभिधानां शशाप ।
 तस्यापत्यं स्थूलशीर्षिः । सङ्कर्षणस्य सांकर्षणिर्नृपः । सङ्कर्षणस्यादन्तत्वादिजि
 सिद्धे पाठः । शिवाद्यृषिवृष्णिर्कुर्वन्मकादिति विशेषवचसा प्राप्तस्याणो बाध-
 नार्थः । एवमदन्तेषु सर्वेष्वपि द्रष्टव्यम् । उदश्वितः । औदश्वितिर्त्तृषिः ।
 चूडेव चूडा काचित् । तस्याञ्चौडिर्मुनिः । रामस्य रामिः । सुधास्नः । सौधा-
 मिर्मुनिः । लोमन्शब्दस्तदन्तः । औडुनोमिः । शारलोमिः । वृकलायाः
 वार्कलिः । अजीगर्तस्य आजीगर्तिः । एत ऋषयः । कृष्णस्य कार्ष्णिः । यथा—
 कार्ष्णिः प्रत्यग्रहीदेकः सरस्वानिव निम्नगाः ॥

अनडुहः आनडुहिर्त्तृषिः । वचाकोः वाचाकविः । सप्तानाम् साप्तिः ।
 जलडायाः जालडिः । सहाम्बया वर्त्तते साम्बः तस्यापत्यं साम्बिः । उप-
 वाकोः । औपवाकविः । पणिनः पाणिनिः । एत ऋषयः ॥ २०३ ॥

दुर्मित्रानुरहत्सुनामकुकलोदङ्कासुरा मूषिका—

पञ्चोदञ्चुकुनामसत्यकगदाः स्युः क्षेमधृत्वी सखा ।

प्रद्युम्नध्रुवकानिवाकुलहकासंसेविमध्यंदिना—

वल्मीकस्तृणविन्दुशूरधुवकाउद्दालकाष्टारुणाः ॥ २०४ ॥

दुर्मित्रायाः दौर्मित्रिः । अनुरहतः आनुराहतिः । सुनामः सौनामिः ।
 सुदामन्तित्यन्यः । कृकलायाः कार्कलिः । उदङ्कस्य औदङ्किः । असुरस्य आसु-
 रिः । मूषिकेव मूषिका । तस्या सौषिकिः । एतऋषयः । पञ्चानाम् पाञ्चिः ।
 उदञ्चोऽपत्यम् औदञ्चिः । गणपाठान्नलोपाभावः । अर्घा वात्र गम्यते । अपर
 उदञ्चिन्ति धातुमात्रं निर्दिशन्ति । तन्मते प्रातिपदिकाद्वातुरूपात्प्रत्ययः ।
 यथा । उदीचोऽपत्यम् औदीचिः । केचिद् उदञ्चित्यत्रोकारमुच्चारणार्थं न
 सन्त्यन्ते तन्मते । औदञ्चविः । कुनामः कौनामिर्नृपः । सत्यकस्य सत्यकि-
 र्नृपः । गदस्य गादिर्नृपः । क्षेमधृत्विनः । क्षेमधृत्विः । सख्युः । साखिः ।
 प्रद्युम्नस्य प्राद्युम्निः । ध्रुवकायाः ध्रौवकिः । निवाकोः । नैवाकविः ।

लहकायाः लाहकिः । लगहेत्यन्यः । एतच्छपयः । संसेविनः । सांसेविकर्त्तपिः ।
मध्यंदिनस्यर्षेः माध्यंदिनिः । बल्मीकस्यर्षेः बाल्मीकिः । यथा—

इति राज्ञा स्वयं पृष्टौ ती बाल्मीकिमशंसताम् ।

तृणविन्दोन्मुनेः । तार्णविन्दविः । शूरस्य यदुविशेषस्य शौरिः । ध्रुव-
कायाः धौवकिर्त्तपः । उद्दालकस्यर्षेः औद्दालकिः । अष्टानाम् आष्टिः ॥
अरुणस्यर्षेः आरुणिः ॥ २०४ ॥

शर्मा देवाग्निमद्रेन्द्राद् उपविन्दुसुधावतौ ।

अजधेनुर्बलाका स्यादुपबाहुयुधिष्ठिरौ ॥२०५॥

दैवशर्मिः । आग्निशर्मिः । माद्रशर्मिः । ऐन्द्रशर्मिः । औपविन्दविः ।
सौधावतिः । स्वधावदित्यन्यः । आजधेनविः । शकटाङ्गजस्त्वजादिभ्यो धेनो-
र्ब्राह्मणाद्वेति सूत्रद्वयमाह । बालाकिः । औपबाह्विः । एत ऋषयः ।
यौधिष्ठिरिः ॥ २०५ ॥

उत्तानपादकश्यपविदाः सुमित्राय नगरतो मदीं ।

माषशराविच्छ्रमलावटाकुभगलाशिवाकवो गलडा ॥२०६॥

उत्तानपादस्यर्षेः औत्तानपादिः । ध्रुवः ।

औत्तानपाद भद्रं ते तपसा परितोपितः ।

इत्यपि दृश्यते । कश्यपस्यर्षेः काश्यपिः । गरुडाग्रजः काश्यप इत्यन्ये ।
विदस्यर्षेः वैदिः । शोभनानि मित्राणि यस्याः सुमित्रा । तस्याः सौमित्रिः ।
लक्ष्मणः । यथा— सौमित्रिणा तदनुसंस्तुजसे मुहूर्त्तम् ॥

नगरमर्दिनः । नागरमर्दिर्त्तपः । माषशराविणऋषेः । माषशराविः ।
खगलायाः—खगलिर्त्तपिः । बटाकोर्त्तपेः । बाटाकविः । बाटाकुरित्यन्ये ।
भगलाया अपत्यम् भागलिर्त्तपिः । शिवाकोर्त्तपेः शिवाकविः । गलडायाः
गालाडिः ॥२०६॥

उत्वे पाडिः पषो भूयः संभूयोऽम्भोऽमितौजसाम् ।

सलोपउदकस्योदः कृताकारः शलङ्कु च ॥२०७॥

पलाम् पाडिः । भूयसः सम्भूयसोऽम्भसोऽमितौजस उदकस्य शलङ्कोश्च
ऋषेः । भीयिः । साम्भूयिः । आम्भिः । आम्भौजिः । औदिः । शालङ्किः ।

भूयःशब्दो भोजमतेन । केचिदत्रोदरभूयस्सम्भूयभिति सामान्येन पठन्ति ।
तन्मुते । औदकिः । भौयसिः । साभूयसिरिति भवति । अत्र गोत्रादिभूता
अगोत्रादिभूताश्च प्रत्येतव्याः साधारण्येनोपादानात् ॥ आकृतिगणोऽप्यम् ।
तेन नृनामन्अभिन्नाप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥२०७॥ इति बाह्वादिः ॥

व्यासः सुधातृवरुटौ निषादचण्डालविम्बयुक्तौ च ।

व्यासादीनामकञ्चेत्यनेन व्यासादेः शब्दगणादिञ् भवति । तत्सन्नि-
योगेचाकञादेशः । व्यासस्यापत्यम् वैयासकिः । एवं सौधातकिः । वारुट-
किः । नैषादकिः । चाण्डालकिः । वैम्बकिः । व्याससुधानोरणोऽपवादः ।
कारुलक्षणस्येञ्च कथ्येयः । शेषाणामिजस्त्येव । केचिदत्र व्याघ्रकर्मारग्निशर्म-
णोऽपि पठन्ति । वैयाघ्रकिः । कार्मारकिः । आग्निशर्मकिः । यथा—

यद्वन्न वैयासकिवैम्बकी वा सौधातकिं चेह परिस्पृशन्ति ।

चाण्डालकिर्वारुटकिश्च नैषादकिश्च तद्ददुरितानि ना वः ॥ इति व्यासादिः ।

कुरुशूर्पणायवृहतीकाराः कारो वडभ्याश्च ॥२०८॥

कुर्वादिभ्य इत्यनेन कुर्वादेः शब्दगणाङ्श्यप्रत्ययो भवति । कुरोर्ब्राह्म-
णस्यापत्यम् । कौरव्यः । यथा—

कौरव्याः पशवः प्रियापरिभवक्लेशोपशान्तिः फलम् ॥

तिकादित्वात् किञ्चपि । कौरवायणिः । उत्सादेश्चाजित्यञ् पुनराभ्यां
वाधितोऽपत्ये न भवति । कौरव्यशब्दस्य क्षत्रियवचनस्य तिकादिपाठात् ।
कौरव्यायणिः । शौर्येणाय्यो मुनिः । वार्हतीकार्य्यः । वाडभीकार्य्यः ॥२०८॥

ज्ञेया वाग्रथकारगर्गरमुराः कैशोरिचप्पट्टकौ,

सत्यंकारचफट्टकौ च हृदिकः कापिञ्जलादिः कविः ।

दामोष्णीपिङ्गुर्द्रवृत्तविमतिश्यापुत्रहन्त्रेरकास् ,

तक्षाशुभ्रशकन्धुशङ्कुपितृमञ्छाकीनपिएडीपुराः ॥२०९॥

वाचः । वाच्यः । रथकारस्य राथकार्य्यः । त्रैवर्णिकेभ्यः किञ्चिन्न्यूना
रथकारजातिः । तद्वचनोऽयं गृह्यते । यस्तु कारवाची तस्मादिजपि । गर्गरस्य
गार्ग्य्यः । मुरस्य राज्ञः सौर्य्यः । किशोरस्यापत्यं कैशोरिः । तस्यापत्यं युवा
कैशोर्य्यः । भोजस्तु किशोरस्य कैशोर्यो राजेत्याह । चप्पट्टकस्यैः । चाप्पट्टकः ।

सत्यंकारस्य सात्यंकारः । षफटृकस्य नृपस्य षाफटृक्यः । हार्दिष्यः । मुञ्च
 हार्दिष्य शङ्खाम् । षृष्णालक्षणेऽणि । कापिञ्जलादेरपत्यं गुर्वायत्तम् कापिञ्ज-
 लाद्यः । वेदकटृषिः । काव्यः शुक्रः । दामोष्णीपेरपत्यं युवा दामोष्णीष्यो
 मुनिः । कुटस्य कौटयः । आर्द्रवृक्षस्य आर्द्रवृक्ष्यो मुनिः । विमतेः वैमत्यः ।
 सतिरित्यन्यः । सतिमदित्यप्यन्वः । श्यापुत्र्यः । श्यावपुत्र इति भोजः । हन्तुः ।
 हान्त्र्यः । हन्त्रिय इति वामनः । हनस्तिप्रत्यये हन्तिरित्यन्यः । ऐरकायाः ।
 ऐरक्यः । ऐहकेत्यन्यः । तक्षणः । ताक्षय्यः । पाठसामर्थ्यात्कारुलक्षणमिजं
 वाधते शिवादिपाठाच्च । ताक्षणः । शुभ्रस्य शौभ्रो राजा । शुभ्रादित्वाङ्गणपि
 समानविषयत्वात् । शकन्धोः शाकन्धव्यः । शाकम्भूरित्यन्यः । शाङ्ख्यः ।
 बहुषु शाङ्ख्याः । शाङ्ख्या स्त्री । गर्गादिपाठात्पौत्रादौ यञ् । शाङ्ख्यः ।
 बहुषु श्लुक् । शङ्खः । स्त्रियां शाङ्ख्यायनी । पितृमतः पैतृमत्यः । पितृम-
 न्त्वरित्यन्यः । तन्मते पैतृमन्तव्यः । शाकिनः शाक्यः । इनस्य ऐन्यः । पिण्डराः ।
 पैण्डरः । पुरस्य पौर्य्यः ॥ २०९ ॥

शाकः शलाकागणकारदध्राः, पीलाभ्रवैवाकविभर्तृमूढाः ।

शालीनकर्त्रेज्जनितीन्तवृक्षाऽजमारकश्यावरथाश्च वेनः ॥ २१० ॥

शाकं शाकमिति य आह स शाकः । तस्य शाक्यः । शलाकाया शा-
 लाक्यः । गणकारस्य गणकार्य्यः । गणकारिरित्यन्यः । दाम्नो नृपः । दर्भ-
 इति वामनः । पीलायाः । पैल्यः । आभ्रः । विवाकीरपत्यं वैवाक्यिः ।
 तस्यापत्यं युवा वैवाक्यः । वैवाभविरित्यन्यः । भार्य्यः । मौढ्यः । शा-
 लीन्यः । कार्य्यः । ऐज्यः । नैतान्तवृक्ष्यः । आजमारक्यः । अजमार इत्यन्यः ।
 श्यावरथ्यः । वैन्यः । एते राजानः । वामनाद्यस्तु छन्दसि वैन्यो भाषायां तु
 वैनिरित्याहुः ॥ २१० ॥

वानुजिः कर्णकारश्च केशिनीपथिकः स्त्रियौ ।

श्याप्रथो वान्तवृक्षश्च श्यावनायश्च मङ्गुषः ॥ २११ ॥

वनोर्जातः वानुजः । तस्यापत्यं वानुजिः । तस्यापत्यं युवा । वानु-
 ज्यः । घातकिरिति भोजः । कर्णकार्य्यः । कर्णकारिरित्यन्यः । राजा ।
 केशिन्याः । केशिन्यः । छन्तपाठसामर्थ्यादेव स्त्रीत्वानिवृत्तिः । स्त्रीत्वनिवृत्तौ
 हि नोऽनहो व्ये शित्पणादावित्यनेन न लोपः स्यात् । पाथिकार्य्यः । पथिकार

इति भोजः। श्याप्रथ्यः। श्यावप्रथ इति कश्चित् । वान्तवृक्ष्यः। श्यावनाट्यः ।
 माङ्गुष्यो राजा । सङ्गुष इत्यन्यः । कविविसतिपीलाशलाकैरकाकेशिनीप्रभृ-
 तीनां ढशि प्राप्ते । हृदिकाहृद्विण्णलक्षणेऽणि । अन्येषां त्विजि प्राप्ते श्यविधिः ॥
 आकृतिगणोऽयम् । तेन । अविमारकपडाकैन्द्रजालिकूटप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥२११॥
 इति कुर्वादिः ॥

शिवाः प्रोष्ठश्चण्डो जटिलकवतण्डौ बधिरकः,
 पिटाकस्तृक्षकः पिटकपरिलौ प्रौष्टिकमुनी ।
 ककुत्स्थः खञ्जारस्तृणमसुरकर्णौ जलहृदो,
 विरूपाक्षः पिष्टः कहयवडवाभूमिककुभाः ॥२१२॥

शिवाद्यृषिवृष्णिकुर्वन्वकादित्यनेनापत्यसान्नेऽण् भवति । शिवस्यापत्यम्
 शैवः । एवं प्रौष्टः। चाण्डः । जाटिलकः । जटिलिकेति भोजः । वातण्डः ।
 बाधिरकः । बधिरिकेति भोजः । पैटाकः । तार्क्षकः । पैटकः । पारिलः ।
 प्रौष्टिकः । सौनः । ककुदि तिष्ठति ककुत्स्थः । तस्य काकुत्स्थः । खाञ्जारः ।
 खञ्जेर इति भोजः । तार्णः । नडादिपाठात् तार्णायनः । मासुरकर्णः । जल-
 हृदइव जलहृदः । तस्य जालहृदः । संस्कृते द्विर्वचनाभावे संयोगपरोऽपि न
 गुरुः । यथा—स्पृष्टं त्वजेत्यपह्नियः खलु कीर्तयन्ति ॥

वैरूपाक्षः । पैष्टः । काहयः । कहूयइत्यन्यः । वडवेव वडवा । तस्या
 वाडवः । विदिद्युते वाडवजातवेदसः । भौसः । मङ्गलः । काकुभः ॥ २१२ ॥

गङ्गाक्रुञ्चाकौकिलायस्कलह्या, द्रुह्यः पर्णः कर्णमञ्जीरकौ च ।
 रेखस्तक्षा वर्त्तनाक्षःकहोडः, सन्धिर्लेखोभूरिजम्भोर्णनाभाः २१३

गाङ्गः । शुभ्रादिपु, तिकादिषु च पाठात् । गाङ्गेयः । गाङ्गायनिः । क्रौञ्चः ।
 कौकिलः । यथा—स कौकिलश्यामवनेन कूजत्क्रौञ्चेन सिप्रोपतटेन गच्छन् ॥

यास्कः । लाक्ष्यः । द्रौक्ष्यः । पर्णः । कार्णः । नाञ्जीरकः । मजिरक-
 इत्यन्यः । रेखः । ताक्षणाः । कुर्वादित्वात् ताक्षरयः । वर्त्तनाक्षः । अन्यस्तु
 वर्त्तनश्चासौ ऋक्षश्च (१) वर्त्तनर्क्षइत्याह । काहोडः । सान्यः । लैसः । भौरः ।
 जाम्भः । जस्वइत्यन्ये । श्रीर्णनाभः ॥ २१३ ॥

दण्डो रोधः कोहितेलासपत्न्य आर्यश्वेतापर्षिकागोपिकाः स्यूः ।
खञ्जालश्चालेखनोब्रह्मगुप्तश्चायःस्यूणःस्यान्नभागोविपाट् च २१४

दाण्डः । रोधः । कौहितः । ऐलः । सापत्नः । आर्यश्वेतः । पार्षिकः ।
गौपिकः । खञ्जालः । आलेखनः । खुलेखन इति भोजः । ब्राह्मगुप्तः । वाम-
नस्तु नास्य पाठमङ्गीकुरुते । आयःस्यूणः । नाभागः । नाभाक इत्यन्यः ।
वैपाशः । कुञ्जादिपाठाद् वैपाशादन्यः ॥ २१४ ॥

भलन्दनानभिम्लानतृणकर्णकलापिनः ।

जरत्कारुः सुपिष्टश्च कुठारश्चखदूरकः ॥ २१५ ॥

भलन्दनः । भलन्द इत्यन्यः । फलन्दन इति भोजः (१) । आनभिम्लानः ।
तार्णकर्णः । कालापः । जारत्कारवः । जरत्कारुशब्दादतएव ज्ञापकात् स्त्रि-
यासूड् । यस्तु सुनिवचनस्तत्पत्नीवचनश्च जरत्कारुशब्दस्तस्मादौत्सर्गिकोऽण् ।
सौपिष्टः । कौठारः । कुषानियर्त्ति कुषारइत्यन्यः । खादूरकः ॥२१५॥

विश्रवणरवणवृज्जनकुपिञ्जलपृथोत्क्षिपापुरोहितिकाः ।

कुरुपाण्डुहस्तिपादा वृष्णिकखजूरकणौ च ॥२१६॥

वैश्रवणः । रावणः ॥ रावणावग्रहक्लान्तमिति वागमृतेन सः ॥

विश्रवसोऽपत्यं वाक्ष्यमेव । विश्रवणरवणाभ्यां तु नित्यं वृत्तिविषयाभ्यां
प्रत्ययः । अन्ये तु यश्च विश्रवसो विश्लोपश्च वेत्यनेन सूत्रेण वैश्रवणरवण-
शब्दौ साधयन्ति ॥ खञ्जनः । कौपिञ्जलः । पार्थः ॥

पार्थाननं वह्निकणावदाता दौमिः स्फुरत्पद्मनिवामिपेदे ॥ श्रीत्क्षिपः ।

पौरोहितिकः । रोहितिकेति भोजः । कौरवंः । कुर्वादिपाठाद्भयः । कौरव्यः ।
क्षत्रियवचनात्तु कुरुकोसलेत्यादिना शयः । तस्य बहुपु श्लुक् कुरवः । पाण्डवः ।
पाण्डवा यस्य दासाः । शुभ्रादिपाठात् पाण्डवेयः । अत्र कुरवो जनपदस्तस्य
राजा पाण्डुः । यस्तु राष्ट्रायस्ततः पाण्डोर्द्वयि । पाण्डव्यः । बहुपु श्लुक् ।
पाण्डवः । तस्यमेव रघोः पाण्डव्याः प्रतापं न विषेद्विरे ।

इति तु चिन्त्यम् । हस्तिपादस्य हास्तिपदः । अतएव गणपाठात्पा-
दस्याणि । पद्मावः ।

कौपिञ्जलः पिञ्जलवाजिनां तं तं हस्तिना हास्तिपदः प्रपेदे ।

० स ब्राह्मणुगो भुजवीर्यगुप्तं रथेन कौण्डोपरथोऽन्वयासीत् ॥

वृष्णिव वृष्णिकः । तस्य वार्ष्णिः । खार्जूरकर्णः ॥

खार्जूरकर्णेन धृतातपत्रो मायूरकर्णोद्धृतचामरौघः ।

सापत्नयुग्मानुगतोऽध्ययोध्यं स रावणारातिरिषावभासे ॥ २१६ ॥

उरलः कहूषकोहडहेहयगोपालिकाश्च(१) गोफिलकः ।

परिषककुण्डोपरथौ त्रिवेणीदेशे सति त्रिवेणी च ॥२१७॥

औरलः । काहूषः । कौहडः (२) ।

तमन्वयुः खाञ्जनमाञ्जरीकसौपिष्टसौलेखनतार्णपार्णाः ।

काहोडजालहृदवार्त्तनाक्षक्षैरहृदप्रौष्ठिकतार्णकर्णाः ॥ हैहयः । गौपालिकः ॥

काहूषपैष्टौरलयास्कलाह्यद्रौह्यानभिज्ञानकभौरसौनाः ।

तार्क्ष्यकगौपालिकगौपिकार्य-श्वेतादयस्तं परितः प्रसस्युः ॥

गौफिलकः । पारिषकः । कौण्डोपरथः । त्रिवेणी नदी तस्याः । त्रैवणः २१७

उत्कारुक्षीरहृदौ सुरोहिकाकपिलिकर्षिष्ठेयाः स्युः ।

औत्कारुषः । उत्कारुशब्दस्यातएव पाठाहूङ् भवति । क्षैरहृदः । सुष्ठु रोहति सुरोहिका । तस्याः सौरोहिकः । कापिलिकः । आर्षिष्ठेयः । सेनान्त-शयबाधनार्थोऽस्य पाठः । केषांचिद् अतइजि प्रभे केषाञ्चिद् द्वयच इतो ढणि प्राप्ते च पाठः ॥ एते शिवाद्योऽण्प्रत्ययान्ता ऋषिवाचकाः काकुत्स्थादयस्तु राजवाचकाः प्रतीता एव । क्रौञ्चादीनां त्वर्थो व्याख्यात एव । आकृतिगणो-ऽयम् । तेन सिलिन्दप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ इति शिवादिः ॥

शुभ्रशलाकाशुकविशदेवतरा गन्धपिङ्गलाशकुनी ॥२१८॥

द्वयचशुभ्राम्यश्चे ढणित्यनेन शुभ्रादेर्गण्डुण् भवति । शुभ्रस्यापत्यम् शौ-भ्रैयः । शालाकेयः । शौकेयः । वैशेयः । दैवतरेयः । गान्धपिङ्गलेयः । नदी-नास्न्यसि । शाकुनेयः ॥२१८॥

कर्षो विष्टपुरः शकन्धिविधवाशालूकगोधात्रिका-

लेखाभ्रूविकसाजवस्तिशकलाशोकाश्ववीजाश्मनः ।

(१) कहोडहेहय० इतिपा० । (२) कहोडस्य काहोडइति पा० ।

गङ्गापाण्डवभारताजिरदिशः शुक्रोग्रविश्रैतरा—

ऽणीवालीढसुदन्तभाणशतलाः कर्पूरकद्रू तुदः ॥२१९॥

कार्पेयः । वैष्टपुरेयः । विष्टपर(१) इत्यन्यः । शाकन्धेयः । वैधवेयः । क्षुद्राभ्यो वा णेर इति पक्षे णेरप्रत्ययबाधनार्थः । शालूकेयः । गौधेयः । गोधाया द्रुगपि । गौधेरः । आरगुदीचामित्यारगपि । गौधारः । अर्थव्यवस्था तु लोका-
तः । तेन योऽहिना गोधायां जन्यते सः गौधेरो गौधारश्च भवति । वामनस्तु
द्वयमपि न मन्यते कारणं न विद्वः । आम्बिकेयः । मानुषीनाम्न्यणि । लैला-
भ्रेयः । वैकसेयः । चतुष्पाज्जातिवाचिनी कृकासेति भोजः । किमपि कसतीति
किकसेत्यन्यः । मानुषीनाम्न्यणि । आजवस्तेयः । गृह्यादिपाठाङ्गपि ।
शकलस्य शाकलेयः । आशोकेयः । मानुषीनाम्न्यणि । आश्वेयः । वैजेयः ।
वीजाश्व इत्यन्यः(२) । आश्वेयः । अश्वदिपाठाद्-आश्वनायनः । गाङ्गेयः ।
पाण्डवेयः । भोजस्तु पाण्डुशब्दाङ्गुकि । अकद्रुपाण्डुर्द उलोप इत्युकारलोपा-
भावं मन्यते । अत्र वामनमतानुसारेण पाण्डवशब्दः पठितः । भरतस्यापत्यम् ।
उत्साद्यजि । भारतः । तस्यापत्यं युवा । भारतेयः । भरत इति भोजः । आ-
जिरैयः । दैशेयः । शौक्रेयः । औश्रेयः । वैप्रेयः । इतरस्य इतराया वा ।
ऐतरेयः । आशीवेयः । आशीविरित्यपरः । आशीदेयः । सौदन्तेयः । भाशेयः ।
शातलेयः । शवल इत्यप्यन्यः । कार्पूरेयः । कद्रुर्नाम दिव्या गौः । तस्याः
काद्रवेयः । यस्तु सङ्घायाभूदन्तः कद्रुशब्दस्तस्य ढण् अस्त्वेव । तौदेयः ॥२१९॥
कुबेरिकान्यतरविमार्तृबन्धकी कुमारिकाः परिधिमृकण्डुविश्रयः ।
किशोरिकाजरतिखदूररोहिणी कुठारिकारत्वतिथिसुदक्षवादनाः ॥
कौबेरिकेयः । मानुषीनाम्न्यणि । आन्यतरैयः । विरुद्धाया मातुः
वैमात्रेयः । असौदर्यो भ्राता । बान्धकेयः । बान्धकिर्नैयइत्यपि (३) । क्षुद्राभ्यो
वा णेर इति णेरप्रत्यये—कौमारिकेयः । मानुषीनाम्न्यणि । पारिधेयः ।
मार्कण्डेयः । सृकण्डुरित्यपि वामनः । कथं मार्कण्डः । मृकण्डइति प्रकृत्य-
न्तरम् । तेन ऋष्यण्भविष्यति । वैश्रेयः । गृह्यादिपाठाङ्गपि । कौशोरिकेयः ।

(१) विष्टपुर इति पा० । (२) विजाश्वस्य वीजाश्वेय इत्यन्य इति पा० ॥

(३) बन्धकी स्वैरिणी तस्या अपत्यं बान्धकिनेय इति पा० ।

मानुषीनाम्न्यणि । जरतिनः । जारतेयः(१) । खादुरेयः । रौहिणेयः । रोहिणी
मानुषी गौरपि । कौटारिकेयः । मानुषीनाम्न्यणि । आतिथेयः । सौदक्षेयः ।
वादनेयः ॥ २२० ॥

बलीवर्दिशतहारशलाकाभ्रशलाथलाः(२) ।

अकशायो(३)ऽनुदृष्टिश्च ककलासप्रवाहणौ ॥२२१॥

बालीवर्देयः । शातद्वारेयः । शालाकाभ्रेयः । शालाथलेयः(४) । आक-
शायेयः(५)अनुदृष्टेयः । कार्कलासेयः । एष चतुष्पाज्जातिः । प्रावाहर्णेयः ॥२२१॥

जीवभारमरुद्धिमण्यो वायुदत्तसुवक्षसौ ।

मृदुमृदौ सुदामा च वासिष्ठे श्यामलक्ष्मणौ ॥२२२॥

जैवेयः । भरमस्यापत्यं भारमः । तदपत्यं युवा । भारमेयः । भरमइति
भोजः । रुक्मो वर्णः । सोऽस्या अस्तीति रुक्मिणी । तस्या रौक्मिणेयः ।
मानुषीनाम्न्यणि । वायुदत्तेयः । सौवक्षसेयः । मार्देयः । उर्ह इत्यनेनोलोपे ।
मार्देयः । सौदामेयः । श्यामेयः । लात्मणेयः । वासिष्ठश्चेत् । अन्यत्र श्यामा-
यनः । अश्वादिपाठात् । श्यामिरिति वासनः । लात्मणिः ॥ २२२

गोदन्तकुशाम्बानिधिमकष्टुजिह्वाशिनः खडोन्मत्ताः ।

श्वब्रह्मकृतशताहरयमष्टवष्टिकसुनामंधर्मिण्यः ॥२२३॥

गौदन्तेयः । कौशाम्बेयः । आनिधेयः । माकृष्टेयः । जैह्वाशिनेयः (६)
दाण्डिनायनेत्यादिनाऽन्त्याजादिलुगभावः । खाडोन्मत्तेयः । एषा नदी खर
इवोन्मत्ता खरोन्मत्तेत्यभयनन्दी । शौवेयः । ब्राह्मकृतेयः । शताहरेयः । याम-
ष्टेयः । मघष्टुरित्यन्युः । टैकेयः । सुनामः । सौनामेयः । वाह्वादित्वात् ।
सौनामिः । धार्मिणेयः । मानुषीनाम्न्यणि ॥ २२३ ॥

कुषीतकविकर्णौ च काञ्चपे परिकीर्तितौ ।

(१) जरतिर्जरठा तस्या जारतेयः इति पा० । (२) शलाप्यना इति पा० ।
(३) अकशापो इति पा० । (४) शालाप्यलेय इति पा० । (५) आकशापेय
इति पा० । (६) जैह्वासिनेय इति पा० ।

कौपीतकैयः । वैकर्णैयः । काश्यपश्चेत् ॥ अन्यत्र कौपीतकिः ।
वैकर्णिकः । एते प्रायेणर्विधाचकाः । बहूनाभिजि प्राप्ते केषांचिदणि ढञि च
प्राप्ते पाठः । आकृतिगणोऽयम् । तेन कुदन्तानुदन्तशतकृतप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥

इति शुभ्रादिः ॥

कल्याणी सुभगा मध्या ज्येष्ठानुदृष्टिवन्धकी ॥ २२४ ॥

कल्याणयादेर्दिन् चेत्यनेनैतस्मादपत्ये ढण् तद्योगे डिनादेशश्च । कल्याणया
अपत्यम् कल्याणिनेयः । सौभागिनेयः । माध्यिनेयः । ज्यैष्ठिनेयः ॥

कृते कानिष्ठिनेयस्य ज्यैष्ठिनेयं विवासितम् ।

को नग्नमुषितप्रख्यं बहु मन्येत राघवम् ॥

भरतस्य राममित्यर्थः । आनुदृष्टिनेयः । वान्यकिनेयः ॥ २२४ ॥

मध्यमा च परस्त्री च प्रोक्तानुदृष्टिदुर्भगे ।

वलीवर्दी कनिष्ठा च जारस्त्री जरती तथा ॥ २२५ ॥

माध्यमिनेयः । परस्य स्त्री परस्त्री । तस्याः पारस्त्रैण्यः । यथा—
पारस्त्रैण्यपुत्रव्ययशिथिलशुचं शक्रमाराधयाव ॥

यदा तु परा चासौ स्त्री च । परस्त्री । तस्याः कर्मधारये परस्त्रियः
परशुश्चेत्यनेन पारशव इति भवति । अन्ये तूभयथापि पारस्त्रैण्य इति
मन्यन्ते । आनुदृष्टिनेयः । दौर्भागिनेयः ॥

कृते सौभागिनेयस्य भरतस्य विवासितौ ।

पित्रा दौर्भागिनेयौ यौ पश्यतं चैष्टितं तयोः ॥

वलीवर्द्याः बालीवर्दिनेयः । कानिष्ठिनेयः । जारस्त्रैण्यः । जारतिनेयः ।
कल्याणयादीनां शुभ्राद्यन्तत्वाद्गुणि सिद्धे डिन्र्थ वचनं शेषयोरुभयार्थम् ॥ २२५ ॥
इति कल्याणयादिः ॥

गृष्टिर्दृष्टिस्तथा विश्रिर्वालिकुद्री च मित्रयुः ।

हल्यायुक्तोऽजबस्तिश्च गृष्ट्यादौ विदुषां मतः ॥ २२६ ॥

गृष्ट्यादेर्दृजित्यनेनास्माद्गुञ् । गृष्टेरपत्यं गार्ष्ट्यः । अस्य चतुष्पात्त्वा-
द्गुञ् सिद्धे लक्षणाया मनुष्यादिवृत्तेर्ग्रहणम् । हार्ष्ट्यः । वीत्रेयः । घालेयः ।

कौटूः यः । मित्रयुप्रलयकेकयस्येय् यादेरित्यनेनारैचि यादेर्यच् । मैत्रेयः । हलेः ।
हालेयः । आजवस्तेयः ॥

विश्रयजवस्तिभ्यां शुभ्रादित्वाहुणपि । गार्ष्ट्यस्यापत्यं पूज्यमित्यादिविष-
क्षायामतइजिति विहितस्येजो जिण्णपार्थेभ्योऽणिजोरिति जित्वाहुजः परस्ये-
जः श्लुग् भवति । तेन गार्ष्ट्यः पिता । गार्ष्ट्यः पुत्र इत्यादिः । ढणः परस्य
त्विजः श्रुतिरेव । शौभ्रेयः पिता । शौभ्रेयिः पुत्रः ॥२२६॥ इति गृष्ट्यादिः ॥

रेवती कुक्कुटाक्षश्च ग्राहः कर्णवृकादिकः ।

मणिहारश्वतः पाली स्याद् वृकाद्वन्धुवञ्चिनौ ॥२२७॥

रेवत्यादेष्टणित्यनेनास्मादृण् रेवत्या अपत्यम् रैवतिकः । कौक्कुटाक्षिकः ।
ढजिजोरपवादः । ग्राहः कर्णवृकादिकइति कर्णवृकावादी यस्य स कर्णवृका-
दिकः । कार्णग्राहिकः । वार्कग्राहिकः । दाण्डग्राहिकइत्यन्ये । माणिपालि-
कः । दौवारपालिकः । आश्वपालिकः । ढणोऽपवादः । वार्कबन्धुकः । वार्क-
वञ्चिकः । ऋष्यणि प्राप्ते ॥ २२७॥ इति रेवत्यादिः ॥

वाकिनः काकलङ्के च गाधेरश्चर्मिर्वर्मिणी ।

तथा कृतनलोपे स्तः कार्कट्यश्च निगद्यते ॥२२८॥

वाकिनादेरित्यनेनास्मात् फिज् भवति वा । कग् यथा प्राप्तं च । वा-
किनस्यापत्यम् वाकिनकायनिः । वाकिनिः । काककायनिः । काकिः । लाङ्का-
कायनिः । लाङ्केयः । लाङ्कायनिर्लाङ्किरिति भोजः (१) । गाधेरकायणिः ।
गाधेरिः । गारेटइति भोजः । चर्मिणश्चर्मिण्या वा चार्मिकायणिः । चार्मिणः ।
वार्मिकायणिः । वार्मिणः । पक्षे चार्मैः । वार्मै इति भोजः । कार्कट्यकायनिः ।
कार्कट्यः ॥२२८॥ इति वाकिनादिः ॥

तिको यमुन्दौरससैन्धवोरसाः, संज्ञा शिखा देवरथोऽथ शल्यका ।
शुभःसुयामाकुरुशीतलोमका, गङ्गावरेण्यः कितवश्चतैतलः २२९

तिकादेरित्यनेनैतस्मात् फिज् भवति । तिकस्यापत्यम्—तैकायनिः ।
यामुन्दायनिः । उरसस्य क्षत्रियस्यापत्यम्—औरसः । तस्य औरसायनिः । सैन्य-

(१) लाङ्का-लाङ्काकायनिः । लाङ्कशब्दं केचिदिच्छन्ति तन्मते लाङ्काय-
निरिति पा० ।

वायनिः । औरसायनिः । उर इति भोजः । सांज्ञायनिः । शैखायनिः ।
 देवरथायनिः । देवरइत्यन्यः । शाल्यकायनिः । शौभायनिः । शुभेत्यन्यः ।
 सुयाम्नः । सौयाम्नायनिः । कौरवायणिः । श्रैतायनिः । भैतायनिरित्यपि ॥
 लौमकायनिः । गाङ्गायनिः । क्षत्रियवृत्तिर्गङ्ग इत्यन्ये । वारसयायनिः । कैत-
 वायनिः । तितलस्यापत्यं तैतलः । तस्य-तैतलायनिः ॥२२९॥

ग्राम्यामित्रोदन्यकौरव्यरूप्या, बालानीलौ बह्यकाखल्वके च ।
 शाव्योयज्ञश्वन्द्रमालङ्कवश्च, दक्षश्चोखारूक्षगोकक्ष्यवन्धाः ॥

ग्राम्यायणिः । आमित्रायणिः । औदन्यायनिः । कौरव्यस्य क्षत्रियस्य ।
 कौरव्यायणिः । ब्राह्मणवाचिनस्त्विजेव तल्लुचि च । कौरव्यः पुत्रः । रौप्या-
 यणिः । बालायनिः । बालइति भोजः । बालशिखइत्यन्यः । नैलायनिः ।
 बाह्यकायनिः । खाखकायनिः । खल्वेत्यन्यः । शटस्यापत्यं शाटरः । वस्य
 शाट्रायनिः । याज्ञायनिः । चान्द्रमसायनिः । लाङ्कवायनिः । लाङ्कटम्-अण-
 न्तमित्यन्यः । दाक्षायणिः । औखायनिः । रौक्षायणिः । गौकक्ष्यायणिः ।
 बन्धायाः । वान्धायनिः । बिम्बइत्यन्यः ॥ २३० ॥

ध्वजवदुत्थयारथ्याः सुपामधैवरवसूरसारट्वाः ।

भौरिकिभौलिकिजाजलचैटयताश्वापि सैकयतः ॥२३१॥

ध्वाजवतायनिः । ध्वाजवत इत्यन्यः । औतथ्यायनिः । आरथ्यायनिः ।
 सुपाम्नः । सौपाम्नायनिः । धैवरायणिः । वासवायनिः । औरसायनिः । आर-
 ट्वायनिः । भूरिकस्यापत्यं भौरिकिः । तस्य भौरिकायणिः । भौलिकायनिः(१) ।
 जाजलिनोऽपत्यं जाजलः । तदपत्यं जाजलायनिः । चैटयतायनिः । सैकय-
 तायनिः ॥ अदन्तानामिजि हलन्तानामणि यजि जन्तानां फणि । आदन्तानां
 ढणि च प्राप्ते वचनम् । एते प्रायेणर्षिवाचकाः । आकृतिगणोऽयम् । तेन
 क्षेजयतघोपयतशैलालप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥२३१॥ इति तिकादिः ॥

नडश्वरो वको मुञ्ज उपको लमको नरः ।

हासमित्रैतिकप्राणा द्वीपकिङ्करकातराः ॥ २३२ ॥

(१) भूलिकस्यापत्यं भौलिकिस्तस्य भौलिकायनिरित्यधिकम् ।

नडाङ्हरितादीञ् यजन्तात् फणित्यनेन नडादेर्गणात्पौत्रादावपत्ये
फण्भवति । नडस्यापत्यं पौत्रादिः नाडायनः । चारायणः । वाकायनः ।
सौज्जायनः । औपकायनः । लामकायनः । नारायणः । दासायनः । मैत्रायणः ।
दासा मित्रायणस्य—दासमित्रः । तस्य दासमित्रायण इत्यन्यः(१) । ऐतिकायनः ।
प्राणायनः । उपचारात् द्वीपस्थो मुनिर्द्वीपः । तस्य द्वीपायनः । द्वीपे जातो
भवो वा । तदपत्यतया विवक्षित इत्येके । द्वीपेत्येवंनासा स्त्रीत्यन्ये । कैङ्करा-
यणः । कातरायणः २३२ ॥

चटकस्वरपशोणा लङ्कसङ्कृत्यनाट्या मिमतसुमतदुर्ग-
ब्रह्मदत्ताजलोहः । तृणबदरकुमारस्तम्बचित्रायकाश्या—
श्रमसिंशकटदण्डिन्निन्धजालन्धराश्च ॥ २३३ ॥

चाटकायनः । चटकेत्यन्यः । खारपायणः । शौणायनः । लाङ्कायनः ।
साङ्कृत्यायनः । सुकृत्य इति भोजः । नटस्यापत्यं नाट्यः । तस्य नाट्यायनः ।
मैमतायनः । मित इत्यन्ये । सौमतायनः । दौर्गायणः । ब्राह्मदत्तायनः । आजा-
यनः । लौहायनः । अलोह इत्यन्यः(२) । तार्णायनः । वादरायणः । कौसारा-
यणः । स्ताम्बायनः । चैत्रायणः । आग्रायणः । काश्यायनः(३) । चमसिनः ।
चामसायनः । शकटमित्र भारक्षसः तस्य शाकटायनः । दण्डिनः । दाण्डिना-
यनः । इन्धस्य ऐन्धायनः । जालन्धरायणः । जनन्धर इति भोजः । जलन्धर
इत्यन्यः ॥२३३॥

कामुकोदुम्बरौ सायकः किङ्कलस्यभ्रमको बालिशः
पिङ्गरः पिङ्गलः । हंसकः कातलः काथलः काश्यपो
दण्डपाश्राध्वराः शिंशपाहस्तिनौ ॥ २३४ ॥

कामुकायनः । कामक इत्यन्यः(४) । औदुम्बरायणः । राष्ट्राख्यराजवृत्तौ
त्वौदुम्बरिरिति स्यात् । सायकायनः । कैकलायनः । त्यास्मैकायनः । बालिशा-
यनः । पैङ्गरायणः । पैङ्गलायनः । हांसकायनः । कातलायनः । काथलायनः ।

(१) दासायनः । मैत्रायणः । दासा मित्राणि यस्य स दासमित्रस्तस्य गोत्रा-
पत्यं दासमित्रायण इति पा० । (२) अलोहशब्दं केचित्पठन्ति । तन्मते आलो-
हायनः इति पा० । (३) काश्यायनः इति पा० । (४) कामकायन इत्यधिकम् ।

काश्यपायनः । दाण्डपायनः । दण्डम इत्यन्यः(१) । आश्रायणः । आध्वरायणः ।
शांशपायनः(२) । हास्तिनायनः ॥ कीर्त्तितैषा चतूरेफिका स्रग्विणीति वृत्तम् २३४

लिगुर्युगन्धरामित्रौ ब्राह्मणस्थिरकाश्वलाः ।

अग्निशर्मेशामुष्यपञ्चालाः सप्तलस्तिकः ॥२३५॥

लैगवायनः । यौगन्धरायणः । आमित्रायणः । ब्राह्मणायनः । स्थैरका-
यणः । आश्वलायनः । आग्निशर्मायणः । अग्निशर्मण् वृषगण इति वामनः(३) ।
ऐतिशायनः(४) । आमुष्यायणः । गणपाठात् षष्ठ्यलुक् । पञ्चालो ब्राह्मणगोत्र-
वाची । तस्य पाञ्चालायनः । क्षत्रियवाचिनस्तु पाञ्चालः । साम्पलायनः । सत्वल
इत्यन्यः । तैकायनः ॥ २३५ ॥

ऋग्जनवृषगणकाव्याः कैकरसुमनःशाणाश्च वाजव्यः ।

क्रौष्टालङ्कू लोपे ब्राह्मणवाशिष्ठयोश्च कृष्णरणौ ॥२३६॥

आर्गायणः(५) । ऋगिन्ध इत्यन्यः । ऋगइत्यपरे । जानायनः । आर्षगणायनः ।
काव्यायनः । कैकरायणः । सौमनसायनः । शाणायनः । वाजव्यायनः । क्रौष्ट-
शलङ्कू लोप इत्यन्त्यवर्णस्येति शेषः । क्रौष्टायनः । शालङ्कायनः । काष्णायनो
ब्राह्मणः । कार्ष्णिर्न्यः । राणायनो वाशिष्ठः । राणिरन्यः । अस्योदाहरणानि-
नाहायनित्रीहजडेहनाभूश्चारायणस्फारयचारुचक्षुः ।

विलोक्यथाकायनिमुञ्जकुञ्जान्मौञ्जायनीमालवराजमेति ॥ १ ॥

किमेतिशायन्यसि(६) नीरसात्वंसख्यैतिकायन्यतिकौतुकं मे ।

(१) दण्डं पातीति दण्डपस्तस्य दाण्डपायनः । दण्डमशब्दं केचित्पठ-
न्तीति पा० । (२) शैशपायन इति पा० । (३) वृषगणे ऋषिगणे वर्त्तमानो-
ऽग्निशर्मण्शब्दो नडादौ बोध्यः । अग्निशर्मण ऋषेर्गोत्रापत्यम् आग्निश-
र्मायण इति वृत्तिमतम् । गणरत्नमहोदधौ तु वृषगणशब्दे नडादिरिति स्थितं
नदनुरोधाद्वृषगण इति प्रथमान्तं बोध्यमिति टिप्पण्यम् ॥ (४) ऐतिशायन-
इति पा० । (५) ऋग्वेदाध्यापकः कश्चिदाचार्योऽप्युपचारादृक् तस्य गोत्रा-
पत्यम् । आर्गायनः । आर्गायण इति तु वर्द्धमानः । तत्र पदसङ्ज्ञा सृया
इति टिप्पण्यम् । (६) दिङ्नात्रमुदाह्रियते । नाहायनो त्रीह जडां म्यपर्वा
चारायणीं चित्रकयां व्रवीति । किमेतिशायन्यसि नीरसा त्वं सख्यैतिकायन्यति
कौतुकं मे इति पा० ।

लघ्वौपकायन्युपयामलासकायन्ययंलोकललामभूपः ॥ २ ॥

स्त्राक्तामलायन्युपसर्पशालङ्कायन्यलङ्कालविलम्बनेन ।

प्रतीक्षतेत्वांपथिलैगवायन्येह्याग्निशर्मायणिशर्मणेनः ॥ ३ ॥

उत्तिष्ठकाश्यायनिकाश्यायन्यागच्छकाव्यायनिकोविलम्बः ।

बलाश्वलायन्यनुकातलायन्याःकातरायण्यतिकातरासि ॥ ४ ॥

वीक्षस्वतैकायनिशंसकोऽयंशाणायनिक्कामुधवाणशाणः ।

प्राणायनिप्राणसमस्त्रिलोक्यास्त्रिलोकनारायणभूमिपालः ॥ ५ ॥

सैत्रायणाग्रायणाद्वाद्रायणाश्रायणाजायनजामयोवः ।

ध्रुवेऽकरोद्भ्रुवनेयदीशःकर्त्तातदद्वायमिहावनीशः ॥ ६ ॥

दास्यस्मिदासायनकिंकरेवत्वांकैङ्करायण्यभिराधयिष्ये ।

स्यांकैङ्कलायन्यनुयायिनीतेमार्चयनीवव्रजमांविहाय ॥ ७ ॥

जालन्धरामित्रपराश्वदृष्टेर्वाजव्यपाञ्चालपराश्वभूपः ।

सौकन्यकौमारपराश्वभूयादायन्यएषोऽद्यरसायनंवः ॥ ८ ॥

द्वैपायनीतोभवसायकायन्युपेहिदौर्गायणिदेहिमार्गम् ।

स्वरस्वचैत्रायणिचाटकायन्यौदुम्बरायण्ययमेतिभोजः ॥ ९ ॥

क्षशाकटायन्यटसिस्तनाभ्यांजर्णोपितार्णायनिकिंदूशीनः ।

लौहायनीमाह्वयशत्रुघान्निस्ताम्बायनिस्थास्यतितन्नितम्बः ॥ १० ॥

एकार्षिंकार्ष्णायनिराणिरायनादयोविमनृपर्वयस्तान् ।

माब्राह्मणायन्यवहेलयेहामुष्यायणेराजनिचिन्दमाने ॥ ११ ॥

किंब्राह्मदत्तायनिजोषमास्सेकिंसैमतायन्यमितंब्रवीषि ।

किंसौमतायन्यलमुन्मनास्त्वंकिंस्यैरकायण्यनवस्थितासि ॥ १२ ॥

दृशाकिमाचामतिचामसायन्यध्येतिकिंवार्षगणायनीत्यम् ।

किमाध्वरायण्यनुबध्यबुद्धानकामुकायन्यवबुध्यतेऽस्मान् ॥ १३ ॥

साहांसकायन्यनुधावहंसान्माशांशपायन्युपशिशपेस्याः ।

मापैङ्गरायण्यनुपैङ्गलायन्युपैहिदृष्टोचृपतिर्ब्रजामः ॥ १४ ॥

क्रौष्टायनिग्राघनोऽयमध्वाशोणेनशौणायनितेऽहिक्रीणः ।

यौनंधरायण्यपथेनमागाःकिंवालिशायन्यसिवालिशेव ॥ १५ ॥

साहास्तिनायन्यपहस्तयास्मान्मादासिदनायन्यतिपण्डिताभूः ।

सादाखडपायन्यवमुञ्जधैर्यंधिक्खारपायण्यतिनिस्त्रपासि ॥ १६ ॥

आकृतिगणोऽयम् । तेनच्छागप्रभृतयो ज्ञेयाः ॥२३६॥ इति नडादिः ॥

हरितगविष्टिरमठराः किंदासो मित्रंयुः सृदाकुश्च ।

वह्यस्कप्रतिबोधौ निषादशबरौ पृदाकुश्च ॥२३७॥

अजन्ताद्वरितादेः फण् । अज् विदादिपाठात् । अतवभयमपि दृश्यते ॥
हारितः । हारितौ । हरिताः । तदपत्यं प्रशस्यं हारितायनः । एवं गाविष्टिरः ।
गाविष्टिरायणः । साठराः । कश्चिद्गोपवनादिपाठं मन्यमानो साठरा इत्याह ।
साठरायणः । कैदासः । कैदासायनः ॥ मित्रयुर्मुनिः । तदपत्यं मैत्रेयः । मैत्रे-
यायणः । वामनमते नास्य पाठः । सार्दाकवः । सार्दाकवायनः(१) । वाह्यस्कः ।
वाह्यस्कायनः । वह्यस्क इत्यन्यः । प्रातिबोधः । प्रातिबोधायनः । नैषादः ।
नैषादायनः । अपत्यमात्रे-नैषादकिः । शाबरः । शाबरायणः । पार्दाकवः ।
पार्दाकवायनः । शकटाङ्गजस्त्वत्र सृदाकुपृदाकू न मन्यते ॥ २३७ ॥

वध्योगविष्णुवृद्धौ रथीतररथन्तरार्कलूपाः स्युः ।

दुहिताननान्द्रपुत्रौ गविष्टिलो भूस्त्रियौ पुनः परतः ॥२३८॥

वाध्योगुः । वाध्योगायनः । वैष्णुवृद्धः । वैष्णुवृद्धायनः । वृष्णिवृष्टिरि-
त्यन्ये । राथीतरः । राथीतरायणः । राथन्तरः । राथन्तरायणः । आर्कलूपः ।
आर्कलूपायणः(२) । अर्कलुप इत्यन्यः । अर्कलुप इति कश्चित् । एते गविष्टिलशब्दश्च
श्लुग्घरितादिफण्भाजो नान्ये शकटाङ्गजप्रभृतिमतेन । दौहित्रः । दुहितरः ।
दौहित्रायणः । नानान्द्रः । ननान्द्रः । नानान्द्रायणः । पौत्रः । पुत्राः ।
पौत्रायणः । गविष्टिलः । गविष्टिलाः । गविष्टिलायनः । पौनर्भवः । पुन-
र्भवः । पौनर्भवायनः । परा चासौ स्त्री च परस्त्री । तदस्या विदादित्वादिभि
तत्संनियोगेन । परस्त्रियाः परशुश्चेत्यनेन परशवादेशे च । पारशवः । बहुषु
परस्त्रियः । तदपत्यं युवा-पारशवायनः । चन्द्राचार्येण यजजोर्वहुष्वस्त्रिया-
मित्यत्र सूत्रेऽपत्यमात्रइत्येव वाच्या उत्सा इत्युदाहृतम् । रत्नमतिना तु हरि-
तादयो गणसमाप्तिं यावदिति व्याख्यातम् । तन्मतानुधारिणा मयाप्येते किल
निवृद्धाः ॥२३८॥ इति हरितादिः ॥

(१) सृदाकु, पृदाकु, केचिदेते हरितादेः प्राक् पठन्ति । तन्मते हरितादेरिज
इत्यायनण् न भवतीत्यधिकम् । (२) आर्कलूतः । आर्कलूतायन इति पा० ॥

अश्वग्रीवाचपलसुमनोग्रीष्मधूम्राः पवित्रा—

धर्म्यो बैल्यार्जुनगिरिवनाः क्षान्तकाणौ विशालः ।

गोमीवाग्मिप्रहृतकितवाश्वक्ररामोदपादाः—

खर्जूरार्कस्वनशिवविदाः श्यामगोलाङ्ककाशाः ॥२३९॥

अश्वविदकुञ्जगर्गादिभ्योऽफाऽफज्यञ इत्यनेन चतुर्भ्यो गणेभ्यः पौत्रा-
दावर्थे चत्वारः प्रत्ययाः क्रमेण भवन्ति । अश्वस्यापत्यं पौत्रादिः आशवायनः ।
आशवायनाः । विदादित्वादजपि । आश्वः । ग्रीवायणः । चापलायनः । सौम-
नसायनः । ग्रीष्मायणः । अस्योत्सादौ पाठोऽनन्तरार्थोऽनपत्यार्थश्च । एवमुत्स-
शब्दोऽपि । धौम्नायणः । पावित्रायणः । धार्म्यायणः । धार्येत्यन्यः । बिलीनां
क्षत्रियाणामपत्यं पौत्रादिः कुरुकोसलेत्यादिना ण्यचि । बैल्यः । तदपत्यं युष्वा
वैल्यायनः । आर्जुनायनः । अस्य बाह्वादावनन्तरार्थः पाठः । गैरायणः ।
गिरिचपल इत्यपरे । वानायनः । वल इत्यप्यन्यः । क्षान्तायनः । काणायनः ।
वैशालायनः । गोमिनः । गौमायनः । वाग्मिनः । वाग्मायनः । प्राहृता-
यनः । कैतवायनः । चाक्रायणः । रामोदायनः । पाद्दायनः । खार्जूरायणः ।
खर्जूल इत्यन्यः । आर्कायणः । अर्कस्वनेत्यन्ये । स्वानायनः । शैवायनः । वै-
दायनः । श्यामायनः । गौलाङ्कायनः । अपरे गोल अङ्क इति छिन्दन्ति ।
काशायनः । आकाश इति चन्द्रः ॥२३९॥

विश्वानरः पिङ्गलशूद्रकोत्सातवस्फुटा धन्यगदश्रविष्ठाः ।

जनाश्मवीच्याःखदिरोनमार्हपिञ्जूरबस्ताःसनखःपविन्दा २४०

वैश्वानरायणः । विश्वतरइति कश्चित् । पैङ्गलायनः । शौद्रकायणः ।
श्रौत्सायनः । आतवायनः । उत्सातवेति भोजः । स्फोटायनः(१) । धान्याय-
नः । गादायनः(२) । अविष्ठायाः आविष्ठायनः । वानायनः । अस्य नडादि-
त्वात्फणि । अस्मिन्नञ् च यूनि विशेषः । आशमायनः । वैद्यायणः । खादि-
रायणः । नामायनः । आर्हायणः । पैञ्जुरायणः । वास्तायनः । सानखाय-
नः(३) । पविन्दायाः पाविन्दायनः ॥ २४० ॥

(१) स्फोटोऽयनं यस्येत्यर्थे स्फोटायनः शब्दान्तरमित्यधिकम् ॥

(२) वादायन इति पा० । (३) सानखायन इति पा० ।

रोहिणभण्डितभडिलाः शुनभण्डितदासकानडुह्यं च ।

पुटकुटकुलखडभडिताः प्रादृतचुपकितविशंपदुर्मनसः ॥२४१॥

रौहिणायनः । भाण्डितायनः । भाडिलायनः(१) । शौनायनः । भाण्डि-
लायनः । दासकायनः(२) । चुपदासक इत्यन्यः । अनडुहोऽपत्यं पौत्रादिः ।
आनडुह्यम् । तदपत्यं युवा आनडुह्यायनः । स्त्रियामत इति । आनडुही-
त्यन्यः(३) । पीटायनः । कौटायनः । कौलायनः । खाडायनः । भाडितायनः ।
प्रादृतायनः(४) । चौपायनः । कैतायनः । खिन्न इत्यप्यन्यः । त्रिविधं शं सुखं
पातीति विशंपः । तस्य वैशंपायनः । दौर्मनसायनः ॥ २४१ ॥

जडलतशङ्खप्राच्या ध्वनवहमन्दा भवेन्नरे जातः ।

अथ भर्गस्त्रैगर्ते रयादात्रेये शपो भरद्वाजः ॥२४२॥

जाडायनः । लातायनः । शाड्हायनः । विदादित्वादजि शाड्हुः । ग-
र्गादित्वाद्यजि शाड्ख्यः । कुड्गादित्वात्फजि । शाड्खायन्यः । प्राच्यायनः ।
ध्वानायनः । वाहायनः । सान्दायनः । जातायनः । पुनांश्चेत् । अन्यत्र
जाताया जातेयः । भार्गुयणः । त्रैगर्तश्चेत् । भार्गिरन्यः । शापायनः । भार-
द्वाजायनः । आर्त्त्रियश्चेत् । शापिर्भारद्वाजश्चान्यः । एत ऋषिवाचकाः । अस्यो-
दाहरणानिः— अथैषवातखड्यवतखड्गभीकवातखडवातखड्गभिकप्रियाणि ।

आश्रवायनाश्रमायनसेधितानिशुचीनिसिप्रापुलिनान्यगच्छत् ॥१॥

पौटायनास्तेषुपुटान्मृजन्तोवैदायनावेदमुदीरयन्तः ।

क्षान्तायनाःक्षान्तिभृतोऽस्यचेतःशाड्हायनाःशड्हुभृतश्चजहः ॥२॥

यैषायणार्हायणरौहिणायनाकार्यणन्यस्तसमित्कुशेषु ।

पादायनासन्नद्रूपन्निपणःचाक्रायणेष्वेषुपदंसचक्रे ॥ ३ ॥

श्रौत्सायनैस्तथमिहोत्पतद्भिःकाशायनैःकाशकुशंलुनद्भिः ।

स्वानायनैःस्वानमनुद्गृणद्भिर्ग्रैष्मायणैर्ब्रह्ममुदंसलेभे ॥४॥

(१) भालितायनः । लालितायनः । भाडितायन इत्यधिकम् ।

(२) दासकार्यन इति पा० । (३) अनडुह्येति गर्गादियजन्ताद्गोत्रे
फञ्जोऽसम्भवेन सामर्थ्यादून्ययम् । अनडुहो युवापत्यमानडुह्यायन इति
टिप्पण्यम् । (४) प्रादृतायन इति पा० ॥

धार्यायणं धर्ममृचीजपन्तं वाग्मायनं वाग्मितमयजूषि ।

गौमायनं गोमिनमेषसामधान्यायनं धन्यमथावमेने ॥५॥

वैक्षयायणं वीक्ष्य विशालवक्षाननामनासायनसायताक्षः ।

अदुर्मना दौर्मनसायनं समहामनाः सौमनसायनं च ॥६॥

धौमायनं सोऽध्वरधूमशुभ्रंधीन्नायणं ब्रह्मपरायणञ्च ।

श्यामायनं श्यामलकण्ठभक्तं काणायनं काणभुजञ्च भेजे ॥७॥

शैवायने शैवमतानुकूले कौलायने कूलकुटीरभाजि ।

कौटायने धान्यकुट्टैकवृत्तौ वासायने वाकृतं वासनंसः ॥८॥

गौर्ब्रह्मगैरुयणमुद्विरन्तं जातायनं जाततदर्थं बोधम् ।

ध्वानायनं सध्वनिदत्तचित्तं जाडायनं ध्यानजडं प्रपदे ॥९॥

भक्त्या नडुह्यायनमेपनत्वार्जुनायनं वार्जुनतुल्यकीर्तिः ।

वैत्यायनं चोपजगाम वैश्वानरायणं विश्वजनीनवृत्तिः ॥१०॥

आविष्टवैशालपरौकराभ्यां पावित्रपाविन्दपरौगिरान् ।

खार्जूरपैञ्जूरपरौतुशश्वन्मूर्धाभिषिक्तोऽनमदायनौसः ॥११॥

वैशम्पगौलाङ्कपरौचतौतान्खाडातवप्राहृतदासक्रेभ्यः ।

रामोदतः कैतवखादिराभ्यांसचापलाद्वाचपलौवचन्दे ॥१२॥

विद्वान्मुदङ्कोनवभारभारद्वाजायनं राजनिवन्दमाने ।

आत्रेयनौसीत्यभिधाय तत्रात्रेयायणं वास्यधिपर्ययेण ॥१३॥

सभाडिताद्गाण्डितभाडिलाभ्यां नत्वायनान्भाण्डिलतश्चभूपः ।

शापायनं शापिमथेहभार्गिभार्गायणं चैवनमश्चकार ॥१४॥ ॥२४२॥ इत्यश्वादिः ॥

विदोर्वकिंदर्भकिलातधेनुविश्वानरा भाजनकश्यपौ च ।

अश्ववतानः प्रियकोपमन्यू हर्यश्वविन्दू कुशिकर्त्तभागौ ॥ २४३ ॥

अश्वविदेत्यादिना पौत्रादावपत्येऽजभवति । विदस्यापत्यम् वैदः । वैदौ ।

विदाः । और्वः । कैदर्भः । कीदर्भ इति शकटाङ्गजः (१) । विदर्भ इति भोजः ।

कैलातः । चैनवः । अयमृषिवचनः । उत्सादौ तु प्रत्यग्रप्रसवगव्यादिवाचकः (२) ।

वैश्वानरः । भाजनः । ताजम इत्यन्यः । काश्यपः । अय । इन्द्रहूः सप्तमः

(१) किंदर्भस्य कैदर्भः कैदर्भौ किदर्भाः । किदर्भ इति शकटायनः ।

विदर्भ इति भोजइति पा० । (२) उत्सादौ तु नवप्रभृतिकावचन इति पा० ।

काश्यपानामित्यजः श्लुक् कस्मान्न भवति । सामान्येनापत्याभिधान ऋष्यणा
सिद्धिर्भविष्यति । तस्येदं विवक्षायामणा वा सर्वेषामपि हि पितरः काश्यपा
अभेदोपचारात् । यथा—अश्रुः । मण्डुः । लमक इति ॥ आशवावतानः ।
आशवावतानाः । प्रैयकः । पियकेत्यन्यः । औपमन्यवः । हार्यश्वः । वैन्द-
वः । कौशिकः । यथा—

कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो राममध्वरविघातशान्तये । आर्त्तभागः ॥२४३॥

ऋषिषेणभरद्वाजापस्तम्बाः शुनकस्तथा ।

शरद्वत्सम्बकौ शिश्रुः कुचवारश्च(१)कीर्तिताः ॥२४४॥

आर्षिषेणः । भारद्वाजः । आपस्तम्बः । शौनकः । शरद्वत्तः । साम्बकः ।
साम्बकाः । शयवक इति वामनः । शैग्रवः । शैग्रवाः । कौचवारः कूचवार इति
वामनः । कूवाचर इत्यन्यः । गोपवनश्यामाकश्यापर्णश्यामकास्तु गोपवनादे-
र्विदाद्यन्तर्गणत्वाद्द्रष्टव्याः ॥ ऋषिवाचिभ्यः ऋष्यणि प्राप्ते । ऋषिषेणाच्छिवा-
द्यणि । अरुषिवाचिभ्योऽदन्तेभ्योऽतइजि । तदन्तेभ्योऽणि । परस्त्रिया ज्यङो
ढणि च पाठः ॥२४४॥

इति विदादिः ॥

कुञ्जब्रध्नुशुभस्कन्दलोमस्कम्भाः शटो गणः ।

भस्मशङ्खविपाशश्च शुण्डा शाकश्च कीर्तिताः ॥२४५॥

अश्वविदेत्यादिना पौत्रादावपत्य एभ्यः फञ् भवति । तत्संयोगेन
फञ् ब्रातादस्त्रियामित्यनेन स्वार्थे ज्यश्च । कुञ्जस्यापत्यं पौत्रादिः कौञ्जायन्यः ।
कौञ्जायन्यौ । कौञ्जायनाः । ब्राध्नायन्यः । शौभायन्यः । शुम्भइति सौजः ।
स्कान्दायन्यः । स्कन्य इत्यन्ये । लौमायन्यः । केचिन्नोमान्तस्यैव मन्यन्ते न
लोमः । तन्मत श्रीहुलोमायन्य इत्यादि । स्काम्भायन्यः । स्कम्भ इत्यपरे ।
शाटायन्यः । गाणायन्यः । भास्सायन्यः । भस्त्रेत्यन्यः । शाङ्गायन्यः । वैपाशा-
यन्यः । शौण्डायन्यः । शाकायन्यः । अस्योदाहरणानिः—

ऐक्षन्तकुञ्जानुपसृत्यकौञ्जायन्यादयोऽथर्षिवधूवधूत्व्यः ।

कौञ्जायनाःपार्थिवकुञ्जरंतंब्राध्नायनाश्चातिकुतूहलेन ॥ १ ॥

शाङ्गायनाःशङ्कशाभिहस्ताभास्सायनाभास्वरहेमभासः ।

• गाणायनागाणपतव्रतस्याःशाकायनाःशंकरभक्तिभाजः ॥ २ ॥

(१) फूषधारइति पा० ।

शौण्डायनामार्जनकर्मशौण्डाःशाटायनाःशाक्यविहीनवाचः ।

स्काम्भायनाःस्कम्भिसम्भन्मथास्त्राःशौभायनाःशोभनवल्गुवाचः ॥३॥

स्कान्दायनाःस्कन्दमहौजसंवैपाशायनाःपाशभृतीपसेयम् ।

प्रियौडुलोभायनमौडुलोभायन्यंतमालोव्यनवृष्टिसायुः ॥ ४ ॥ २४५ ॥

इति कुञ्जादिः ॥

गर्गो वत्सविरोहितौ शटशकंप्राचीनयोगावंटा—

धूर्तः शङ्खधनञ्जयाजंचमसा विश्वावसुः संकृतिः ।

वृक्षामस्त्यपुलस्तिवल्गुकलिता मन्तुर्मनायी लिगुः—

सूनुरोहितकन्थकौ श्रुवलतू मण्डुर्जिगीषुस्तनुः ॥२४६॥

गर्गादिरश्वविदेत्यादिना यज् । गर्गस्यापत्यं पौत्रादिः । गार्ग्यः ।

वात्स्यः । वैरोहित्यः । शाट्यः । शाक्यः । प्राचीनयोग्यः । आवस्यः ।

धौर्त्यः । शाङ्ख्यः । धानंजय्यः । आज्यः । चामस्यः । वैश्वावसव्यः । साङ्कृत्यः ।

वाक्ष्यः । आगस्त्यः । पुलस्तेः—पौलस्त्यः । पुलस्त्य इत्यपि प्रकृतिरस्ति ।

तस्याप्यृष्यणि पौलस्त्यः स्यात् । परं पुलस्तिशब्दस्य यज्ञभावे रूपान्तरमनिष्टं

स्यात् । आदौ च विशेषः । यजन्तास्त्रियां पौलस्ती । पौलस्त्यायनी । अण-

न्तस्य पौलस्त्येव स्यात् । बहुषु यजन्तस्य पुलस्तयः । अणन्तस्य पौलस्त्याः(१) ।

वाल्गव्यः । मान्तव्यः । मानाथ्यः । पाठसामर्थ्यान्न स्त्रीत्वनिवृत्तिः । लैगव्यः ।

सौनव्यः । लौहित्यः । कान्थक्यः । कथक इत्यन्यः । श्रौव्यः । लातव्यः । मा-

ण्डव्यः । जैगीषव्यः । तानव्यः ॥ २४६ ॥

(१) पुलस्त्य इत्यपि प्रकृत्यन्तरमस्ति । तस्यापि गर्गादित्वे पुलस्ति शब्दस्य पाठ एवोपलक्षणम् । अतएव रामायणादौ रावणे पौलस्त्यपदं प्रयुज्यमानमुपपद्यते न च पुलस्तिपदेन तस्योपपत्तिरिति वाच्यम् । पुलस्त्यो-
ऽज्जनयत्पत्न्यामगस्त्यं च हविर्भुवि । यद्यपि पुलस्त्यस्य ऋषित्वाद्गणि पौलस्त्य इत्येव स्यात्तथापि यज्ञभावे रूपान्तरमनिष्टमापद्येत । तथा हि यजन्तस्य स्त्रि-
यां पौलस्त्यायनी । अणन्तस्य तु पौलस्तीत्येव । बहुष्वपर्येषु यज्ञो लुकि पुलस्त्याः । ऋष्यणरतु लुगभावात्पौलस्त्या इति विभावनियमिति टिप्पण्या-
मुपलभ्यते ।

तण्डोलूकवतण्डधूमशकलाः कण्ठस्तथा कुण्डिनी—
गोकक्षैकरहूगणा वृषगणः स्थूरारराकाकताः ।

गोलन्दानडुहौ तरुचभिषजौ कृष्णोऽलिगुः पिङ्गला—
पूतीमाषसुलाभिनौ कुरुकतः शङ्कुस्तितिक्षैकलूः ॥२४७॥

ताण्डयः । तण्डिनिति कश्चित् । औलूक्यः । वातण्डयः । शिवादिपा-
ठादणपि । वातण्डः । धौम्यः । युधिष्ठिरमन्त्री । यथा—कादम्बर्याम् । धौम्य
इवाजातशत्रोः । शाकल्यः । काण्ड्यः । कौण्डिन्यः । गौकक्ष्यः । ऐक्यः । राहू-
गण्यः । रहोगण इत्यन्यः । वार्षगण्यः । स्यौर्यः । राराक्यः । अरराकेत्यन्यः ।
कात्यः । कात्यशब्दासोहितादित्वाद्वायनी । कात्यायनी । गौरी । ऋषिपत्न्या-
कारत्वादध्वं वृद्धा नार्यपि । गौलन्द्यः । आनडुह्यः । तारुक्ष्यः । भैषज्यः ।
काण्यः । आलिगव्यः । पैङ्गल्यः । पूतीमाष्यः । पूतिमाष इति भोजः ।
सौलाभ्यः । सुलोभिन्निति वामनः । कौरुकात्यः । शाङ्क्यः । तैतिक्ष्यः (२) ।
ऐकल्यः ॥२४७॥

चुलुकचणकमङ्गुः शर्कराक्षग्निवेशौ—
चिकितकुटिलदल्भाः (१) पिप्पलूतृक्षकक्षौ ।
महितमुसलरेभाः शण्डिलोक्यौ च गण्डु—
विदभृदभयजाताविन्द्रहूतित्तिरी च ॥२४८॥

चुलुकचणकाम्बां युक्तौ मङ्गुः । चुलुकचणकमङ्गुः । चौलुक्यः ।
चाणक्यः । नाङ्क्यः । शर्कराक्ष्यः । आग्निवेश्यः । चैकित्यः । कौटिल्यः ।
दाल्भ्यः । पैप्पल्यः । तार्क्ष्यः—गरुडः । काक्ष्यः । साहित्यः । सौसल्यः ।
रैभ्यः । शाण्डिल्यः । औकश्यः । गण्ड्यः । वैदभृत्यः । अस्य पौत्रादौ यज्ञ-
तस्य श्लुचि । विदभृतः । अभिजिदादावधीतस्य विदभृच्छब्दस्यापत्यमात्रे यज्ञ ।
तस्याणि वैदभृताः । वितृन् साहसिकान् वध्नातीति वितृभत् तस्य वैद्वय्य
इत्यन्यः । अभयजात्यः । अभय्यः । जात्यद्वत्यन्ये । ऐन्द्रह्व्यः । तैत्तिर्यः ॥२४८॥

वृहदग्निस्वर्णर्ज्जमदग्निपराशराः ।

जतूकर्णः कुटीगुश्च कर्कटाश्मरथौ मनुः ॥ २४९ ॥

वाह्निर्दग्ध्यः । सावर्ष्यः । आर्क्ष्यः । रूक्ष इत्यन्यः । जामदग्न्यः । पारा-
शर्यः । कथंपुनरनन्तरो रामो जामदग्न्यः । व्यासः पाराशर्य इति । पुत्रोऽपि
पौत्रादिकार्य्यकरणात्तथा व्यपदिश्यते । अनन्तरापत्यविवक्षायां त्वृष्यणि जाम-
दग्न्यः । पाराशर इति । अन्ये तु बभ्रुः कौशिक इति कौशिकग्रहणं गर्गादि-
यज्ञोऽनित्यत्वख्यापनार्थं मन्यन्ते । तेन पाराशर्य्यो व्यासः । जामदग्न्यो राम
इत्यनन्तरापत्येऽपि यज् सिद्धुः । वैचित्र्यार्थमित्यपरे । भोजस्त्वनन्तरापत्ये
पाराशरिः । तस्येदं विवक्षायां तु पाराशर इत्याह । जातूकर्य्यः । कौटीगव्यः ।
कार्कट्यः । आश्रमरथ्यः । मानव्यः । कथं मानवी प्रजा लोहितादित्वाद्वाहुयन्डौ-
भ्यां स्त्रियां नित्यं भवितव्यम् । अनन्तरापत्यविवक्षायासृष्यण् भविष्यति ॥२४९॥

पर्णवल्कस्तलुक्षश्च यज्ञवल्कश्च मन्द्रितः

व्याघ्रपाद्विषा देवहूस्तन्तुभण्डितमुद्गलाः ॥२५०॥

पर्णवल्क्यः । तालुक्ष्यः । याज्ञवल्क्यः ।

स योगी याज्ञवल्क्यस्त्वां वेदान्तानध्यजीगपत् ।

मन्द्रं संजातमस्य मन्द्रितः । तदपत्यं मान्द्रित्यः । मन्द्रित इति वामनः ।
वैयाघ्रपद्यः । भैष्यः । देवहव्यः । यज्ञहूरित्यप्यन्यः । तान्तव्यः । भाण्डित्यः ।
मुदं मदं वा गलतीति मुद्गलः । तदपत्यं मौद्गल्यः ।

मौद्गल्यस्य कवेर्गभीरमधुरोद्गारा गिरां सूक्तयः ॥ २५० ॥

आङ्गिरसे बोधकपी ब्राह्मणकुशिकाङ्गजे च मधुवभ्रू ।

वाजोऽसे जश्माणो भडितासंकृतितितिम्भैवामरथाः ॥२५१॥

वौधयः । काप्यः । आङ्गिरसश्चेत् । अन्यत्र वौधिः । कापेयः । माधव्यः ।
ब्राह्मणश्चेत् । अन्यत्र माधवः । बाभ्रव्यः । कौशिकश्चेत् । अन्यत्र बाभ्रवः ।
अन्ये तु लोहितादिपठितादेव वञ्चीः कौशिके यजं मन्यन्ते । स्त्रियां वाश्र-
व्यायण्येव तन्मते स्यात् वाजोऽस इति वाजशब्दोऽसमासे यजमुत्पादयति ।
वाजयः । अस इति किम् । सौवाजिः । अस इत्यस्योपलक्षणत्वादन्येषामपि
गणपठितानामसमास एव प्रत्ययः । पारसविदिः । पारसगर्गरित्यादि ।
जारमाण्यः । भाडित्यः । आसंकृत्यः । तिस्यन्तं भक्षयतीति तितिम्भः । तस्य
तैतिस्भ्यः । वामरथ्यः ॥ २५१ ॥

गूहलुर्मनसो मङ्खुः पिङ्गभिष्णजसम्भवः ।

आलापीकृतवीरश्चाभिजिदादिस्तथा गणः ॥ २५२ ॥

गौहलव्यः । गूहलुरित्यन्यः । मानस्यः । माङ्खुः । पैङ्गवः । मैष्णव्यः ।
साम्भव्यः । आलाप्यः । कार्तवीर्यः ॥

अभिजिदादिः पुनरयम् । अभिजित् विदभृत् शालावत् शिखावत्
श्रुमत् ऊर्णावत् श्रीमत् शमीवत् शब्दाः । तेषामभिजिदादेर्यजोऽणित्यनेन
यजोऽण् भवति । अभिजितोऽपत्यानि आभिजिताः । वैदभृता इत्यादि ॥
अस्योदाहरणानि—यथा—

राजन्महाकालवनेऽत्रगार्ग्योवात्स्यात्मजावत्सलवालव्रतसम् ।

वाज्याज्यसौवाजिषटुप्रियेणविलोक्यतामाश्रममण्डनं वः ॥१॥

तथेतिगौरीपतयेप्रणम्यसाङ्कृत्यपत्रीकृतपादपंसः ।

आसङ्कृतीनर्तितमत्तवर्हिमुनेःपदंराजमुनिर्जगाम ॥२॥

वैवाघ्रपद्योपहितार्थपाद्यःप्राचीनयोग्योदितमङ्गलाशीः ।

सतत्ररैभ्यायणपृष्टवार्त्तःपौलस्त्यहाऽत्रेरिवधास्यभासीत् ॥३॥

साग्न्याग्निवेश्येस्तुतसाङ्ख्यशाङ्ख्यधौस्यापधौस्येधुतशाट्यसाध्ये ।

आवद्यचामस्यनमस्यधानंजय्यानहुह्येसजहर्षतस्मिन् ॥४॥

ह्माताहर्षलक्ष्मेहसकौरुकात्यवैशवातसव्यायनजारसाशयान् ।

लौहित्यसांशित्यवतोऽभिवाद्यवाश्रव्यमण्डव्यमुखानुपेये ॥५॥

समङ्गसाङ्ख्यमनस्यसाङ्क्षीत्सवलगुवालगव्यवचस्यधालीत् ।

मानव्यशाङ्ख्यमनोश्चशङ्कुर्मानायमानाव्यमिवैपभेजे ॥६॥

सावत्यकार्कट्यकुटीगफीटिगव्यान्तिपङ्भिर्विदभृदभिरीडयान् ।

सयैदभृत्यायनवैदभृत्यसौलाभ्यदालभ्यान्वहुतत्रमेने ॥७॥

जिगीपवेऽस्मिन्जुगोपजैगीपव्योन्यगूहद्यदुगौहलव्यः ।

सङ्ख्यौव्यलैगव्यकथासुतत्वंगीत्रंल्लणोऽस्यस्वयमायभासे ॥८॥

वातण्डकात्यायनकाप्यकात्यमान्तध्यतान्तव्यदमैःसतस्मिन् ।

तारुह्यतारुह्यतपोभिराहर्षःकान्यक्यशाकत्यजपेञ्जह्ने ॥९॥

सकाशव्यगौकह्यसमस्तगस्मिन्नागरत्यकौषिह्न्यकृतातिथेयः ।

सुभापितान्यादितपार्श्वलवयोयजूंपिर्मृषांदिषयाघावलक्ष्यः ॥१०॥

साहित्यसाहित्यविदेपजातूकर्णस्यसावर्ण्यसवर्णभोजः ।

भाशिडत्यपाशिडत्यमिहैवराहूगण्यादयोवीक्ष्यतमित्थमूचुः ॥११॥

भाडित्यभैषज्यवचोविचिन्वन्नालाप्यचैकित्यमतिमिमानः ।

मौसल्यपैङ्गल्यकृतीःसपाराशर्याप्रसाणोमनसालुलोके ॥१२॥

सबार्हदग्न्यायनजामदग्न्यःस्थौर्यौक्श्यतैतिक्ष्यजिघृक्षिताभिः ।

कौटिल्यशास्त्रार्यावपारदृश्वाननन्दगौलन्द्यमुनीन्द्रवाग्भिः ॥१२॥

काष्ण्यैकलव्यायनपैप्पलव्यदाल्भ्यैन्द्रहव्यायनदैवहव्यान् ।

राराक्यत्वाणक्यवदाररक्यमौलूक्यचौलुक्यजुषंसिषेवे ॥१४॥

सभाजयन्नाभियजात्यवैरोहित्याश्मरथ्यायनवार्षगण्यान् ।

सपौतिनाध्यायणशार्कराक्ष्यशाशिडत्यमौद्गल्ययुजोविरिजे ॥१५॥

साधव्यतोधाससमाधवश्रीर्वाभ्रव्यधीर्वाभ्रवतःप्रभावम् ।

कापेयतःकाप्यरुचिःप्रतापंभौध्याच्चभौधेश्चसबोधमाप ॥१६॥

प्रथमवृत्ते विरोहितागस्त्यशब्दौ द्वितीयवृत्ते तण्डवतण्डधूमैककुरुकता-

नडुहलिगुशङ्कुकततरुक्षवर्जिताः शब्दाः । तृतीयवृत्ते मङ्ध्वग्निवेशतृक्षकक्षरेभ-

वर्जिताः चतुर्थश्लोक ऋक्षमनुवर्जिताः । पञ्चमश्लोके तल्लुक्षव्याञ्चपत्तन्तुवर्जिताः

पष्ठार्यायां भडिततितिस्मवानरथशब्दाः । सप्तमश्लोके भिष्णजालापिकृतवीर-

शब्दा अभिजिदादिश्च शकलादिगणयोग्या भवन्ति ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन

यज्ञहूप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥२५२॥ इति गर्गादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्धमानविरचितस्त्रीयगणरत्नम-

होदधिवृत्तौ तद्वित्तप्रक्रियास्वार्थिकापत्यप्रत्ययगणनिर्णयो नाम

तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

धनं सेना पशुक्षेत्रे धान्यप्राणसभागृहाः ।

शताश्वधन्वराष्ट्राधिकुलधर्मगणास्तथा ॥ २५३ ॥

धनादेरपत्ये वाण् पत्युरित्यनेन धनादिपूर्वपदात्यतिशब्दादत्राणधि-
कारे येऽर्थास्तत्रापत्ये वाण् भवति । स्यस्यापवादः । धनपतेरपत्यं धनपतिर्वा
देवताऽस्य धानपतः । सेनापतेरिदम् सैनापतम् । एवं पाशुपतम् । क्षेत्रपतम् ।

धान्यपतम् । प्राणपतम् । साभापतम् । गार्हपतम् । शातपतम् । आश्वपतम् ।
धान्वपतम् । राष्ट्रपतम् । आधिपतम् । कौलपतम् । धार्मपतम् । गाणपतम् (१) २५३

इति धनादिः ॥

उत्सोशीनरभङ्गकीयविकरा धेनूदपानोष्णिहः—

पञ्चालापवदौमहानदपृथे इन्द्रावसानः कुरुः ।

सत्वद्ग्रीष्मरथन्तरं जनपदो मध्यंदिनानुष्टुभौ—

त्रिष्टुप्पङ्क्तिमहानसाश्च भरतो ज्ञेयः सुवर्णः ककुप् २५४

उत्सादेश्चाजित्यनेनोत्सादेर्देवपृथिवीशब्दाभ्यां वास्येत् तस्मात्पूर्वोऽपत्ये
षार्थोऽज् भवति । अणस्तदपवादानां च बाधकः । उत्सस्यापत्यम् उत्सो वा
देवताऽस्येति श्रौत्सः । श्रौशीनरः । भङ्गकीयः । विकरः । अस्य पश्यादि-
पाठाच्चातुरर्थिको ययएव । धेनवः । श्रौदपानः । श्रौष्णिहः । एवं पञ्चालेषु
भवः । पाञ्चालः । अके प्राप्ते । आपवदः । वामनमतेन । साहानदः । पृषाया
अपत्यम् पार्थः ॥ वियक्षणाणेनाहूनः पार्थेनाथ सुरं द्विषन् ॥

इन्द्रावसानो नाम वाहीकग्रासस्तस्य । ऐन्द्रावसानः । कुरुपु भवः ।
कौरवः । सत्वतोऽपत्यम् । सात्वतः । यथा—

समरेषु रिपून्निजघ्नता शिशुपालेन समेत्य संप्रति ।

सुचिरं सह सर्वसत्त्वतैर्भवविश्वस्तविलासिनोजनः ॥

यादवैरित्यर्थः । ग्रीष्मे भवम् ग्रीष्मं सहः । रथन्तरो नाम राजा साम
वा तदपत्यं तत्र भवं वा । राथन्तरम् । जानपदः । मध्यंदिनः । आनुष्टुभः ।
त्रिष्टुभम् । पङ्क्तिम् । साहाननोऽग्निः । भारतः । सौवर्णं कटकादि ॥ काकुभम् २५४

बृहतीजगतीमहिमतुरुणास्तलुनो महन्महाप्राणौ ।

विनदवृहत्पीलुकुणा वृषदंशो वष्कयश्वासे ॥ २५५ ॥

गार्हनम् । जागतम् । महिमती भायो महिना । तस्य साहिनः ।
महीमदित्यन्यः । तारुणः । तालुनः । तरुयथा अपत्यं तारुणः । तालुनः ।
दणि प्राप्ते । साहतः । साहाप्राणः । साहाप्राणा इत्यन्यः । विनदः । गार्हतः ।

(१) केचित्तु गृहसेनाशब्दी न पठन्ति तन्मते गार्हपत्यं सेनापत्यमि-
त्युत्तरेण ऽप्यप्येत्यधिकम् ।

पीलूनां पाकः । पीलुकुणः । ततोऽग्नि । पैलुकुणः । वृषं मूषिकं धर्मं वा दश-
तीति वृषदंशो मार्जारः पापवान् वा । ततोऽग्नि । वार्षदंशः । जिनेन्द्रबु-
द्धिस्तु वृषदंशे इति वृषच्छब्दादंशोऽञ् । वृषद अंशो वार्षदः । अंश इति
किम् । वार्षदोऽन्यः । अणोव भवति । वृषकयशब्दोऽसमासेऽजमुत्पादयति ।
वाष्कयः । अन्यत्र सुवृषकयस्यापत्यं सौवस्कयिः । अस्य समासप्रतिषेधाद्
उत्साद्यन्तस्यापि प्रत्ययः । गोधेनुभ्य आगतं गौधेनवम् । मयङ् रूप्यौ न
भवत इति शकाटाङ्गजः । अस्मन्मते तु तदन्तानां व्यवच्छेदः ॥ २५५ ॥

देशे तदस्थानो हंसपथं वर्धमानमहितौ च ।

दंशं कुरुकतकुणपावुत्सादिगणे पठन्त्येके ॥ २५६ ॥

उदस्थानशब्दो देशे वर्त्तमानोऽजमुत्पादयति देशेऽभिधेय इत्यन्यः ।
श्रौदस्थानः । अन्यत्र । उदस्थानो नाम कश्चित् तस्य श्रौदस्थानिः । हंसप-
थः । वार्धमानः । महितस्य साहितः । दंशः । कौरुकातः । कौणपः । एतेषां
यथासम्भवमुदाहरणानिः—

दृष्टोडुलोमेषु मयोडुलोमेष्वीवैरसिंहादिषुरुद्रभक्तिः ।

अपार्थिवासात्वयिपार्थिवीयांनीत्यौदपाच्योऽपिनवर्णयन्ति ॥१॥

आनुष्टुभत्रैष्टुभकाकुभैर्यं पाङ्क्तौ षिण्णैर्वाहंतजागतेश्च ।

स्तुवन्तिराथन्तरभाल्लकीयसाध्यंदिनाः सोऽर्हणयादृतस्ते ॥२॥

कस्तारुणस्तालुनवाष्कयौवासौवष्कयिर्वाहृदयेकरोति ।

विलासिनोर्वीपतिनाकलीयद्रव्यलोकिलोकेऽत्रमृगाङ्गमौलिः ॥३॥

नभारतेनैक्षिनकौरवेणनैन्द्रावसानेननसात्वतेन ।

पाञ्चालमाहानदवैनदैर्नौशीनरेणाद्ययथात्वयेशः ॥६॥

सौवर्णामुर्व्यादितथानदत्वानथैनवजानपदं द्विजेभ्यः ।

नवैकरंरत्नचयं विकीर्यत्वमीशमालोदययथाद्भुतोऽभूः ॥५॥

नमाहतीमृद्धिमवैमिमाहाप्राणीनकोजल्पतिवार्हतीयम् ।

भक्त्येहयोऽभ्यर्चतिरुद्रसौदस्थानंतमभ्येतिजनं जयश्रीः ॥६॥

साहानसोऽग्निः पचतेऽन्नजातं ग्रैष्मं महः पैलुकुणं गृणन्ति ।

वृषाङ्गभक्तोऽर्हतिवार्षदंशान् भुक्तुं विभिन्नाहिपदार्थशक्तिः ७।२५६ इत्युत्सादिः ॥

भिन्नाखण्डकदक्षिणायुवतयो धर्मी सहस्रो युगं-
क्षेत्रं श्वा हलबन्धभिक्षुकशुकोलूकाः पदातिः पुनः ।

अङ्गारो वडवाऽथ पद्धतिरहोऽथर्वा करीषं तथा—

चर्मी चर्म च गर्भिणी युगवरत्रा स्याद्वरत्रा तथा २५७

भिक्षादेरित्यनेन षष्ठ्यन्तात्समूहेऽण् प्रत्ययो भवति । भिक्षाणां समूहः
भैक्षम् । यथा श्रीसागरचन्द्रस्य—

अकल्पितप्राणसमासमागसामलीससाङ्गाधृतभैक्षवृत्तयः ।

निर्ग्रन्थतांस्त्वत्परिपन्थिनोगताजगत्पते किंत्वजिनावलस्विनः ॥

खण्डिकानां कलायानाम् खाण्डिकम् । दक्षिणानाम् दाक्षिणम् । यौव-
नम् । युवतिपाठः पुंवद्भावबाधनार्थः । अत्रास्य पाठश्चन्द्राचार्याद्यभिप्रायेण ।
वस्तुतस्तु तद्वितीत्यन्तेः प्रागेव पुंवद्भावेन भवितव्यम् । ततो युवतीनां समूहो
यौवनम् । यथा । सरूपमतिनेपथ्यं कलाकुशलयौवनम् । यस्य पुण्यकृतः प्रैष्यं
सफलं तस्य यौवनम् । यत उक्तं भाष्यकृता । भिक्षादिषु युवतिग्रहणानर्थक्यं
पुंवद्भावस्य सिद्धत्वात्प्रत्ययविधाविति । धार्मिकम् । ब्रह्मादिपाठान्तोऽनङ्गी-
व्येशित्पणादाधित्यनेन श्लुङ् न । साहस्रम् । यौगम् । क्षेत्रम् । शौवनम् ।
शकटाङ्गजस्तु श्वखलादिभ्योऽजिनित्यत्र श्वादेरज्वचनम् । शूनां समूहः
शौवम् । दण्डिनां दण्डम् । चक्रिणां चाक्रमित्यादिषु नोपदस्येति लोपार्थ-
मिति मन्यते । हालम् । पाशादिपाठाद् हल्या । वान्धम् । हलबन्ध इत्यन्यः ।
भैक्षुकम् । शौकम् । औलूकम् । यजन्तो बहूपत्यवाची श्लुका निर्दिश्यते ।
तस्येह पाठादपत्यलक्षणेऽकञ् न भवति । पादातम् । आङ्गारम् । पाशादि-
पाठादङ्गार्या । वाडवम् । पाहुतम् । अहाम् । आहम् । अथर्वा नामर्षिः ।
तत्प्रयुक्ता मन्त्रा अथर्वाण उपचारात्तेषाम् आथर्वणम् । कारीपम् । चार्मिकम् ।
चार्मिकम् । चार्मिकित्यन्यः । गर्भियः क्षेत्रभक्तयः । तार्सां गार्मिकम् । यौगवर-
त्रम् । वारत्रम् ॥

क्षुद्रकानां क्षत्रियाणां मालवानां चापत्यानि । राष्ट्र्याद्राक्षीऽजेवेत्यञ्
तस्य श्लुचि । क्षुद्रकाश्च मालवाश्च क्षुद्रकमालयाः । ततोऽपत्याकञो बाधनार्थं
सेनासंज्ञायां भिक्षादिपाठादण्डिधिः । क्षीद्रकमालयी मेना । अन्यत्र क्षीद्रक-
मालयकम् । भिक्षुकवडवाशुकपदातिप्रभृन्मयाश्चक्रकाष्ठादिप्रतिमावृतयो गण-
पाठं प्रयोगयन्ति ॥ २५७ ॥ इति भिक्षादिः ॥

केदाराजौ राजराजन्यवत्सा उष्ट्रोरभ्रौ वृद्धयुक्तो मनुष्यः ।

उक्षा ज्ञेयो राजपुत्रस्तथेह केदारादौ वामनाचार्य्यदृष्टे ॥ २५८ ॥

अपत्यकेदारिभ्योऽकजित्यनेनापत्यान्तात् केदारादेश्चाकञ् भवति ॥ के-

दाराणां समूहः कैदारकम् । कैदार्यमित्यपि । आजकम् । राजकम् । राज-
न्यकम् । वात्सकम् । यथा—घनज्जयस्य—

समं द्विषन्तः शुकसारिकाभिर्विपाशितावल्गुशिशुंशंसुः ।

निर्भोक्षमाणं सहधेनुकेन गृहे गृहे वात्सकमभ्यनन्दत् ॥

श्रीष्टकम्— लोलौष्टमौष्टकमुदग्रमुखंतरूणाम—

भ्रंलिहानिलिलिहेनवपल्लवानि ॥

श्रौरभ्रकम्— क्रीत्वौरभ्रकमिदमाजकं च वीथयाम् ॥

वाढ्कम्— मानुष्यकम् । औक्षकम् ।

रोमन्धमन्धरचलद्भ्रुतसास्त्रमासाञ्जक्रेनिमीलदलसेक्षणमौक्षकेण ॥

राजपुत्रकम् ॥ २५८ ॥ इति केदारादिः ॥

पाशधूमतृणाङ्गाराः पिटाकः पिटको वनम् (१) ।

गोरथौ शकटं वातः खलपोतौ गलो नडः ॥ २५९ ॥

खलपाशादिभ्यां लिनृत्यावित्यनेन खलादेः पाशादेश्च लिनृत्यौ क्रमेण
भवतः । पाशानां समूहः पाश्या । धूम्या । तृण्या । अङ्गार्या । भिक्षादि-
पाठादणपि । आङ्गारम् । पिटाकपिटकौ वंशदलादिसये भाण्डे । पिटाक्या ।
पिटक्या । वन्या (२) । गल्या । स्त्रीलिङ्गार्थमस्य पाठः । यप्रत्ययस्तु गोरथ्योऽजा-
देरित्यनेनैव सिद्धः । रथ्या ॥

स्नेहाद्बहन्तीक्षणमुत्कटाक्षावेश्येवशल्यंहृदयेदधाना ।

उच्चात्यमानानातुरगैः परैश्चस्थानाद्विरोधेनचचालरथ्या ॥

गोत्रारथकट्येत्यनेन गोत्रा । रथकट्या । शकट्या । वात्या । खलानां
पिशयाकानां धान्यसर्दनभूमीनां दुर्जनानां च समूहः खल्या । पोत्या । प्रवह-
णसंघातः । गलो मत्स्यबन्धनविशेषः । गल्या । नड्या । तृणसंघातः ॥ २५९ ॥

हलं जनः पटाकश्च ज्ञेयः षोटगलोऽपरैः ।

खलोकौ कुन्दुमोऽन्धेऽपि स्युः खलादौ प्रयोगतः ॥ २६० ॥

हत्या । भिक्षादिपाठात् हालम् । जन्या । ग्रामादिमूर्त्रेण जनतेति च ।
प्रयोगद्वयं धामनमतेन । पटाक्या । वैजयन्तीसमूहः । पोटिन संश्लेषेण पल-
ति पोटगलः । काशो नडश्च । पोटगत्या । अपरैरिति शाकटाद्यनप्रभृतिभिः ॥

इति पाशादिः ॥

खलानां समूहः खलिनी । खल्याऽपि । ऊककुन्दुमौ निचयार्थौ ।
ऊकिनी । कुन्दुमिनी ॥

यत्रैतास्तिलखलिनीशणोकिनीभिःशिप्रायास्तटमनुशालिकुन्दुमिन्यः ।

गोत्रावानिहतवसैन्यसंनिवेशःसार्धंग्रामतयत्ततीयतेऽत्रदेशे ॥

अन्येऽपीति कुलटाप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ २६० ॥ इति खलादिः ॥

तालो धनुषि प्रीयूक्षा कण्टकारी त्रिकण्टकः ।

श्यामाकपाटलाकाण्डा गोधूमेन्द्राविशाविमौ ॥ २६१ ॥

तालादेरित्यनेन तालादेर्गणात्पष्ठमन्ताद्विकारावयत्रयोरर्थयोरण् एव
भवति । तालस्य विकारः तालं धनुः । तालमयमन्यत् । पीलुवाची पीयूक्षमि-
ति(१) क्षपणकः । पीयूक्षायाः पीयूक्षम् । काण्टकारम् । त्रैकण्टकम् । श्यामा-
कस्योपधिविशेषस्य । श्यामाकी यवागूः । पाटला वृक्षः । तस्याः पाटलम् ।
पाटलिरिति भोजः । पाटलीत्यन्यः । काण्डं भस्म । गोधूमः । इन्द्राविशस्य
वनस्पतिविशेषस्य । ऐन्द्राविशः ॥ २६१ ॥

वर्हिणेन्द्रालिशौ मुञ्जो विल्ववेणुगवेधुकाः ।

कुटीरत्रीहिकर्पासीकर्कन्धूशिंशपेक्षवः ॥ २६२ ॥

वार्हिणम्(२) । इन्द्रालिशस्य वनस्पतिविशेषस्य । ऐन्द्रालिशः । मुञ्जस्य
विकारो मीञ्जी । यथा—पिशङ्गमीञ्जीयुजमर्जुनच्छविम् ॥
वैल्वः । वैणवः । गवेधुका । ओपधिः । तस्या गावेधुकः । कौटीरः । ब्रैहः ।
कार्पासः । कार्कन्धः । शंशपः । ऐक्षवः ॥ २६२ ॥

(१) पीयूक्षः—पीयूक्षा पीलुद्रुमः । तद्विकारः पीयूक्षमिति वर्द्धमानः ।

चापपीयूक्षेत्येकः शब्दइति तत्त्वयोधिनीस्वारस्यम् ।

(२) वार्हिणोऽयमवो वार्हिणं मयूरपुच्छम् । तद्विकारो वार्हिण इति टि० ।

चयखदिरमसूरान्(१) सीसकंसौ शिरीषं रजतचमरलोहान्
पीतदारुं पलाशम् । अपि च वचकरीरेन्द्रायुधस्पन्द-
नानि शृणु तदनु यवासोदुम्बरं तीव्रदारुम् ॥२६३॥

चायः (२)। खादिरः । मासूरः । सैसः । कांसः । शैरीषः । राजतः ।
कलशः । चामरम् । लौहः । पीतदारुः । पालाशः । वचस्य वंशविशेषस्य ।
वाचः । कारीरः । इन्द्रायुधस्य वनस्पतिविशेषस्य । ऐन्द्रायुधः । स्पान्दनः ।
यावासः । औदुम्बरः । तीव्रदारुः । श्लेष्मातकवृक्षविशेषवाची तीव्रदारु-
रित्यन्यः ॥ २६३ ॥

विकङ्कतश्च पूलासो(३) रोहीतकविभीतकौ ।

व्याघ्रकाञ्चनमर्थे स्याद्विकारेऽवयवे तथा ॥२६४॥

वैकङ्कतः । पीलासः (४)। रौहीतकः । वैभीतकः । व्याघ्रं चर्म । काञ्च-
नस्य विकारः—काञ्चनम् । यथा—

सकाञ्चनेयत्रमुनेरनुज्ञयानवास्बुदश्यामतनुर्न्यविक्षत ।

यथा वा । काञ्चनेनकिमिवास्यपत्रिणाकेवलंनसहतेविलङ्घनम् ।

ये तु नाधीयते तेऽभेदीपचारादेवान् काञ्चनशब्दः काञ्चनविकारे प्रयुक्त
इति समर्थयन्ति । तालादीनामादिवृद्धिमतां न्नित्यं मयटि प्राप्ते तदन्येषां तु
विकल्पितेऽण्वचनम् । अन्यमते स्वरश्च प्रयोजनम् । तालादिषु हैमशब्दो द्रष्टव्य
इति केषांचिन्मतम् । तथा च । तदखडमभवद्वैमस्मिति पुराणादौ । पादेन हैमं
विलिलेख पीठमिति कालिदासस्य । समुद्रोपत्यका हैमीति भट्टेः । अणि हि
प्रकृतिभावे सति हैमनमिति स्यात् । न च वाच्यम् अकारान्त एवायमिति
हेमः संलक्ष्यते ह्यनाविति कालिदासस्य—

येषामशेषभुवनाभरणस्यहेमस्तत्वंविवेक्तुमुपलाःपेरसंप्रमाणम् ॥

(१) चपखदिर० इति पा० । (२) चापं धनुः । चापी कोटिः । चयेति
क्वचित्पाठः ॥ (३) पूलाशो० इति पा० । (४) पौलाशः । पुलाकस्तुच्छधान्यम्—
पौलाकम् । पूलाक इत्यन्ये । पूलास इति पाठे पूलासो ग्रामविशेषस्तस्यैकदेशः
पौलास इति पा० ॥

इति च भलूटस्य प्रयोगे नकारान्तस्यैवोपलब्धेः । न च सुनित्रयेण साक्षादननुमतमित्येतावतोपेक्षापेक्षमेतदिति सुवचं बहुतरलद्वयकतिप्रसङ्गात् । तथाहि त्रिफलेत्यजादिषु सुनित्रयेणसाक्षादननुमतमित्यप्यभ्युपगतमेव । अङ्ग-
गात्रकण्ठेभ्यश्चेत्येतदपि सुनित्रयाप्रदर्शितमपि शिष्टैरिष्टमेव । शाकटायनोऽपि हेमादिभ्योऽजित्यनेनाज् विधानमन्त्याजादिप्रलुगर्थमाह तेन हैमं सारसनं (१) । हैमी यष्टिरिति सिद्धम् । सहृदयचक्रवर्तिना वामनेन तु हेम इति सूत्रेण विकारेऽर्थेऽन्त्याजादेर्लुक् कृत एव । अण्हेमार्थादित्यत्र मानव्यां वृत्तौ हैमी हेमसयी रशनेत्युदाहृतं च ॥२६४॥ इति तात्तादिः ॥

शरदर्भकुटीसोमा भवेतां तृणवत्वजौ ।

स्तो राजन्यात्मकामेयौ वैकर्णश्च वसातिना ॥२६५॥

शराद्येकाजप्राणिच्येवेत्यनेन मयट् । शराणां विकारोऽवयवो वा शर-
मयम् । दर्भमयम् । कुटीमयम् । सोममयम् । तृणमयम् । वत्वजमयम् ॥

येषांशरमयीदर्भमयीस्तृणमयीःकुटीः ।

कुटीमयीःसोममयीस्तावत्वजमयीःस्तुनः ॥ इति शरादिः ॥

राजन्यभौरिष्येषु कार्यादिभ्योऽकञ् विधभक्ता इत्यनेन तस्य राष्ट्रमित्यर्थे राजन्यादेरकञ् भौरिष्यादेर्विध ऐषुकार्यादिर्भक्त एते प्रत्ययाः क्रमेषु भवन्ति । राजन्यानां जनपदः राजन्यकः । पीठमर्दराजवयस्येषु रूढो राजन्यशब्द इत्यन्यः । आत्मकामेयकः । वैकर्णकः । विकर्ण इत्यन्यः । वासातकः । अत्रास्य पाठानङ्गीकाराद्वासातमित्यन्यः ॥ २६५ ॥

वाभ्रव्यानृतदेवयातवयुतो दाक्षायणो वातव—

स्तीव्रोदुम्बरमालवार्जुनफणः पुत्रोऽम्बरीषात्परः ।

शालङ्कायनदाक्षितेलुकलितौ वैराटशैलूपकौ—

त्रैगर्त्तश्च वसानवैत्ववनकौ स्यात्संप्रियस्तैत्वलः ॥२६६॥

वाभ्रवकम् । आनृतस्य (२) आनृतकः । आवृतक इत्यन्यः । देवयात-
वकः । देवयातश्च इत्यन्ये । देवयात इत्यपरे । दाक्षायणकः । वतोरप्रत्यं

(१) हेमगासनमिति पा० ॥

(२) अनृतस्य—आनृतकः । अत्रानृगशब्दस्तद्वृत्तिं वर्त्तने लक्षणपा इति पा० ।

वातवः । तस्य—वातवकः । वात्रव इत्यन्यः । तीव्रस्य—तैत्रकः । अस्य पाठो
 वामनमतेन । औदुम्बरकः । औदुम्बर इत्यन्यः । मालवस्य राज्ञः मालवकः ।
 अर्जुनफण इति । अर्जुनायन इत्यर्थः । तस्य अर्जुनायनकः । आम्बरीषपुत्र-
 कः । शालङ्कायनकः । दाक्षकः । तेलोः तैलवकः । अस्य पाठो वामनमतेन ।
 वैराटको राजा । विराट इत्यन्यः । शैलूषकः । शैलूपज इति दिग्वासाः ।
 त्रैगर्तकः । त्रिगर्त इत्यन्यः । वासानकः । बिल्ववने भवो जातो वा । वैत्व
 वनः । तस्य वैत्ववनकः । शैलूषवैत्ववनशब्दौ सूत्रे कप्रत्ययान्तौ निर्दिष्टौ ।
 सान्प्रियकः । सन्प्रिया दाक्षी च नाम्ना स्त्री पुरुषो वा राजा । तस्य—सांप्रि-
 यकः । दाक्षक इति तु वामनः । तैत्वलकः । वैत्वल इत्यन्यः ॥

आकृतिगणायम् । तेन जालन्धरायणः । और्णनाभः । जालन्धरः ।
 कौत्तालप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥२६६॥ इति राजन्यादिः ॥

भौरिकिसैकयतावथचैकयतो भौलिकिश्च काण्यः ।

चौपयतश्चैटयतो वाणिजको वालिकाज्यश्च ॥ २६७ ॥

भौरिकीणां राज्ञां जनपदः भौरिकिविधम् । विधभक्तप्रत्ययान्तानां
 स्वभावान्पुंसकलिङ्गतैव । चन्दाद्याः पुंस्त्वमपि दर्शयन्ति । सैकयतविधम् ।
 चैकयतविधम् । क्षैजयतचौदयतावित्यपि कश्चित् । भौलिकिविधम् । काण्यवि-
 धम् । चौपयतविधम् । चैटयतविधम् । वाणिजोऽपत्यं वाणिजः । के वाणि-
 जकः । तस्य वाणिजकविधम् । वालिकाज्यस्याऽपत्यं कुरुकोसलेत्यादिना ययचि ।
 वालिकाज्यः । तस्य वालिकाज्यविधम् ॥ २६७ ॥ इति भौरिक्यादिः ॥

ऐषुकारिः शयणडश्च सौवीरो वैश्वमानवः ।

दासमित्रिर्नडः शौण्डः शायणडो वैश्वधेनवः ॥ २६८ ॥

इषुकारस्यापत्यानि ऐषुकारयो राजानः । तेषां जनपदः । ऐषुकारिभ-
 क्तम् । शयणडभक्तम् । शयाश्च इत्यपि भोजः । सौवीरभुक्तम् । वैश्वमानव-
 भक्तम् । वैश्वमाणव इत्यन्यः । दासमित्रिभक्तम् । दासमित्र इत्यन्यः । नडभ-
 क्तम् । शौण्डभक्तम् । शायणडभक्तम् । शायण्डिरित्यन्यः । वैश्वधेनवभक्तम् ।
 अन्ये तु वैश्वभक्तं धेनवभक्तमिति पृथगाहुः ॥२६८॥

द्व्यक्षत्र्यक्षौ दासमित्रौडचान्द्राः खाडः शौद्रौ
 दाक्षिसारस्यजौलाः । शायणडोऽथो तार्क्ष्यशौभ्रौ
 फणन्ता एते ज्ञेया विश्वतुण्डाञ्च देवः ॥ २६९ ॥

द्व्यक्षायणभक्तम् । त्र्यक्षायणभक्तम् । गणपाठाद्बृह्ध्वभावः । द्वाक्षा-
 यणः । त्र्याक्षायण इत्यन्यः । दासमित्रायणभक्तम् । औडायनभक्तम् । चान्द्रा-
 यणभक्तम् । खाडायनभक्तम् । खादायन इत्यन्यः । शौद्रायणभक्तम् । शौद्रका-
 यण इत्यन्ये । दाक्षायणभक्तम् । राजन्यादिपाठाद् दाक्षायणकम् । सारस्याय-
 नभक्तम् । जौलायनभक्तम् । शायणडायनभक्तम् । तार्क्ष्यायणभक्तम् । शकटा-
 ङ्गजमतेन । सौभ्रायणभक्तम् । चन्द्रमतेन । वैश्वदेवभक्तम् । तुण्डदेवभक्तम् ।
 अन्ये तु विश्वभक्तं तुण्डभक्तं देवभक्तमित्याहुः । इत्यैषुकार्यादिः ॥२६९॥

नडप्लक्षकपोतेक्षुकाष्ठत्रिवेत्रवेतसाः ।

कृतह्रस्वन्लुचौ क्रुश्चातक्षाणौ बिल्ववेणु च ॥२७०॥

नडादेः कुकु ङ इत्यनेन नडादेश्चातुरर्थिकश्लो भवति । नडा अत्र देशे
 सन्ति नडकीयः । नड्वल इति च । प्लक्षकीयः । कपोतकीयः । इक्षुकीयः ।
 फाष्टकीयः । त्रिभिर्ऋषिभिर्निर्वृत्तं नगरम् । त्रिकीयम् । वेत्रकीयः । वेतसकीयः ।
 क्रुञ्चकीयः । तक्षणा निर्वृत्तस्तक्षणां निवासः तक्षकीयः । बिल्वकीयः । वेणु-
 कीयः । छान्तं केचित्पुंसुदाहरन्ति । अपरे स्त्रियाम् ॥२७०॥ इति नडादिः ॥

अश्रमयूथनददर्भर्शिखोपा वृन्दकन्दगुदकाण्डकुलानि ।

मीनगह्वगुडकुण्डलखण्डाः पीनपामनगकोटगुहाश्च ॥ २७१ ॥

रादयोऽश्रमादिभ्य इत्यनेनाश्रमादिभ्योऽष्टादशभ्यो गणेभ्यश्चातुरर्थिका
 यथायथं र इत्यादयोऽष्टादश प्रत्यया भवन्ति । अश्रमानोऽत्र देशे सन्ति । अ-
 श्रमरम् । एवं यूथरम् ॥ यूप इत्यन्यः । नदरम् । दर्भरम् । शिखरम् । ड्राट्त्वे
 ङ्गम्यत्र गह्वगमित्यनेन गह्वरत्वे सति । गह्वरत्वं नेत्यन्यः । ऊपरम् । वृन्दरम् ।
 कन्दरम् । गुदरम् । फाण्डरम् । फुण्डरम् । मीनरम् । गह्वरम् । गुहरम् ।
 कुण्डलरम् । वागनमतेन । खण्डरम् । पीनरम् । घामनमतेन । घामरम् ।
 नगरम् । कोटरम् । गुण्डरम् । गह्वरत्वं नेत्यन्यः ॥२७१॥ इत्यश्रमादिः ॥

सखिकरवीराशोका वासवसख्यप्रिवायुतो दत्तः ।

छगलो गोफिलदत्तौ भृष्टः पुरपालवज्राश्व ॥ २७२ ॥

सख्यादेर्ढण् । सख्या पुरुषविशेषेण निर्वृत्तम् । साख्यं नगरं मण्डलं वा । कारवीरेयम् । वैरेयमित्यन्ये । आशोकेयम् । वासवदत्तेयम् । साखिदत्तेयम् । आग्निदत्तेयम् । वायुदत्तेयम् । छगलो मुनिश्छागलश्च । छागलेयम् । गोफिलेयम् । गोभिल इति भोजः । दात्तेयम् । भाल्लेयम् । अन्त्यजातिभिर्भ्रू इत्यन्यः । भल्लपालइति समस्तं भोजः । पौरैयम् । पालेयम् । वाज्रैयम् ॥२७२॥

कदलस्तमालरोहौ सप्तलचक्रौ कुशीरकः सरकः ।

सुरसः सीकरसमलौ सरमसरसचीरचक्रवाकाश्व ॥२७३॥

कादलेयम् । तामालेयम् । रौह्येयम् । सामलेयम् । चाक्रेयम् । कौशीरकेयम् । शीरक इत्यन्यः । सारकेयम् । सौरसेयम् । सैकरेयम् । वामनसतेन । सामलेयम् । सारमेयम् । सारसेयम् । चैरेयम् । वीर इत्यन्ये । चाक्रवाकेयम् ॥

एते सख्यादयः प्रायः पुंविशेषवृत्तयः । ततस्तन्निवासेऽपि ढण् विधेयः । करवीरसीकरचक्रछगलप्रभृतयः स्वार्थवृत्तयः । तेषां च तदत्रास्तीत्यर्थे प्रत्ययः ॥ २७३ ॥ इति सख्यादिः ॥

संकाशकश्मीरपचारनासाश्रूडारयूपौ पलितानुनाशौ ।

मन्दारकूटौ दशकोविदारशीर्षाश्मतीर्थेऽशमडारकुम्भाः ॥२७४॥

संकाशादेश्यः । संकाशेन राज्ञा निर्वृत्तम् । सांकाश्यम् । काश्मीर्यम् । पाचार्य्यम् । वामनसतेन । नास्यम् । चौडार्य्यम् । सूपा अस्मिन् सन्ति यौष्यम् । पालित्यम् । आनुनाश्यम् । वामनसतेन । मन्दाराणामदूरभवं मान्दार्य्यम् । कौत्थ्यम् । कुट इत्यन्यः । दशस्य दाश्यम् । कौविदार्य्यम् । शैर्ष्यम् । आश्मन्यम् । तैर्ष्यम् । श्रांश्यम् । साडार्य्यम् । मजार इत्यन्यः । कौम्भ्यम् ॥२७४॥

नाशिकासरकसूरचिरन्ताः कम्पिलः समलखण्डितसीराः ।

पञ्जरप्रगदिनाथनलाङ्गा रोमलोमपुलिना मगदी च ॥२७५॥

नाशिका नाम राक्षसी । तस्या निवासस्तथा निर्वृत्तं वा । नाशिक्यम्(१) । सारक्यम् । सौर्य्यम् । चैरन्त्यम् । काम्पिल्यम् । कम्पील इत्यन्यः । समलेन

निर्वृत्तम् सामल्यम् । खाण्डित्यम् । सैर्यम् । पाञ्चर्यम् । प्रागद्यम् । नगरं
देशी वा । नाथ्यम् । नाल्यम् । आङ्ग्यम् । रौमण्यम् । लौमन्यम् । पौलिन्यम् ।
मागद्यम् । नगरं देशी वा ॥ २७५ ॥

सुपरिः कटिपः कलिवो मलिनागस्ती सकर्णको वृष्टिः ।

पन्थादेशः सुपथी मादितविकरौ च सूरसेनश्च ॥ २७६ ॥

सुपरिः कश्चिद्वाजा । तेन निर्वृत्तम् । सौपर्यम् । काटिष्यम् । कालिव्यम् ।
कलित इत्यन्ये । सालिन्यम् । अगस्तिकुण्डिन्योरगस्तिकुण्डिनी वेति श्लुचि ।
अगस्तीनां निवासः । आगस्त्यम् । अन्ये त्वगस्त्यस्यापत्यम् आगस्त्यः ।
ऋष्यणि । तस्यागस्त्यम् । साकर्णव्यम् । वृष्टिना निर्वृत्तम् वार्ष्ट्यम् । सृष्टिर्नाम
काचित्स्त्री । तस्या निवासो माष्ट्यमित्यपरे । सुपथोऽदूरभवं सुपथं यात्रास्तीति
सौपथ्यम् । मादिता स्त्री काचिदित्यन्यः । वैकर्यम् । सौरसेन्यम् । गोमिल-
चक्रचक्रवाकाशोकच्छगलकुशीरकयमलमुखमन्मथशब्दानभयनन्दी गणोऽस्मिन्
ददर्श ॥ २७६ ॥ इति संकाशादिः ॥

बलश्रुलः पुलोलौ च नलो दुलदलौ वनम् ।

वडशब्दः कुलं मूलं लकुलोरलसंयुतम् ॥ २७७ ॥

वलादिर्यः । वलेन निर्वृत्ता । बल्या नाम नगरी । एवं चल्या । पुल्या ।
वामनमतेन । तुल इति शाकंठायनः । चल्या । नल्या । दुल्या । दल्या ।
वन्या । वड्या । वामनमतेन । कुल्या । मूल्या । मुल इत्यन्ये । लकुलवा ।
उरल्या । एते यमत्पयान्ताः स्त्रीलिङ्गाः । अन्ये तु वल्यादीनां नपुंसकता-
माहुः ॥ २७७ ॥ इति वलादिः ॥

पक्षतुपचित्रकुम्भाः कुण्डोमकराण्डहंसका रोम ।

लोमसुवर्णकसमलाः कम्बलिकाकुत्ससकलाश्च ॥ २७८ ॥

पक्षादेः ऋण् । पक्षेण निर्वृत्तं पक्षस्य निवासो वा । पाक्षायणं नगरं
राष्ट्रं वा । तौपायणम् । तुल इति वामनः । चित्रायणम् । चित्रेत्यन्यः ।
कौम्भायणम् । कौण्डायणम् । नाकरायणम् । वामनमतेन । आयुष्टायणम् ।
टांसकायणम् । रौमायणः । लौमायनः । सौवर्णकायनः । वामनमतेन ।
सामनायनः । काम्बलिकायनः । कौत्सायनः । वामनमतेन । साकलायनः ॥ २७८ ॥

पन्थादेशे विहिते पन्थिनशब्दो निगद्यते कृतिभिः ।

यमलबिलहस्तिहस्ताःसिंहकसरकौ खिलास्त्यतिश्वानः॥२७९॥

पान्थायनः । यामलायनः । बैलायनः । हास्तिनायनः । हास्लायनः ।
सैहकायनः । सारकायणः । खैलायनः । आस्तायनः । द्वयं वामनमतेन
आतिश्वायनः । अतिश्व इत्यन्यः ॥ २७९ ॥

सीरको लोमकः शीर्षनिवातौ च सकर्णकः ।

अंशुकः(१) सरसः पाकः सहको वलिकः कला ॥२८०॥

सैरकायणः(२) । लौमकायनः । शीर्षायणः । नैवातायनः । वामनमतेन ।
साकर्णकायनः । आंशुकायनः(३) । सारसायनः । पाकायनः । साहकायनः ।
वालिकायनः । कालायनः ॥ २८० ॥ इति पक्षादिः ॥

कर्णार्कजीवन्तजवानडुह्या आण्डीवतोऽथ द्रुपदश्च जैत्रः ।

शिफगर्कलूषाकनपाञ्चजन्याः कुन्तीवशिष्टःकुलिशश्चजित्वा २८१

कर्णादेः फिज् । कर्णेन निर्वृत्तः । कर्णस्य निवासो वा । कार्णायनिः ।
अर्को गुल्मः स्फटिकश्च । आर्कायणिः । जीवन्त ऋषिः । जैवन्तायनिः । जावा-
यनिः । वामनमतेन । आनडुह्यायनिः । आण्डीवतायनिः । आण्डीवदित्यन्यः ।
द्रुपदायनिः । जैत्रायणिः । स्फैजायनिः । फिगेत्यन्यः । अर्कलूषऋषिः । आ-
र्कलूषायणिः । अन्ये त्वर्कलुष इति । आकनायनिः । आकिनी स्त्रीत्यन्यः ।
पाञ्चजन्यायनिः । कौन्तायनिः । कुम्भी कुम्भो वेत्यपरे । वाशिष्ठायनिः (४) ।
कौलिशायनिः । जित्वा धर्मः जैत्रायनिः(५) । जित्येत्यन्यः॥२८१॥इति कर्णादिः॥

ज्ञेयाः सुतङ्गमाजिरजीवार्जुनविप्रचित्तमुनिचित्ताः ।

श्वन्शुक्रमर्हापुत्राः स्वण्डिककर्णौ महाचित्तः ॥ २८२ ॥

सुतंगतादेरिज् । सुतंगमेन निर्वृत्तं सुतंगमस्य निवासो वा । सौतंगमिः ।
आजिरिः । जैविः । अर्जुनं तृणं अर्जुनश्च पार्थः । अर्जुनिः । वैप्रचित्तिः ।

(१) अंशुक इति पा० । (२) सैरकायण इति पा० । (३) आंशुकायन-
इति पा० । (४) वाशिष्ठायनिरिति पा० । (५) जित्वनां निवासो जैत्रायनि-
रित्यधिकम् ।

सौनिधित्तिः । शौवनिः । शौक्रिः । साहापुत्रिः । खाण्डिकिः । वामनमतेन(१)
खण्डितइत्यन्यः । कार्णिः । साहाधित्तिः ॥ २८२ ॥

बीजवापिस्वनश्वेतगडिकाविग्रविग्रहौ ।

एषां सुतंगमादित्वादिजूचे चातुरर्थिकः ॥ २८३ ॥

वैजवापिः । अन्ये तु बीजइति वापिन्निति पृथगाहुः । स्वानिः ।
वामनमतेन । श्वैतिः । गाडिकिः । गदिक इत्यन्यः । वैग्रिः । वैग्रहिः । चा-
तुरर्थिक इति निवासोऽदूरभवो नास्ति देशे तेन निर्वृत्तरतदत्रास्ति च ॥ २८३ ॥

इति सुतङ्गमादिः ॥

वराहबाहू अथ शर्करा निमग्नः शिरीषश्च तथाविदग्धः ।

ज्ञेयो वलाहः खदिरो विभग्नः स्थूलः पलाशः पिनिनद्वबद्धौ २८४

वराहादेः कज् । वराहा अत्र देशे सन्ति । वाराहकम् । बाहुकम् ।
शार्करकम् । वत्वजादिपाठाद्दः । शर्करिकम् । शर्करायाष्टण्छौ वेत्यनेन
शार्करिकम् । शर्करीयम् । शार्करम् । शर्कराइति देशमञ्जास्वभावाद्भेदोपचा-
राद्वा । नैमग्नकम् । शैरीपकम् । वैदग्धकम् । विजग्ध इत्यप्यन्यः । वालाह-
कम् । खादिरकम् । वैभग्नकम् । विभक्त इत्यन्ये । स्थूलकम् । पालाशकम् ।
पिनिनद्वबद्धाविति पिनिभ्यां नद्वबद्धौ क्रमेण ज्ञेयावित्यर्थः । पेनद्वकम् ।
नैयद्वकम् ॥ २८४ ॥ इति वराहादिः ॥

कुमुदं कुण्डलकूटौ मुनिस्थलाश्वत्थघासकुन्दाश्च ।

मधुकर्णदशग्रामौ शाल्मलिरथकारगोमठशिरीषाः ॥ २८५ ॥

कुमुदादेष्टज् । कुमुदान्यत्र देशे सन्ति । कौमुदिकम् । कौण्डलिकम् ।
कौटिकम् । कूर्ण इत्यन्यः । सौनिस्थलिकम् । मुनिः स्थलश्चेत्यन्ये (२) ।
आश्वत्थिकम् । घासकुन्दिकम् । माधुकर्णिकम् । मुचुर्कर्णइति शकटाङ्गजः ।
शुधिकर्ण इत्यभयनन्दी । विग्रहीतादपीप्यते । माधुकम् । कार्णिकम् । दाश-
ग्रामिकम् । शाल्मलिकम् ॥ रथकारेण निर्वृत्तं तस्य निवानो वा । रथकारि-
कम् । गोमठिकम् । पर्वतो ह्रदो वा । गोमेध इत्यन्ये । शैरीपिकम् । अरीह-

(१) खाण्डिकिः । खाण्डिकिग्रामनमतेनेति पा० ।

(२) मुनिश्चवइति पाठे । सौनिकम् । उर्वा द्यागाश्चद्व्याधिकमिति पा० ।

शादिपाठाच्छैरीषम् । शिरीषा इति बहुवचनान्तः । संज्ञावाची स्वभावात् सी-
ज्यमिति सम्बन्धाद्वा । शार्करिकशब्दः पृथक् सूत्रेण सिद्धइति नात्र पाठः २२५
इति कुमुदादिः ॥

अरीहणोद्वण्डविपाशिशंशपाभलन्दनोदञ्चनखाण्डवीरणाः ।

सुयज्ञजम्बूकशकृत्स्नरैवताः शिरीषबिल्वौबधिरोऽथजाम्बवान् ॥

अरीहणादेरकञ् । अरीहणेन निर्वृत्तम् । आरीहणकम् । औद्वण्डकम् ।
वैपाशकम् । शिंशपानां वृक्षविशेषाणामदूरभवं । शिंशपा अत्र सन्तीति वा ।
शांशपकम् । देविकाशिंपाश्रेयोदीर्घसत्रस्यादित्यनेनैकारस्याकारः । भालन्द-
नकम् । औदञ्चनकम् । खाण्डवैरणकम् (१) । सौयज्ञकम् । जाम्बवकम् ।
काशकृत्स्नकम् । काशकृत्स्न इति भोजः । रायावतो रैवतः । रैवतइत्यन्ये ।
रैवतकः पर्वतः । शैरीषकम् । बिल्वकम् । बाधिरकम् । जाम्बवता निर्वृत्तम् ।
जाम्बवतकम् । अन्ये जाम्बवतोऽपत्यं जाम्बवत इत्याहुः ॥ २२६ ॥

खाण्डगौमतमैत्रोष्ट्रैर्गता वैमतस्तथा ।

शाण्डिल्यसांपरौ भास्त्र आयनान्ता अमी मताः ॥ २८७ ॥

खाण्डायनकम् । गौमतायनकम् । मैत्रायणकम् । श्वैत्रायणक इत्यपरः ।
औष्ट्रायणकम् । त्रैगर्तायनकम् ॥ वैमतायनकम् । शाण्डिल्यायनकम् । सांप-
रायणकम् । भास्त्रायणकम् ॥ २८७ ॥

खद्विरो विपथः खण्डुर्भगलो द्रुघणास्तथा ।

सुशर्मकनलोलन्दा(२) रायस्पोषश्च वीरणाः ॥ २८८ ॥

खादिरकम् । वैपथकम् । खण्डुना निर्वृत्तम् । खाण्डवकम् । खण्डूरि-
त्यन्यः । भागलकम् । द्रुघणा अत्र सन्ति । द्रौघणकमिति वामनः । द्रुहणाइति
भोजः । सौशर्मकम् । कानलकम्(३) । औलन्दकम् । रायः पोषः । रायस्पोषः ।
अतएव निपातनाद्धिभक्तेरलुग्विसर्गस्य सकारः । रायस्पोषकम् । वैरणकम् ॥ २८८ ॥

(१) खाण्डवैरणकम् । खाण्डवैरणकमिति केचित् । अनुशतिकादेरा-
कृतिगणत्वादिति पा० । (२) सुशर्मकतलो० इति पा० ।

(३) सौशर्मिकम् । वप्रतलकमिति पा०

किरणो यज्ञदत्तश्च दलता सौमतायनः ।

कौष्ट्रधौमतरसौमैन्द्रसौसकौद्राः फणन्तकाः ॥ २८९ ॥

किरणकम् । याज्ञदत्तकम् । दलत्रा निर्वृत्तं दलतुः पर्वतस्य वादूरभवम् ।
दालत्रकम् । सौमतायनकम् । कौष्ट्रायणकम् । धूमतस्यांपत्यं धौमतिः । तस्या-
पत्यं युवा धौमतायनः । तस्य (१) धौमतायनकम् । सोमस्य सौमायनकम् ।
इन्द्रस्य । ऐन्द्रायणकम् । सुष्टु स्यतीति सुसः । तस्य सौसायनकम् । कुद्रस्य
कौद्रायणकम् । एतेषां धौमतायनवत्प्रक्रिया ॥ २८९ ॥ इत्यरीहणादिः ॥

कृशाश्वकूटाजिनवेश्मलोमशा विशालधूमौ सुकरश्च वर्चलः ।

अरिष्टमौद्गल्यपराशरारूपः सुवर्चलारिष्टमपुरारसूकराः २९०

कृशाश्वदेश्मण् । कृशाश्वेन निर्वृत्तम् कार्शाश्वीयम् । कौटीयम् ।
आजिनीयम् । वैशमीयम् । लौमशीयम् । वैशालीयम् । धौमीयम् । सौक-
रीयम् । वार्चलीयम् । वर्तुलइत्यन्ये (२) । आरिष्टीयम् । मौद्गलीयम् । पारा-
शरीयम् । आरुषीयम् । सौवर्चलीयम् । आरिष्टमीयम् । आरिष्य इत्यन्यः ।
पौरारीयम् । वामनमतेन । सौकरीयम् (३) ॥ २९० ॥

अवनतसदृशायोरोमका लोमकश्च प्रतरसुखविविक्तासायसाः
पूतरश्च । विनतपुरगदांसीपूकराः पूगरश्चाऽजिनतसतुलवेण्ये-
रोऽरसा धूकरश्च ॥ २९१ ॥

आवनतीयम् । सादृशीयम् । आयसीयम् । रोमकीयम् । लौमकीयम् ।
प्रातर्रीयम् । सौखीयम् । सिपल इत्यन्ये । विविक्तीयम् ॥ आसायसीयम् ।
सायसइत्यन्यः । पूतरो जलजन्तुः । पीतरीयम् ॥ त्रयं वामनमतेन ॥ वैनती-
यम् । पीरगीयम् । पुरगा नाम काचिद्राक्षसी तथा भक्षितं पाटलिपुत्रं तस्या
निवासः पीरगीयमित्यन्यः ॥ दासीयम् । पुष्यं करोति पूकरः । तस्य पीकरी-
यम् । पूगान्यस्य सन्ति पूगरः । तस्य पीगरीयम् । आजिनतीयम् । सातुलीयम् ।

(१) धौमतायनः । तस्य धौमतायनकमिति पा० । (२) वर्तुलशब्दं
केचिरपेटुः । वार्चुलीयम् इति पा० । (३) शौकरीयम् इति पा० ।

वामनमतेन । वैष्यीयम् । ऐरसीयम् । आरसीयम् (१) । धौकरीयम् । केचि-
त्पुंलिङ्गमपरे तु स्त्रीलिङ्गमुदाहरन्ति ॥ २९१ ॥

विकुट्यासासुरावेतौ शबलश्राभितो जनः ।

रोमशश्च कशाश्वादौ ज्ञेयाश्छण्प्रत्ययान्युते ॥ २९२ ॥

वैकुट्यासीयम् (२) । विकुट्यइत्यन्ये । आसुरीयम् । शाबलीयम् ।
आभिजनीयम् । रोमशीयम् ॥ २९२ ॥ इति कशाश्वादिः ॥

ऋश्यस्थूलनिलीनकर्दमशरा बाहुर्निधानाशनि—

न्यग्रोधः परिगूढखण्डखदिरा वेणुः सितः शर्करा ।

अश्मांशू परिवंशवीरणमता वेश्मोपगूढाविमौ—

दण्डश्चानडुहोत्तराश्मपरितो वृत्तोनिबन्धारडू ॥ २९३ ॥

ऋश्यादेः कः । ऋश्या अत्र देशे सन्ति । ऋश्यैर्निर्वृत्तं वा । ऋश्य-
कम् । स्थूलकम् । निलीनकम् । कर्दमकम् । शरकम् । बाहुकम् । निधान-
कम् (३) । अशनिकम् । न्यग्रोधकम् । परिगूढकम् । खण्डकम् । खदिरकम् ।
वेणुकम् । सितकम् । शर्करकम् । अश्मकम् । अंशुकम् । परिवंशकम् । वीर-
णकम् । वेश्मकम् । उपगूढकम् । दण्डकम् । अनडुहोत्तराश्मेति
समाहारद्वन्द्वः । अनडुहकम् (४) । उत्तराश्मकम् । परितोवृत्तइति परिवृ-
त्तइत्यर्थः । तस्य परिवृत्तकम् । निबन्धकम् ॥ अरुहुस्तस्त्विविशेषः । तस्य अर-
डुकम् ॥ २९३ ॥ इत्यृश्यादिः ॥

बल्वजः कूपबीजे च यवासेककटकडूकटाः ।

शिरीषः शकंटाश्वत्थपरिवापविकडूकतम् ॥ २९४ ॥

बल्वजादेरिकः । बल्वजा अत्र देशे सन्ति । बल्वजिकम् । कूपिकम् ।
बीजिकम् । यवासिकम् । यवापइत्यन्यः । इक्कटिकम् । कडूकटः संनाहः सीमा

(१) औरसीयमिति कश्चित् । (२) वैकुट्याशीयमिति पा० । (३) विधान
इत्यन्ये । (४) आनडुहोत्तर०, आनडुहकमिति ।

च कङ्कटिकम् । शिरीषिकम् । शकटिकम् । अश्वत्थिकम् । परिधापिकम् ।
विकङ्कतिकम् ॥ २९४ ॥

शर्कराऽथ दशग्रामो न्यग्रोधः कुमुदं कंचः ।

मध्यश्वसंकटा गर्त्तनिर्यासौ गदिताविह ॥ २९५ ॥

शर्करिकम् । दशग्रामिकम् । न्यग्रोधिकम् । कुमुदिकम् । कंचिकम् ।
मधुकम् । अश्विकम् । द्वयं वामनमतेन । संकटिकम् । गर्त्तिकम् । निर्यासि-
कम् । केचिद्बलवजिकाकुमुदिकेत्यादिस्त्रीलिङ्गमुदाहरन्ति तत्र लोकः प्रमाणम्
॥ २९५ ॥ इति बलवजादिः ॥

काशापाशातृणाश्वत्याः पलाशवनकङ्कटाः ।

वासकर्दमपीयूक्षा गुहाकर्पूरबर्बराः ॥ २९६ ॥

काशादेरिलः । काशस्तृणाविशेषः । काशा अत्र सन्ति । काशिलम् ।
पाशिलम् । तृणिलम् । अश्वत्थिलम् । पलाशिलम् । वनिलम् । कङ्कटिलम् (१)
वासो गुल्मविशेषः । वास्यन्ते रुवन्तीति वासाः पक्षिण इत्यन्यः । वासिलम् ।
कर्दमिलम् । पीयूक्षिलम् । गुहिलम् । कर्पूरिलम् । बर्बरो म्लेच्छजातिः ।
बर्बरिलम् ॥ २९६ ॥

मधुरग्रहवच्छूलाः कपित्थश्वरणो विसः ।

नडोऽथ जतुसीपालौ गणो काशादिसंज्ञिते ॥ २९७ ॥

मधुरिलम् । ग्रहिलम् । वच्छूलिलम् । कपित्थिलम् । श्वरिलम् ।
विसिलम् । नडिलम् । जंतविलम् । सीपालिलम् (२) ॥ २९७ ॥ इति काशादिः ॥

तृणमूलसुवर्णार्णा वराणवर्णौ वनार्जुनौ पर्णम् ।

नडवलबिलबुलचरणा वुसः फलं चात्र विज्ञेयम् ॥ २९८ ॥

तृणादेः सः । तृणान्यस्मिन्देशे सन्ति । तृणसा नदी नगरी सरसी
पर्वतिका । मूलसा । सुवर्णसा । अर्णो जलम् । तदत्रास्तीति । अर्णसा नदी ।
पाठमानशर्पात्सलोपः । अर्ण इत्यकारान्ता प्रकृतिरित्यन्ये (३) । वराण इति

(१) कण्टकिलमिति पा० । (२) सीपालो नाम कश्चित्तेन निर्वृत्तं सीपा-
लिकमिति पा० । (३) गणे लुप्तसकारस्योपादानासकारनिवृत्तिः । अदन्त
एवायमित्यन्ये इति पा० ।

वीरगाभिधानम् । तदस्तित्वाद् वराणसी । तस्या अदूरधवा वाराणसी नग-
री । वराणसी देशस्तत्र भवा वाराणसी नगरीत्यन्ये । वर्ण इति वीरगाख्या
वर्णसा । वनमा । अर्जुनसा दिग्बस्त्रमतेन । जन इति शकटाङ्गजः । पर्णसा ।
नडसा । बलसा । विलसा । पुलसा । वरणसा । बुससा । फलसा । दिग्ब-
स्त्रमतेन ॥२९८॥ इति तृणादिः ॥

प्रेक्षा स्यात्परिवापसंकटकटाः कूपो यवासः पुटः—

संलक्ष्या ध्रुवका महश्च ध्रुवका कैश्चित्कपिः कोविदैः ।

ज्ञेयः कङ्कटवन्धुकापुकबुका गर्तेकटौ कूपको—

न्यग्रोधक्षिपकाहिरण्यफलकाः प्रेक्षादिरेवं गणः ॥२९९॥

प्रेक्षादेरिन् । प्रेक्षा बुद्धिः । तथा हेतुना निर्वृत्तः । प्रेक्षी ग्रामः । अथवा
प्रेक्षा अत्र सन्ति । प्रेक्षी देशः । प्रेक्षाशब्दं यद्यपि प्रेक्षणावाची तथाप्यत्र पक्षे
रूढिनो नदीसगरीत्यत्यादिवृत्तिर्द्रष्टव्यः । परिवापो वीजनिक्षेपः । परि-
वापी । सङ्कटं सङ्कीर्णता । सङ्कटी । कटः पर्यन्तः । कटी । कूपी । यवासो
दुःस्पर्शः । यवासी । पुटी=ध्रुवका । आवपनविशेषः । ध्रुवकी । मह उत्सवः
मही । ध्रुवका=आवपनविशेषः । ध्रुवकी । कैश्चिदिति दिग्बस्त्रप्रभृतिभिः
कपिशब्दः संनक्ष्यः । कपी । कङ्कटः । सन्नाहः । कङ्कटी । बन्धुरेव बन्धुका ।
बन्धुकी । पुको दानम् । पुकी । बुको हास्यम् । बुकी । गर्तेऽवटः । गर्ती ।
इकटं चपकः । इकटी । कूपको गुणावृक्षः । कूपकी । न्यग्रोधो वटः । न्यग्रोधी ।
क्षिपका—आयुधम् । क्षिपकी । हिरण्यं सुवर्णम् । हिरण्यी ॥ फलकम् (१) ।
आकाङ्क्षितभिद्धिरावरणं वा । फलकी । कूपगर्तपरिवापयवासहिरण्यशब्दाः
शकटाङ्गजमतेनोपात्ताः ॥२९९॥ इति प्रेक्षादिः ॥

मधिवक्षू शररीमवेणुमरुतः शक्तीष्टकारिष्टयो—

वार्दालीशकलाकरीरकिशरासन्दीशलाकाहिमाः ॥

स्थाणुस्तक्षशिलाविसासुतिशमीसर्याणपार्दामिपी—

कर्कन्ध्रुवटवेटऋष्यरुमणो वल्मीकपीडाखडाः ॥३००॥

(१) हलका पुराविशेषज्ञस्यादूरभवो हलकी ग्रामइत्यधिकम् ।

मध्वादेर्मत् । मधु पुष्परसादिः । तदत्र देशेऽस्ति । मधुमान् देशः ।
 इक्षू रसालः । इक्षुमान् । शरो मुञ्जुः । शरावान् । शरादीत्यादिना दीर्घत्वे ॥
 शरुरित्यन्यः । रोम तनूरुहम् । रोमवान् । वेणुमान् । मरुतो देवा वायुश्च ।
 मरुत्वान् । शक्तिः प्रहरणम् । शक्तिमान् । शुक्तिरित्यन्यः । इष्टका मृत्तिकारः ।
 इष्टकावान् । रिष्टिश्चन्द्रहासः । रिष्टिमान् । मदिराजातीयः सन्धानविशेषो
 रिष्टिश्च इति वामनः । वार्दाली । ओषधिविशेषः वार्दालीवान् । पार्दाली-
 त्येके । शकली मत्स्यः । शकलावान् । कृतदीर्घोऽयं पठितः । शकलीवानि-
 त्यन्ये । करीरो वृक्षविशेषः । करीरवान् । किशरो गन्धद्रव्यम् । किशरावान्
 तृणजातिः । किशरुरित्यन्यः । आसन्दी वेत्रासनम् । आसन्दीवान् । शलाका-
 एषणी पूरणरेखा द्यूतोपकरणं च । शलाकावान् । हिमं तुहिनम् । हिमवान् ।
 स्याणुमान् । यवादेराकृतिगणत्वाद्गन्धभावाः । तक्षशिला नगरी । तक्षशिला-
 वान् । अक्षशिलेत्यन्यः । अक्षवान् । शिलावानित्येके । बिसवान् । आसुतिः
 सोमरसः । आसुतिमान् । आसुतीवानिति वामनाद्याः । ते ह्यासुतीशब्दं
 पठन्ति । सुत्येत्यन्यः । शमी वृक्षः । शमीवान् । सय्याणः पर्वतः । सय्याणावान् ॥
 सार्याण इत्यन्ये ॥ पार्दो वृक्षः । पार्दोवान् । पार्दोनाम काचित्स्त्रीत्यन्ये ।
 आनिषी । ओषधिः । आनिषीवान् । कर्कन्धूः क्षुद्रबदरी । कर्कन्धूमान् । कर्क-
 न्धुरित्यन्यः । वटो न्यग्रोधः । वटावान् । वेटः पीलुवृक्षः । वेटावान् । ऋष्यो
 मृगविशेषः । ऋष्यावान् । रुमाल्लवणविशेषस्तस्मिन् विशेषो वा । रुमवान् । रुव-
 दित्यन्यः । वल्मीको नाकुः । वल्मीकावान् । अयं दिग्बस्त्रमतेन । पीडावान् ।
 खड्गस्त्वणजातिः । खडावान् । अनद्यर्थमारम्भः ॥३००॥ इति मध्वादिः ॥

उत्कराश्मखदिरास्तृणवृक्षाविन्द्रवृक्षतिकपिप्पलशाकाः ।

आर्द्रवृक्षकपलाशसुवर्णश्यावनायसहिता विजिगीषा ॥३०१॥

उत्करादेश्छः । उत्करो द्रुपत्यांसुप्रथयः । सोऽस्यास्तीत्युत्करीयं नगरम् ।
 अशमीयम् । खदिरो वृक्षः । खदिरीयम् । तृणीयम् । वृक्षीयम् । इन्द्रवृक्षी-
 यम् । तिकी राजा । तिकीयम् । पिप्पलीऽश्वत्थः पिप्पलीयम् । शाकं भक्ष्य-
 विशेषः । शाकीयम् । आर्द्रवृक्षीयम् । पलाशीयम् । सुवर्णीयम् । श्यावनायो
 मुनिः । श्यावनायीयम् । विजिगीषीयम् ॥ ३०१ ॥

शालानेकखलाजिनातपफला जन्याजिनं पिप्पली—

मूलं संपरशूर्पणापिचुका भस्त्रा च नैवाकवः ।

उत्क्रोशार्कनितान्तवृक्षशफरा गर्ताग्निवैराकणाः—

काशारएधनिशान्तपर्णकितवाः क्षुद्राणकक्षान्तयः ॥३०२॥

शालीयम् । अनेकीयम् । खलाजिनीयम् । खण्डाजिन इत्यन्यः । आत-
पीयम् । फलीयम् । जन्या बधूस्तद्वाहिका वा । जन्यीयम् । अजिनीयम् ।
पिप्पलीमूलीयम् । सम्परो मुनिः । संपरीयम् । शूर्पणायो मुनी राक्षसी वा ।
शूर्पणायीयम् । पिचुकस्तूलकम् । पिचुकीयम् । भस्त्रीयम् । निवाकुर्निर्गुणः ।
तस्य निवासो नैवाकवः । तस्यादूरभवं नैवाकवीयम् । उत्क्रोशः कुररः ।
उत्क्रोशीयम् ॥ अर्को गुल्मः सूर्यश्च । अर्कीयम् । नितान्ता वृक्षा यत्र सन्ति स
नितान्तवृक्षो देशः । तस्यादूरभवं नितान्तवृक्षीयम् । शफरो मत्स्यः । शफरी-
यम् । गर्तीयम् । अग्नीयम् । वैराकणो नामर्षिः । वैराकणीयम् । काशीयम् ।
अरशयीयम् । निशान्तम् अन्तःपुरम् । निशान्तीयम् । पर्णीयम् । कितवो धूर्ता
गन्धद्रव्यञ्च । कितवीयम् । क्षुद्रीयम् । क्षुद्रा राक्षसी तन्निवासः क्षुद्रीयमित्यन्ये ।
अणकम्—अधसम् । अणकीयम् । क्षान्तीयम् । क्षान्त इति शीजः ॥३०२॥

अश्वत्थनीचापकशङ्करेडावरोहितक्षारविशालवेत्राः ।

अरीहणत्रैवणचर्मखण्डवातागराः सम्पलमन्त्रणार्हौ ॥३०३॥

अश्वत्थीयम् । नीचानाग्नोतीति नीचापकः । नीचापकीयम् । शङ्करीयम् ।
इडाः स्त्रियः । इडीयम् । अवरोहितो नामर्षिः । अवरोहितीयम् । क्षारीय-
म् । क्षोध इत्यन्यः । विशालो नामर्षिः । विशालीयम् । वेत्रीयम् । क्षारवेत्रौ
वासनमतेन । अरीहणः पुंविशेषः । अरीहणीयम् । त्रिवेण्या अपत्यं त्रैवणः ।
तस्य निवासत्रैवणीयम् । चर्मीयम् । शास्त्राभिधानवाचि वश्यणित्यन्यः ।
खण्डीयम् । वातागरीयम् । सम्पलो मुनिः । सम्पलीयम् । मन्त्रणार्हौयम् ।
उत्करादीञ्छप्रत्ययान्तान् केचित्पुंलिङ्गान् अपरे स्त्रीलिङ्गानाहुः ॥

एतेऽष्टादशाकृतिगणा वेदितव्याः । तेनान्येऽपि शब्दा यथादर्शनं द्रष्ट-
व्याः । अन्यैस्तु नैयत्यमेषां प्रतिपादितम् । एतदीयशब्दानां चत्वारोऽप्यर्था
यथासम्भवं द्रष्टव्याः ॥३०३॥ इत्युत्करादिः ॥

शौनकोऽथ तलवाजसनेयौ रज्जुकण्ठकठशाठकषायाः ।

स्कन्धसाङ्गरवतुम्बुरुताएज्या रज्जुभारकमलारुणयश्च ॥३०४॥

शौनकादिभ्यो शिन् इत्यनेन तेन प्रोक्तं वेदं विदन्त्यधीयते वेत्यर्थयो-
र्णिन् भवति । शौनकेन प्रोक्तं वेदं विदन्त्यधीयते वा । शौनकिनः । ता-
लिनः । वाजसनाया अपत्यं वाजसनेयः । वाजसनेयिनः । राज्जुकण्ठिनः ।
काठशाठिनः । कठशाठाभ्यां प्रोक्तवेदवेदकाः । कषायिणः । कषय इति वाम-
नः । स्काभिनः । स्कन्ध इति चन्द्रः । साङ्गरविणः । तौम्बुरविणः । ताण्डि-
नः । शकटाङ्गजभोजमतेन । राज्जुभारिणः । कामलिनः । आरुणिनः ॥३०४॥

हरिद्रुशाण्पेयपालिङ्गयुक्ताः शापेयखाडायनदेवदर्शाः ।

श्यामायनालम्बिऋचाभदएडाः स्तम्भोलपौ स्तः परुषांसकश्चा॥

हारिद्रविणः । शण्पमिव शण्यः । तस्यापत्यं शाण्येयः । शाण्येयिणः ।
पालिङ्गिनः । पुलिङ्ग इति वामनः । शपस्यापत्यं शापेयः । शापेयिनः ।
शाफेय इत्यन्ये । खडस्यापत्यं नडादिफण्णि । खाडायनः । खाडायनिनः । दैव-
दर्शिनः । वेददर्श इति वामनः । श्यामायनिनः । अलम्बस्यापत्यम् आलम्बिः ।
आलम्बिनः । आर्चाभिनः । ऋचभाग इत्यभयनन्दी । दाण्डिनः । चन्द्रवा-
सनमतेन । स्ताम्बिनः । स्तम्भ इति शकटाङ्गजः । औलपिनः । परुषे अंसे
अस्य परुषांसकः । पारुषांसकिनः ॥ सर्वेष्वप्येते सीपञ्चवेदशाखानां प्रणेतारः
प्रसिद्धाः । तदभिधायिनस्तु प्रोक्तप्रत्ययान्ताः शब्दा अध्येत्रादिविषयत्वात्स्वा-
तन्व्यमुल्लङ्घ्य प्रयोगभाजो न स्युः । भोजमसमाश्रित्य वामनोक्तः कलापिशण्य-
प्राच्यादिविशेषो नाश्रितः । आकृतिगणोऽयम् । तेन तलवकाराश्रवपञ्चमदाव-
कण्ठैतरेयभाल्लविशाट्यायनप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥३०५॥ इति शौनकादिः ॥

उक्थन्यासवसन्तयज्ञशिशिरं चर्चा पुराणं गणः—

सञ्ज्ञातर्कपदक्रमाश्च गणितं लक्ष्यं च लोकायतम् ।

आयुर्वेदगुणेतिहासचरमं हेमन्तहेतू यजु—

वर्षाज्योतिषसंहिताशरदथो सङ्घाटवृत्तीतरम् ॥३०६॥

ऋतूयथादेष्टुण इत्यनेन ऋतुवाचिन उक्थादेश्च ठण् । उक्थशब्दः सामस-
लक्षणो ग्रन्थ औक्थिक्ये वर्त्तमानो गृह्यते । उक्थं वेत्यधीते वा । औक्थिकः ।

श्रौविथक्शब्दाच्च प्रत्ययो न भवत्यनभिधानात् शकटाङ्गस्तु याञ्चिकौविथक-
लौकायतिकान् ब्रह्मणीत्येतत्सूत्रमाह । यञ्चोक्थाभ्यां ठण् । याञ्चिक्यौविथक्य-
शब्दाभ्यां च ठण् इक्यलोपश्च निपात्यते । यञ्चं याञ्चिक्यं वा वेत्तधीते वा ।
याञ्चिकः । एवम् । श्रौविथकः । लौकायतशब्दादृणीकारः । लौकायतिकः ।
लौकायतिक इति न्यायादिपाठात्सिद्धम् । न्यासः पञ्जिका नैयासिकः । वस-
न्तशब्दः कालसहचरिताध्ययने वर्तमानः प्रत्ययं लभते । एवं शिशिरहेमन्त-
वर्षाशरद्वीष्मशब्दा द्रष्टव्याः । वासन्तिकः । यज्ञार्थो ग्रन्थो यज्ञः । याञ्चिकः ।
चर्चा विचारणा(१) । चार्चिकः । चर्चाक इति वासनः ॥

सर्गश्चप्रतिसर्गश्चवृंशोमन्वन्तराण्यिच । वंशानुवंशचरितंपुराणंपञ्चलक्षणम् ॥

पुरापि न नवं पुराणमिति निरुक्तम् । पौराणिकः । गाणिकः । सा-
ञ्चिकः । तार्किकः । पादक्रमिकः । अन्यस्तु पदक्रमावित्याह । तन्मते क्रमा-
दिपाठाद्बुनपि । गाणितिकः । गाणित इति वासनादयः । लाक्षिकः ।
लौकायतं बृहस्पतिमतानुसारिचार्वाकशास्त्रम् । लौकायतिकः । आयुवदिकः ।
गौणिकः ॥ इत्येवं हासश्चित्तविकाशो यस्मिन् स इतिहासः । अथवा । इति ह
आसीदिति यत्रेति । इत्येवमर्थे । हः किलार्थे पूर्वचरितम् । ऐतिहासिकः ।
चारमिकः । चरमप्रथमशब्दौ विशेषणवृत्तौ विशेष्यस्य तु ग्रन्थस्य प्रक्रमात्प्र-
तीतिः । यद्वा क्रियाविशेषणवृत्तौ चरममधीते चारमिकः । चरमो गुणश्चरस-
गुणः । तस्य चारमगुणिक इत्यन्ये । हैमन्तिकः । हेतुकः । याजुष्कः । वासन-
सतेन । वार्षिकः । ज्योतीष्यधिकृत्य कतो ग्रन्थः ज्योतिषम् । सञ्ज्ञापूर्वको
विधिरनित्य इति ॥

अथवा । अनुबन्धकृतमनित्यमित्यौर्न भवति । ज्योतिषिकः । गण-
निपातनादैर्जभावः । ज्योतीषि ग्रहनक्षत्रादीनि वेत्ति ज्योतिषिक (२) इति
वासनक्षीरस्वामिनौ ॥ सांहितिकः । संहितापदे विषयभूते प्रत्ययं लभते । पद-
विषयां संहितामधीयानः सांहितिकः । अन्यत्राण् । सांहित इत्यन्यः । शार-

(१) यद्वाङ्गरागश्चर्चा तत्प्रकारख्यापको ग्रन्थोऽपि चर्चा इत्यधिकम् ।

(२) ज्योतीषि ग्रहादीनधिकृत्य कतो ग्रन्थो ज्योतिषः । ज्योतिषं वेद
ज्योतिषिकः । इति पा० ।

दिकः । सांघाटिकः । सङ्गता घटाः सङ्घटेत्यन्यः । सहघटया सघटेत्यन्यः ।
सङ्घट इत्यपरः (१) । वार्त्तिकः । ऐतरिकः । वामनतेन ॥ ३०६ ॥

श्लक्ष्णानुसूलक्षणसङ्ग्रहास्युर्ग्रीष्मो निरुक्तं पुनरुक्तमत्र ।

आथर्वणोऽथ प्रथमानुकल्पौ क्रमेतरन्यायकृतान्ततन्त्रम् ३०७

श्लाक्षिणकः । केचित् श्लक्षणाशब्दात्स्त्रीलिङ्गात्प्रत्ययं मच्यन्ते (२) । अनु-
सूर्यन्यविशेषः । आनुसुकः । केऽण्डर इति ह्रस्वत्वे । लाक्षणिकः । साङ्ग्रहिकः ।
ग्रीष्मिकः । चन्द्रमतेन । नैरुक्तिकः । पौनरुक्तिकः । अथर्वर्षिः । तेन प्रोक्तो
वेद आथर्वणः । तं वेद्यधीते वा । आथर्वणिकः । पाठसामर्थ्यात् श्लुग् न
भवति । प्राथमिकः । प्रथमो गुणः प्रथमगुण इत्यन्यः । प्रथमकल्पादन्योऽनु-
कल्पः । आनुकल्पिकः । क्रमादितरः क्रमेतरः (३) । अक्रम इत्यर्थः । क्रामे-
रिकः । नैयायिकः । कृतान्तं वेत्ति कार्तान्तिको मौहूर्त्तः । कृतान्तमाह पृच्छति
वा । कार्तान्तिक इत्यन्यः । तन्यते तन्त्र्यते वानेन । तन्त्रं वैदिकं ज्योति-
पादि । तान्त्रिकः । ज्ञातसिद्धान्तः ॥ ३०७ ॥

अनुगुणवर्षाशरद्विपदा भारतपदपदानुपदम् ।

अनुलक्ष्याख्यानां स्याद्विशेषपरिषन्मुहूर्त्तमप्येके ॥ ३०८ ॥

गुणस्य सदृशं गुणमनुगतं वा । अनुगुणम् । आनुगुणिकः । वर्षाश्च
शरच्च वर्षाशरदम् । वर्षाशरदिकः । द्वैपदिकः । विपदेति वामनः । भार-
तिकः । पदं पदमध्येता । वीप्सायां द्विर्वचने निपातनात्पूर्वपदस्यैत्वे । पादेप-
दिकः । पदमनुगतम् अतुपदम् । आनुपदिकः । लक्ष्यमनुगतम् अनुलक्ष्यम् ।
आनुलक्ष्यिकः । आख्यानिकः । अत्यन्तव्यावृत्तबुद्धिहेतुर्विशेषः । तं तत् शास्त्रं
वा वेत्ति । वैशेषिकः । पारिपदिकः । पर्यच्छब्दोऽपि । परिपदपार्यदाविति
वामनः । मौहूर्त्तिकः । वामनमतेन तु । मौहूर्त्तः । मुहूर्त्तमित्युपलक्षणम् ।
तेन नैमित्तिकः । अस्मिन्मते नैमित्तः ॥ ३०८ ॥

(१) सटेत्यन्यः । सट इत्यपरः । सङ्घट्टो रचना । या पांचालीवैदर्भीत्यादिपदैर-
लङ्कारशास्त्रे व्यवह्रियते तल्लक्षणपरो ग्रन्थोऽपि लक्षणया सङ्घट्टस्तनधीते वेदं वा
साङ्घट्टिकः । केचित् सङ्घाटम्पठन्तीत्यधिकम् । (२) पुनरुक्तं श्लक्ष्णमनुपदमिति
त्रितयं ग्रन्थविशेषवाचीत्यधिकम् । (३) क्रमेतरेति ग्रन्थविशेषस्य संज्ञेति पा० ।

सुलक्षब्राह्मणावेतौ पदोत्तरपदादिकाः ।

असंसर्गाङ्गयर्मत्रिक्षत्राद्विद्या परा मता ॥ ३०९ ॥

सौलक्षिकः । ब्राह्मणशिक्षिकः । पदोत्तरपदं वेद्यधीते वा पादोत्तरपदिकः ।

शकटाङ्गजस्तु पदोत्तरपदेभ्यश्च इति सूत्रमाह । अस्यार्थः । पदशब्द उत्तरपदं यस्य ततः पदशब्दात्पदोत्तरशब्दाच्च ठः । पूर्वपदिकः । उत्तरपदिकः । न्यायादिपदकल्पलक्षणान्तक्रत्वाख्यानाख्यायिकादृष्ण इत्यनेन तु पूर्वपदिकः । औत्तरपदिकः । पदात्यदिकः । पदोत्तरपदात्पदोत्तरपदिकः । बहुवचनं सर्वभङ्गपरिहारार्थम् । संसर्गादिवर्जितात्परो विद्याशब्दघृणं लभते । वायसविद्यिकः । सार्वविद्यिकः । असंसर्गादेरिति किम् । सांसर्गविद्यः । शकटाङ्गजमतेन । आङ्गविद्यः । धार्मविद्यः । त्रैविद्यः । अथवा विद्या त्रिविद्येति कर्मधारयात्प्रत्ययश्रुतिः । तिष्ठणां विद्यानां बोद्धेत्यर्थे द्विगोः श्लुचि त्रिविद्यः । क्षात्रविद्यः ॥३०९॥

कल्पलक्षणसूत्रान्तमकल्पादिमतं बुधैः ।

आख्यानाख्यायिकावाची श्लुग्द्विगोः सर्वसादितः ॥३१०॥

सातृणां ब्राह्म्यादीनां कल्पः पूजाद्यर्थं शास्त्रम्, सातृकल्पिकः । रासायनकल्पिकः । गौलक्षणिकः । वार्त्तिकसूत्रिकः । साङ्गहसूत्रिकः । अकल्पादीति सूत्रस्यैव विशेषणं तेन काल्पसूत्रः । आख्यानवाचिस्य आख्यायिकावाचिस्यश्च ठण् इत्यर्थः । यावक्रीतमाख्यानमधीते यावक्रीतिकः । एवं प्रियंगवाविमानप्रभृतयः (१) उदाहार्याः । वासवदत्तामाख्यायिकामधीते वासवदत्तिकः । एवं सुमनोहरानर्मदासुन्दरीतरङ्गवतीविलासवतीप्रभृतयः आख्यायिकाशब्दाष्टणि द्रष्टव्याः । वासवदत्तादिसाहचर्याद्ग्रन्थोऽपि तथोच्यते । यथाऽग्निहोत्रसहचरितो ग्रन्थोऽग्निः । द्विगोः समासात्सर्वशब्दादेः सादेश्च शब्दादृष्ण तस्य च श्लुक् । शकटाङ्गजस्त्वण्ठशोः । पञ्चकल्पः । त्रिलक्षणः । त्रिसूत्रः । असंसर्गत्यादिना ठण् तस्य श्लुक् तथा द्वितन्त्रः । पञ्चव्याकरणः । सह वार्त्तिकेन यो ग्रन्थः स सवार्त्तिकः । तं वेत्ति ठणो लोपे सवार्त्तिकः । एवं ससङ्गहः । सर्ववेदः । सर्वतन्त्रः । आकृतिगणोऽयम् । अन्येऽपि यथादर्शनं ज्ञेयाः ॥३१०॥ इत्युक्त्यादिः ॥

(१) यावकिकः । प्रियंगविकः । प्रियंगुकः । आविमारविकः । आविसारकरित्यधिकम् ।

क्रमः शिक्षा पदं चैव मीमांसा सामसंयुता ।

उपनिषत्तथा ज्ञेया गणे क्रमादिसञ्ज्ञिते ॥ ३११ ॥

क्रमादिभ्य इत्यनेन क्रमादेस्तद्वैत्यधीतेऽर्थे को भवति । क्रमं वैत्यधीते क्रमकः । शिक्षा ग्रन्थविशेषः । शिक्षकः । पदकः । मीमांसा ग्रन्थविशेषः । मीमांसकः । सामकः । उपनिषद्देदान्तो रहस्यं च । उपनिषदकः । एतदर्थमेवाकारोच्चारणम् । शेषाणां कप्रत्ययेऽपि साध्यं सिद्धम् । अकप्रत्ययस्य टित्वप्रज्ञानं युक्तम् । तेन शिक्षकी मीमांसकीत्याद्युपपन्नं स्त्रियां लक्ष्यते न त्वाङ्गीति ॥३११॥

इति क्रमादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपरिहितश्रीवर्द्धमानविरचितायां ध्वीयगणरत्नमहो-
दधिवृत्तौ समूहविकारावयवचतुरर्थवैत्यधीतेविहिततद्धित-
प्रत्ययगणनिर्णयो नाम चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अध्यात्ममुक्तीहपरत्रशेषा—कस्मादमुत्रोर्ध्वदमाधिदेवाः ।

ऊर्ध्वदमश्रौर्ध्वमुहूर्त्तसर्वलोकावसुष्मिन्नधिभूतनिष्ठाः ॥ ३१२ ॥

अध्यात्मादेरित्यनेनाध्यात्मादेः शेषे ठञ् भवति । अध्यात्मे भवम् आध्यात्मिकम् । मुक्तौ भवम् नौक्तिकम् । ऐहिकम् । आगमिकोऽयं शब्दः । यथा—पञ्चायतनमैहिकम् । किमस्य गणपाठेन । लोके चेहत्यमित्येव भवतीति कश्चित्सचेताः । परत्रामुष्मिन्नमुत्रशब्दाः परस्य लोकस्य वाचकाः । परत्रलोके भवम् पारत्रिकम् । शेषे भवाः शैषिकाः । अकस्मादित्यनेन हेतुशून्यः कालो लक्ष्यते । तत्र भवम् । आकस्मिकम् । अमुत्रलोके भवम् आमुत्रिकम् । और्ध्व-
दमिकः । ऊर्ध्वं भव इत्यर्थः । केचिदूऊर्ध्वदमोर्ध्वदेहशब्दावनुशक्तिकादिषु मन्यमाना और्ध्वदामिकम् । और्ध्वदैहिकमित्युदाहरन्ति । अधिदेवे भवम् आधिदैविकम् ॥ और्ध्वदमिकम् । ऊर्ध्वशब्दप्रणानार्थोऽव्ययमनव्ययमूर्ध्वश-
ब्दोऽप्यस्ति । मुद्गागमोऽन्येषाम् । और्ध्वनौहूर्त्तिकः । तत्रोर्ध्वमौहूर्त्तिक इति ज्ञापकादुत्तरपदस्यैव ॥ सार्वभौतिकम् । अमुष्मिन्नलोके भवम् आमुष्मिकम् ॥ आधिभौतिकम् । निष्ठायां भवम् । नैष्ठिकम् । यथा—

श्रुतदेहविसर्जनः पितुश्चिरमश्रूणि विसृज्य राघवः ।

विदधे विधिमस्य नैष्ठिकं यतिभिः सार्धमनग्निमग्निचित् ॥ ३१२ ॥

स्यात्समानस्तदादिश्च तथा लोकः परेहतः ।

ऊर्ध्वोर्ध्वमः परो देहोऽध्यात्मादिराकृतिगणः ॥ ३१३ ॥

सामानिकः । सामानग्रामिकः । सामानदेशिकः । पारलौकिकम् ।
ऐहलौकिकम् । और्ध्वदेहिकम् । यथा—अकरोच्च तदौर्ध्वदेहिकं पितृभक्त्या
पितृकार्यकल्पवित् ॥ और्ध्वदेहिकम् ॥ ३१३ ॥ इत्यध्यात्मादिः ॥

नदीपावापुरो मावा श्रावस्ती धातकी मही ।

वनाह्वासी च कौशाम्बी शाल्वाथो वडवा वृषे ॥ ३१४ ॥

नदीकल्यादेर्ढञ्ढकजित्यनेन नद्यादिकल्यादिभ्यां शेषेऽर्थे ढञ्ढकञी
क्रमेण भवतः । नद्यां जातो भवो वा नादेयः । पावा नगरी । पावेयः ।
पामेति वामनः । पाठेति भोजः । पौरेयः । मावा नगरी । मावेयः । मायेति
भोजः । वामेति वामनः । श्रावस्ती नगरी । श्रावस्तेयः । धातकेयः ॥
साहेयः । वनवासी नगरी । वानवासेयः । वानकौशाम्बेयः । शाल्वेयः ।
सात्ववा नगरीत्यन्यः । वाडवेयः । वृषः । वाडबोऽन्यः ॥ ३१४ ॥

कौशाम्बी वनसेतकी गिरिगरी वाराणसी खादिरी—

दावा काशफरी च पूर्वनगरी नद्यादिरेवं गणः ।

कत्तिः कुण्डनपुष्करौ च नगरीकुम्भ्युम्भिमाहिष्मती—

वर्मत्योऽथ च पौदनो निगदितो ग्रामस्तथा पुष्कलः ॥ ३१५ ॥

कौशाम्बी नगरी । कौशाम्बेयः । कौशाम्बीयेन वणिजेति चिन्त्यम् ।
कौशाम्बीत्यन्यः । वानेयः । सेतकी पुरी सेतकेयः । गिरिरेदं गैरेयम् । शिला-
जतु । गारेयः । वाराणसी नदी । तस्या अदूरभवा वाराणसी । वाराणसेयः ।
खादिराणामदूरभवा खादिरी नगरी । खादिरेयः । दावा पुरी । दावेयः ॥
काशफरी नगरी । काशफरेयः । अन्यस्तु शफरीत्याह । काशस्थलीति वाम-
नः । पौर्वनगरेयः । अन्यस्तु निपातनादित्वे ह्रस्वत्वे च पूर्वनगरेय (१)

(१) केचित्तु पूर्वनगरीति पठन्ति । विच्छिद्य च प्रत्ययं कुर्वन्ति ।
पौरेयम् । वानेयम् । गैरेयम् । तदुभयमपि दर्शनं प्रमाणमित्यधिकम् ॥

इत्याह ॥ आद्वैजाद्यभ्यो ङे प्राप्ते । आवस्त्यादिभ्य ईरीपान्त्यादकञ् इत्यने-
नाकञि । शेषेभ्योऽणि प्राप्ते वचनम् ॥ इति नद्यादिः ॥

कुत्सितास्त्रयः कन्नयः । बहुव्रीहिर्वा कत्तिः । अस्मादेव निपातनात् कु-
शब्दस्य किं शब्दस्य वा कदादेशः । कन्नयाणां कन्नेर्वा गर्दभ्या इदम् । कात्त्रे-
यकम् । कुण्डिनं पुरम् । कौण्डिनेयकः । कुण्डिनेति वामनः । पौष्करेयकः ।
नागरेयकः । नगरशब्दः संज्ञावाची गृह्यते । कुम्भिनर्मान ग्रामः । कौम्भेयकः ।
श्रौम्भेयकः । श्रौम्भिरित्यन्ये । उम्भिरित्यन्यः । साहिष्मती नाम नदी पुरी-
वा । साहिष्मतेयकः । वर्मेती नदी । वर्मतेयकः । चर्मणवतीति वामनः ।
पुदना नाम नदी । तस्या अदूरभवं पौदनं नाम नगरं प्राप्तो वा । पौदनेय-
कः । सोदन इति भोजः । सोदन इति वामनः । ग्रामेयकः । ग्रामाद्यञ्खञा-
वित्यनेन ग्राम्यो ग्रामीण इत्यपि ॥ पुष्कलो बाहीकग्रामः पौष्कलेयकः ॥३१५॥

कुण्ड्याकुड्ये ग्रामात्कुण्ड्याकुण्यावुल्ये वन्यामुल्ये ।

उख्यातृण्ये भाण्ड्यावुल्ये प्राज्ञैः प्रोक्ते यल्लोपे च ॥३१६॥

कुण्ड्या अन्ध्रदेशे नदी । कौण्डेयकः । कौडेयकः । ग्रामस्य कुण्ड्या ।
ग्रामकुण्ड्या ग्रामी नगरं वा । ग्रामकुण्डेयकः । कौण्डेयकः (१) । वालेयकः ।
वानेयकः । मौलेयकः । श्रौखेयकः । तार्णेयकः । भाण्डेयकः । वौलेयकः ।
यल्लोपे चेति यस्य लोपइत्यर्थः । कुड्याया यलोपश्चेति गणसूत्रं वामनोक्तमुप-
लक्षणं द्रष्टव्यम् ॥ विद्युन्माला छन्दः । मौगीचेत्सा विद्युन्माला ॥३१६॥

इति कत्र्यादिः ॥

गहानृशंसी समशुक्लपक्षौ खाडायनानन्तरपार्श्वतोऽन्याः ।

इष्वग्रसाड्यन्तरभौजिवैज्याध्यश्वीष्वनीकैकपलाशिकाङ्गाः ३ १ ७

गहादित्यदाद्यादैमाद्यचो लिह्वाकात्यहरितकार्याच्छ इत्यनेन गहादेः
शोपेऽर्थे ङो भवति । गहे ग्रामे भवो जातो वा । गहीयः ॥ नृञ् शंसति
द्रुह्यतीति नृशंसः । द्रोहार्ये शंसतिर्द्रष्टव्यः । न नृशंसोऽनृशंसः । तस्यापत्यम्
आनृशंसिः । आनृशंसीयः । समीयः । समादागतं समीयम् । नृहेतोर्मयङ्कृष्यौ

वा । समरूप्यं समसमयमपि । शुक्तपक्षीयम् । खाडायनी मुनिः । खाडायनीयः । खाडायनिरिति भोजः । अन्तरीयः । पाश्वर्यत आगतः पाश्वर्यतीयः । मुखपाश्वर्यकात्तसो लोपश्चेति गणतूत्रमाह वामनः । अस्माभिस्त्वन्यदीयमतमाश्रित्य त्रयाणां सामान्येन पाठः कृतः । अन्यदीयः । तथा च—

अन्यदीयविशिखेन केवलं—निस्स्पृहस्य भवितव्यमाहृते ॥

इषोरग्रम्—इष्वग्रम् । इष्वग्रीयः (१) ॥ साडस्यापत्यं साडिः । साडी-
यः । अन्तरीयः । तथा च—

पर्यस्यत्पृथुमक्षिमेखलांशुजालं—संजज्ञेयुतकमिवान्तरीयमूर्ध्वः ॥

भोजस्यापत्यं भौजिः । भौजीयः । भोजिरित्यन्यः । वैजीयः । अश्वस-
धितिष्ठति अश्वश्वः । तस्यापत्यं आश्वश्विः । आश्वश्वीयः । इषूणामनीकम्
इष्वनीकम् । इष्वनीकीयम् । एका चासौ पलाशिका च एकपलाशिका ।
एकपलाशिकीयः । एकपलाश इति वामनः । अङ्गीयः ॥ ३१७ ॥

अन्तस्थोत्तमदैवशर्मिर्विपमव्याज्यासुरिश्रौतयः—

शौङ्गिः शौङ्गिरिपूर्वपक्षभगधा दन्ताग्रकाठेरणी ।

मत्त्वर्थापरपक्षसुत्तरकतौ वाल्मीकिवाराटकी—

कामप्रस्थसमानशाखमुखतोऽवश्यन्दनामित्रयः ॥ ३१८ ॥

अन्ते तिष्ठतीत्यन्तस्थः । अन्तस्थीयः । अन्तस्था नगरीत्यन्यः । उत्त-
मीयः । देवशर्मणोऽपत्यं दैवशर्मिः । दैवशर्मीयः ॥ विषमे देशे भवो विषनीयः ।
विषमादागतं विषनीयम् । विषनरूप्यम् । विषन्नुग्रम् । समविषनी नाम
ग्रामावित्यन्ये । व्यडस्यापत्यं व्याडिः । व्याडीयः । अक्षुरस्य श्रुतस्य शुङ्गस्य
शिशिरस्यापत्यं तन्न भवः । आक्षुरीयः (२) । श्रौतीयः । शौङ्गीयः । शैशिरीयः ।
पूर्वपक्षीयः । केचित्पूर्वपक्षापरपक्षभव इति पठन्ति । तन्मते पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यां
तन्न भव इत्यर्थे ङीऽन्यत्र ठणेव । पौर्वपक्षिकः । आपरपक्षिकः । सगधीयः ।
दन्तयोरग्रं दन्ताग्रम् । अन्यइष्वग्रदन्ताग्रौ ग्रामावित्याह ॥ दन्ताग्रीयः । कठ-
स्येरणः कठेरणः । तस्यापत्यं काठेरणिः । काठेरणीयः । काठेरिणिरित्यन्यः ।
मत्त्वर्धीयः । मत्त्वर्थ इति वृद्धः । अपरपक्षीयः । उत्तरीयं वस्त्रम् । तथा च—

(१) इष्वग्रीयो व्रणः । इष्वग्रं नाम ग्राम इति केचित् ।

(२) आक्षुरीयः श्रुतः, द्विवन्तमेतत्—आक्षुरीयमिति पा० ।

सरिदुत्तरीयमिवसंहतिमत्सतरङ्गरङ्गिकलहंसकुलम् ॥

कतीयः । वाल्मीकीयः । यथा—रथस्वनोत्कर्णसृगे वाल्मीकीये तपोवने ।

वाराटकस्य वाराटकिः । वाराटकीयः । वाराटकिरित्यन्यः ॥ कामप्र-

स्थीयः । इति वामनः (१) । समाना शाखा यस्यासौ समानशाखः । समानशा-
खीयः । मुखतीयः । अवस्यन्दनीयः । अवस्यन्द इत्यन्ये । अग्नित्रयापत्यं
आग्निः ॥ आग्नीत्रीयः ॥ ३१८ ॥

एकाधमोत्तमाच्छाखो ग्रामश्चैकसमानतः ।

लावेरएयग्निशर्माणावाहिंस्येकतसौ तथा ॥३१९॥

शाख इति कृत ह्रस्व इत्यर्थः । एकशाखीयः । अधमशाखीयः । उत्तम-
शाखीयः । एकग्रामीयः । समानग्रामीयः । लावस्येरणो लावेरणः । तस्यापत्यं
लावेरणिः । लावेरणीयः । सौवेरणिरित्यन्यः । अग्निशर्मायः । अग्निशर्मि-
रित्यन्यः । अहिंसस्यापत्यम् आहिंसिः । आहिंसीयः । एकतीयः ॥ ३१९ ॥

क्षेमधृत्विश्च सौमित्रिकेकवृक्षौपविन्दवी ।

हंसवृद्धौ तथाश्वत्थितन्त्वग्रौद्गाहमानयः ॥३२०॥

क्षेमधृत्विनोऽपत्यं क्षेमधृत्विः । क्षेमधृत्वीयः । सौमित्रीयः । एकवृ-
क्षीयः । औपविन्दवीयः । हंसीयः । वृद्धीयः ॥ अश्वत्थो नाम कश्चिद्गोत्रकारी ।
तस्यापत्यम् आश्वत्थिः । आश्वत्थीयः । तन्त्वग्रीयः । औद्गाहमानीयः ॥३२०॥

कुट् च स्वराजपूजनदेवानां णिच्छवेणुकादिभ्यः ।

प्रस्थोत्तरपदवेत्रकमध्योत्तरकाश्च मध्यमिका ॥३२१॥

स्वकीयः । पाणिन्यादयस्तु स्वदेवशब्दौ न पठन्ति । तन्मते सौवं दैव-
मित्येव भवति । वामनमतेन । गणकृतमनित्यमिति न्गायात् कुट्छाभावेऽण्
प्रत्यये सौवम् । उत्सादेश्चाजित्यनेनाजि । दैवमित्यपि संभाव्यते । महाकवि-
प्रणीतप्रयोगदर्शनं चेत्स्वीक्रीयते । तदा गहादिपाठः समाश्रयणीयः ॥ तथाहि
रुद्रस्य— विष्णोःसहजःपयोधरतटःकान्तोऽङ्गो विभ्रसः ।

कण्ठाश्लेषजुह्वं पञ्चमरवः श्लाघ्यो गुत्तर्मन्मघः ।

(१) वामप्रस्थीय इति वामन इति पा० ।

सम्बन्धी विनयश्चिरं सहचरीलीलेतिपययाङ्गना—
यस्यांस्वीयपरिग्रहं न रहयन्त्येकान्तयाता अपि ॥

यथा वा । एभिर्निर्दर्शनैः स्वीयैः परकीयैश्च पुष्कलैः ॥ राजकीयः ।
राज इदं राजकीयमित्यपि ॥ परकीयः । जनकीयः । देवकीयः ॥

णिच्छेति णोऽनुबन्धच्छप्रत्यय इत्यर्थः । वेणुभिर्निर्वृत्तो वेणुकः । तत्र
भवो जातो वा । वैणुकीयः । प्रास्थीयम् । प्रस्थके भवः—प्रास्थकीय इत्यन्यः ।
श्रौत्तरपदीयः । वैत्रकीयः । माधीयः । श्रौत्तरकीयः । मध्ये भवा—मध्यमि-
का नाम नगरी । तस्यां भवो माध्यमिकीयः । मध्यमक इत्यन्यः । एते त्रयो
वामनमतेन । निपुणके भवो निपुणकीय इति केचिदुदाहरन्ति । वेणुकादिर्ग-
हादावाकृतिगणः । तेनाभयनन्दिस्वीकृतौ पितृकमातृकशब्दावपि संश्रुहीतौ ।
अङ्गमगधशब्दयोराष्ट्रात्कञि । पूर्वपक्षशुक्लपक्षापरपक्षशब्दानां कालाट्टञि ।
कामप्रस्थशब्दात् प्रस्थेत्यादिना कञि । इजन्तानामाद्यात्पौत्रादीज इत्यादि-
नाञि । शेषेभ्यस्त्वणि प्राप्ते वचनम् ॥ ३२१ ॥ इति गहादिः ॥

काश्यच्युतौ सोदनमोदमानौ गोवासनारिन्दमदेवदत्ताः ।

संवाहसां याति च हस्तिकर्षूः कुनामचेदीकरणं हिरण्यम् ३२२

काश्यादिवाहीकग्रामाच्छेद्वञ्जिठावित्यनेन काश्यादिभ्यो देशावाचिभ्यो
वाहीकग्रामेभ्यश्च ठञ्जिठौ प्रत्येकं भवतः । काश्यो जनपदाः । तेषु भवा
जाता वा । काशिकी । काशिका । अच्युतो ग्रामः । आच्युतिकी । आच्युतिका ।
सोदनानां निवासी ग्रामो सोदनः । सौदनिकी । सौदनिका । सोदमानो
ग्रामः । सौदनानिकी । सौदमानिका । गवां वासने गोवासनः । तन्निवासी
ग्रामो गोवासनः । गौवासनिकी । गौवासनिका । गौवासन इत्यन्ये । एषां
देशादेवेडाद्यच्चेति छे प्राप्ते । अरिन्दमयति अरिन्दमो ग्रामः । आरिन्दमिकी ।
आरिन्दमिका । देवदत्तः प्राग्रामः । दैवदत्तिकी । दैवदत्तिका । अस्य काश्या-
दिषु पाठः प्राग्देशार्थः । यस्तु वाहीकेषु ग्रामस्तस्मादणेषु । दैवदत्ती । संवा-
हयतीति संवाहः । तस्य निवासोऽपि संवाहः । सांवाहिकी । सांवाहिका ।
सांवाह इत्यन्ये । संयातस्यापत्यं सांयातिरादिराजः । तस्यापत्यं युष्मा सांयात्यः ।
कुन्तकीसलेत्यादिना ग्यञि तस्य बहुषु झुञि । सांयातयः । तन्निवासीऽपि
जनपदसाहचर्यादुच्यते ॥ संयातो नाम कश्चित् तस्यापत्यं सांयातिः ॥ तस्य

निवासी ग्रामः । सांयातिरित्येके । सांयातिकी । सांयातिका । हास्तिकर्पुकी । हास्तिकर्पुका । कुत्सितं नाम यस्य स कुनामा । तन्निवासीपि ग्रामः कुनप्रा । कौनामिकी । कौनामिका । कुनास्नोऽपत्यं कौनाम इत्यन्ये । कुलनाम इति वामनः । चेदयो जनपदः । चैदिकी । चैदिका । करणं देशविशेषः । कारणिकी । कारणिका । हैरशियकी । हैरशियका ॥ ३२२ ॥

शकुलाददशग्रामौ हिरण्यकरणस्तथा ।

सिन्धुदाससुधासोमच्छागान्मित्रस्तथा सधात् ॥ ३२३ ॥

शकुलान्मत्स्यानत्तीति शकुलादः । अथवा शुनां कुलान्यत्तीति निपातनाद्दलोपे । शकुलादः । तन्निवासीऽपि ग्रामः । शाकुलादिकी । शाकुलादिका । शाकुलाद् इति वामनः । स्वकुलाल इत्यन्यः । दाशग्रामिकी । दाशग्रामिका । दाशग्राम इत्यन्ये । हैरण्यकरणिकी । हैरण्यकरणिका । अन्येषां हैरण्य इति प्रकृतिः । करण इति प्रत्ययार्थविशेषणम् । हैरशियकः । परशवादि करणमुच्यते । अन्ये ग्रामवाची हैरण्य इति पठन्ति तन्मते हैरण्यकी । कुठारी कुठाली वा करणम् । सिन्धुसो मित्राण्यस्य सिन्धुमित्रो देशः । सिन्धुमित्रिकी । सिन्धुमित्रिका । एवं दासमित्रः । दासमित्रिकी । सौधामित्रिकी । सौधामित्रिका । छागमित्रिकी । सहमित्राण्यस्य सधमित्रः । निपातनाद् हस्य धकारे । साधमित्रिकी ॥ ३२३ ॥

युवदेवोपतो राजः कालात्कोपादिपूर्वतः ।

शौवावतानभारङ्गी अरित्रो भोजसम्मतः ॥ ३२४ ॥

युवराजस्य निवासीपि युवराजः । यौवराजिकी । एवं देवराजोपराजौ ग्रामौ । दैवराजिकी । औपराजिकी । कालात्कोपादिपूर्वत इति कोपाद्यः । पूर्वं यस्यासौ कोपादिपूर्वः । कौपकालिकी । कौपकालिका । आपत्कालिकी । पौर्णकालिकी । और्ध्वकालिकी (१) । प्राक्कालीनोत्तरकालीनार्वाक्कालीनप्रभृतिप्रयोगेषु स्वप्रत्ययो दृश्यते । स चानुत्तोऽप्यवगन्तव्यः । अन्यथा बहुतरलक्ष्यक्षतिप्रसङ्गः स्यात् । शुनोऽवतानः शवावतानो मणिः । तेन निर्वृत्तो ग्रामः । शौवावतानः । शौवावतानिकी । भारङ्गेनिवासीऽपि भारङ्गिः । भारङ्गिकी । तारङ्गिरित्यन्ये । अरित्रस्य निवासीप्यरित्रः । आरित्रिकी ॥

देशादिति किम् । काशीनां क्षत्रियाणां छात्राः काशीयाः । देवदत्तो नाम कश्चित् । तस्य छात्राः देवदत्तीयाः । देवदत्ताः । अच्युतादीनां छ-
विषयाभावेऽपि काश्यादिपाठसामर्थ्याद्बुद्धिज्जिठौ भवतः । काशिचेदिभ्यां प्रस्य-
पुरेत्यादिना बहुत्वत्वित्यादिना वाऽकञि । सांयातिभारङ्गिभ्याम् आद्यात्पौ-
त्रादीजोऽह्यचप्राच्यभरताभ्यामित्यनेनाणि । आदैजाद्यचं छे । हस्तिकर्षूशब्दात्
प्राच्योष्ठज्जीत्यनेन ठञि । सिन्धुमित्रादिभ्य ईरोपान्तादकञ् इत्यनेना कञि ।
शेषेभ्योऽणि प्राप्ते वचनम् ॥ ३२४ ॥ इति काश्यादिः ॥

पलदी गोमती गोष्ठी परिखा परिषत्तथा ।

बाहीकैः शूरसेनश्च नैकती च पटञ्चरः ॥ ३२५ ॥

कोपान्तपलदीभ्योऽण् इत्यनेन कोपान्तात्पलद्यादेश्च देशवाचिनः शे-
षेऽर्धेऽण् प्रत्ययो भवति । पलद्यां देशविशेषे जातो भवो वा पालदः ।
पालदी । बाहीकग्रामलक्षणयोष्ठञ्जिठयोः प्राप्तयोः । गोमती नदी । तत्स-
हचरितो देशो गोमती । गौमतः । ईरोपान्तादकञि प्राप्ते । गौष्ठः(१) । बाही-
कग्रामलक्षणयोष्ठञ्जिठयोः । पारिखः । पारिषदः । पार्षदी वा । अनयो-
श्छेऽस्य बाहीकलक्षणयोष्ठञ्जिठयोर्वा । बाहीकेषु भवो बाहीकः । गहादी-
त्यादिना छे ॥ शौरसेनः । प्रस्यपुरेत्यादिना । नैकतः । नैकीति वामनः ।
पाटञ्चरः । ईरोपान्तादकञि प्राप्ते ३२५ ॥

बहोः कमलजालाभ्यां कालात्कीटोऽथ रोमकः ।

सकल्लोभोदपानौ च कमलात्कीकरो भिदा ॥ ३२६ ॥

बाहुकीटः । कामलकीटः । जालकीटः । कालकीटः । कलकूट इति
वामनः । रोमकः । देशादेद्विराद्यच इत्यनेन छे ॥ सकल्लोमि भवः । सकल्लोमः ।
निपातनान्नलोपः । अयं भोजमतेन । यकल्लोमन् इति वामनः । यकल्लोमनखं
चेत्यन्येऽपि । शकटाङ्गजस्तूदग्रामाद् यकल्लोम इति विशेषसूत्रमाह । उदग्राम-
वाची याकल्लोमोऽञि । अन्यो याकल्लोमनः । श्रीदपानः । कामलकीकरः ।
कामलभिदः । अनुक्तानां तु बाध्यबाधकभावः स्वयं द्रष्टव्यः ॥ ३२६ ॥

इति पलद्यादिः

(१) गौष्ठी । अन्ये तु गौष्ठीति पा० ।

कच्छः कुलूतः परिसिन्धुसाल्वौ गन्धारसिन्धू स्थलसिन्धुवर्णौ ।
कश्मीररङ्कू कुरुसक्तुसिन्धू विजापकहीपकुलानुपण्डाः ३२७

कच्छादेरित्यनेन कच्छादेः शब्दगणादेशधाचिनः शेषेऽर्थेऽण् भवति ।
कच्छे भवः काच्छः । कौलूतः । चलूप इत्यन्ये । परसिन्धुपु भवः पारसै-
न्धवः । हृद्गसिन्धूनामित्यनेनोभयपदारैच् ॥ साल्वः । गान्यारः । सिन्धुपु
भवः-सैन्धवः । कम्बलः । स्थालसैन्धवः । वर्णुर्नाम हृदः । तस्यादूरभवो
देशो वर्णुः । तत्र भवो वार्णवः । कश्मीरेषु भवः काश्मीरः कुङ्कुमः । रा-
ङ्गवः । यद्वा रङ्गुर्गविशेषः । राङ्गवं मृगरोमजम् । फौरवम् । कुरुयुगन्धरा-
द्वैत्यनेनाकजपि कौरवकोऽश्वदिः । साक्तुसैन्धवः । वैजापर्कः । वैजावक इति
भोजः । द्वैपः । कौलः । अयं वामनमतेन । कुल्व इत्यन्यः । आनुपण्डः ।
अनूपण्ड इत्यन्ये ॥ ३२७ ॥

अङ्गारानूपकम्बोजा रङ्गुकर्णुविरूपकाः ।

मधुमानन्तरीपश्च वापवाहावजात्परौ ॥ ३२८ ॥

आङ्गारः । चन्द्रमतेन । आनूपः । काम्बोजः । राज्जवः । कार्णवः ।
वैरूपकः । त्रयं वासनमतेन । मधुमान् पर्वतः । तत्र भवो साधुमतः । आ-
न्तरीपः । आजवापः । द्वयं चन्द्रमतेन ॥ आजवाहः ॥

एतेषां शब्दानां नृतस्त्वेऽकञ् इत्यनेनाकजि ॥ काच्छकी मनुष्यः । काच्छ-
कमस्य हसितम् । काच्छिका चूडा । सैन्धवकी मनुष्यः । सैन्धवकमस्य जल्पितम् ।
एवं सर्वत्र । तथा अपदात्तौ साल्वात् । गोयवाग्वोरित्याभ्यामकञ् भवति ।
साल्वकी मनुष्यः । अपदाताविति किम् । साल्वः पदातिः । साल्वमस्य
हसितम् । साल्वकी गौः । साल्विका यवागूः । द्वैपान्वर्थाति वचनात् ।
यमुना द्वीपे जातो भवो वा । द्वैपकी व्यासः (१) । राष्ट्रार्थादकजि प्राप्ते ।
बहुत्वोत्त्वित्यनेन वा वचनम् । अत्र प्रायेण कच्छादयः शब्दाः । जनपदधा-
चिनः ॥ ३२८ ॥ इति कच्छादिः ॥

(१) द्वीपादनुसमुद्रं यवः । द्वैपो मनुष्यः । द्वैप्यमस्य हसितम् । अनु-
समुद्रमिति किम् । अनुनदि यो द्वीपस्तस्माद् द्वैपकी व्यासः । द्वैपकमस्य
हसितम् । इति पा० ।

धूमार्जुनावावयगर्तघोषाः-षडण्डसाकेतशशादनाश्च ।

संस्तीयतीर्थारुणमित्तवर्चा-द्दीपान्तरीपोज्जयनीविदेहाः ३२९

धूमादिदेशप्राक्छाग्निवक्त्रवर्तान्तादित्यनेन धूमादेः शब्दागणादकञ् भवति । धूमो ग्रामः । तत्र भवो धौमकः । ऋज्व्यो नावोऽस्य ऋजुनौः । तस्य निवासस्तन्निर्वृत्तो वा । आर्जुनावः । तत्र भवः । आर्जुनावकः । छे प्राप्ते । अथायं वाहीकग्रामस्तदाद्यापवादयोष्ठज्जिठयोरकञ् । आवये भवः-आवयकः । आवयो नदीग्राम इत्यन्ये । आवयात्तीर्थे । आवयकं तीर्थम् । आवयस्यदित्यन्यः । गार्त्तकः । घौषकः । षाडण्डकः । षडाण्ड इत्यन्यः । साकेतकः । शशादनकः । साषादन इति वामनः । सांस्तीयकः । संस्फीय इत्यन्ये । तीर्थकः । अरुणो ग्रामः । आरुणकः । सैत्रकः । वार्चकः । द्वैपकः । आन्तरीपकः । औज्जयनकः । वैदेहकः ॥ ३२९ ॥

सत्रासाहानर्तपाठेयपल्लवः शष्पाराइयौ धार्तराज्ञी च कुक्षिः ।

द्वयाहावत्रयाहावपाथेयवर्ज्या आञ्जीकूलो माठरो बर्बरश्च ३३०

सत्रासाहो राजा । तन्निवासोऽपि सः । सत्रासाहकः । आनर्तः क्षत्रियः । तन्निवासोऽपि सः । आनर्तकः । पाठेयस्य निवासोऽपि सः । पाठेयकः । पल्लिभिर्ल्लनिवासः । पाल्लकः । शष्पाणां बालत्वृणानां स्थानं शष्पम् । शाष्यकः । अराञ्जीनाम काचित्स्त्री । तस्या निवास अराञ्जी नगरी । आराञ्जकः । आराञ्जीत्यन्यः । घृता राजानो येन स घृतराजो नृपः । तन्निर्वृत्ता धार्तराञ्जी नगरी । धार्तराञ्जकः । धार्तराष्ट्रीत्यप्यन्ये पठन्ति । तत्र घृतं राष्ट्रमनेन घृतराष्ट्रो राजा । तन्निर्वृत्ता धार्तराष्ट्री नगरी । धार्तराष्ट्रकः । कुक्षिर्नगकुक्षौ ग्रामः । कौक्षकः । समुद्रकुक्षिरित्यन्ये पठन्ति । तन्मते सामुद्रकुक्षकः । द्वायाहावौ यस्मिन् द्वायाहावो ग्रामः । एवं त्रयाहावः । द्वैयाहावकः । त्रैयाहावकः । पाथेयो ग्रामः पाथेयकः । वर्ज्यो ग्रामः । वर्ज्यकः । आञ्जी कूलो नाम ग्रामः । आञ्जीकूलकः । अञ्जिकूल इति भीजः । माठरो ग्रामः । माठरकः । बर्बरी देशविशेषः । बर्बरकः । बर्बड इत्यन्यः ॥३३०॥

दक्षिणापथपट्टारौ समुद्रो नौमनुष्ययोः ।

मद्रकूलं च भक्षाली राजशब्दात्स्थलीगृहे ॥३३१॥

दक्षिणः पन्था दक्षिणापथः । ड्याट्त्वे ह्रस्वश्च बहुलमिति बहुलवचना-
दतः पाठाद्वा दीर्घः । दक्षिणापथकः । पट्टारो ग्रामः । पाट्टारकः । सामु-
द्रिका नौः । सामुद्रको मनुष्यः । अन्यत्र सामुद्रं लवणं जलं वा । मद्राणां कूलं
मद्रकूलम् । तत्समीपे ग्रामो मद्रकूलः । माद्रकूलकः । भक्षाली ग्रामः । भाक्षा-
लकः । भक्षादीत्यन्यः । राजस्थलकः राजगृहं नगरम् । राजगृहकः ॥३३१॥

माहकादानकान्माषाद्दोषमानादृमद्रकात् ।

दाण्डायनसमुद्राभ्यां स्थलीशब्दः परो मतः ॥३३२॥

माहकानां स्थली माहकस्थली । माहकस्थलकः । आनकस्थलकः । मा-
पस्थलकः । घौषस्थलकः । मानस्थलकः । मानकस्थलीत्यन्यः । आट्टस्थलकः ।
माद्रकस्थलकः । दण्डस्यापत्यं दाण्डिः । तस्यापत्यं युवा दाण्डायनः । तस्य स्थली
दाण्डायनस्थली । दाण्डायनस्थलकः । सामुद्रस्थलकः । अयं दिग्बस्त्रमतेन ॥३३२॥

अर्जुनवातएडायनविनादवाणियावसायवाटूराः ।

कूलात्सौवीरेष्विमकान्तशकुन्तीकषायाश्च ॥३३३॥

अर्जुनः पार्थोऽन्यो वा । तन्निवासीऽपि ग्रामोऽर्जुनः । आर्जुनकः ॥
वातएडायनकः । अयं वासनमतेन । अवतण्ड ऋषियाम इत्यन्यः । वतण्ड
इत्यपरः । विनादो ग्रामः । वैनादकः । अनुकम्पितो वणदत्तो वणियः ।
वाणियकः । अवसायो ग्रामः । आवसायकः । अयं वासनमतेन । वाटयतीति
वाटूरो ग्रामः । वाटूरकः । खाटूर इत्यन्यः । कौलको भवति सौवीरश्चेत्
कौलोऽन्यः । कुलादित्यन्ये पठन्ति ॥ इमः कश्चित् । तस्य कान्त इमकान्तः ।
ऐमकान्तकः । शाकुन्तकः । काषायकः । अयं वासनमतेन । छविषयेभ्यः प्राप्ते
वाहीकग्रामेभ्यस्पृज्जिठयोः परिशिष्टेभ्योऽपि । विदेहानर्त्तपाठेयपाथेयानां प्र-
स्यपुरेत्यादिनाऽकञ्जि सिद्ध आदेशार्थः पाठः । तेन विदेहानामानर्त्तानां च
सत्रियाणां स्वं विदेहकम् । आनर्त्तकम् । पाठेयस्य स्वं पाठेयकम् । एवं पट्टा-
रमाठराराञ्जीघार्त्तराञ्जीजामीरीपान्तत्वादकञ्जि द्रष्टव्यम् ॥३३३॥ इति धूमादिः ॥

सन्ध्या पञ्चदशी शश्वदमावास्या त्रयोदशी ।

प्रतिपत्सन्धिबेलाथ पौर्णमासी चतुर्दशी ॥३३४॥

सन्ध्यादिभावरुभ्योऽण् इत्यनेन । सन्ध्यादिभ्यः कालवाचिभ्यः शेषेर्धोऽण् भवति । सन्ध्यास्तस्यकालः । तत्र भवं सान्ध्यं कर्म । यथा—मनैव सिद्धराज-
वर्णने— जातेयस्यप्रयाणेतुरगखुरपुटोत्खातरेणुप्रपञ्चे—

तीव्रंध्वान्तायमानेप्रसरतिबहलेसर्वतोदिक्कनस्मिन् ।

भास्वच्चन्द्रार्कविम्बग्रहगणरहितं व्योमत्रीक्ष्यप्रसुग्धाः—

सांध्यं कर्मारभन्ते शिशुसुनिवटवोजातसंध्याभिशङ्काः ॥

पञ्चदशानां पूरणीयं पञ्चदशी । षाड्दशः । शश्वद्भवं शाश्वतम् ॥

अशश्वत इत्यतः शाश्वतिक इति ठणपि । शकटाङ्गजनतमेतत् । सम्पदिति-

वामनः । आमावास्याः । एकदेशविकृतस्यानन्यत्वादभावस्याशब्दादपि भवति ॥

आमावस्यः । त्रयोदशानां पूरणी त्रयोदशी । त्रायोदशः । प्रतिपद्यन्तेऽहा-

न्यस्याः प्रतिपत् पक्षतिः ॥ सन्ध्याप्रातिपदेनेव व्यतिभिन्ना हिमांशुना ॥

सन्धिवेला सन्धिकालः । सांधिवेलः । पूर्णां माश्रन्द्रो मासो वाऽप्यं

तिथौ पौर्णमासी । अतएव गणपाठादणि । तत्र भवः पौर्णमासः । चातुर्दशः ।

कन्या कालाट्टञ् इत्यनेन ठञि प्राप्तेऽण् विधानम् ॥ ३३४ ॥

इति सन्ध्यादिः ॥

अश्मपादाशनिह्लादपिशाचाः शकुनिर्जयः ।

त्सर्वाकर्षपिचण्डाश्च निचयश्च नयो हृदः ॥ ३३५ ॥

कोऽश्मादेरित्यनेनाश्मादेः सप्तन्यान्तात्तत्र साधुरित्यर्थे को भवति ॥

अश्मन्यश्मकर्मणि कुशलः अश्मकः । पादप्रक्षालनादौ कुशलः पादकः । अश-

निनिपातने साधुः अशनिकः । ह्लादे प्रह्लादने साधुः ह्लादकः । पिशाचा-

पनयये साधुः पिशाचकः । शकुनिरुत्तग्रहणादौ साधुः शकुनिकः । जयकः ।

त्सरुकरणे साधुः त्सरुकः । आकर्षणम् । आकृष्यत आकर्षन्त्यस्मिन्निति वा ।

आकर्षो द्यूतम् । अक्षः शारिफलकं च (१) तत्करणे साधुः आकर्षकः । पिच-

ण्डापनयने साधुः पिचण्डकः । निचयकः । चय इत्यन्यः । नयकः । हृदकः ॥

(१) शारिफलकम् । आकृष्यते सुवर्णादिकमस्मिन्नित्याकर्षो निकपोपलः ।

तत्र कुशल आकर्षकः । आकषेति रेफरहितो मुख्यः पाठ इति दीक्षिताः ।

तत्राप्याकषन्ति सुवर्णादिकमस्मिन्नित्येव विग्रह इति पाठः ।

हाद् इत्यन्ये ॥ तत्र साधुरित्यर्थयोगाद्शमादयः शब्दास्तद्विषयायां क्रियायां वर्तमानाः प्रत्ययमुत्पादयन्ति ॥ ३३५ ॥ इत्यशमादिः ॥

कथेक्षुमांसौदनवृत्तिसंग्रहाः प्रवाससङ्घातनिवाससक्तवः ।
गुडो वितण्डाजनवादवेणवो गणोपवासौ विकथागुणाविमौ ३३६

कथाप्रतिजनादिभ्यां ठञ्खजावित्यनेन कथादेः प्रतिजनादेश्च ठञ्खजौ क्रमेण भवतः । कथायां साधुः काथिकः । ऐक्षुकः । मांसौदन इति व्यस्तस-
मस्तस्य ग्रहणम् । सांसिकः । औदनिकः । मांसौदनिकाश्चेदयः । वार्त्तिकः ।
धर्मदेशनानिपुणो वार्ताख्याननिपुणो वा । सांग्रहिकः । प्रावासिकः ।
सांघातिकः । नैवासिकः । साक्तुका यवाः । गौडिका इक्षवः । वैतण्डिकः ।
जनवादः कौलीनम् । जानवादिकः । वैणुका गिरयः । गाणिकः । औपवा-
सिकः । स्त्रीभिक्षादिविषया कथा विकथा । वैकथिकः । गौणिकः ॥३३६॥

आयुर्वेदजनेवादौ सङ्ग्रामापूपसङ्कथाः ।

विश्वात्कथा च कुल्माषो जनोवादोऽथ कुष्ठवित् ॥३३७॥

आयुर्वेदिकः । ननु वृत्तिसङ्ग्रहगुणगणायुर्वेदानां पाठो निरर्थकः । उ-
वषादि पाठाद्वृत्तिसिद्धः । यो हि वृत्त्यादिषु साधुः स वृत्त्यादीनां योद्धा
भवत्येव । सत्यम् । अत्र पाठो द्विग्वर्थः । द्वयोर्वृत्योः साधुः द्वैवृत्तिकः ।
त्रैवृत्तिक इत्यादि सिद्धम् । जने वादो जनेवादः । सप्तम्या अलुग् अतएव
निपातनात् पष्ठरा वैत्वम् । जानेवादिकः । सांग्रामिकः । आपूपिका गोधूमाः ।
सङ्ग्रह्याऽन्योऽन्य संलापः । सांकथिकः । विश्वस्य कथा विश्वकथा । वैश्वकथिकः ।
कौल्माषिकाः कलायाः । जनेषु निष्ठुरो वादो जनोवादः । उकारो निपातो
मध्यभूतो नेष्ठुर्ये द्रष्टव्यः । अथवा पष्ठीसप्तम्योः स्यान् उकारोऽत एव निपातनात् ।
जानोवादिकः । कुष्ठस्य शिवत्रस्य विद्धानम् । तत्र साधुः कौष्ठवित्कः । अयं
आमनमतेन ॥ ३३७ ॥ इति कथादिः ॥

जनः प्रतिमहद्विश्वपञ्चसर्वानुतः कुलम् ।

परामुष्यपरस्येभ्यः समेदं संपराद्युगः ॥ ३३८ ॥

जनं जनं प्रति प्रतिजनम् । तत्र साधुः प्रातिजनीनः । जने जने साधु-
रित्यर्थः । माहाजनीनः । विश्वो जनो विश्वजनः । येश्वजनीनः । पञ्चउ

जनेषु साधुः पाञ्चजनीनः । तद्वितद्विगोः खञ् । अथवा पञ्चानां जनः पञ्च-
जन्तः । पाञ्चजनीनः ॥ सर्वो जनः सर्वजनः । सार्वजनीनः । शकटाङ्गजस्तु
सर्वजनात्खञ्चेत्यनेन सूत्रेण सार्वजन्यः । सार्वजनीन इत्याह । अनुगतो
जनम् अनुजनः । जनं जनमनु अनुजनः । आनुजनीनः । अयं शकटाङ्गज-
दिवस्त्रमतेन । कुलमिति परामुष्यपरस्येभ्यः परं द्रष्टव्यम् । परं कुलं परकुलम् ।
परस्य वा कुलं परकुलम् । पारकुलीनः । आमुष्यकुलीनः । गणपाठात्षष्ट्यलुक् ।
पारस्यकुलीनः । गणपाठात् षष्ट्यलुक् । वाक्रोश इत्यनेन वा यदा परकुल-
सम्बन्धेनाक्रुश्यते । समो युगोऽस्मिन् सस्युगो बलीवर्दः । समो युगः सस्युगः ।
समनविपसं वा युगं कालविशेषः सामयुगीनः । ऐदंयुगीनः । अस्मिन्काळे
साधुरित्यर्थः ॥ संयुगं संग्रामः । सांयुगीनो भटः ॥

संयुगे सांयुगीनं तमुद्यत्तं प्रसहेत कः ॥

परमिष्टमनवरम् अन्यद्वा युगं परयुगम् । पारयुगीणः ।

अत्र साधुर्योग्यः प्रवीणो वा गृह्यते । उपकारकवाची तु हितमित्यनेन
संगृहीतः । अत्र हि सूत्रकदम्बके समस्यन्तात्प्रत्ययः । अग्रे तु हितार्थं चतुर्थ्य-
न्तात्प्रत्ययः । अतो न बाध्यबाधकभावः ॥ ३३८ ॥ इति प्रतिजनादिः ॥

दिग्वर्गपूगा गणपक्षमेधा वंशानुवंशौ वनमित्रमेधाः ।

धाय्यादिनाद्यन्तरवेशकाशा अव्ययकालान्तरहोमुखाश्च ३ ३९

दिगादिदेहांशाद्य इत्यनेन तत्र भव इत्यर्थे दिगादेर्यं प्रत्ययो भवति ।
दिशि भवम् दिश्यम् । यथा—

विक्रीय दिश्यानि धनान्युरूणि द्वैप्यानसाबुत्तमलाभभाजः ।

तरीषु तत्रत्यनफलगुभाण्डं सांयान्निकानावपतीऽभ्यनन्दत् ॥

वर्ग्यः । पूग्यः । गण्यः । पक्ष्यः । मेध्यः । वंश्यः । अनुवंश्यः । वन्यः
करी । मित्र्यः । मेध्यः । धाय्या सानिधेनी । धाय्या मित्रमस्येति ह्रस्वत्वे धाय्य-
मित्र इति केचित् । आद्यः । साक्ष्यः ॥ अन्तरे भवः अन्तर्यः । अन्तरित्यन्ते ।
तन्मतेऽन्त्यः । वेशे प्रतिकर्मेणि पुरे वा भवा वेश्या(१) । यथा—

स्वास्तीर्णतल्परचितावसथः क्षणेन वेश्याजनः कृतनवप्रतिकर्मकाश्यः ।

(१) वेशो नेपथ्यं वेश्यागृहं वा । तत्र भवा वेश्येति पा० ।

खिन्नानखिन्नमतिरापततो मनुष्यान् प्रत्यग्रहीच्चिरनिविष्ट इवोपचारैः ॥
काश्यः । अप्सु भवः अप्सव्यः । यूथयः । काल्यः । अन्त्यः । रहस्यम् । मुख्यम् ॥३८९॥

अभिन्नजघनालीका आकाशाकालपथ्युवाः ।

माघन्यायकशा बेशः सञ्ज्ञायामुदकं तथा ॥३९०॥

अभिन्नः । जघन्यः । अलीक्यः । आकाश्यः । अकाल्यः । अयं चन्द्रवामनमतेन । पथ्यम् । उख्यम् । आकारान्तादप्युखाशब्दात् पिठरादिवाचकाद्यः । कर्णोपार्श्ववाचकात्तु देहांशद्वारेणैव सिद्ध इति केचित् । माघ्यं कुन्दकुसुमम् । न्यायम् । कशे देशे भवम् कश्यं मद्यम् । दृश्यः । सञ्ज्ञायाम् उदक्या-रजस्वला स्त्री । सञ्ज्ञायाम् अन्यत्र । औदकी मत्सी । मुखजघनवंशानुवंशानामदेहांशार्थः पाठः । यथा-शरीरस्य मुखं प्रधानमग्रभागो वा जघनं निकृष्टं पश्चाद्भागो वा तथाऽन्यस्मिन्नर्थे मुखजघनसदृशे यदैतावुपचारेण वर्तते तदापि यप्रत्ययः स्यात् । तद्यथा । मुखे प्रधाने पदेऽग्रे वा भवो मुख्यः । सेनाजघने निकृष्टे पश्चाद्भागे वा भवो जघन्यः ॥३९०॥ इति दिगादिः ॥

मुखोलूखलसीरौष्ठहनुशीलरथाः परेः ।

उपात्स्थूलकलापौ च स्थानसीरादि सम्मतम् ॥३९१॥

परिमुखादेरव्ययीभावादित्यनेन परिमुखादिभ्योऽव्ययीभावेभ्यस्तत्र भव इत्यर्थेऽयः प्रत्ययो भवति ॥ परिमुखं भवः पारिमुख्यः सेवकः । सहि यतो यतः स्वाग्निनो मुखं तत्र सन्निहितो भवन्नेवमुच्यते । पार्युलूखल्यः । पारिशीर्यः । पारिशीरमित्यप्यन्यः । पार्योण्व्यः । पारिहनव्यः । पारिशीलयः । पारिरथ्यः । एतौ दिग्बस्त्रमतेन । स च परिशालशब्दमप्याह । परेरिति परिशब्दादित्यर्थः । उपस्थूले भवम् औपस्थूल्यम् । स्थूलाशब्देन हलिरुच्यते । स्थूणेत्यन्यः । औपकलाप्यः । औपस्थान्यः । अयं वामनमतेन । औपशीर्यः । आदिशब्दात्कपालशालशब्दौ सङ्गृहीतौ ॥३९१॥

पदयूपवंशसीताः पथितिलमापाः ससातयवभङ्गाः ।

गङ्गासीरे सरथे सर्वेऽप्येतेऽनुतो लक्ष्याः ॥३९२॥

आनुपद्यः । आनुयूप्यः ॥ आनुयूप्य इति वामनमतेन । आनुयंयः । अनुयंयेति दिगादावपि पठ्यते तत्राव्ययीभावादन्वयः । केचित्तु तत्राप्यव्ययीभावात् प्येति गन्वन्ते । आनुशीत्यः । आनुपराः । आनुतिल्यः । आनुमाप्यः ।

ससातेति सह सातयवभङ्गाभिर्वर्त्तन्ते । ससातयवभङ्गाः । स्यति दुःखमिति सातं दुःखम् । सातमनु-अनुसातम् । आनुंसात्यः । अयं दिग्बस्त्रमतेन । आनुयव्यः । आनुभङ्ग्यः । अयं भोजमतेन । आनुगङ्ग्यः । अयं वामनादिम-
तेन । आनुसीर्यः । आनुरश्यः । अयं दिग्बस्त्रमतेन । ननु मुखं परित इत्यर्थे कथमव्ययीभावः । सत्यम् अस्मादेव निपातनात् । अथवा परेर्वर्जनार्थवृत्तित्वे सति बहिःपर्यपाञ्चाजित्यनेनाव्ययीभावः । अनुशीरादीनां तु सामोप्यवृत्ति-
त्वात्खलक्षणेनैवाव्ययीभावः । अव्ययीभावादन्यत्र । परिगतं मुखं परिमुखम् । तत्र भवः पारिमुखः ॥ ३४२ ॥ इति परिमुखादिः ॥

ऋगयनपुनरुक्तन्यायशिक्षानिमित्ता उपनिषद्विषयज्ञ-
श्लक्षणाचर्चामुहूर्ताः । अपिनिगमनिरुक्तोत्पातसंवत्सराव्या-
करणमथपदव्याख्यानविद्यात्रिविद्याः ॥ ३४३ ॥

ऋगयनेभ्योऽण् इत्यनेन ऋगयनादेस्तस्य व्याख्यानो ग्रन्थस्तत्र भव इति वार्थेऽण् प्रत्ययो भवति ॥ ऋचासयनम् ऋगयनम् । न क्षुभनादेरित्यनेन सात्वा-
भाषः । तस्य व्याख्यानस्तत्र भवो वा । आर्गयणः । रत्ननिमित्तं तु सात्वं भवत्येव । आर्गयन इत्यन्यः । अस्मन्मते तु गिरिनद्यादित्वाद्भुभयम् । पौनरु-
क्तः । नैयायः । शैक्षः । नैमित्तः । औपनिषदः । आर्षः । याज्ञः । स्थाक्षणाः । षार्चः । सौहूर्तः । निगच्छन्त्यनेन निश्चयमिति निगमो ग्रन्थविशेषः । नैगमः । नैरुक्तः । उत्पातः प्रतिपादकशास्त्रम् । औत्पातः । सांवत्सरः । वैयाकरणः । पदानां व्याख्यानं पदव्याख्यानम् । पादव्याख्यानः । अन्ये तु पदं व्याख्यान-
मिति च्छिन्दति । तन्मते पादं वैयाख्यानम् । वैद्यः । त्रैविद्यः ॥ ३४३ ॥

छन्दसो विजितिर्भाषामानं विचितिनामनी ।

क्षत्राङ्गवास्तुतो विद्या स्यादुत्पादः क्रमेतरः ॥ ३४४ ॥

छान्दोविजितः । छान्दोभाषः । छान्दोमानः । छान्दोविचितः । छान्दोव्याख्यान इत्यप्यन्यः । छान्दोनामः । अयं वामनमतेन । क्षात्रविद्यः । आङ्गविद्यः । वास्तुविद्यः । औत्पादः । क्रामेतरः । ऋद्यज्ञद्वयगृगादिभ्यष्टञ् इत्यनेन टञि प्राप्ते वचनम् । आदैजाद्यतस्यो(१) ॥३४४॥ इति ऋगयनादिः ॥

(१) व्याकरणशब्दात्तु वृद्धान्चः प्राप्त इति टजादेरपवादोऽयमण् इत्यधिकम् ।

ऋग्ब्राह्मणाध्वराख्यातनामाख्यातानि नाम च ।

आद्यन्तप्रथमावेतौ षत्वणत्वनतान्तौ ॥ ३४५ ॥

ऋद्यञ्ङ्गगृगादिभ्यश्च इत्यनेन ऋकारान्ताद्द्वयञ्जवाचिनो द्वयञ् ऋगा-
देश्च तस्य व्याख्यानस्तत्र भव इत्यर्थे ठञ् भवति । ऋचां व्याख्यानस्तत्र भवो
वा आर्चिकः । ब्राह्मणिकः । आध्वरिकः । आख्यातिकः । नामाख्यातिकः ।
नामिकः । नामशब्दस्य द्वयञ् द्वारेण ठञ् सिद्धः । परं वामनपाणिनिचन्द्रादिमते
न गणे पठितः ॥ आद्यन्तिकः । प्राथमिकः । षत्वणत्विकः । नातानतिकः ॥
आकृतिगणश्चायम् । तेन पुरश्चरणप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥३४५॥ इति ऋगादिः ॥

शुण्डिकोलपतीर्थान्युदपानतृणभूमयः ।

कृकणस्थण्डिलौ पर्णोपतीर्थोदकपिप्पलाः ॥ ३४६ ॥

आयस्थानादशुण्डिकादेरित्यनेन शुण्डिकादिवर्जितात्तत आगत इत्यर्थे
ठञ् भवति । शुल्क शालाया आगतः शौल्कशालिकः । आकरिकः । शुण्डि-
कादेः शुण्डिकः शुण्डिका वा सुरापणः(१) । तत आगतः शौण्डिकेः । औलपः ।
उपल इति शकटाङ्गजः । तैर्धः । औदपानः । तार्णः । भौमः । फार्कणः ।
स्थाण्डिलः । पार्णः । औपतीर्थः । अयं चन्द्रवामनमतेन । औदकः । पैप्पलः ॥
एतौ शकटाङ्गजमतेन ॥ ३४६ ॥ इति शुण्डिकादिः ॥

कुलालसेनोपनिषन्निषादा मधुध्वपाकौ रुद्रदेवराजौ ।

रुद्रो वधूब्राह्मणकुम्भकाराः कर्मारचण्डालयुतः सिरिन्ध्रः ३४७

कुलालेभ्योऽकञ् इत्यनेन कुलालादेः शब्दगणात् कृत इत्यर्थे सञ्ज्ञावि-
पयेऽकञ् भवति । कुलालेन कृतं कोलाजकम् । घटघटीशरावीदञ्चनादि
भाण्डम् । सैनकं नगरोपरोधादि । औपनिषदकम् । अयं वामनमतेन । नैषा-
दकम् । माधवको मध्वासवः । अयं चन्द्रमतेन । शौवपाककम् । रौरवकम् ।
दैवराजकम् । देवराजन्निति केचित् पठन्ति । तत्र दैवकम् । राजकम् । रौद्र-
कम् । शकटाङ्गजदिग्वस्त्रमतेन । वाधवकम् । ब्राह्मणकम् । ब्रह्मन्निति शकटा-
ङ्गादयः । कौम्भकारकम् ॥ फार्मारकम् ॥ चाण्डालकम् । उपानदादिकम् ॥
अदासो दासवृत्तिर्यः स सिरिन्ध्र इति स्मृतः । सैरिन्ध्रकम्(२) ॥ ३४७ ॥

(१) सुरापणः सुराविक्रयी बोध्यत इति पा० । (२) सैरं हलमेव सै-
रम् । तद्वहतीति सैरिन्ध्रः । सैरिकः सिरिन्ध्रोऽपि स एव । सैरिन्ध्रकमिति पा० ॥

अनड्वान्परिषच्चैव सैरिन्ध्री वरुटस्तथा ।

अक्प्रत्यययुजो ज्ञेयाः सञ्ज्ञायां बुधपुङ्गवैः ॥ ३४८ ॥

आनडुहकम् । पारिषदकम् । पर्षच्छब्दोऽपि द्रष्टव्यः । सैरिन्ध्रकः ।
अयं श्रीभीमराजमतेन । वारुटकम् । शूर्पपिटकादि । सञ्ज्ञाया अन्यत्र ।
कौलालः श्लोक इत्यादि ॥ ३४८ ॥ इति कुलालादिः ॥

असुरो देवरक्षोभ्यां गुणान्मुख्यः परो मतः ॥ ३४९ ॥

दैवासुरः । राक्षोऽसुरः । गौणमुख्यः । अत्र शिशुकन्दाद्यदेवासुरादि-
द्वन्द्वाच्च इति लो न भवति ॥ ३४९ ॥ इति देवासुरादिः ॥

शिशुप्रद्युम्नसीतेन्द्रयमाद् यथाक्रमं मताः ।

क्रन्दोऽभिगमनं चैवान्वेषणं जननं सभः ॥ ३५० ॥

शिशुकन्दाद्यदेवासुरादिद्वन्द्वाच्च इत्यनेन शिशुकन्दादेः शब्दगणात्
देवासुरादिवर्जिताच्च द्वन्द्वाद् द्वितीयान्तादधिकृत्यकृतो ग्रन्थ इत्येतस्मिन्नर्थे
उग्रप्रत्ययो भवति । शिशवो बालास्तेषां क्रन्दस्तमधिकृत्यकृतो ग्रन्थः । शिशु-
कन्दीयः । बालपुस्तकः । शैशुकन्द इत्यन्यः । प्रद्युम्नस्याभिगमनं प्रद्युम्नाभि-
गमनम् । प्रद्युम्नाभिगमनीयः । सीतान्वेषणीयः । इन्द्रजननीयः । यमस्य
सभा यमसभम् । यमसभीयः ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन प्रद्युम्नप्रत्यागमनप्र-
द्युम्नोदयनसीताहरणप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ ३५० ॥ इति शिशुकन्दादिः ॥

सिन्धुस्तक्षशिलावसानदरदो गान्धारशाल्वोरसाः—

कर्णः सामलकारणधारच्छगलाः कैर्मेदुरो ग्रामणीः ।

कंसार्धासनसिंहकर्णमधुमत्कश्मीरसिंहा इमे—

स्याद्दत्सोद्धरणोथ वर्वरयुतो वर्णस्तथा किन्नरः ॥ ३५१ ॥

सिन्धुशुण्डिकादिभ्योऽण्यथावित्यनेन सिन्ध्वादेः शुण्डिकादेश्च सोऽस्या-
भिजन इत्यर्थेऽण्यथौ क्रमेणः भवतः । सिन्धुः समुद्रो नदी वा । सिन्धवो
जनपदः । सोऽभिजनीऽस्य सैन्यत्रः । ताक्षशिलः । आवसानः । दरदो जनपदः ।
दारदः । गान्धारः । शाल्वः । उरसा जनपदः । औरसः । कारणः । सामलः ।
द्वयं वामनमतेन । कारणधारः । काण्डवरक इति शकटाङ्गजः । उगलो ग्रामः

छागलः । कैर्मेदुरः । ग्रामणः । कांसः । आर्धासनः । अयं वामनमतेन ।
 सैहकर्णः । सिंहकर्ण इति भोजः । मधुमान् पर्वतः । माधुमतः । काप्रसीरः ।
 सैहः । अयं वामनमतेन । वात्सोदुरणः । बार्बरः । वार्णवः ॥ कैन्तरः ॥३५१॥

गब्दिकावासकम्बोजक्रौष्टकर्णसुमङ्गलाः ।

सङ्कुचितोऽथ किष्किन्धा पर्वतोऽपि निगद्यते ॥३५२॥

गब्दिका जनपदः । गाब्दिकः । आवासः । अयं वामनमतेन । का-
 म्बोजः । क्रौष्टकर्णः । क्रौष्टकर्णक इति भोजः । क्रौष्टकशब्दो वामनमतेन । सौ-
 मङ्गलः । अयं वामनमतेन । साङ्कुचितः । कैष्किन्धः । पार्वतः । येषु कच्छा-
 दिषु च पठ्यन्ते तेषां तत एवाणि सिद्धे नृतत्स्यलक्षणोऽकजि । अन्येषां च
 राष्ट्रलक्षणेऽकजि प्राप्ते वृद्धेभ्यश्छवाहीकग्रामेभ्यश्छज्जिठयोश्शेषेभ्योऽणि प्राप्ते
 वचनम् ॥ ३५२ ॥ इति सिन्ध्वादिः ॥

शुण्डिका कुचवारोऽथ सर्वसेनशटौ शकः ।

सर्वकेशरहौ बोधश्रणकः शङ्खशङ्करौ ॥ ३५३ ॥

शुण्डिका ग्रामः ५ अभिजनोऽस्य शौण्डिक्यः । अयं वामनमताभिप्रायः ।
 पाणिन्यादयस्तु शण्डिकस्य ग्रामजनपदवाचिनः शण्डिक्य इत्युदाहरन्ति ।
 कौचवार्यः । सर्वसेना जनपदः सार्वसेन्यः । शटा जनपदः शाक्यः । शका
 जनपदः शाक्यः सुगतः १० रक इत्यपि शकटाङ्गजः । सर्वकेशा जनपदः
 सार्वकेश्यः । राक्षः । अयं भोजनतेन । वह इति वामनः । बौध्यः । चाणक्यः ।
 शङ्ख्यः कपिलः । शाङ्कर्यः । कत इति वामनः । राष्ट्रवाचिभ्योऽकज् शेषे-
 स्योऽणि प्राप्ते वचनम् ॥ ३५३ ॥ इति शुण्डिकादिः ॥

कर्णाक्षिकेशा नखपादगुल्फभ्रूशृङ्गदन्तौष्ठमुखास्यष्टम् ॥

कर्णादिपक्षान्मूलं जाहतिरित्यनेन करणादेः शब्दगणात्पक्षशब्दाच्चास्य
 मूलमित्यर्थं जाहतिप्रत्ययौ भवतः । कर्णस्य मूलम् कर्णजाहम् । यथा—
 अपिकर्णजाहविनिवेशिताननः ॥

यथा च— दधाना बलिभं मध्यं कर्णजाहविलोचना ।

वाकृत्वचेनातिसर्वेण चन्द्रलेखेव पक्षतौ ॥

अन्तिजाहम् । केशजाहम् । नखजाहम् । पादजाहम् । गुल्फजाहम् ।
 गुल्म इत्यपि चन्द्रः । भ्रूजाहम् । शृङ्गजाहम् । दन्तजाहम् । औष्ठजाहम् ।

मुखजाहम् । आस्यजाहम् । अयं शकटाङ्गमतेन । पृष्ठजाहम् । अयं वामनम-
तेन । पुष्प इति चन्द्रादयः । वक्त्रफले अपि शकटाङ्गजः । इति कर्णादिः ॥
कर्णादिरेषोऽथ च पीलुशम्भ्यावश्वत्थकर्कन्धुकररीरयुक्तौ ॥ ३५४ ॥

पीलवादेः पाके कुण इत्यनेन पीलवादेः शब्दगणादस्य षाक इत्यर्थे
कुण प्रत्ययो भवति ॥ पीलूनां वृक्षाणां फलानां वा पाकः पीलुकुणः । शमी-
कुणः । अश्वत्थकुणः । कर्कन्धुकुणः । करीरकुणः ॥ ३५४ ॥

कुवलां बदरं पुष्पकर्कन्धूखदिरास्तथा ।

बदरीकुवलीशब्दौ शाकटायनसम्मतौ ॥ ३५५ ॥

कुवलकुणः । बदरकुणः । पुष्पकुणः । अयं चन्द्रमतेन । कर्कन्धुकुणः ।
खदिरकुणः । बदरीकुणः । कुवलीकुणः ॥ ३५५ ॥ इति पीलवादिः ॥

रैवतिकवैजवापी गौरग्रीबिस्तथौदमेघिश्च ।

स्वापिशिरथौदवापिः परिपठितः क्षेमवृत्तिश्च ॥ ३५६ ॥

रैवतिकादेश्छ इत्यनेन रैवतिकादेः शब्दगणादस्येदमित्यर्थे छप्रत्ययो
भवति ॥ रेवत्या अपत्यं रैवतिकः । रेवत्यादेश्छण् इत्यनेन ठणि । रैवतिकस्यायं
रैवतिकीयः शकटाश्वादिः । वीजवापस्यापत्यं वैजवापिः । वैजवापीयः ॥
गौरग्रीवीयः । औदमेघीयः ॥ स्वःपिशः स्वपिशः ॥ तस्यापत्यं स्वापिशिः ।
अतएव गणपाठाद्द्वारादेरित्यनेन टैज् न भवति । औदवापीयः । औदवा-
हिरित्यन्ये । क्षेमवृत्तीयः ॥ अस्यापि शिष्येत्यादिनाऽङ्कुञ्जि प्राप्ते वचनम् ॥ ३५६ ॥
इति रैवतिकादिः ॥

गोहविःस्वरदरासुरमेधा अष्टकायुगखदाविषकूपौ ।

स्रुक्स्खदाध्वसहिताक्षरवेदावूधसोऽनङ्ङि नभेऽपि च नाम्नेः ३५७

गवाद्योस्तु य इत्यनेन गो इत्यादेः शब्दगणाद् उवर्णान्ताच्च यप्रत्ययो
भवति वक्ष्यमाणेष्वर्थेषु । गव्यम् । हविर्हीतयं वस्तु । हविषे हितं तदर्थं वा ।
हविष्यम् । खर्य्यम् ॥ दर्य्यम् ॥ असुर्य्यम् । मेध्यम् ॥ अष्टका आहुकालः । अष्ट-
क्यम् । युगाय हितं युगोऽस्यस्यादिति वा । युग्यम् । खदतीति खदो हिंसकः ।
खद्यम् ॥ विष्यम् । कूप्यः ॥ स्रुच्यः ॥ स्खदा कुह्वाली । तदर्थं स्खद्यं लोहम् ।

अध्वन्यः । अक्षर्यः । वेद्यः । अयं वामनमतेन । ऊधस इत्यूधःशब्दस्यानङ्गा-
देशे सति पाठः । ऊधसेहितः ऊधन्योऽभ्यङ्गः । नाभये हितम् । नभ्यसञ्जगम् ।
नभ्योऽक्षः । प्राणयङ्गवाचिनस्तु नाभिश्वाद्वात्तत्तरेण य एष । नाभ्यं तैलम् ३५७

शुनो यण इति ज्ञेयं दीर्घत्वं च विभाषया ।

कूर्पबीजक्षरादीसवर्हिःशब्दौ सताविह ॥ ३५८ ॥

शुने हितं शुन्यम् । शून्यं च । रक्षपालमात्रेणापि रहितं गृहं कुटीर-
कादिपर्वतारश्यादिस्थानं तूपचारेण ॥ कूर्प्यो देशः । बीजेभ्य इमे । बीज्या
ब्रीहयः । क्षरायेदम् क्षर्यं काष्ठम् । दीसः श्लेषः । तदर्थं काष्ठं दीस्यम् ॥
वर्हिर्दर्मः । वर्हिष्यम् ॥ ३५८ ॥ इति गवादिः ॥

अपूपयूपौ कटकोऽथ किरवः सूपौदनौ तरडुलकर्णवेष्टौ ।

अवोषदीपौ पृथुकश्च पत्रं स्थूणार्गलाश्वा मुसलोऽपि पूपः ३५९

हव्यापूपादेर्वेत्यनेन वक्ष्यमाणेष्वर्थेषु हविर्विशेषवाचिनोऽपूपादेश्च यप्र-
त्ययो भवति वा । आनिह्यम् । आनिह्यं दधि । अपूप्यम् । अपूपीयम्
अन्नम् । यवाधूप्यम् । यवापूपीयम् । यूपो यज्ञस्तरुभः । यूप्यम् । यूपीयम् ।
कटक्यम् । कटकीयं हेम । किरवं सदिराकिट्टः । किण्व्यम् । किण्वीयम् ।
सूप्यम् । सूपीयम् । ओदन्यम् । ओदनीयम् । तरडुल्यम् । तरडुलीयम् ।
कर्णवेष्ट्यम् । कर्णवेष्टीयम् । कर्णवेष्टक इत्यन्ये ॥ अवोष्याः । अवोषीयाः क-
लायाः । दीप्यम् । दीपीयं वेष्टम् ॥ पृथुष्याः । पृथुकीया ब्रीहयः ॥ पत्र्यम् ।
पत्रीयम् । अश्वपत्र्यम् । अश्वपत्रीयमित्यपि । स्थूण्यम् । स्थूणीयं काष्ठम् ॥
अरेण कर्षणेन गलति अर्गला दारुमयो लोहमयो वा दण्डः । अर्गल्यम् । अर्ग-
लीयम् । अयं भोजमतेन । वामनाद्यास्त्वर्गल इति पेटुः । अश्व्यम् । अश्वी-
यम् ॥ मुसल्यम् । मुसलीयम् ॥ पूप्यम् । पूपीयम् ॥ शाकटायनमतमाश्रित्या-
न्नविकाराशचेति न पठितम् । एभ्यस्तु सुर्याः सुरीयास्तरडुला इत्याद्युदाहर-
णम् । सादेश्चेत्यधिकारात् । प्रदीप्यम् । प्रदीपीयमित्यादि । अन्येतु प्रदी-
पशब्दमपि पठन्ति । तन्मते नियमार्थं विदीपीयमित्यादि । अन्नविकारेभ्यस्त्व-
र्थपरत्त्वान्न भवति । यवसुरीयम् । पिष्टसुरीयम् । अतएवापूपाद्यन्नविकाराणां
पुयग्रहणमर्थवद्भवति । अपूपादिषु येऽन्तभेदशब्दा अपूपादयस्तेषां केनचि-

दाकारसादृश्येनार्थान्तरवृत्तौ प्रत्ययार्थमुपादानमिति शकटाङ्गजः । अस्माकं
त्वयुमाशयः । शब्दकुलीनोदकप्रभृतयोऽन्नविकाराः पृथुकापूपादयस्त्वन्नमेव
विशिष्टावस्थं नान्नविकार इति पृथगुपादानम् ॥ ३५९ ॥ इत्युपादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्धमानविरचितायां
स्वीयगणरत्नमहोदधिवृत्तौ शेषसाध्वर्थभवाख्यानागतार्थ-
कृताभिजनपाकैदमर्थविहिततद्धितप्रत्ययगणनिर्णयो
नाम पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

संशयषष्ठान्नव्रतभारतरामायणैकभक्तानि ।

अष्टममासक्षपणोषवासपारायणानि स्युः ॥३६०॥

लत्संशयादेः करोतीत्यनेन द्वितीयान्तात्करोतीत्येतस्मिंल्लोकप्रसिद्धैर्धे ठञ्
भवति ॥ संशयं करोति संशयिकः स्यात्वादिः । षाष्ठान्नव्रतिकः । भारतिकः ।
रामायणिकः । अनयोः करोतिः कथने वर्तते । ऐकभक्तिकः । आष्टमिकः ।
मासक्षपणिकः ॥ औषवासिकः । पारायणं साकल्यव्रजनम् । पारायणिकः ।
अथवा पारायणमिति सामान्येनाभिधानात् धातुपारायणं नामपारायणं वा-
भिधीयते । तत्करोति पठनपरिसमाप्तिं नयतीत्यर्थः । एतच्च करोतेरशेषधात्व-
र्थानुगतवृत्तित्वाङ्गभ्यते । तदुक्तम्-

विकारभेदसंसर्गात्कर्षहानादिरूपतः । करोतिः परिणामार्थं चित्रसाह स्वभावतः ॥

आकृतिगणोऽयम् । तेन तुरायणचान्द्रायणप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥३६०॥

इति संशयादिः-॥

अजशङ्कूतरा वारि कान्तारस्थलजङ्गलाः ।

तेनाजाद्यादेरीहृतं वेत्यनेनाजादिपूर्वपदात्पयिशब्दात् तेनाहृतं तद्वच्छ-
लीत्येतस्मिन्नर्थे ठञ् भवति ॥ अजपथेनाहृतम् अजपथं गच्छति वा । आज-
पथिकम् । आजपथिकः । शङ्कुरिव ऋजुः पन्थाः शङ्कुपथः । शाङ्कुपथिकम् ।
औत्तरपथिकम् । वारिपथिकम् । कान्तारपथिकम् । स्थालपथिकम् । जाङ्ग-
लपथिकम् ॥ इत्यजादिः ॥

ऋतुस्तथोपवस्ता च प्राशिता च बुधैर्मतः ॥३६१॥

ऋत्वादिभ्योऽण् इत्यनेन ऋत्वादेरस्य प्राप्त इत्येतस्मिन्नर्थोऽण् भवति ॥
 ऋतुः प्राप्तोऽस्य आर्त्तवं पुष्पम् । आर्त्तवी कलिका । आर्त्तवः पुष्पवन्धुः ।
 उपवस्ता । उपवासव्रती । स प्राप्तोऽस्य औपवस्त्रं पर्वभोज्यं वा ॥ प्राशिता
 भोक्ता प्राप्तोऽस्य प्राशित्रं सोजनम् । प्राशित्री रसवती । ऋत्वादयः प्रयोग-
 गम्याः ॥३६१॥ इति ऋत्वादिः ॥

सन्तापसङ्घातनिसर्गयोगोपवाससम्पादनसम्परायाः ।

सङ्ग्रामसंयोगविसर्गमांसप्रवासमांसौदनसन्निपाताः ॥ ३६२ ॥

तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्य इत्यनेन सन्तापादेश्चतुर्थ्यन्तात्तस्मै प्रभव-
 तीत्येतस्मिन्नर्थे ठञ् भवति ॥ सन्तापाय प्रभवति सांतापिकं दुर्जनसंगतम् ।
 सांतापिकी यीशकालः । सांतापिकी नीचसेवा ॥ सांघातिकम् । नैसर्गिकम् ।
 निःसर्ग इत्यपि घामनः । यौगिकम् । अयं शकटाङ्गजमतेन । औपवासिकः ।
 सांपादनिकः । सांपरायिकः । सांग्रामिकः । सांयोगिकः । वैसर्गिकः । मांसिको
 व्याघागमः । प्रावासिकः । मांसौदनिकः । सक्तुमांसौदन इत्यन्यः । सान्निपा-
 तिकः ॥ ३६२ ॥

संनाहौदनसंवेशसक्तुसंमोदनं निरः ।

पेषयोषावुपात्सर्गः पेषवासक्रमाः समाः ॥ ३६३ ॥

सांनाहिकः । औदनिको दानपतिसंयोगः । सांवेशिकः । सक्तुभ्यः
 शक्तः साक्तुकः । संमोदनं हर्षः । सांसोदनिकः । नैष्वेपिकः । नैर्घोषिकः ।
 औपसर्गिकः । सांषेपिकः । सांवासिकः । सांग्रामिकः । अयं शकटाङ्गजमतेन ।
 ॥ ३६३ ॥ इति संतापादिः ॥

व्युष्टोपवासौ परिषत्प्रवासौ सङ्ग्रामतीर्थं समुदायनित्यम् ।

प्रवेशनो निष्क्रमणः समोऽग्नेर्घातः पदं पीलुपरं च मूलम् ३६४

व्युष्टादिभ्योऽण् इत्यनेन व्युष्टादेश्चतुर्थ्यन्तात्तस्मै दीयत इत्येतयोरर्थयोरण्
 भवति । व्युष्टं प्रभातम् । तत्र कार्यं दीयते वा । वैयुष्टम् । औपवासम् ।
 पारिधदम् । प्रावासम् । सांग्रामम् । तीर्थम् । सामुदायम् । नित्यशब्दो दिवसा-
 स्पावृत्तिविषयो व्रष्टव्यो व्युष्टसाहचर्यात् । ननु कूटस्थाकाशादिवस्तुवृत्तिस्ततः

सर्वेऽध्वभावकाला इति सप्तमीप्रसंगे द्वितीया स्यात् । नैत्यः । सर्वकालं दीयत इत्यर्थः । प्रवेशने गृहान्नगराद्वा कार्यं दीयते वा । प्रावेशनम् । एवं नैष्क-
मणम् । सांघातम् । आग्निपदम् । पैलुमूलम् । परिषत्समुदायशब्दौ न्यासक-
न्मतेन । आकृतिगणश्चायम् । तेन लोकयात्राप्रमृतयो द्रष्टव्याः ॥ ३६४ ॥
इति व्युष्टादिः ॥

चूडा श्रद्धा द्वादशाहस्तथायं ज्ञेया यात्रा देवतीर्थात्परेह ।
स्वर्गः कामो बोधनायुर्यशांस्यनेकोलक्षयो धीमता लक्षयतश्च ३६५

चूडास्वर्गात्थापनास्वस्तिवाचनादेरण् यच्छठञ्जुगित्यनेन चूडादिस्व-
र्गाद्युत्थापनादिस्वस्तिवाचनादीत्येतेभ्यो गणेश्यः प्रथमान्तेभ्योऽस्य प्रयोजन-
मित्येतस्मिन्नर्थेऽण् यच्छठञ्जुगित्येते क्रमेण भवन्ति ॥ चूडाप्रयोजनमस्य चौडम् ।
यथा— सवृत्तचौलञ्चलकाकपक्षकैरमात्यपुत्रैः सधयोभिरन्वितः ॥

एवं आहुम् । द्वादशाहम् । दैवयात्री पुष्पप्रधितिः । तैर्धयात्र्यन्त्रपङ्क्तिः ।
इति चूडादिः ॥

स्वर्गः प्रयोजनमस्य स्वर्ग्यं धनम् । स्वर्ग्या देवपूजा । काम्या इष्टयः ॥
धन्यम् । आयुष्यम् । यशस्या विद्या ॥ ३६५ ॥ इति स्वर्गादिः ॥

उदुपाभ्यां परात्स्थापेरनोऽनोः प्रवचेर्वचेः ।

विज्ञेर्वासेस्तथाङ्प्राच्च रुहेः समाविशेरभेः ॥ ३६६ ॥

उत्थापनम् । उत्थापना वा प्रयोजनमस्य उत्थापनीयम् । उपस्थाप-
नीयम् । अनुप्रवचनीयम् । अनुवचनीयम् । अनुपञ्चाद्वाचनम् अनुवाचनमिति
वाचनः । अनुषादनम् । अनुपानमित्यपरः । अनुवेशनीयम् । संवेशनमिति
वाचनः । अनुषासनीयम् । आङ्प्राच्चेति षकारेणानोरित्यनुकृष्यते । आरो-
हणीयम् । प्ररोहणीयम् । अनुरोहणीयम् । समावेशनीयम् । समारम्भणीयम् ३६६
विशोः पदे रुहेः पूरेः समापेश्व सपूर्वतः ।

स्वस्तिवाचनं पुण्याहवाचनं शान्तिवाचनम् ॥ ३६७ ॥

अन इत्यनुषत्तते । गृहप्रवेशनं प्रयोजनमस्य गृहप्रवेशनीयम् । अश्व-
प्रपदनीयम् । प्रासादारोहणीयम् । प्रपापूरणीयम् । व्याकरणसमापनीयम् ।
सपूर्वत इति गृहादिपूर्वपदोपेतात् ॥ इत्युत्थापनादिः ॥

स्वस्तिवाचनं प्रयोजनस्य स्वस्तिवाचनम् । पुण्याहवाचनम् । शान्ति-
वाचनम् । सत्थापनादयः स्वस्तिवाचनादयश्च प्रयोगशस्याः ॥ ३६७ ॥

इति स्वस्तिवाचनादिः ॥

देवतिलदेशविरतेर्महतः सामायिकाहृतं गदितम् ।

दीक्षावान्तारपूर्वात्रिश्रुतिकाः ह्युर्महानाम्न्यः ॥ ३६८ ॥

तच्चरति देवव्रतादिभ्यो ङिन् इत्यनेन तदिति द्वितीयान्ताद्देवव्रतादि-
शब्दगणाच्चरतीत्यर्थे ङिन् भवति । देवव्रतं चरति देवव्रती । तिलव्रतं चरति
तिलव्रती । देशविरतिव्रती । महाव्रती । सामायिकव्रती । आवान्तरदीक्षी ॥
इति देवव्रतादिः ॥

त्रिश्रुतिका इति त्रिशब्दो महानाम्न्यादिरित्यर्थः । महानाम्न्यादेरि-
त्यनेन महानाम्न्यादेर्द्वितीयान्ताच्चरतीत्यर्थे ङिन् । महानाम्न्यो नाम ऋचः ।
तत्सहचरितं व्रतं तच्छब्देनोच्यते । महानाम्नीश्चरति महानाम्निकः । आख्या-
सरूपत्वादस्त्रीत्वाभाषः । आदित्यव्रतिकः । गौदानिकः । तथाऽस्य ब्रह्मचर्य्य
इत्यनेन ब्रह्मचर्य्येऽभिषेय एषां तुल्यं रूपम् ॥ ३६८ ॥ इति महानाम्न्यादिः ॥

अश्ववस्वश्मभङ्गोमावर्षोर्णागणमित्यपि ।

वंशवल्बजमूलाक्षस्थूणाखट्वाकुटेक्षवः ॥ ३६९ ॥

ब्रह्मवर्चसद्वरचोऽसङ्ख्यामानाशवादेर्य इत्यनेन ब्रह्मवर्चसशब्दात्सङ्ख्या-
मानाशवादिषर्जिताश्च द्वयचः शब्दात् तस्य हेतुः संयोगोत्यातावित्येतस्मिन्नर्थे
षप्रत्ययो भवति ॥ ब्रह्मवर्चसस्य निमित्तं संयोग उत्पातो वा । ब्रह्मवर्चस्यः ।
द्वयचः । धनस्य निमित्तम् धन्यम् । स्वर्ग्यमित्यादि । सङ्ख्यामानाशवादि
प्रतिषेधः किम् । पञ्चकः । सप्तकः । प्रास्थिकः । खारीकः । अशवादेः आश्वि-
कः । वासुकः । आश्विनकः । भाङ्गिकः । औन्निकः । वार्षिकः । और्णिकः ।
गाणिकः । इत्यशवादिः ॥

वंशादिभारं हरति बहत्यावहतीत्यनेन वंशादेः परान्नाशब्दाद्भारभू-
ताद्वा वंशादेर्द्वितीयान्ताद्हरति बहत्यावहतीत्यर्थे ङिन् भवति । वंशभारं हरति
बहत्यावहति वा । वांशभारिकः । बालवजभारिकः । मौलभारिकः । आक्ष-
भारिकः । स्त्रीणाभारिकः । खाट्वाभारिकः । कौटभारिकः । कुटज इति

वासनः । ऐसुभारिकः । अश्वत्थ इत्यपि दिग्बस्त्रः । अक्षय इत्यपि भोजः ।
माभूतान्वा वंशान् हरति वहत्यावहति वा । वांशिकः । बास्वजिकः ।
मौलिकः । आक्षिकः । स्थौणिकः । खाट्विकः । कौटिकः । ऐसुकः । अश्व-
श्वशब्दौ गणे द्रष्टव्यौ । हरति देशान्तरं प्रापयति चोरयति वा आवहत्युत्पा-
दयतीत्यर्थः ॥३६९॥ इति वंशादिः ॥

छेदं भेदं सम्प्रयोगं विकर्षं दोहद्रोहौ विप्रकर्षप्रकर्षौ ।

कर्षं नर्त्तं विप्रयोगप्रयोगौ संवेः प्रश्नं प्रेषणं विद्धि विद्वन् ॥३७०॥

छेदादेर्नित्यमित्यनेन छेदादेस्तदर्हतीत्येतस्मिन्नर्थं ठञ् प्रत्ययो भवति ॥
छेदं नित्यमर्हति छेदिकस्तरुः । भेदिकः शत्रुः । साम्प्रयोगिकः । वैकर्षिकः ।
दोहिकी गौः । द्रोहिकः ॥ विप्रकर्षिकः । प्रकर्षिकः । कार्षिकः ॥ नार्त्तिकः ।
गोनर्त्त इत्यन्ये । विप्रयोगिकः । प्रायोगिकः । साम्प्रज्ञिकः । विप्रज्ञिकः ।
प्रेषणिकः । प्रेषण इति शकटाङ्गजः । विरागविरङ्ग चेति गणसूत्रं वासनमते-
न । वैरङ्गिकः ॥३७०॥ इति छेदादिः ॥

दण्डार्धमेधामुसलानि मेधो वधोदकेभा मधुपर्कयुक्ताः ।

युगं कशासौ पितृदेवता च दण्डादिरेवं विबुधैः प्रणीतः ३७१

दण्डादेरित्यनेन दण्डादेः शब्दगणादर्हतीत्येतस्मिन्नर्थं यो भवति ।
दण्डमर्हति दण्ड्यः । दण्डो दमनं न तु यष्टिः । यथा स्थित्यै दण्डयतो दण्डमान् ।
ननु दण्डप्रत इति दण्ड्यः पूर्वतीत्यादिना सिद्धम् । सत्यम् । दण्डमर्हतीति
ठञ् प्रसज्येत ॥ अर्धयोऽतिघ्निः । यथा—तनर्धर्मर्घादिकयादिपूरुषः ॥ मेध्यः ।
मुसलघातो मुसलः । मुसत्यः । मेध्यः । वध्यः । उदक्यः । इम्यो धनी ।
मधुपर्क्यः ओत्रियो गृहागतः । युग्यो दम्यः । कशाघातोऽपि कशा । कश्योऽश्वः ।
पितृदेवत्यः । आहुकालः । आकृतिगणश्चायम् । तेन रथकन्यादयो द्रष्टव्याः ॥३७१॥
इति दण्डादिः ॥

सुस्नाताभ्युन्नतीबन्धुमैत्रीनिद्रासुखात्परा ।

सुखाच्छय्यातपो रात्रिर्दिवसः शयनं शयः ॥३७२॥

सुस्नातादेः पृच्छतीत्यनेन सुस्नातादेर्द्वितीयान्तात्पृच्छतीत्यर्थं ठञ्
भवति । सुस्नातं पृच्छति सौस्नातिकः । यथा । सौस्नातिको यस्य भवत्यगस्त्यः ।

आभ्युन्नतिकः । वान्युमैत्रिकः । सौख्यनिद्रिकः । सौख्यशयिकः । सौख्यतप-
सिकः । सौख्यरात्रिकः । सौख्यदिवसिकः । सौख्यशयनिकः । अयं शकटाङ्गस-
तेन । अस्मन्वतेतु सौख्यशयनिक इति स्यात् ॥ सौख्यशयिकः ॥३७२॥

इति सुस्नातादिः ॥

परद्वारा गुरोस्तल्पं माथोत्तरपदं तथा ।

पदव्यनुपदाक्रन्दजन्ययात्राः प्रकीर्तिताः ॥३७३॥

परद्वारादेर्गच्छतीत्यनेन परद्वारादेर्गणाद्वञ् भवति ॥ परद्वारान् गच्छति
कामयते पारदारिकः । गुरोस्तल्पं कलत्रं गुरुतल्पम् । गौरुतल्पिकः ।
दाण्डमाधिकः ॥ शौचकमाधिकः ॥ माघशब्दः पथिपर्यायः । पादविकः ।
आनुपादिकः । अनुगतप्रत्युत्तरवक्ता प्रत्यासत्त्या धावति वा । इष्टविपत्ताबु-
लक्षणरुदिताराव आक्रन्दः । आक्रन्दन्त्यस्मिन्नित्याक्रन्दो देश आर्त्तशरणं वा ।
आक्रन्दिकः । आन्ययात्रिकः ॥ अन्येऽपि प्रयोगगम्याः ॥३७३॥

इति परद्वारादिः ॥

प्रभूतस्वागतस्वस्तिपर्याप्तगमनं स्वरः ।

नित्यमाकार्यतः शब्दः प्रभूतादिगणे मतः ॥३७४॥

आह प्रभूतादिभ्य इत्यनेन ठञ् । प्रभूतमाह प्राभूतिकः । प्रभूतं भवतां
धनधान्यादिकमभीष्टं स्यादिति प्रियाशिषं वदन्नेवमुच्यते । स्वागतिकः ।
सौवस्तिकः । पार्याप्तिकः । सौवर्गमनिकः । नित्यशब्द इति ब्रुवाणः । नै-
त्यशब्दिकः । माकृथाः पापमनाचारं वेति ब्रुवाणः नाशब्दिकः । कार्यशब्द
इति ब्रुवाणः कार्यशब्दिकः । माशब्दादिभ्यो वाक्यात्प्रत्ययविधानम् ॥३७४॥

इति प्रभूतादिः ॥

पर्पाश्वत्यावाकषजालव्यासारथाश्वधासाः स्युः ।

कृतपद्मावः पादो निर्दिष्टोऽर्थध्वनिः कैश्चित् ॥३७५॥

पर्पादेष्टञ् इत्यनेन तेन चरतीत्यर्थे ठञ् भवति । पर्पा दारुनिर्मितः ।
शकटप्राय उपकरणविशेषः । तेन । चरति पर्पिकः । पर्पिकी । अश्वत्थिकः ।
अश्वत्थिकी ॥ आकषन्ति सुवर्णमत्र परीक्षार्थमित्याकषो निष्कपोपलः ॥
आकषन्ति पिंपन्त्यस्मिन्नोपधीरित्याकषः पापाण इत्यके । आकषिकः ।

आकषिकी ॥ आकर्षो लोहोपकरणविशेष इति वामनः ॥ जालिकः । व्यासो
नहाजालम् । व्यासिकः । व्याल-इत्यप्यन्यः ॥ रथिकः ॥ अश्विकः ॥ घासिकः ॥
पदिकः । पदातिर्लेखवाहकादिर्वा ॥ अर्थिकः ॥३७५॥ इति पर्पादिः ॥

स्युर्वेतनप्रेषणशक्तिदण्डवाहार्धवाहोपनिषत्सुखानि ।

वेदमोपवस्तीभृतिपादवेशोपवेशशय्याः स्फिगचालजालम् ॥३७६

वेतनादेर्जीवतीत्यनेन तेन जीवतीत्येतस्मिन्नर्थे ठञ् भवति । वेतनेन
जीवति वैतनिकः कर्मकरः । प्रैषणिकः । शाक्तिकः । दाण्डिकः ॥ वहनं वाहनं
वा वाहः ॥ वाहिकः ॥ आर्धवाहिकः ॥ औपनिषदिकः । सौखिकः । वैश्वि-
कः ॥ द्वयं वामनमतेन ॥ औपवस्तिकः ॥ भार्तिकः ॥ पादिकः ॥ वेशो दारि-
कावाटः । वैशिकः । औपवेशिकः । शय्यिकः । अन्ये सुखशय्येति पठन्ति ।
त आहुः सुखशय्यया जीवति किं सुखं शयितवन्ती भवन्त इति यः परप्रश्नेन
जीवति स सौखशय्यिक इति ॥ चलनं चालः ॥ स्फिगस्य चालः स्फिगचालः ॥
स्फैगचालिकः ॥ पुतचाल इत्यन्ये ॥ जालिकः ॥३७६॥

उपदेशधनुर्दण्डोपनिजस्तधनुःस्फिजः ।

उपाञ्च हस्तिवेषस्थस्थानान्युपास्तिरित्यपि ॥३७७॥

उपदेशेन जीवति औपदेशिकः ॥ धानुर्दण्डिकः ॥ उपनिजस्तं किल
पैशुनम् । औपनिजस्तिकः ॥ धानुष्कः । स्फैजिकः ॥ औपहस्तिकः ॥ औप-
वेशिकः ॥ औपस्थिकः(१) ॥ औपस्थानिकः ॥ औपास्तिकः ॥ ३३७ ॥
इति वेतनादिः ॥

उत्सङ्गपिटकावुक्तावुट्टुपोत्तुपसंयुतौ ।

उडुपोऽथ पिटाकश्च स्यादुत्पुटोत्पुतौ तथा ॥ ३७८ ॥

हरत्युत्सङ्गादेरित्यनेन तेन हरतीत्येतस्मिन्नर्थे ठञ् भवति ॥ उत्सङ्गेन हरति
औत्सङ्गिकः कुमारः । पैटकिकः । उत्पूर्वात् तुपतुस्यहिंसायामित्यत इगुपा-
न्तलक्षणे के । अतएव निपातनात्तकारस्य पक्षे टकारः । औट्टुपिकः । औ-
त्तुपिकः । औडुपिकः । पैटाकिकः । औत्पुटिकः । उद्गतं पुतम् उत्पुतम् ।
औत्पुतिकः ॥ ३७८ ॥ इत्युत्सङ्गादि ॥

(१) उपस्थेन जीवति-औपस्थिकी वराङ्गनेत्यधिकम् ।

प्रोक्ता भस्त्राभरणं शीर्षभारः शीर्षभारो भरटश्चांसभारः ॥

अंसभारः करणं पङ्कभारो ज्ञेयः प्राज्ञैः करटोऽन्येऽपि शब्दाः ३७९

भस्त्रादेष्टुङ् इत्यनेन तेन हरतीत्यर्थे ठङ् भवति । भस्त्रया हरति भस्त्रिकः । भस्त्रिकी । भ्रियते भरणम् । भरणिकः । शीर्षं भारः शीर्षभारः । शीर्षभारिकः । शीर्षभारिकः । भरटः स्रवविशेषः । भरटिकः (१) । अंसभारिकः । अंसभारिकः । करणिकः—शनैः शनैरुपचितपङ्कभारिकाः पयोधराः प्रययुरपेतवृष्टयः ॥ करटिकः । एतौ वामनमतेन । वातोर्नीयं गदिता स्भीतगी ग इति वृत्तम् ॥ ३७९ ॥ इति भस्त्रादिः ॥

अक्षद्यूतोऽथ जङ्घाप्राद्धतं हृतं गतागर्तम् ॥

पादस्वेदनं यातोपयातं कण्टकमर्दनम् ॥ ३८० ॥

निर्वृतेऽक्षद्यूतादेरित्यनेनैतस्मात्तेन निर्वृत्त इत्यर्थे ठङ् भवति । अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् आक्षद्यूतिकम् ॥ जाङ्घाप्रहतिकम् । जाङ्घाप्रहृतिकम् । गतं च तद् आगतं च गतागतम् । गतागतिकम् । गतानुगतमित्यन्ये । पादयोः स्वेदनं पादस्वेदनम् । पादस्वेदनिकम् । पादस्वेद इत्यन्ये । यातोपयातिकम् । यातिकम् । औपयातिकमित्यन्ये । काण्टकमर्दनिकम् । कण्टकमर्द इत्यन्ये ॥ ३८० ॥ शर्करामर्दनं सत्त्ववागङ्गानुगतानि च ।

अन्येऽपि ध्वनयो लक्ष्या अक्षद्यूतादिनामनि ॥ ३८१ ॥

शर्करामर्दनिकम् । शर्करामर्द इत्यन्ये । सत्त्वं मनो गुणो वा । सात्त्विकः । वाचिकः । आङ्गिकः । आनुगतिकः । अन्येऽपीत्याकृतिगणत्वादिति शेषः ॥ ३८१ ॥ इत्यक्षद्यूतादिः ॥

निकटो भिक्षुके वृक्षमूलमावसथस्तथा ।

श्मशानाभ्रावकाशौ च निकटादौ वृधैर्मतौ ॥ ३८२ ॥

निकटादेर्वसतीत्यनेनास्मात्तत्र वसतीत्यर्थे ठङ् भवति । निकटे वसति नैकटिकः । यो ग्रामसमीपे वसत्यारण्यको भिक्षुः स एवमुच्यते प्रसिद्धेः (२) ।

• (१) भरटः स्रवविशेषः—भरटिकः । भरटेति केचित् । (२) नैकटिकः । आरण्यकेन भिक्षुणा ग्रामात् क्रोशे वस्तव्यमिति यस्य शास्त्रतो वासः स एवोच्यते इति पाठः ।

वार्क्षमूलिकः । आवसथिकः । श्माशानिकः । आभ्रावकाशिकः । अभ्यवकाश
इति शकटाङ्गजः ॥ ३८२ ॥ इति निकटादिः ॥

महिषी मणिपाली प्रानोलेपिका पुरोहितः ।

प्रजापतिप्रजावत्यनुचारकविलेपिकाः ॥ ३८३ ॥

ऋमहिष्यादेरण् इत्यनेन ऋकारान्तान्महिष्यादेश्चास्य धर्म्यमित्यर्थेण
भवति । होतुर्धर्म्यम् हौत्रम् । महिष्या धर्म्यं न्याय्यं युक्तमित्यर्थः । माहिषम् ।
मणीन् पालयतीति मणिपाली स्त्री । माणिपालम् । प्रलिम्पत्यनुलिम्पति वा
प्रलेपिका । अनुलेपिका । मालेपिकम् । आनुलेपिकम् । पुरो दधाति स्म ।
पुरोहितः । पौरोहितम् । प्रजानां पतिः प्रजापतिः । प्राजापतम् । प्रजा
अस्याः सन्ति प्रजावती । प्राजावतम् । अनुचरति अनुचारकः । आनुचारकम् ।
विलिम्पतीति विलेपिका । विलेपिकम् ॥ ३८३ ॥

यजमानोऽनुवाकंश्च नरो वर्णकपेषिका ।

यजते यजमानः । याजमानम् । होतृयजमानेति केचित्पठन्ति । तत्र
होता च यजमानश्च होतृयजमानम् । तस्य धर्म्यं होतृयजमानम् । आनुवाकम् ।
नारम् । पिनष्टीति पेषिका । वर्णानां पेषिका वर्णकपेषिका । अकयाजकादि-
भिरित्यनेन समासे । वर्णकपेषिकम् । अन्ये तु वर्णक पेषिकेति च्छिन्दन्ति ।
इति महिष्यादिः ॥

शक्तियष्ट्यष्टमा दण्ड ईषेष्टी कम्पनाम्भसी ॥ ३८४ ॥

शक्त्यादेष्टीकण् इत्यनेन शक्त्यादेरस्य प्रहरणमित्यर्थे टीकण् भवति ।
शक्तिः प्रहरणमस्य शाक्तीकः । शाक्तीकी ।

स्वलन्ती न क्वचित्तैक्षयादभ्यग्रफलाशालिनी ।

अमोचि शक्तिः शाक्तीकैर्लोहजा न शरीरजा ॥

याष्टीकः । यथा—धनञ्जयस्य—

याष्टीकं ते स्मरव्यग्राः खेचरस्त्रीवृता वराः ।

याष्टीकं ते स्मर व्यग्रास्तं प्रतीच्छन्ति नाभितः ॥

अष्टमः प्रहरणमस्य आष्टमीकः । अयं जिनेन्द्रबुद्धिमतेन । दाण्डीकः ।

ईषा प्रहरणमस्य ऐषीकः । दृष्टिः प्रहरणमस्य ऐष्टीकः । कम्पनं प्रहरणमस्य

काम्पनीकः । आम्भः प्रहरणमस्य आम्भसीकः । अपरेयां सते ठञ्जैव । दागिडकः ।
ऐष्टिकः । काम्पनिकः । आम्भसिकः ॥ ३८४ ॥ इति शक्त्यादिः ॥ ०

छत्रं चुराप्ररोहौ च विशिकाविशिखे तथा ।

अनृतं स्यादुदस्थानं पुरोडा कृपिसंयुता ॥ ३८५ ॥

छत्रादेर्यं इत्यनेन तदस्य शीलमित्यर्थे णो भवति । छादनादावरणा-
च्छत्रम् । गुरुकार्येष्ववहितस्तच्छिद्रावरणप्रवृत्तः । छत्रशीलः शिष्यः । छान्नः ।
अन्ये त्वाहुः । छत्रशीलः छान्नः । छत्रस्यैव शीलमस्येत्यर्थः । छत्रं यथा धार्य-
माणं वातातपवर्षत्राणाय भवति पुरुषस्य । एवमुपाध्यायो धार्यमाणः शिष्यस्य
रागद्वेषक्रोधमोहत्राणाय भवति । स शिष्यं धर्मं ब्रूते । एवमसावुपाध्यायश्छ-
त्रमिव छत्रम् । तच्छीलानुकारिशीलः शिष्यश्छात्र इत्युच्यते । गुरुशील इत्यर्थः ।
घोरणं चुराभिदादिः । चुराशीलश्चौरः । प्रारोहः । विशिका परहृदयानुप्रवेशः ।
वैशिकः (१) । बहुक्षमतया विशिखेव विशिखा । वैशिखः । अनृतभाषणम् अनृतम् ।
आनृतः । उदके स्थानम् उदस्थानम् उदवासः । औदस्थानम् । पुरो दीपक
इति पुरोडा । अतएव वचनादनुपसर्गादप्यङ् । पौरोडः ॥ पुरोद इत्यन्ये ।
कर्षणं कृषिः । कार्षः ॥ ३८५ ॥

भक्षाशिक्षाविश्वधाकर्मभिक्षा—विक्षाचुक्षासत्यास्तितिक्षा ।

स्थोपस्थानं वा तपः स्याद्बुभुक्षा छत्रादिर्विज्ञायतामेष दक्षैः ३८६

भक्ष आदने—भक्षणं भक्षा । भाक्षः । शैक्षः । विश्वं दधाति विश्वधा सुधा ।
वैश्वधः । कार्षः । भैक्षः । विक्षुचुक्षी इत्यपरिपठितौ धातू । विक्षणं विक्षा ।
वैक्षी । चुक्षणं चुक्षा शौचम् । चौक्षः । चौक्षा वस्त्रादिवेषपङ्क्तिरिति वामनः ।
सन्द्रशीलः भान्द्रः । सत्यभाषणं सत्यम् । तच्छीलमस्य सात्यः । तैतिक्षः ।
स्याशब्दोऽत्र पठ्यते । स प्रादिपूर्वो गृह्यते । आतो गोऽन्तः । प्रादेरित्यङ्-
प्रत्यये । आस्था नियतविषये प्रत्याशा । संस्था । व्यवस्था । आस्थः । सांस्थ
इत्यादि । औपस्थानः । तापसः ॥ बौभुक्षः । शकटाङ्गस्तु चौरौ तापसी-
स्यादौ ङीविधानार्थं छत्रादेरञ् इत्यनेनाजमाह । अस्मन्मते तु गौरादिपाठा-
अयणाद् ङीप्रत्ययः सिद्धः ॥ ३८६ ॥ इति छत्रादिः ॥

(१) परहृदयप्रवेशरूपा विशिखक्रियापि विशिखेत्युच्यते । वैशिखः ।
वैशिकीऽपि अस्यैव पर्यायः । इत्यधिकम् ।

किशरस्तगरोशीरपर्णीहरिद्रुगुगुलु ।

• हरिद्रानलदावेतौ स्थगलो नरदस्तथा ॥ ३८७ ॥

किसरादेष्टङ् इत्यनेन किशरादेरस्य पण्यमित्यर्थे ठङ् भवति । किशरादयो गन्धविशेषवचनाः ॥ किशरं पण्यमस्य किशरिकः । किशरिकी । तगरिकः । तगरिकी । उशीरिकः । उशीरिकी । पर्णिकः । पर्णिकी । हरिद्रुकः । हरिद्रुपर्णीत्यन्ये । गुग्गुलुकः । हरिद्रिकः । नलदिकः । स्थमलिकः । स्थगर इति शकटाङ्गजः ॥ नरदिकः ॥३८७॥ इति किशरादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्धमानविरचितायां स्त्रीयगणरत्नसही-
दधिवृत्तौ करवेत्याहृतगच्छतिप्राप्तप्रभवतिकार्येदीयतेप्रयोजनचरत्यु-
त्पातसंयोगहरतिवहत्यावहतिपृच्छतिगच्छत्याहतेनचरतिजीव-
तिहरतिनिर्वृत्तवसतिधर्म्यप्रहरणशीलपण्यलक्षणार्थविहितत-
द्धितप्रत्ययगणनिर्णयो नाम षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

तारकाकुसुमपल्लववेगाः पुष्पगौरवविचारपिपासाः ।

मञ्जरीस्तवकवर्णकतन्द्रा दुःखशास्त्रसुखमूत्रंतरङ्गाः ॥३८८॥

सञ्जातं तारकादेरित्यनेनैतस्मात् तदस्य संजातमित्यर्थे इतो भवति ॥
तारकाः संजाता अस्य तारकितं नमः । तारकशब्दोऽप्यत्र ग्राह्यः ॥ कुसुमितस्त-
रुः । पल्लवितः ॥ वेगितः ॥ वेगवान् पुष्पितः ॥ गौरवितः ॥ विचारितः ॥
पिपासितः ॥ मञ्जरितः ॥ स्तवकितः ॥ वर्णकितः ॥ कर्णकितो(१)वेणुरित्यप्यन्यः ॥
तन्द्रितः ॥ दुःखितः ॥ शास्त्रितः ॥ सुखितः ॥ मूत्रितः ॥ तरङ्गितः ॥ ३८८ ॥

निद्रामुद्रापुलकतिलकाश्वन्द्रकाभ्रान्धकारा—

गर्वोत्कण्ठामुकुलमुकुरद्रोहदोहा बुभुक्षा ।

हर्षोत्कर्षत्रणकुवलयव्याधिगर्धाः पुरीषं—

क्षुत्सीमन्तज्वरभरगरा रागरोमाञ्चरोगाः ॥ ३८९ ॥

निद्रितः । मुद्रितः—साधुवाद्ः ॥ पुलकितः तन्वी तवेयं तनुः ॥ ति-
लकितः ॥ चन्द्रकितः ॥ ददर्श काले दिवसभ्रितामिव ॥

(१) कर्ण इव कर्णको'दारुविकारः कर्णकितः स्तम्भ इत्यधिकम् ।

अन्यकारितः ॥ गर्वितः । उत्कण्ठितः ॥ मुकुलितः ॥ मुकुर आदर्शो
मुकुलं च ॥ मुकुरितः । द्रोहितः । दीहितः । बुभुक्षितः ॥ हर्षितः ॥ उत्कर्षितः ॥
अणितः ॥ कुवलयितः । व्याधितः ॥ गर्धितः ॥ पुरीषितः ॥ क्षुधितः ॥ सीम-
न्तितः ॥ ज्वरितः ॥ भरितः ॥ गरितः ॥ रागितः ॥ रोमाञ्चितः ॥ रोगितः ॥ ३८९ ॥

पण्डा कन्दलकज्जलं किसलयं तृट्कण्टकं कोरकः—

कल्लोलस्थपुटं कुतूहलफलं चाङ्गारकः कञ्चुकः ।

शृङ्गाराङ्कुरशैवलानि वकुलश्वभ्रप्रचारास्तथा—

वर्मारालकलङ्ककर्मयुतं श्रद्धा ऋजीषं मतम् ॥ ३९० ॥

पण्डा बुद्धिः ॥ मण्डितः ॥ कन्दलितः ॥ कज्जलं मषी । कज्जलितः ।
किसलयितः ॥ तृषितः ॥ कण्टकितः । कोरकितः ॥ कल्लोलितः ॥ स्थपुटितः ॥
कुतूहलितः ॥ फलितः । अङ्गारकितः पलाशः(१) अथवा—

अङ्गारितनिषोत्पाते वारिराशेरिवोदकम् ॥

कञ्चुकितः ॥ शृङ्गारितः ॥ अङ्कुरितः ॥ शैवलितः । व मुकुलमूलं ।
वकुलितस्तरुः । अयं शकटाङ्गजमतेन ॥ श्वानो अमन्यत्र श्वभ्रं गर्तः ।
श्वभ्रितं भूतलम् ॥ प्रवारितः । वर्मितः । आरालमिति सूत्रपुरीषयोः(२) सञ्ज्ञा ।
आरालितः ॥ कलङ्कितः ॥ कर्मितः ॥ अद्रितः ॥ ऋजीषम्=उपहतं मलं पि-
ष्टपचनं च । ऋजीषितः । ऋजीषमित्यन्यः ॥ ३९० ॥

सञ्ज्ञाकुड्मलमूर्छानिष्क्रमणाङ्गारहस्तकोञ्चाराः ।

प्रतिविम्बविघ्नतन्त्रप्रत्ययदीक्षा भवेद्गर्जा ॥ ३९१ ॥

सञ्ज्ञितः । कुड्मलितः । मूर्च्छितः । निष्क्रमणितः ॥ अङ्गारितः ॥ हस्तकि-
तः(३) ॥ उच्चारितः ॥ प्रतिविम्बितः ॥ विघ्नितः ॥ तन्त्रं सञ्ज्ञातमस्य तन्त्रितः ।
तन्द्रा—आलस्यमिति द्रुमिडाः पठन्ति । प्रत्यय आशवासः । प्रत्ययितः—आप्तः ।

(१) अङ्गारकशब्दोङ्गारसदृशेषु पलाशकुसुमेषु लक्षणया वर्तते ।

(२) पुंसूत्रपुरीषयोः । आरालमिति सूत्रपुरीषयोः सञ्ज्ञेति बहुमानः ।

आरालः कुटिले सर्जरसे समददन्तितीति सोदनीकारः ॥

(३) हस्तको हस्तावलम्बः ।

यथा मुरारेः । ब्रवीति च प्रत्ययितो महर्षिः । दीक्षितः ॥ गर्जितः—मत्तो गजः ॥ ननु क्तप्रत्यये भुजेः पिवतेश्च सनन्तस्य विहिते सिद्धं बुभुक्षितः पिपासित इति । तथा पुष्पविकसन इति दैवादिकधातोः पुष्पित इति ॥ सुखितो दुःखित इति चुरादिश्यन्ताद्घातोः । नैवम् । अर्थवैषम्यात् । तथा हि । भोक्तुनिष्ठो बुभुक्षित ओदनो नरेण पातुमिष्टं पिपासितं क्षीरमिति कर्मणि क्तप्रत्यये बुभुक्षितादिशब्द ओदनादौ कर्मणि वर्तते न तु नरि कर्त्तरि । इतप्रत्ययान्तस्तु भोक्तुपुरुषवृत्तिः । पुष्पितशब्दोऽपि क्तान्तः पुष्पिता कलिका । पुष्पितं कमलमिति वा विकासक्रियोपेतेऽर्थे प्रतीत इतप्रत्ययान्तस्तु प्रसवोपेते चम्पकादौ वर्तते ॥ सुखितदुःखितशब्दयोस्त्वपेक्षितापरकर्तृव्यापारः सुखादिसंवित्तिमांश्चैत्रादिः प्रतीयते । इतप्रत्यये त्वनपेक्षित परव्यापारः सुखाद्यनुभवयुक्त इति ततो युक्तोऽमीषामत्र पाठः । एवमन्येषामपि फलं दर्शनीयम् ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन शिक्षाजिगीषाह्निद्रारोहप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ ३९१ ॥

इति तारकादिः ॥

पृश्वाशुप्रियषाण्डुचण्डपटवः खण्डूरुखण्डाणवः--

साधुः स्वादुमृदू महल्लघुतनुक्षिप्राणि तृद्धो गुरुः ।

वक्राकिञ्चनचारुपाकबहवो वत्सर्जुतृप्राणि च--

क्षुद्रः कालवृषौ महिश्च बहुलं ह्रस्वोऽथ होडः कृडुः ॥ ३९२ ॥

पृश्वादेरिभन् इत्यनेन तस्य भाव इत्यर्थे इभन् वा भवति । पक्षे यथा प्राप्तम् । पृथोर्भावः प्रथिम् । पार्थवम् ॥ पृथुत्वम् । पृथुता ॥ आशिमा ॥ प्रेमा ॥ अयमिभन्नन्तः । पुंलिङ्गस्सर्वत्र व्याकरणग्रन्थे पटिमालघिमेत्युदाह्रियमाणो दृश्यते । भर्त्रीश्वरेणापि वारणार्थानामित्यत्र पुंलिङ्ग एव प्रयुक्तः । सत्वेन परिगृहीतः प्रेमा संनिविशते । लिङ्गकारिकास्वप्ययं नित्यं पुंलिङ्ग एव । ततश्चार्थार्थान्तर्भावप्रसारिकापि कर्तुं न युज्यते ॥

भवतोऽपजनोपपदे अङ्गपदे पुंसि नित्यमिभनिच्च ॥

अपशब्दजनशब्दोपपदे यथासंख्यमङ्गपदे नित्यं पुंसि भवतः । अयमपाङ्गः । अयं जनपदः । इमनिच्च नित्यं पुंसीति वर्तते । पटिमालघिमेत्ययमर्थोऽस्याः । एवं य एते काव्यनाटकप्रयोगाः ।

प्रेमकारयति वा निरन्तरम् । प्रेम पश्यति भयान्त्यपदेऽपि ।

प्रेम नानमधूय यधूः स्वाः । सामर्थ्यं च तवार्जुनस्य च समं दुर्योधने प्रेम च ॥

इत्येकवाक्यतया नपुंसकेन दृश्यन्ते । तेऽपि च गतिः । स्नेहपर्याय
 श्रीणा दिकी मनिन् प्रत्ययान्तः प्रातिपदिकी वा व्युत्पन्नः प्रेमन् शब्दोऽस्तीति ।
 पाण्डिमा ॥ अयं श्रीभोजमतेन ॥ चण्डिमा ॥ पटिमा ॥ खण्डोर्भावः खण्डि-
 मा । दण्ड इत्यन्यः ॥ अयं शकटाङ्गमतेन ॥ धरिमा । उरुत्वम् । खण्डस्य
 भावः खण्डिमा ॥ अग्निमा । साधिमा । स्वादिमा । स्रदिमा । महिमा ।
 महारवम् । महत्ता । लचिमा । तनिमा । क्षेपिमा । क्षिप्रत्वम् । धर्षिमा ।
 वृद्धत्वम् । गरिमा । गुरुत्वम् । वक्रिमा । अकिञ्चनिमा । आकिञ्चन्यमिति ब्राह्म-
 णादित्वात् ॥ चारिमा । चारुत्वम् । अयं श्रीभोजमतेन । पाकिमा ॥ वयो-
 ऽर्थलक्षणेऽणि पाकम् ॥ बहोर्भावः । भूमा । यथा—परं भूमानमातन्वते ॥
 बाहवम् ॥ वत्सिमा ॥ वात्सम् ॥ ऋजिमा ॥ आर्जवम् ॥ तृप्तिमा ॥ अयं श्री-
 भोजमतेन ॥ क्षोदिमा ॥ क्षुद्रत्वम् ॥ कालिमा ॥ कालत्वम् ॥ अयं श्रीभोजम-
 मतेन ॥ वृषिमा ॥ महिमा ॥ महित्वम् । अयं शकटाङ्गमतेन ॥ बन्धिमा ॥
 बाहुल्यम् ब्राह्मणादिपाठात् शयट् । मनीष्णादिपाठात् बाहुलकम् ॥ हृत्तिमा ।
 ह्रस्वत्वम् । होडिमा(१) ॥ वयोऽर्थलक्षणेऽणि प्राप्ते ॥ ब्राह्मणादित्वात् । हौड्यम् ।
 कृधुर्मन्तुः । कृडिमा । कृडुत्वम् ॥ कर्डवम् ॥ ३९२ ॥ इति पृथ्वादिः ॥

दृढपरिवृढौ मूकशुक्रौ विशारदसम्भती--

बधिरमधुरौ वालो मूलं कलोजडपण्डितौ ।

लवणतरुणानुष्णः शीतः स्थिराम्लकशावृढौ--

विमतिविमनोमन्दा मूर्खो विघातभृशं तथा ॥ ३९३ ॥

वर्णदृढादेशर्यद्वेत्यनेन वर्णवाचिनो दृढादेश्चास्य भावः इत्यर्थेऽयद्भवति ।
 इमन् च वा शौक्यम् । दृढस्य भावः दार्व्यम् । द्रुडिमा । दृढता । दृढत्वम् ।
 परिवृढस्य भावः पारिवृढ्यम् ॥ परिव्रुडिमा ॥ भौव्यम् । मूकिमा । चुक्रम्
 अस्मन् (२) ॥ चौक्रम् । चुक्रिमा ॥ वैशारद्यम् ॥ शारदशब्दः प्रत्ययवाची ।
 यथा—रज्जुशारदमुदकम् । द्रूपच्छारदाः सक्तवः । सद्यो हि रज्ज्वीदृतमुदकं
 प्रत्यग्रमनुपहतं रज्जुशारदमुच्यते । सद्यश्च द्रूपदा पिष्टाः सक्तवो द्रूपच्छारदाः ।

(१) होडबालशब्दौ समानार्थौ । (२) चुक्रौऽस्लवेतसः ।

तत्रायं गुणप्रधानः । शारदं प्रत्यग्रत्वम् । अभिनवत्वम् । तद्धितस्य विशा-
रदः प्रवीणः । प्रवीणो लक्षणया । तथा हि—यो यत्र नवः स तत्र मूढः ।
यस्तु पुराणः स सर्वं जानाति ॥ अथवा—व्युत्पत्तिशून्यः प्रवीणवाची विशा-
रदशब्दः । सङ्गता मतिर्यस्यासौ सम्मतिः । तस्य साम्प्रत्यम् । सम्मतिना ।
शकटाङ्गजमते तु साम्प्रतमित्यपि । स हि लघ्वादेरिक इत्यस्य सूत्रस्यैवंविधम-
र्थमाह । तथा हि—लघुरादिः समीपभूतो यस्येकस्तदन्तात्तस्य भावे कृते वाण्-
प्रत्ययः । वामनादीनामप्येतत्सम्मतम् ॥ केचिल्लघ्वादेरिति प्रकृतेर्विशेषणमि-
च्छन्ति । काशानवम् आरातमित्यप्युदाहरन्ति । साम्प्रतमिति च नेच्छन्ति ॥
वाधिर्यम् ॥ साधुर्यम् ॥ वाल्यम् । मौल्यम् ॥ काल्यम् ॥ जाड्यम् ॥ पाण्डित्यम् ॥
लावण्यम् ॥ लवणिसा ॥ तारुण्यम् ॥ औष्ण्यम् । शैत्यम् ॥ स्थैर्यम् । आस्त्यम् ॥
अस्तिमा ॥ काश्यम् ॥ क्रशिमा ॥ वाढ्यम् ॥ ब्रह्मिमा ॥ रत्वविधौ परिवृढशब्दे
परिरतन्त्रः । अन्ये तु परिशब्दं विना दृढशब्दं पठन्ति । अयं शकटाङ्गजवा-
मनमतेन ॥ विविधा मतिर्यस्यासौ विमतिः ॥ वैजत्यम् ॥ वैमतम् ॥ विविधं
मनो यस्यासौ विमनाः । वैमनस्यम् ॥ मान्द्यम् ॥ मन्दिना ॥ मौख्यम् ॥
वैयात्यम् (१) । भाश्यम् ॥ अशिमा ॥ ३९३ ॥

विलातः स्यात्तथा शुक्रदीर्घसम्भनसो मताः ।

ताम्रमात्रं तथा तृष्णां प्राह श्रीशकटाग्रनः ॥३९४॥

विलातो विलासो वयोवचनश्च ॥ वैलात्यम् । विलातिमा(२) ॥ वयोर्थल-
क्षणेऽपि । वैलातम् ॥ शुक्रं वीर्यम् । शौक्रम् । शुक्रिमा ॥ दैर्घ्यम् ॥ द्राघिमा ।
वामनादयस्तु दीर्घमन्दवाल्गुशब्दान् पृथ्वादिगणे पठन्ति ॥ सामनस्यम् ॥ सम-
निमा ॥ ताम्रं शुल्बम् । ताम्रम् । ताम्रिमा ॥ आम्रम् । आम्रिमा । अयं
वामनमतेनापि ॥ ताण्ड्यम् । तृष्णिमा ॥३९४॥ इति दृढादिः ॥

ब्राह्मणो वाडबो भूर्तः कुशलालसबालिशः ।

सममध्यपरोभ्यः स्थः कविर्नुश्चार्हतो मतः ॥३९५॥

ब्राह्मणादिप्रत्यन्तगुणवचनात्कर्मणि वेत्यनेन ब्राह्मणादेः प्रत्यन्ताद्गुण-
वचनाच्चास्य भावः कर्मवेत्यर्थे खण्ड् वा भवति । पक्षे यथा प्राप्तम् च । ब्राह्मणस्य

(१) विरुद्धं यातं चेष्टितमस्येति वियात उद्धृतः । (२) विलातशब्दः
मथनवयोवाची । विलासिपर्याय इति केचित् ।

भावः कर्म वा ब्राह्मण्यम् ॥ घाहव्यम् ॥ धौर्त्यम् ॥ कौशल्यम् । न विद्यते लसः ।
 क्रीडनं यस्य सोऽलसः । न लसोऽलस इति वा । आलस्यम् । वालिश्यम् ॥
 सामरुध्यम् ॥ माध्यस्थ्यम् ॥ इष्टेऽप्यवलम्बितेर्षे ॥ पौरःस्थ्यम् ॥ काव्यम् ॥
 आर्हन्त्यम् ॥ आर्हन्ती ॥ ३९५ ।

निपुणचपलचोरास्तत्परेदंपरौस्तः—

सुहितपिशुनदीना माणवोऽथ प्रकाशम् ।

उचितगडुलशीला निष्कुलो दुष्कुलः स्यात्—

तरतमविषमस्थावेकभावाभ्यभावौ ॥ ३९६ ॥

नैपुण्यम् ॥ चापल्यम् ॥ चौर्ष्यम् ॥ तात्पर्यम् ॥ ऐदंपर्यम् ॥

यथा भवभूतेः—इदं त्वैदंपर्यं यदुत ऋपतेर्नर्मसच्चिवः ।

सुतादानान्मित्रं भवतु स भवान्मन्दन इति ॥

सौहित्यम् ॥ पेशुन्यम् ॥ दैन्यम् ॥ माणव्यम् ॥ प्रकाशमित्यस्य भावः
 प्राकाश्यम् ॥ प्राकाश्यं ते विभूतिषु ॥ औचित्यम् । औचित्ती ॥ गडुरस्यास्ती-
 ति गडुलः ॥ गाडुल्यम् ॥ शैल्यम् । शैली ॥ नैष्कुल्यम् ॥ दौष्कुल्यम् । तरतमे-
 त्यस्य भावः तारतम्यम् । द्विवहूपेक्षः प्रकर्षः ॥ वैषमस्थ्यम् ॥ एको भावो यस्य
 तस्य भाव ऐकभाध्यम् ॥ आन्यभाव्यम् ॥ ३९६ ॥

विदग्धदायादयथापुरहिभावा यथाकामयथातथौ च ॥

विराधयः कापुरुषस्वभावाभीक्षणं समग्रधिपतित्रिभावाः ॥ ३९७ ॥

वैदग्ध्यम् । वैदग्धी । दायमादत्ते दायादः । दायाद्यम् । यथापुरं पुरा-
 तनमित्यर्थः । यथापुरमित्यस्य भावः याथापुर्यम् । द्वैभाव्यम् । यथाकाममि-
 त्यस्य भावः याथाकाम्यम् । याथाकामी । यथातथं सत्यम् । याथातथ्यम् । यथा-
 तथेत्यन्यः । विपूर्वाद्द्विराधयतेरधि णेलुङ् न भवति गणपाठात् । जनपदसमान-
 नामा क्षत्रियः ॥ तस्मादपत्यार्थे विहितस्याजः कम्बोजादित्वात् श्लुकि । वैरा-
 धयम् । एवम् उपराधयापिराधयाराधयशब्देषु द्रष्टव्यम् । कापुरुष्यम् । स्वाभा-
 व्यम् ॥ अभीक्षणमित्यस्य भावः अभीक्षण्यम् । सामग्र्यम् । सामग्री । आधि-
 पत्यम् । त्रैभाव्यम् ॥ ३९७ ॥

ज्येष्ठश्रेष्ठप्रकटनिकटा विश्वरूपाभिरूपौ-

साक्षी तत्स्थश्चतुरपरमस्थेतिहाः शीर्षघाती ।

ऋत्विक् सत्राड् गणपतिमहाराजसंवादिदूताः-

सात्मस्तेनौ सुकरसदृशौ मानुषाराधयौ च ॥३९८॥

ज्यैष्ठ्यम् । श्रैष्ठ्यम् । प्राकट्यम् । नैकट्यम् । वैश्वरूप्यम् । आभिरूप्यम् ।

साक्ष्यम् । तस्मिंस्तिष्ठतीति तत्स्थः । तात्स्थ्यम् । चातुर्यम् । चातुरी । पार-
मस्थ्यम् । ऐतिह्यम् । शीर्षघात्यम् । आर्त्विज्यम् । साम्राज्यम् । गणपत्यम् ।
साहाराज्यम् । सांघाद्यम् । दौत्यम् । लिङ्गग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणमिति
न्यायाद्दूतीशब्दादपि भवति । दूतीनां कर्म दौत्यम् । आगतप्रियकथैरपि दौ-
त्यम् । वणिक्सखिदूताद्य इत्यनेन ये दूत्यम् । दूतता । दूतत्वम् ॥ सहात्मना
वर्त्तते सात्म शरीरम् । तस्य कर्म भावो वा । सात्म्यम् । सात्मी । स्तेनश्चौरः ।
तस्य भावः कर्म वा स्तैन्यम् । आगमिकोऽयं शब्दः । स्तैन्याशयेनाभिसतं यदे-
वेति किमस्य लक्षणचिन्तया लोके । स्तेयमित्येव भवतीति कश्चित्स चेताः ॥
सौकर्यम् ॥ सादृश्यम् ॥ मानुष्यम् ॥ आराधय्यम् ॥ ३९८ ॥

पूर्वापरं दुष्पुरुषो विशायो विशालसंवेशिविधातिनश्च ।

स्वाराजसंभाषिविशस्तयोऽपीश्वराभिजातौ परिमण्डलश्च ३९९

पौर्वापर्यम् ॥ दौष्पुरुष्यम् ॥ वैशाय्यम् ॥ वैशाल्यम् ॥ सांवेश्यम् ॥

वैधात्यम् ॥ स्वाराज्यम् ॥ सांभाष्यम् ॥ वैशस्त्यम् ॥ विशायविशस्तिभ्यां त्वतलो
त्वनभिधानान्न भवतः ॥ ऐश्वर्यम् । आभिजात्यम् ॥ पारिमाण्डल्यम् ॥ ३९९ ॥

परिशेषराजपुरुषौ युगपत्प्रतिकूलनास्तिकपुनःपुनरः ।

प्रतिभूसुराजबहुभापिपरंपरमुत्तराधरसधर्मवणिक् ॥४००॥

पारिशेष्यम् ॥ राजपौरुष्यम् ॥ युगपद्यम् ॥ प्रातिकूल्यम् ॥ नास्तिक्यम् ॥

पौनःपुन्यम् । प्रातिभाव्यम् । सुराज्ञो भावः कर्म वा सौराज्यम् ॥ बाहुभाव्यम् ॥
पारंपर्यम् ॥ औत्तराधर्यम् ॥ साधर्म्यम् । वणिजी भावः कर्म वा । वाणिज्यम् ॥
अयं शकटाङ्गमतेन ॥ वणिज्या वणिज्यमिति वामनः ॥ मनिताक्षरा सजयु-
तावध सौ ॥ ४०० ॥

जनराजसमाचारपरिख्यातोपराधयः ।

युवराजयथात्मानुपूर्वहोडनियतिनः ॥ ४०१ ॥

जानराज्यम् ॥ सामाचार्य्यम् ॥ सामाचारी ॥ पारिख्यात्यम् ॥ पारि-
ख्याती ॥ औपराध्यम् ॥ अपिराधय इत्यपि । अपि भृशार्थे ॥ यौवराज्यम् ॥
याथास्यम् ॥ आनुपूर्व्यम् ॥ आनुपूर्वी ॥ हौड्यम् ॥ नैघात्यम् ॥ ४०१ ॥

पुरोहितग्रामिकचर्मिकास्तिकाः—

स्वस्थोऽथ शौण्डीरविधर्मकर्मिकाः ।

वालानुकूलं शिलिकोऽथ सूचिकः—

संरक्षसारथ्यधिराजदण्डिकाः ॥ ४०२ ॥

पौरोहित्यम् ॥ ग्रामोऽस्यास्तीति ग्रामिकः । ग्रामिक्यम् ॥ धर्मोऽस्यास्तीति
धर्मिकः । चार्मिक्यम् ॥ आस्तिक्यम् । स्वस्मिन्नात्मनि तिष्ठति स्वस्थः । तस्य
स्वास्थ्यम् ॥ शौण्डीरो गर्भवान् । शौण्डीर्यम् ॥ वैधर्म्यम् ॥ धर्मोऽस्तित्वात्
कर्मिकः । कार्मिक्यम् ॥ वाल्यम् । यथा—

अथाप ह्यालयोर्चितनीलकण्ठपिच्छावचूलाकलनामिधोरः ।

आनुकूल्यम् । शिलम्—उज्जम् । तदस्तित्वात् । शिलिक उज्जवृत्तिकः ॥
शैलिक्यम् ॥ सूचिक्यम् ॥ संरक्ष्यम् ॥ सारथ्यम् ॥ आधिराज्यम् ॥ दण्डास्तित्वात्
दण्डिकः ॥ दण्डिक्यम् ॥ ४०२ ॥

पर्यिकवर्मिकचौक्षोदासीनाः खण्डिकस्तथाञ्जनिकः ।

प्रविकाञ्जलिकच्छत्रिकसूचकविश्वस्तंविफलाश्च ॥ ४०३ ॥

पार्यिक्यम् (१) । परिषदिक इति वामनः ॥ अयं भोजसतेन ॥ धर्मोऽस्या-
स्तीति धर्मिकः । धार्मिक्यम् (२) ॥ चुक्षाशीलश्चौक्षः ॥ चौक्ष्यम् ॥ औदासीन्यम् ॥
खण्डोऽस्यास्तीति खण्डिकः । खण्डिक्यम् ॥ अञ्जनमस्यास्तीति अञ्जनिकः ।
आञ्जनिक्यम् ॥ अञ्जनक (३) इत्यपि शकटाङ्गजः ॥ प्राविक्यम् ॥ अयं भोज-

(१) पर्यः सेकोऽस्यास्तीति पर्यो अभिषिक्तः स एव पर्यिक इत्यधिकम् ।

(२) धर्मोऽस्यास्तीति धर्मिकः । धार्मिक्यमिति पा० ।

• (३) जनादागतं ज्ञानं न ज्ञानमज्ञानं तद्वान् अज्ञानिकः । अञ्जनिकः ।
अञ्जनवान् । इत्यधि० ।

मतेन ॥ अञ्जलिरस्यास्तीति अञ्जलिकः । आञ्जलिक्यम् ॥ छात्रिक्यम् ॥ सूचयतीति सूचकः । सौचक्यम् ॥ सूतक (१) इत्यन्यः ॥ वैश्वस्त्वम् ॥ विगतं फलमस्य विफलः । वैफल्यम् ॥ ४०३ ॥

क्षेत्रज्ञोऽथ यथातथपिशुनविदूरा यथापुरनृशंसौ ।

कुशलेश्वरनिपुणा अपि नञपूर्वाः सूरिभिः कथिताः ॥४०४॥

अक्षेत्रज्ञस्य भावः कर्म वा । आक्षेत्रज्ञम् ॥ नजः क्षेत्रज्ञेश्वरकुशलशुचि-
निपुणानामित्यनेन नित्यमुत्तरस्यारैच् पूर्वपदस्य वा ॥ आयाथातथ्यम् ॥ यथा-
गुणानामायाथातथ्यात् । अयाथातथ्यम् ॥ यथातथायथापुरयोः पर्यायेणे-
नारैच् । अन्येषां मतमेतत् ॥ आपिशुन्यम् ॥ आविदूर्यम् ॥ आयथापुर्यम् ।
अयथापुर्यम् ॥ आनृशंस्यम् ॥ आकौशल्यम् । अकौशल्यम् ॥ आनैश्वर्यम् ॥
अनैश्वर्यम् ॥ आनैपुण्यम् । अनैपुण्यम् ॥ भाष्यकारस्य त्वक्षेत्रज्ञानीश्वरश-
ब्दावेव संसनौ नजस्तत्पुरुषादित्यनेनैतेषां त्वतलोरेव प्राप्तयोः पाठः । शकटा-
ङ्गस्तु नञपूर्वाणां संवादिन्संवेशिन्बहुभाषिन्शीर्षघातिन्समस्यविषमस्यपु-
रःस्यपरमस्यमध्यस्यदुष्पुरुषकापुरुषविशालशब्दानामेतेषां ष्यणमाह ॥ ब्राह्मण-
वालिशशब्दौ प्राणिजातिवयोऽर्थौ ताभ्यामण्वाधनार्थम् ॥ नाणववाडवशब्दौ
चरणवचनौ ताभ्यामण्वाधनार्थम् । तत्स्यमस्यविषमस्यपरमस्यमध्यस्यश-
ब्दानां नज्मसासेऽपि पाठः ॥ विराधयाराधयोपराधयापिराधयशब्दानामप्र-
त्यक्षणस्याकणो वाधनार्थः । गणपत्यधिपत्योः पाठः परमसिद्ध्या । गडुल-
दायाद्विशस्तिविशंपुरशब्देभ्यस्त्वतलौ न भवत इति वृद्धाः । शकटाङ्गस्तु
बालिशसंवादिन्बहुभाषिन्शब्दानामपि नेच्छति । भौजः पुनर्विशस्तिविशा-
यवर्जितेभ्यः सर्वेभ्योऽपि त्वतलाविच्छति ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन यथा दर्श-
नमन्येऽपि द्रष्टव्याः ॥ ४०४ ॥ इति ब्राह्मणादिः(२) ॥

(१) सूक्तिकायाः सौत्तिक्यमिति पा० । (२) गडुलादीनामपि पाठं
केचिदिच्छन्ति । अन्ये तु बुधादीनामष्टानामेव [बुध । चतुर । संगत ।
लवण । वंड । कत । रस । लस] प्रतिषेधमिच्छन्ति । एषामेव विकल्पमपरे ।
अथ अणन्तानामेषां नज्मसासो भवति वा न वा । बुधस्य भावः कर्म वा बौ-
ध्यम् । न बौध्यमबौध्यमिति । भवतीत्येके । न भवतीत्यन्ये । पृथ्वादेरिम-
न्वा । वर्णद्वडादिभ्यश्च्यश्वा । प्रतिराजान्तगुणाङ्ग राजिभ्यः कर्मणिचेत्यधिकम् ।

युवमिधुनकुलीनभ्रातृसुखीप्रशास्तृ—
स्थविरचपलदुःस्त्रीदुष्टवो होतृसुष्टु ।

कुतुककितवकुस्त्रीकर्तृसब्रह्मचारि—

श्रमणनिपुणवध्वध्वर्यवः कन्दुकश्च ॥ ४०५ ॥

प्राणिजातिवयोर्ध्यायनान्तयुवादिदध्वादीकोऽण् इत्यनेन युवादेस्तस्य
भावः कर्मवेत्यर्थेऽण् भवति । पक्षे यथाप्राप्तम् ॥ यूनो भावः कर्म वा । यौवनम् ।
युवत्वम् । युवता । यौवनिकेत्यपि मनोज्ञादिपाठात् ॥ एवं युवतिशब्दस्यापि
लिङ्गग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणमिति न्यायात् ॥ सैधुनम् । कौलीनम् ॥
आत्रम् ॥ सौस्त्रम् । प्रशास्ता ऋत्विक् । प्राशास्त्रम् ॥ स्थविर इव स्थविरः ॥
स्याविरम् । स्याविर्यमित्यपि ब्राह्मणादित्वात् ॥ चापलम् ॥ केचिन्नञ्पूर्व-
स्याप्यस्य पाठं मन्यन्ते । तन्मत आघापलम् । अघापलम् ॥ एवं क्षेत्रज्ञकुशल-
निपुणानामपि ॥ अभ्यघाति मुनिचापलारवया । निन्दिता स्त्री दुःस्त्रीः ।
दौःस्त्रम् ॥ दुष्टु निन्दितम् दौष्टवम् । होता ऋत्विक् । हौत्रम् । होतुरित्यपि
भोजः । हौतवम् ॥ सुष्टु शोभनम् । सौष्टवम् ॥ कुतुकम् कुतूहलम् ॥ विवाह-
वाचीत्यन्ये । कौतुकम् ॥ कैतवम् ॥ कुरिस्ता स्त्री कुस्त्री । कौस्त्रम् ॥ कार्त्रम् ।
अयं भोजमतेन ॥ समानो ब्रह्मचारी सब्रह्मचारी । साब्रह्मचारम् । ब्रह्मादी-
नामित्यनेनान्त्याजादिलुकि ॥ सुब्रह्मचारिन्निति वासनः ॥ तन्मते सौब्रह्म-
चारिणम् ॥ ब्रह्मचारिन्निति चन्द्रः । तन्मते ब्राह्मचारिणम् । अनपत्ये चेति
प्रतिषेधात् इनोऽनोऽणादश्विति नान्त्याजादिलोपः ॥ आस्यतीति अमणः ।
आमणम् ॥ कथं आमण्यं प्रतिषेदिर इति प्रयोगो ब्राह्मणादित्वाद्भवति ॥
शृणोति तथोपदेशं अमण इति वासनादयः ॥ नैपुणम् ॥ वाधवम् ॥ अध्व-
र्युर्ऋत्विग्विशेषः । आध्वर्यवम् ॥ कान्दुकम् ॥४०५॥

कुशलवृषलौ क्षेत्रज्ञोऽथानृशंसकुतूहलम्—

पिशुनसुहृदावुन्नेताथो सहश्व कमण्डलुः ।

अपि च हृदयं दुःसोः पतेरथाद्गणकस्तथा—

हृदयपुरुषौ ज्ञेयावेतौ समासविपर्यये ॥४०६॥

कौशलम् ॥ वार्षलम् ॥ क्षैत्रज्ञम् ॥ आनृशंसम् ॥ कौतूहलम् ॥ पैशुनम् ॥
 शोभनं हृदयं यस्य सुहृन्मित्रम् ॥ निन्दितं हृदयं यस्य दुर्हृद् अमित्रः ॥
 सुहृद्दुर्हृन्मित्रमित्र इति हृदादेशः ॥ वामनमतेन हृच्छब्देनैतयोः सिद्धिः ।
 सौहार्दम् । दीहार्दम् । हृद्भगसिन्धूनामित्यनेनोभयपदारैच् । शोभनं हृदयं
 यस्य स सुहृदयः साधुः । दुष्टं हृदयं यस्य स दुर्हृदयः क्रूरः । तयोरणि हृदयस्य
 हृत्सासलेखाण्य इति हृदयस्य हृदादेशः । सौहार्दम् । दीर्हार्दम् । ब्राह्मणा-
 दित्वमप्येषाम् । तेन दीर्हार्द्यं सौहार्द्यम् । सौहृदय्यं दीर्हृदय्यमित्यपि ।
 इह सुहृदयदुर्हृदयशब्दाविव पठितव्यौ सुहृद्दुर्हृच्छब्दाविव वा न तु चत्वारः ।
 अन्यतरपाठोऽपि हि सौहार्दं दीर्हार्दमिति सिध्यति । उच्यते । अर्थभेदात्
 सुहृद्दुर्हृच्छब्दौ मित्रामित्रवाचिनौ सुहृदयदुर्हृदयशब्दौ तु नैवम् । तौ हि
 प्रशस्तनिन्दितहृदयसम्बन्धमात्रे वर्तन्ते । उभयत्रापि च सौहार्दं दीर्हार्दमि-
 त्युभयपाठः ॥ सौहृदं दीर्हृदमिति च प्रयुज्यते । यथा-तत्सौहृदं यत्क्रियते
 परोक्षं । कुसुमं कृतदीर्हृदस्त्वया । तदर्थमेकत्रोभयपदारैच् सा भूत् । अन्यथो-
 भयत्राप्येकरूपत्व उभयपाठानर्थक्यं स्यादित्युभयपाठः । अयं पक्षो वामन-
 स्यापि हृद्भगैत्यत्र सुहृदो भावः सौहार्दमिति दर्शयतः सम्मतो लक्ष्यते ।
 जयादित्यस्तु सुहृदयदुर्हृदयशब्दौ सुहृद्दुर्हृच्छब्दौ च पपाठ । सचैवं मन्यते ।
 ब्राह्मणादौ प्रयोगदर्शनादनयोः पाठाङ्गीकरणे वचनसामर्थ्यादेवाण् ष्यञ्च भ-
 विष्यतः । असाक्षात्पठितोऽपि हि साक्षात्पठितोऽपि हि साक्षात्पठितवत्क-
 ल्पत आकृतिगणेष्विति ॥ सौहृदेनापि भाषे त्वामित्यादयस्तु कविप्रवाहे
 छन्दोवत्कवयः प्रयुज्जत इत्युक्तम् ॥ अन्द्रस्तु सौहृदमिति हृदयस्याणि हृदादेशो
 न हृदुत्तरपदं हृद्भगैत्युत्तरपदारैजभावमाह ॥ भोजस्तु सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्र-
 योरित्यत्र निपातनसामर्थ्यादवयवानर्थक्ये सौहृदं दीर्हृदमिति हृद्भगसिन्धोः
 पूर्वपदस्य चेत्युत्तरपदारैच् न भवति ॥ उन्नेता गवेषणशील ऋत्विग् वा । औ-
 न्नेत्रम् । साहसम् । कामगडलवम् । लघ्वादीक इत्यनेन सिद्धे त्वतलोर्निवृत्त्यर्थः
 पाठः । कगगडलुकमित्यन्ये ॥ पात्तिगणकम् ॥ रायगणकम् ॥ हार्दम् । पौरुषम् ॥
 समासे तु सहृदयता । सहृदयत्वम् ॥ सत्पुरुषता । सत्पुरुषत्वम् ॥४०६॥

परिव्राजकसुभ्रातृसुभगोद्गातृहायनाः ।

यजमानोऽथ भर्ता च दुर्भ्रातृविपुलौ दुर्हृत् ॥ ४०७ ॥

पारिव्राजकम् । अयं शकटाङ्गजमतेन ॥ सौभ्रात्रम् । यथा—समानेऽपि
हि सौभ्रात्रे यथा तौ रामलक्ष्मणौ ॥ सुभगस्य भावः कर्म वा । सौभागम् ।
हृद्भगसिन्धोः पूर्वस्य चेत्युभयपदारैच् ॥ अयं चन्द्रमतेन । जयादित्यस्तु सुभ-
ग मन्त्र इति पठति । यथा । महते सौभगाय । सर्वं विधयच्छन्दसि विकल्पन्त
इत्युभयत्रारैच् न भवति । मन्त्र इति किम् । सौभाग्यं ब्राह्मणादित्वात् प्यजेव
भवति । वामनस्यापि संमतमेतत् । उद्गतो गायत ऋत्विग् वा । उद्गाता । औद्गा-
त्रम् । हायनस्य हायनम् ॥ अयं वामनमतेन । याजमानम् । भर्तुः भार्त्तम् ॥
निन्दितो भ्राता दुभ्राता । तस्येदं दौभ्रात्रम् ॥ वैपुत्रम् । अयं वामनमतेन ॥
दुहदुदाहत एव ॥ ४०७ ॥

प्रतिहर्ता तथा पोता यलोपः श्रोत्रियस्य च ।

वृषपूर्वं गणं प्राह वामनस्तु तपस्विनि ॥ ४०८ ॥

प्रतिहर्ता ऋत्वक् । प्रातिहर्त्रम् । ये तु लघवादीक इत्यत्र लघवादेरि-
गन्तस्य विशेषणं मन्यन्ते तेषां मते तेनैव सिद्धं प्रातिहर्त्रम् ॥ परत्वात् त्वतल्भ्यां
बाध्यत इत्यशिवधानम् । उद्गावृ । उन्नेवृ । होवृ । पोवृ । प्रशास्वृ । अध्वर्युं
इत्येतेषां यदा ऋत्विग्भवत्त्वं तदा हीत्राभ्यंशश्च इति छे प्राप्ते पाठः ॥४०८॥

इति युवादिः ॥

मनोज्ञमेधाव्यभिरूपवृद्धाः कल्याणचौरप्रियरूपधूर्ताः ।

आढ्यस्तथा श्रोत्रियसारपत्राश्छात्रो युवच्छान्दसविश्वदेवाः ४०९

मनोज्ञादिगुरुपोर्त्तमयोपान्तादकञ् इत्यनेन मनोज्ञादेस्तस्य भावः कर्म
चेत्यर्थेऽकञ् वा भवति । मनो जानाति परितोषयतीति मनोज्ञं वस्तु । तस्य
भावः कर्म वा । मानोज्ञकम् ॥ नैधावकम् ॥ शोभनं रूपमस्य रूपमभिगत
इति वा । अभिरूपः । तस्य आभिरूपकम् ॥ वार्द्धकम् । यथा—

वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगे नान्ते तनुत्यजाम् ॥

अन्ये तु वर्योर्थलक्षणोऽपि स्वार्थिकेऽके च वार्द्धकमित्याहुः । काल्याणकम् ॥
चौरिका । स्वभावात् स्त्रीत्वम् । अन्यस्तु चौरिकं धूर्तिकमिति नपुंसकलिङ्गे
ददर्श । प्रियं रूपं यस्य तस्य प्रियरूपकम् ॥ धूर्तिका । आपूर्णं ध्यायतीत्याढ्यः ।
आढ्यकम् ॥ श्रोत्रियकम् ॥ साराणि पत्राण्यस्य सारपत्रः । सारपत्रिका ।

सारपत्रकमित्यन्यः ॥ सरप्रयुक्तं पत्रं वाहनं सरपत्रमित्यन्यः । सारपुत्र इति भोजः । छत्तशीलः छात्तः । छात्तकम् ॥ यौवनिका । अके राजन्यमनुष्ययूना-मित्यनेनान्त्याजादित्नुगभावः । यथा समैव ।

नवे यौवनिकोद्भेदे यस्य न स्वलितं मनः ।

बृंहितं नापि सिद्धेश प्रसादेन मनीषिणः ॥

यथा वा धनञ्जयस्य-क्षणभङ्गुरमङ्गमङ्गिनां न गता यौवनिका निवर्तते ।

विभवास्तृणवारिचञ्चलानिचयामर्मरपत्रसंनिभाः ॥

खान्दसकम् ॥ वैश्वदेवकम् ॥ ४०९ ॥

बहुलामुष्यकुलादोरूपावश्यङ्कुपुत्रकुलपुत्राः ।

पुत्रकुमारकुलाला ग्रामात्सण्डश्च सुकुमारः ॥४१०॥

बाहुलकम् । दूढादिपाठाद् बंहिना । बाहुल्यमित्यपि ॥ आमुष्यकुलि-का । आमुष्यकुलकमित्यन्ये । अमुष्यपुत्र इत्यपि ॥ अदो रूपम् । अदो रूपम-स्येति वा । अदोरूपम् । तस्य आदोरूपकम् ॥ अदोरूपशब्दो रूपप्रशंसायाम् ॥ आवश्यकम् । कौपुत्रकम् ॥ अयं वामनमतेन । कौलपुत्रकम् । ग्रामपुत्रिका । ग्रामकुसारिका । ग्रामकुलालिका । ग्रामकुलमित्यप्यन्यः ॥ सण्डो वृषः । ग्रामस्य सण्डो ग्रामसण्डः । तस्य ग्रामसण्डिका । पुरुषादिवद्दीर्घत्वे ग्राम-सण्ड इत्यन्ये । ग्रामसण्ड इति जयादित्यादयः । एते चत्वारो नपुंसकलिङ्गा इत्यन्ये । सुष्ठु कुमारः सुकुमारः । सौकुमारकम् ॥४१०॥ इति मनोज्ञादिः ॥

इष्टार्चितौ निपठितागणितावकीर्णपूर्तोपसादित-
गृहीतनिराकृताश्च । संरक्षितानुपठितोपकृतानुयुक्ता-
म्नातश्रुतानुगणितास्त्वक्कल्पितं च ॥ ४११ ॥

इष्टादिभ्योऽनेनेत्यनेनेष्टादेः प्रथमान्तादनेनेति तृतीयार्थं इन् भवति ॥ इष्टोऽनेन यज्ञः । इष्टी यज्ञे । इष्टमनेन वा । इष्टी यज्ञे ॥ अर्चिती सिद्धराजे । निपठिती नीसांसायाम् ॥ अगणिती सदाने ॥ अवकीर्णी दुर्नये । पूर्वी दाने । उपसादिती सदसि ॥ उपासितमित्यन्ये ॥ उपासिती गुरुकुले । गृहीती वि-द्यासु । निराकृती कुकाव्ये । संरक्षिती प्रजासु । अनुपठिती वेदे ॥ उपकृती

मन्त्रे । अनुयुक्ती शास्त्रे । आस्राती छन्दसि ॥ श्रुती इतिहासे ॥ अनुगणित्ती
निरुक्ते । अवकल्पितौ कल्पे ॥ ४११ ॥

आसेवितपरिरक्षितनिकथितगणितोद्गृहीतपरिकलिताः ।

उपपादितपरिगदितौ सङ्कलिताधीतपरिगणिताः ॥४१२॥

आसेवितौ सिद्धपतौ ॥ परिरक्षितौ परिजने ॥ निकथितौ कथासु ।
निकथित इत्यन्यः । गणितौ ज्योतिषि ॥ उद्गृहीतौ उद्योगे । परिकलिती
कलासु ॥ उपपादितौ धने ॥ परिगदितौ परेषु ॥ संकलिती पदार्थेषु ॥ अधी-
तौ व्याकरणे ॥ परिगणितौ याज्ञिक्ये ॥ ४१२ ॥

अवगणितव्याकुलितौ निषादितोपाकृतावमुक्ताश्च ।

अवधारितपठितकृतानिगदितमनुगणितमायुक्तम् ॥४१३॥

अवगणितौ वादिनि ॥ व्याकुलितौ रिपुजने ॥ निषादितौ हास्तिके(१) ॥
उपाकृती पशौ । अवमुक्ती पापे । अवधारितौ शास्त्रार्थे ॥ पठितौ वेदे ॥
कृती धर्मे ॥ निगदितौ नयेषु ॥ अनुगणितौ अनुपदे ॥ आयुक्ती युद्धे ॥ मत्व-
र्थीयेनेनासिद्धे षड्विधैर्धर्मनिबिधानम् ॥४१३॥ इति इष्टादिः ॥

यवोर्मिवासाकर्मिभूमिबन्धवः क्रुश्चाककुत्कान्तिहरीन्दुविन्दवः ।

हनुस्तिमीक्षू मधुसानुभानवोद्राक्षाहरिच्छिन्विगरुद्द्रुचारवः ४१४

ऋयन्मान्पोपान्तान्सोष्यवादेरित्यनेन ऋयन्तान्त्वकारान्तादवर्णान्ता-
न्सोपान्तादवर्णोपान्ताच्च यवादिवर्जितान्मतोर्मकारस्य वकारो भवति ॥ यवा
अस्यात्र वा सन्ति यवसान् ॥ ऊर्मिसान् ॥ वासामान् ॥ वासाशब्दः स्त्रीलि-
ङ्गः । कर्मिसान् ॥ भूमिसान् ॥ बन्धुसती ॥ बन्धुसान् ॥ क्रुश्चामान् ॥ ककुद्धान् ।
ककुद्धानेऽपि हेपते ॥ कान्तिसान् ॥ हरिसान् ॥ इन्दुसती ॥ विन्दुसती ॥ हनु-
सान् ॥ तिसिसान् ॥ इक्षुसती ॥ मधुसान् पर्वतः ॥ सानुसान् ॥ भानुसान् ॥
द्राक्षामान् ॥ ब्राह्मेत्यपि भोजः ॥ हरिन्मान् ॥ शिन्विमान् ॥ शिन्वीमानित्य-
न्यः ॥ गरुत्मान् । गरुडः ॥ द्रुसती । श्रुसतीत्यपि भोजः ॥ चारुसती ॥ केषां-
चिदवर्णान्तात्प्राप्तः ॥ केषांचिद्योपान्तादिति । केषांचिज्जऋय-इति । केषाञ्चि-
त्सञ्ज्ञायामिति । आकृतिगणश्चायम् । तेन दल्लिमदअंशुसतीश्रीसतीगोमती-
ध्वजित्मत्प्रभृतयो ज्ञेयाः ॥४१४॥ इति यवादिः ॥

(१) निषादितौ याद्येष्विति पा० ।

वत्वन्तमुदन्नष्टीचक्रीकक्षीरुमण्विवो ज्ञेयम् ।

राजन्वान्सौराज्ये ज्योत्स्ना चर्मएवती नाग्नि ॥ ४१५ ॥

उदन्वदादिरित्यनेनोदन्वदादयः शब्दा निपात्यन्ते संज्ञायाम् ॥ उद-
कमस्मिन्नस्तीति उदन्वान् उदधिः ॥ उदन्वान्नाम ऋषिः । उदन्वान्नामा-
श्रमः ॥ अन्यस्तु धारणक्रियासम्बन्धाद् उदन्वान् घट उदन्वान् मेघ इत्यपि
मन्यते ॥ अष्टीवान्नाम जङ्घोरुसन्धिः ॥ अत्रास्थिशब्दस्याष्टीभावो निपात्यते ॥
चक्रीवान् रासभः ॥ चक्रीवान्नाम राजा । अत्र चक्रशब्दस्य चक्रीभावः ॥
कक्षीवान्नाम ऋषिर्लौकिकः ॥ अत्र कक्षाशब्दस्य कक्षीभावः । रुमण्वान्नाम
पर्वतः । रुमण्वान्नाम मन्त्री । अत्र लवणशब्दस्य रुमण् भावः ॥ रुमन्निति
प्रकृत्यन्तरमस्तीत्येके । तस्य वा णत्वम् (१) ॥ विशिष्टा वसवः किरणा यस्य
विषस्वान् । आदित्यः ॥ राजन्वान् देशः । राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम् ।

सौराज्य इति किम् । राजवान् ॥ ज्योतिरस्यास्तीति ज्योत्स्ना चन्द्र-
ग्रभा । चर्मएवती नाम नदी ॥ नाम्नीति किम् । उदकवान् । अस्थिमान् ।
चक्रवान् । कक्षावान् ॥ लवणवान् ॥ वज्रमान् । ज्योतिष्मान् । चर्मवान् ॥
४१५ ॥ इत्युदन्वादिः ॥

ज्योत्स्नाशब्दस्तमिस्रा च कुतुपः स्याद्दिपादिका ।

विसर्पो नखरश्वापि कुण्डलोऽपि मतो बुधैः ॥४१६॥

प्रज्ञाज्योत्स्नापिच्छसिध्मलोमपानादेर्णाणिललशना इत्यनेनैतेभ्यस्तद्-
स्यात्र वास्तीत्येतस्मिन्नर्थे ण अण् डल ल श न इत्येते प्रत्ययाः क्रमेण भवन्ति ।
मत्तुश्च ॥ ज्योत्स्नाऽस्मिन्नस्तीति ज्योत्स्नः पक्षः । ज्योत्स्नी रात्रिः ॥ तमोऽ-
स्यामस्तीति तमिस्रा रात्रिः ॥ साऽस्यास्तीति तामिस्रः पक्षः ॥ कौतुपं गृहम् ॥
वैपादिकं कुष्ठम् ॥ विसर्पो व्याधिः ॥ नखरः श्वापदः ॥ कौरुहलः पक्षे ।
ज्योत्स्नावान् ॥ तमिस्रावान् ॥ ४१६ ॥ इति ज्योत्स्नादिः ॥

(१) लवणस्य रुमण्भावः । रुमण्वान्नाम पर्वतः । अन्ये त्वाहुः ।
रुमन्निति प्रकृत्यन्तरमस्ति तस्यैव तन्निपातनं नकारलोपाभावात् घ । वत्वं
तु यथागोगमस्त्येवेति पाठः ।

पिच्छोदरव्रीहिगुहाः पिचण्डस्तुन्दोदकोरोयवचूर्णपक्षाः ।
वर्णग्रहौ पङ्ककले च काकप्रज्ञे तुफेनो ध्रुवका च पर्णम् ॥४१७॥

पिच्छादेरिलः ॥ पिच्छान्यस्य सन्ति पिच्छिलः । उदरिलः ॥ व्रीहिलः ।
दिग्भ्वरस्तु व्रीहिग्रहणं स्वरूपार्थमर्थनिर्देशार्थं चेति (१) ब्रुवाणः शालिलो
व्रीहिल इत्याह ॥ गुहिलः ॥ पिचण्डिलः ॥ तुन्दिलः । उदकिलः ॥ उरसिलः ॥
यविलः ॥ चूर्णिलः ॥ पक्षिलः ॥ वर्णिलः ॥ ग्रहिलः ॥ पङ्किलः । कलिलः ॥
काकिलः ॥ प्रज्ञिलः ॥ फेनिलः । ध्रुवकिलः । ध्रुवकेत्यपि वामनः ॥
पर्णिलः ॥ पक्षे पिच्छवानित्याद्यपि भवति ॥ तुन्दोदरपिचण्डप्रभृतीनां
तुन्दादावपि पाठादृणौ भवतः । भोजमतेन लविषयेऽपि बीजप्रभृतीनां
केषाञ्चित् ॥ ४१७ ॥ इति पिच्छादिः ॥

सिध्मस्नेहौ पांसुपृथुरयामचटूनि प्रज्ञाग्रन्थीबीजकपी-
पिङ्गमृदू च । कर्णः शीतं मांसहनू मञ्जुगडू स्तः पत्रं नाभिः
श्रीमणिकण्डूदककृष्णाः ॥ ४१८ ॥

सिध्मादिलः ॥ सिध्मान्यस्य सन्ति सिध्मलः ॥ स्नेहलः । पांसुलः ॥
पृथुलः ॥ श्यामलः ॥ चटुलः ॥ प्रज्ञालः ॥ पिच्छादिपाठात् प्रज्ञिलः ॥ ग्र-
न्थिलः । यथा सुरारेः-इयमेभिरालयालैः पदे पदे ग्रन्थिलासु कुल्यासु ॥
बीजलः ॥ कपिलः ॥ पिङ्गलः ॥ मृदुलः ॥ कर्णलः ॥ शीतलः । मांसलः ॥ हनुलः ।
हनूल इत्यपि ॥ मञ्जुलः । पृष्ठग्रन्थिर्गडुः । गडुलः-कुवणः ॥ पत्रलः ॥ नाभिलः ॥

(१) व्रीहिग्रहणं किमर्थम् । यावता तुन्दादिषु व्रीहिशब्दः पठ्यते तत्र
ध्रुवनिष्ठनौ चकारेण विधीयेते । एवंतर्हि तुन्दादिषु व्रीहिग्रहणमर्थग्रहणं वि-
ज्ञायते । शालयोऽस्य सन्ति । शालिलाः । शालिनः । शाली । शालिकः ।
शालिसानिति । व्रीक्षादिभ्यस्तैः । व्रीक्ष्यर्णतुन्दादेरिलश्च । व्रीक्ष्यर्थे । कलमा
अस्य अस्मिन् वा सन्ति । कलमिलः । कलमिकः । कलमी । कलमवान् । शा-
लिलः । शालिकः । शाली । शालिसान् । व्रीहिशब्दोऽपि व्रीक्ष्यार्थो भवति ।
किं तु तस्य पूर्वत्रोपादानादिलो न भवति । भावे हि तत्रोपादानमनर्थकं स्यात् ।
भवतीत्येके व्रीहिलइत्यधिकं पु० ॥

श्रीलः श्रीमान् ॥ मणिलः ॥ कण्डूलः ॥ उदकलः ॥ पिच्छादिपाठाद्
उदकिलः ॥ कण्णलः ॥४१८॥

सक्थि श्लेष्मा पित्तनिष्पाद्धमन्यः पेशः पाष्णी वात-
निष्पावपुष्काः । पार्श्वस्तुण्डिः पक्षमपर्शू कुशः स्याद्-
धारासक्तू वर्धर्मफेनोष्मपर्णम् ॥ ४१९ ॥

सक्थिलः ॥ श्लेष्मलः कफौ ॥ पित्तलः ॥ निष्पादयतीति निष्पात्
क्विप् । निष्पाह्लः ॥ निष्पदनं निष्पत् । निष्पह्ल इत्यन्ये ॥ निष्पाह्वान् ।
अयं शकटाङ्गमतेन ॥ धमनीलः ॥ पेशलः ॥ पाष्णीलः ॥ धमनीपाष्णीशब्दौ
दीर्घान्तावेव गणे पठ्येते ॥ तेन दीर्घान्ताभ्यामेव लः । ह्रस्वान्ताभ्यामेव मत्तुः ॥
वातलः ॥ निष्पावलः । निष्पानं निष्पा । निष्पाल इत्यन्यः ॥ पुष्कलः ।
पार्श्वलः ॥ तुण्डिलः ॥ तुण्डिवटिवलेर्भ इति भप्रत्यये तुण्डिभ इत्यपि ॥
पक्ष्मलः । पर्शूलः । पर्शूलं इति भोजराजः ॥ कुशलः । धारालः ॥ यथामुरारेः-

प्रेक्षाधारालवैरप्रसृमरसनरोड्ढामरौजाविडौजाः ॥

सक्तूलः ॥ वर्धमेन् । वर्ध्मलः । पामादिपाठाद्बर्ध्मन इत्यपि ॥
फेनलः । यथा—वैदेहि पश्या मलयाद्धिभक्तं मत्सेतुन्या फेनिलमम्बुराशिम् ।
ऊष्मला । यथा—घनुष्मन्तौ वत्सौ दशमुखभुजैरूष्मलतमाः ॥

पर्णलः । पर्णिल इत्यपि । यथाभट्टेः—अम्यर्णोऽम्भःपतनसमये पर्णलीभूतसानुम् ।
किष्किन्धाद्रिं न्यविशत मधुक्षीवगुञ्जद्द्विरेफम् ॥ ४१९ ॥

क्षुद्रजन्तूपतापाभ्यां प्राणयङ्गादात एव च ।

कालाघाटाजटाः क्षेपे वातादेरूडपि स्मृतः ॥४२०॥

क्षुद्रजन्तुरानकुलात् । यूकालः । नक्षिकालः । उपतापो रोगः । मूर्च्छालः ।
विघर्चिकालः । विपादिकालः । प्राणयङ्गादाकारान्तादित्यर्थः । चूडालः ॥
जड्दालः ॥ कालादयः क्षेपे प्रत्ययार्थस्य निन्दायां गम्यमानायां लभाजः । काला
कूर्चम् ॥ कालालः (१) ॥ घाटायीवावयवः । घाटालः (२) ॥ जटालः ॥ पिच्छा-
दिपाठात् कालिलः । घाटिलः । जटिलः । यथा—

(१) कालेति डोपान्त्यं केचित्पठन्ति । काडालः । काडिलइत्यधिकम् ॥

(२) घटा सभा संलापो वा घटालः । घाटा ग्रीवा घाटाल इति वर्धमानः ।

कटा क्षेपे कटालो गर्हितगरुडस्थलो गजइतिके० ॥

विशेष कश्चिज्जटिलस्तपोवनम् ॥

कालाशब्दस्य ल प्रत्ययं चन्द्राद्या न मन्यन्ते ॥ क्षेप इति किम् ॥ काला-
वान् । घाटावान् । अटावान् । १० क्षेपोऽत्र मनुना न गम्यत इति क्षेपे मतुर्न
भवति ॥ वातादेरुडपि स्मृत इति वातदन्तवलललाटानां लो भवति तत्संनि-
योगेनोडागमश्च ॥ वातूलः । दन्तूलः । बलूलः । ललाटूलः ॥ गलशब्दस्यापि
गलूल इति मन्यते भोजः ॥ पक्षे सिध्मवानित्यादि ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन
वर्णप्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥ ४२० ॥ इति सिध्मादिः ॥

लोमवस्तुमुनिः कर्को गिरिबभ्रू हरिः कपिः ।

लोमादौ विबुधैर्ज्ञेया रुरु रोम तथा भुरुः ॥ ४२१ ॥

लोमादेः शः । लोमान्यस्य सन्ति लोमशः ॥ वस्तुशः ॥ मुनिशः ॥
कर्कशः ॥ गिरिशः ॥ वभ्रुशः ॥ हरिशः ॥ कपिशः ॥ रुरुशः ॥ रोमशः ॥ भु-
रुशः ॥ पक्षे लोमवानित्याद्यपि ॥ ४२१ ॥ इति लोमादिः ॥

पामा वामा वलिः श्लेषमा सामहेमोष्मकद्रवः ।

कल्याणादङ्गशब्दाच्च लक्ष्म्या अञ्च कृमिस्तथा ॥ ४२२ ॥

पामादेर्नः ॥ पामनः ॥ वामनः ॥ वलिनः ॥ श्लेषणः ॥ सामनः ॥
हेमनः ॥ ऊष्मणः ॥ कद्रवः ॥ कल्याणमङ्गमस्या अस्ति अङ्गना ॥ कल्याण इति
किम् । अङ्गवती ॥ लक्ष्मीरस्यास्ति लक्ष्मणः । लक्ष्मीवान् ॥ कृमिणः ॥ ४२२ ॥

विष्वचो कृतसन्धिः स्याल्लुक् पदस्योत्तरस्य च ।

शाकीदद्रूपलालीनां ह्रस्वत्वं च स्मृतं बुधैः ॥ ४२३ ॥

विष्वक्शब्दान्नो भवति ॥ तत्संनियोगेन चाकृतसन्धिरुत्तरपदलोपः ।
विष्वच्चोऽर्थास्ते दिवसा वा रश्मयो वा गतिविशेषा वाऽस्य सन्ति विषुणः सू-
र्यः ॥ विष्वच्चन्तीति विष्वच्चो गतिविशेषा अस्य सन्ति त्रिपुणो वायुः । विष्व-
वान् ॥ विषुशब्दादिर्नानात्वे वर्त्तते । महच्छाकं शाकसमूहो वा शाकी ।
शाक्यस्मिन्नस्ति शाकिनस् ॥ दद्रुर्नाम व्याधिः । दद्रुणः ॥ भोजस्तु प्राक्सूत्रे
दद्रुशब्दम् । अस्मिन् सूत्रे च नागमाद्गृहगोधापर्यायं कद्रुशब्दमाह ॥ पला-
लिनम्(१) ॥ ४२३ ॥ इति पामादिः

(१) महान्यलालं पलालसमूहो वा पलाली तद्वत् पलालिनमितिके ॥

बलफलपरिणाहोद्दाममालाबलाका—

व्रतनिचुलमनीषामेखलामानशाखः ।

कुलमुकुलपताकाकर्मचर्मप्रयामाः—

स्तवकवडवचूडायामवीणोपयामाः ॥ ४२४ ॥

बलादेरिन् इत्यनेन तदस्यात्र वास्तीत्यर्थं इन् भवति मतुश्च ॥ बलम-
स्यास्तीति बली । बलवान् । फली । फलवान् । परिणाही । परिणाहवान् ।
एवं सर्वत्र ॥ उट्टानी ॥ उट्टास इत्यन्यः ॥ माली ॥ वशाकी ॥ व्रती ॥ निचुली ॥
मनीषी ॥ मेखली । मानी ॥ शाखी ॥ कुली दुर्गन्तेन । मुकुली ॥ पताकी ॥
कर्मी ॥ चर्मी । कर्मिकश्चर्मिक इत्येके ॥ प्रयामी ॥ स्तवकी ॥ वडवी । स्तव-
कश्च वडवा च स्तवकवडवम् । पञ्चाच्छेषैः सह द्वन्द्वः ॥ चूडी ॥ आयामी ॥
वीणी । यथा—सिद्धुद्वन्द्वैर्जगत्कणभयाद्वीणिभिर्मुक्तमार्गः ॥ उपयामी ॥ ४२४ ॥

कूलं जरोत्साहृद्योलदंष्ट्रा व्यायामधन्वोद्यमवर्मकेकाः ।

संज्ञाशिखारोहगदावरोहाः पुलाष्टकायासमुलानि सूना ॥ ४२५ ॥

कूलिनी कूलस्थाने । मूलमिति पठन्ति ॥ जरी ॥ उरसाही ॥ घृणी ॥
उली । यस्य कस्यचित्सञ्ज्ञा ॥ दंष्ट्री ॥ व्यायामी ॥ धन्वी । यथा—

उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले ।

उद्यमी ॥ वर्मी ॥ वर्मिक इत्यप्यन्ये ॥ केकी ॥ सञ्ज्ञी ॥ शिखी वह्नि-
र्मयूरश्च ॥ शारोही ॥ गदी । गदावान् ॥ अवरोही ॥ पुली । यस्य कस्यचि-
त्सञ्ज्ञा ॥ अष्टकी ॥ अष्टकिक इति केचित् । आयामी ॥ मुली ॥ सूना घात-
नस्थानम् । सूनी ॥ उद्भास इत्यपि केचित् । इन्प्रत्यये सिद्धे ठवाधनार्थम्
॥ ४२५ ॥ इति वलादिः ॥

मणिविषुर्विम्बहिरण्यराज्यो मताः कुमारः कुररेष्टकार्णाः ।

गाण्डीधनुर्गाण्ड्यजके च नाग्नि पतञ्जलिनेच्छति गाण्डिशब्दम्

मण्वादेव इत्यनेनैतस्मात्तदस्यात्र वास्तीत्यर्थं वो भवति मतुश्च । मण-
योऽस्य सन्ति मणिवः । मणिवान् ॥ मणिव इति कस्यचिन्नागस्य सञ्ज्ञा ॥ विपु
साम्ये चादिः । तद्धितेषु विपुषम् । विपुषत् । यथा—

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ॥

विषुवानित्यमरमालाकारः ॥ मतीर्वत्वं लक्ष्यात् ॥ विषुर्नाम सुहूर्त्तः । सोऽस्यास्तीति विषुमान् । अहोरात्रप्रविभाग इति तु शाकटायनः । विम्बान्यस्यास्मिन्वा सन्ति विम्बावम् । ड्याट्त्वेऽच् ह्रस्वश्च बहुलमिति बहुलवचनादीर्घः । विम्बव इतिभोजः । हिरण्यवम् । हिरण्यवान् । हिरण्यवो नाम निधिः । कुबेरइत्यपरे ॥ राजीवम् । राजिशब्दस्यापि । कुमारवम् । कुररावम् । इष्टकावम् । अर्णवः कृतसलोपो द्रष्टव्यः । अर्णवः समुद्रः । गाण्डी गाण्डिर्वा दारुखण्डम् । दात्रादिग्रहणे मुष्टिस्थानभूतं ग्रन्थिव्यवच्छिन्नं मध्यपर्व वा । गाण्डीवं गाण्डिवं वा पार्थधनुः । यथा—

गाण्डीवधन्वनः खेभ्यो निश्चचार हुताशनः ॥

यथा—वेणीसंहारे—हस्ताकृष्टविलोककेशवसनादुःशासनेनाज्ञया—

पाञ्चालीममराजचक्रपुरतो गौर्नौरिति व्याहृता ।

तस्मिन्म्व स किं नु गाण्डिवधरोनासीत्पृथानन्दनो—

यूनः क्षत्रियवंशजस्य कृतिनः क्रोधात्पदं किं न तत् ॥

ह्रस्वादपि भवति ॥ गाण्डिवं धनुरिति । तुल्या हि संहिताह्रस्वदीर्घयोरुभयथा सूत्रं प्रणीतमित्येतन्न संगतम् । कुतः । न आगमो न युक्तिः । आगमस्तावन्नास्ति वार्तिकभाष्ययोरभावात् । यदि च ह्रस्वसूत्रे गाण्डिशब्द उपात्तो दीर्घस्य न प्राप्नोति नापि गाण्डिगाण्डीशब्दयोरेकशेषोऽस्तीति भाष्यकारमतानुसारिणा केनाप्येतद्विचारितम् ॥ अजकावम् । पिनाकम् ॥ अजकवमिति वामनः ॥ यत्तु पिनाकोऽजगवं धनुरिति पाठो दृश्यते तत्राजगवोऽस्थिविशेषो विद्यतेऽस्य । अर्णवादित्रादत्रत्ययेऽजगवमिति सिद्धम् ॥ मगपादयः प्रयोगतो गम्याः ॥ ४२६ ॥ इति मगपादिः ॥

सुखप्रतीपप्रणयास्त्रसोढास्तृप्रास्त्रकृच्छ्रा दलशीलकक्षाः ।

अलीकदुःखे कृपणं हलं स्यात् क्षेपे तु माला करुणश्च शोफः ४ २७

सुरादिधर्मशीलवर्णान्तादित्यनेन तदस्यात्र वास्तीत्यर्थे इत्येव भवति । उपसंस्यास्तीति सुरी । प्रतीपी । मगधी ॥ अस्त्री ॥ सोढी ॥ तृपी ॥ आस्त्री ॥ कृच्छ्री ॥ दली ॥ शीली ॥ कक्षी ॥ अलीकी ॥ दुःखी ॥ कृपणी ॥ हली ॥

माली निन्दायाम् ॥ अन्यत्र मालायाम् ॥ करुणी ॥ शोफी ॥ वलादिषु माला-
शब्दः पठ्यते । इह तु पाठः क्षेपे मनुर्माभूत् ॥ ४२७ ॥ इति सुखादिः ॥

पुष्करो नडतमालहिरण्यकैरवाणि कुमुदं च शिरीषम् ।
कर्दमस्तटतरंगकपित्थाः पङ्कजोत्पलकरीषसरोजम् ॥४२८॥

पुष्करादेरिन् इत्यनेन पुष्करादेरस्त्यर्थे देशेऽभिधेय इन् भवति ॥ पुष्क-
राणि विद्यन्तेऽस्यामस्या वा । पुष्करिणी भूमिः ॥ नडिनी ॥ तमालिनी ॥
हिरण्यिनी ॥ कैरविणी ॥ कुमुदिनी ॥ शिरीषिणी ॥ कर्दमिनी ॥ तटिनी ॥
तरंगिणी ॥ कपिट्ठिनी । पङ्कजिनी ॥ उत्पलिनी ॥ करीषिणी ॥ सरोजिनी ॥ ४२८ ॥

राजीवनालीकसरोरुहाणि सृणालपद्मं पुटकारविन्दम् ।

अम्भोजमङ्गं कमलं विगर्हः कल्लोलशालूकविसं यवासः ॥४२९॥

राजीविनी ॥ नालीकिनी ॥ सरोरुहिणी ॥ सृणालिनी ॥ पद्मिनी ॥
पुटकिनी ॥ अरेविन्दिनी ॥ अम्भोजिनी ॥ अट्टिजनी ॥ कमलिनी ॥ विग-
र्हिणी । अयं जयादित्यनेन । विगर्ह इत्यन्यः ॥ कल्लोलिनी ॥ शालूकिनी ॥
विमिनी ॥ यवासिनी ॥ वासनस्तु बृहद्भूतौ यवमाषेति पठति । ततो यविनी ।
आपिणी ॥ दुर्गस्तु पय इति पठति ॥ देश इति किञ्च ॥ पुष्करायाम् हस्ती ।
कमलवान् । विसवान् । पुष्कराणि तीर्थान्यङ्गिदेशे सन्ति । अन्भिधा-
नादिन्न भवति ॥ एते च नियतार्थविषया एव शब्दा द्रष्टव्याः ॥ ४२९ ॥

इति पुष्करादिः ॥

कृष्यासुतीभ्रातृशिखापितासावुत्साहपुत्रौ परिषत्त माता ।

उत्सङ्गपर्षद्रजसोऽथदन्तः कृष्यादिसंज्ञे गदिता गणोऽस्मिन् ४३०

कृष्युषार्श आदेर्वलरात इत्यनेन कृषीत्यादेरस्त्यर्थे बलः । ऊप इत्यादे-
रः । अर्श इत्यादे रकारो भवति । कृषिरस्यास्तीति कृषीबलः कुटुम्बी ॥ रुढि-
शब्दोऽयम् ॥ अन्यत्र । कृषिभत् क्षेत्रम् । उयाङ्त्वोच् ह्रस्वश्च बहुलमिति दीर्घ-
भावः ॥ आस्रुतिः सुरापानम् ॥ आस्रुतीबलः—शौण्डिकः ॥ नाममालास्वा-
स्रुतीबलो यज्ज्ञोच्यते ॥ भ्रातृबलः ॥ शिखाबलो मयूरः ॥ शिखाबलं नगरम् ॥
शिखाबला स्थूणा । पिट्टबल ॥ उत्साहबलः ॥ पुत्राबलः ॥ परितः सीदति

परिषत् । परिषद्बलो राजा ॥ परिषदनं परिषत् पङ्कः सर्वतोऽवतारो(१) वा ।
सोऽस्यास्तीति परिषद्वलं तीर्थमित्यन्ये ॥ मातृबलः ॥ उत्सङ्गावलः ॥ पर्यङ्कलो
राजा । यथा सिद्धनागार्जुनस्यः—

लोकातीतामचिन्त्यां शमसुकृतफलाभात्मनो यो विभूतिम् ।

पर्यन्मध्ये विचित्रां कथयति महतीं धीमतां प्रीतिहेतोः ॥

रजस्वला स्त्री ॥ दन्तावलो नास राजा गजश्च ॥

आसुतिपरिषद्भजःशब्दानां यौगित्वं केचित्प्रतिपन्नाः । तन्मत आसुति-
मान् परिषद्भान् रजस्वान् ग्राम इत्यपि भवति ॥ परिषच्छब्द एव गृह्यते ।
यस्त्विदानीन्तनपुस्तकेषु संयोगः परिषच्छब्दो दृश्यते स प्रमादपाठ एव ।
पुराणेषु हि भाष्यपुस्तकेषु परिषदो बलच् । काव्येषु—

श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्रहिणी ।

इत्यादिषु परिषच्छब्द एव दृश्यते । कथं तर्हि—

परिषद्बलान्महाब्रह्मैराटनैकटिकाश्रमान् ।

इत्यनुष्टुप् । अत्र हि रिशब्दे पृथगवस्थिते नवाक्षरः पादो भवति । न
चैतद्युक्तम्—त्रयः पादा अष्टाक्षरा अनुष्टुब् एको नवाक्षरः ।

इत्युच्यते । अयमप्यस्ति वृत्तप्रभेदो यत्रैकः पादो नवाक्षरोऽन्येऽष्टाक्षराः ।
यथा—प्रधाने कर्मण्यभिधेये लादीनाहुर्द्विकर्मणाम् ।

अप्रधाने दुहादीनां गयन्ते कर्त्तुश्च कर्मणः ॥

इति । अत्र ह्याद्य एव पादो नवाक्षरः परि शिष्टां अनुष्टुभ एवेति क-
श्चित् ब्रूते । तत्त्वतिसूक्ष्मेक्षिकयोच्यते यतो व्याकरणलक्ष्यञ्च ह्याभ्यासपि शब्दाभ्यां
व्याप्तम् । क्षीरस्वामिनापि नार्पमारिप इत्यपि यथा—पर्यत्परिषदिति(२) टीकायां
विवृतम् । किञ्च । यो नवाक्षरः पाद उदाहरणीकतः सोऽपि न संगच्छते ।
प्रधाने कर्मणयाख्येय इति दर्शनात् ॥ ४३० ॥ इति कृष्यादिः ॥

ऊपनखपांसुकुञ्जाः खपाण्डुमधुसिन्धु [बन्धु] नगमुष्काः ।

पुष्कं कण्डूमुखशुपिनिर्मितह्रस्वा तथा कच्छूः ॥ ४३१ ॥

(१) परिषद्वलः । पर्यङ्कान् । परिषद्वलं तीर्थं पङ्किलमित्यर्थः । परिष-
द्वत् । इति पा० । (२) नर्पणात्सहनान्तारिपः । नार्पणोऽपि यथा परिषत् ।
इति पा० ।

ऊपादे रः। ऊषोऽस्मिन्नस्तीति ऊषरं क्षेत्रम् । ऊषवत् अन्यत् । नखरः ।
 पांडुरः(१) । कुञ्जावस्य स्तः कुञ्जरः करी । कुञ्जशब्दोऽस्मिन् हनुपर्यायः ।
 कुञ्जवान् अन्यः । खं सहत्कण्ठे विधरमस्यास्ति खरो गर्दभः । खवान् अन्यः ॥
 घाण्डुरः ॥ मधुरी रसः । मधुरं मधु । मधुशब्दः स्वादुत्वलक्षणे गुणसामान्ये गुणे
 च वर्तमानो गृह्यते । न तु द्रव्यवृत्तिः । तत्र मधुमान् घटः ॥ सिन्धुरो हस्ती ।
 सिन्धुमान् अन्यः ॥ वन्धुरं नगरम् ॥ नगा वृक्षाः पर्वता वाऽस्मिन् सन्ति
 नगरम् ॥ मुष्कौ वृषणावस्य स्तः मुष्करः पशुः । मुष्कवान् अन्यः । पुष्करः ॥
 कण्डूरः पुरुषः ॥ मुखं सर्वस्मिन् वक्तव्येऽस्यास्ति मुखरो वाचालः । अथवा ।
 मुखविषया वाग् मुखम् ॥ मुखवान् अन्यः । शुषिच्छिद्रम् । शुषिरं काष्ठम् ।
 कच्छुरः ॥ ४३१ ॥ इत्युपादिः ॥

अर्शोऽभ्रतुन्दचतुरवलकर्मोरः कामान्त्वतुण्डलवणाः
 पलितं जटा च । घाटाघटे अघसुरे अपि शुक्रपद्मे
 स्वाङ्गाश्च हीनगुणतः परतश्च वर्णात् ॥ ४३२ ॥

अर्श आदेरत् । अर्शो गुंदकीलकः । तदस्त्वित्वाद् अर्शसः पुमान् ।
 विनि प्राप्ते । अर्शं नभः । ठेनोः प्राप्तौ ॥ तुन्दः । तुन्दिलः ॥ चतुरा अस्य
 सन्ति चतुरः सिद्धराजः ॥ वलः । वली । वलवानित्यपि ॥ कर्मः प्रदेशः ।
 वरसा वलं लक्ष्यते । वरसः ॥ वरसिल इत्यपि ॥ कामः । कामीत्यपि ॥ अस्त्रो
 रसोऽस्यास्तीति अस्त्रः ॥ तुण्डः—वाघाटः(२) ॥ लंबणो रसोऽस्यास्तीति लवणः
 सूपः । लवणा यवागूः ॥ पलितः ॥ जटनं जटा । सास्यास्तीति जटा—केशवि-
 न्यासः । जटास्त्वित्वाज्जट इत्यन्यस्य सतम् । घाटे अस्य स्तः घाटः(३) । निन्दाया
 अन्यत्र घटनं घटा । सास्त्यस्मिन् घटा व्यूहविशेषः ॥ अघः पापी । यथा—
 अविमृश्य गीघधसमुत्थमघमयमसीसरद्रूषा ।

सुरैषानस्ति सुरा देवाः । यतीऽब्धिजा सुरा तैः पीता । शुक्रं तेजोऽस्या-
 स्ति शुक्रो दैत्यगुरुः ॥ पद्ममस्या अस्ति पद्मा लक्ष्मीः ॥ हीनगुणत इति
 हीनोपाधिकादित्यर्थः ॥ खण्डः कर्णोऽस्यास्ति कर्णः । छिन्ना नासिकाऽस्या-
 स्तीति नासिकः । हीनगुणादिति किम् । कर्णवान् । नासिकावान् ॥ अन्ये तु

(१) पांडु विद्यतेऽस्मिन्निति पांडुरो मार्गइत्यधि० । (२) वाचालह-
 त्यधि० । (३) घाटा ग्रीष्म तद्गान् घाट इति पा० ।

काणमस्याक्ष्यस्तीति काणः । खड्गः पादोऽस्यास्तीति खड्गः । कुण्ठः पाणिरस्या-
स्तीति कुण्ठः । खल्वाटं शिरोऽस्यास्तीति खल्वाट इत्याद्युदाहरणान्याहुः ॥
शुक्लो वर्णोऽस्यास्तीति शुक्लः पट इत्यादि ॥ आकृतिगणध्यायम् । यत्राभिन्न-
रूपेण शब्देन तद्धतोऽभिधानं तत्सर्वमिह द्रष्टव्यम् ॥४३२॥ इत्यर्शआदिः ॥

विमुक्तदेवासुरसत्त्वदग्ना-विष्णूर्वशीडामरुतो महित्री ।

सुपर्णरक्षोवसुवृत्रहन्तृदशार्णरक्षोऽसुरबर्हवन्तः ॥ ४३३ ॥

विमुक्तादेरण् इत्यनेन विमुक्तादेरस्त्यर्थेऽध्यायानुवाकयोरभिधेययोरण् ॥

विमुक्तशब्दोऽस्मिन्नस्ति विमुक्तोऽध्यायोऽनुवाको वा ॥ देवासुशब्दोऽस्मिन्नस्ति
दैवासुरः ॥ अपरे विग्रहीतादप्युदाहरन्ति । दैवः । आसुरः । एवं सात्वतः ॥
सरधन्तुरित्यपि केचित् । तन्नते सात्वन्तवः । अग्निश्च विष्णुश्च अग्नाविष्णु ॥
अग्नाविष्णुशब्दोऽस्मिन्नस्ति अग्नाविष्णवः ॥ भोजस्तु देवताद्वन्द्वे चेत्युभय-
पदारैचि । अग्नाविष्णव इत्युदाहरति । उर्वशी शब्दोऽस्मिन्नस्ति । श्रीर्वशः ।
ऐहः । लत्व ऐल इत्यपि । आरुतः । महयतीति महित्री । तृप्रत्ययेऽस्येडभा-
वोनुकार्यं तदनुकरणादण् । माहित्रः । सौपर्णः । राक्षसः । वासवः । वार्त्र-
हन्त्रः । वृत्रहन्त्रिति वामनः । दशार्णः । राक्षोऽसुरः । बार्हवन्तः ॥४३३॥

उपसहयोऽस्यहत्याः सोमापूषापतत्रिवसुमन्तौ ।

परिसारको दशार्हः पत्नीवानथ हविर्धानः ॥ ४३४ ॥

श्रीपसदः । अकारान्तोऽप्यन्येषां मतेन । नायसः । अस्यहत्यशब्दोऽस्य-
हत्याशब्दो वास्मिन्नस्ति । आस्यहात्यः । सोमश्च पूषा च सोमापूषाणी । देवता-
द्वन्द्व इति दीर्घत्वम् । सोमापूषन्शब्दोऽस्मिन्नस्ति । सौमापूषाः । सौमापौषा
इति भोजः । पातत्रिणः । वासुमतः । परिघावतीति परिसारकः । स शब्दोऽ-
स्मिन्नस्ति पारिसारकः ॥ दशार्हः ॥ पात्नीवन्तः । पात्नीवत इति शाकटाय-
नः ॥ हविर्धानः ॥ विमुक्तादयः स्वरूपनिष्ठा अनुकरणाभूताः प्रत्ययभाजो
द्रष्टव्याः ॥४३४॥ इति विमुक्तादिः ॥

गोपदेवस्यत्वादेवीरापस्तदेवकृष्णोऽस्यौ ।

देवींधियप्रतूर्णेपेत्वारक्षोहणोशानाः ॥ ४३५ ॥

गोषदादेरक इत्यनेन गोषदित्यादेरस्त्यर्थेऽध्यायानुवाकयोरको भवति ॥
 गाः सीदति गोषत् । सुषामादित्वात् षत्वम् । गोषदस्मिन्नस्ति गोषदकोऽध्या-
 योऽनुवाको वा । देवस्येति षष्ठ्यन्तं त्वेति युष्मदादेशः । तत्समुदायानुकरणाद-
 कः । देवस्यत्वकः ॥ देवीरिति च्छान्दसो जसन्तः । दीर्घाज्जसि च वा कृन्दसीति
 हि छान्दसं सूत्रम् ॥ आप इति च जसन्तः । तत्र देवीराप इत्यकारान्तभा-
 गानुकरणादकः । देवीरापकः । तदेवकः । अयं भोजमतेन ॥ कृष्णोस्यकः ।
 कृष्णोऽस्याखरेष्टक इत्यन्ये ॥ देवींधियश्चोद्योर्योऽकारान्तसमुदायस्तदनुकरणा-
 दकः । देवींधियकः ॥ प्रतूर्णकः ॥ इषे । इतीच्छतेः क्लिबन्ताच्चतुर्थी । त्वेति
 युष्मदस्त्वामौ द्वितीयाया इति त्वादेशः । तत्समुदायस्य । इषेत्वा इत्यखण्ड-
 निदमनुकरणम् । इषेत्वाशब्दोऽस्मिन्नस्ति इषेत्वकः ॥ रक्षांसि हन्तीति
 रक्षोहा । बहुत्वे जसि । रक्षोहणः ॥ तत्राकारान्तभागानुकरणादकः । रक्षो-
 हणकः ॥ उशानकः ॥ ४३५ ॥

वाचस्पतिः कृशानुश्च स्वाहाप्राणोऽञ्जनं तथा ।

पत्वासहस्रशीर्षश्च मातरिश्वा च घोषदा ॥ ४३६ ॥

वाचस्पतकः । कृशानवकः । स्वाहाप्राणकः । अञ्जनकः । पदेः क्त्वा ।
 पश्वकः । सहस्रशीर्षकः । मातरि श्वयति गच्छति मातरिश्वा वायुः ।
 तदनुकरणादकः । मातरिश्वकः । घोषदकः ॥ ४३६ ॥ इति गोषदादिः ॥

इति श्रीगोविन्दसूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्धमानाविरचितायां स्वीयगणरत्नम-
 होदधिदृत्तावस्य सञ्जातमस्य भावः कर्म वानेनास्यात्र वास्त्यर्थविहित-

प्रत्ययगणनिर्णयो नाम सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ॥

येभ्यस्तद्धितसिंहेभ्यः शाब्दिकेभैः पलायितम् ।

गव्येनापि नया दत्तं पदं तद्गणमूर्धसु ॥

कण्डूज्मेधातुरणभुरणा गद्गदो दुःखवेदौ—

केलालाटौ समरभिषजौ तन्तसो मन्तुवल्गू ।

एलावेलासपरमगधाः पम्पसेरोमहीडः—

खेलालोटावुरणचरणसूषसो वेडूहणीडौ ॥ ४३७ ॥

कण्डूवादेर्यंगित्यनेन कण्डूजित्यादेर्गणात्स्वार्थं यन्भवति । कण्डू अङ्गघर्षणे । कण्डूयति- । कण्डूयते । नखादिना गात्रं घर्षति ॥ मेधा आशुग्रहणे । मेधायति ॥ तुरण त्वरायाम् ॥ तुरणयति । त्वरत इत्यर्थः । तुरण धारणपोषणयोरित्यन्ये ॥ भुरण प्रहरणधारणयोः(१) ॥ भुरणयति । सुष्यते धारयतीति वा ॥ गद्गदवाक्यस्खलचे ॥ गद्गद्यति । अन्ये तु गद्गदङिति पठन्ति । तन्तते गद्गद्यते । ङित्वात्तङ् ॥ दुःख तत्क्रियायाम् । दुःख्यति ॥ वेद्यति(२) । सायाम्रपञ्चमाचरति ॥ वेटलाजित्यन्ये ॥ वेटलायते । वेटलाङिति भोजः । केला विलासे । केलायति । विलासतीत्यर्थः ॥ लाट जीवने । लाटयति ॥ समर रणक्रियायाम् । समर्यति ॥ भिषज कुत्सायाम् । भिषजयति कुत्सयत इत्यर्थः । चिकित्सायामित्यन्ये ॥ तन्तस दुःखे । तन्तस्यति । दुःखी भवतीत्यर्थः । मन्तु रोषे वैमनस्ये च ॥ मन्तूयति ॥ मन्तूज् मन्तूयति । मन्तूयत इति चन्द्रः ॥ वल्गु साधुर्ये पूजायां च । वल्गूयति ॥ एला विलासे ॥ एलायति । इलाशब्द इत्यन्ये ॥ वेला कालविशेषे ॥ वेलायति ॥ सपर पूजायाम् । सपर्यति पूजयतीत्यर्थः । सपर्यया साधु स पर्यपूजत् ॥ सगध परिवेष्टने । सगध्यति । परिवेष्टत इत्यर्थः । नीचदासादिवृत्तिमनुतिष्ठतीत्यपरः ॥ पम्पसदुःखे । पम्पस्यति दुःखायत इत्यर्थः ॥ इरस् ईर्ष्यायाम् । इरस्यति ॥ महीड् वृद्धौ पूजायां च । महीयते । ङित्वात्तङ् ॥ खेला स्खलनविलासयोः । खेलायति ॥ खेला इत्यकारान्तमित्यन्ये । तन्तते

(१) भुरण रणधारणयोः । चुरण चौर्ये । प्रहरणधारणयोरिति वर्द्धमानः । इति पा० । (२) वेद धीर्त्ये स्वप्ने चेत्यधि० ।

खेल्यति ॥ लोट्यति षटुः । भूमौ विपरिवर्तत इत्यर्थः । लेट् दीप्तावित्यन्ये(१) ॥
 चरश्यति षादिनम् ॥ चरण गतौ ॥ चरश्यति ॥ वरण इति भोजः । यथा—
 चरश्यन्वारणैर्वेलां तरश्यन्तौभिरर्णवम् ॥

असु मानस उपतापे च । असूयति ॥ अन्येतु असूडिति डितं दीर्घान्तं
 पठन्ति । तन्मते । असूयते ॥ उपस्यति रात्रिः प्रभाती भवतीत्यर्थः । वेडि-
 ति धौर्यं स्वप्ने च । वेटप्रति ॥ हृणीड् रोषे लज्जायां च । हृणीयते वीरवती
 न भूमिः ॥ ४३७ ॥

रेषाम्बरयोद्भवसः सुखेरजौ भिष्णाक्तिरोलाडिषुधेरधोऽगदः ।
 लेखालिटौ लेट् चुरणाररोरसोवेटाऽथलोटातरणौ तथा पयः ४३८
 रेखायति श्लाघामासादयति । रेखाकर्माचरंश्चित्रकरादिर्वोच्यते ॥ अ-
 म्बर्यति । सम्बर(२) इति वामनः ॥ इयस् ईशैश्वर्ययोः ॥ इयस्यति । अयं
 दुर्गमतेन ॥ द्रवस् परितापे परिचरणे च । द्रवस्यति ॥ सुख तत्क्रियायाम् ।
 सुख्यति ॥ सुखीभवतीत्यर्थः ॥ इरज् ईर्ष्यायाम् । इरज्यति । भिष्णज्
 उपसेवायाम् । भिष्णज्यति । उपसेवत इत्यर्थः ॥ तिरस्यति अन्तर्हितो भ-
 वतीत्यर्थः ॥ लाडिति वेट् षत् । लाट्यते । इषुध अस्त्रधारणे ॥ इषुध्यति ॥
 इरध्यति ॥ अगद्यति(३) । द्वयं भोजमतेन ॥ लेखार्थं रेखार्थवत् ॥ लिट् अ-
 ल्पार्थं कुत्सायां च ॥ लिट्यति ॥ लोट्यति ॥ भूमौ विपरिवर्तत इत्यर्थः ॥
 चुरण गतौ घौर्यं च । चुरश्यति ॥ गच्छति । चौरयति । अरर आराकर्मणि ।
 अरर्यति । अररेति नाम । आरापर्यायवाचि ।

स राक्षसेन्द्रस्य निशावरैन्द्रो विभेति चर्मार एव चर्मा ॥

अररो यज्ञाङ्गं रणप्रचेत्यन्यः ॥ उरस्यति ॥ वेटायति । लोटायति ॥
 एतौ वामननतेन ॥ वेटालाटेति केचित्पठन्ति । तेषां मते वेटालाट्यति ॥
 तरण गतौ । तरश्यति ॥ पयस्यति गौः । पयः प्रसूत इत्यर्थः ॥ ४३८ ॥

सम्भूयोभरणौ नन्दपुरणौ कुपुभेमसौ ।

ईयस्पुष्पौ तथा गोधा चित्रडाश्वर्य इष्यते ॥ ४३९ ॥

(१) लेट् लोट् धौर्यपूर्वभावे स्वप्ने च । दीप्तावित्येकद्विति पा० ।

(२) अग्रध्यति । अम्बर सम्बर संभरणे इति पा० । (३) अगद नीरो-
 गत्वे । इरज् ईर्ष्यायाम् ।

सम्भूयस्यति सस्यम् । वर्षति पर्जन्ये प्रभूतं भवतीत्यर्थः ॥ भरण धार-
णपोषणयोः । भरयति ॥ मन्द समृद्धौ । नन्द्यति ॥ पुरण गतौ । पुरयति
गच्छतीत्यर्थः । कुपुम क्षेपे । कुपुस्यति क्षिपतीत्यर्थः ॥ कुसुस्यति स्वदेहाश्रयां
परकर्तृकां निरोधक्रियामनुभवतीत्यर्थ इत्यन्ये ॥ इमस् ईयस् ईर्ष्यायाम् ॥
इमस्यति । ईयस्यति ॥ पुष्प सन्तोषे । पुष्प्यति ॥ गीधायति । अयं चन्द्रम
तेन ॥ चित्रीयते आश्चर्यमुत्पादयति ॥

कुसुभादीनामकारलोपश्च । द्विविधाः कण्डादयः स्वर्यन्ते भवादयश्च नामानि
च । तत्र भवादधिकाराद् भवादिभ्यः प्रत्ययः । तदुक्तमुभयम् । कण्डादीनि
धातवश्चैव प्रातिपदिकानि च । आतश्चोभयम् । कण्डूयतीति चङ्गघर्षणे प्रयु-
ज्यते । अस्ति मे कण्डूरिति वेदनाभात्रे ॥ अपरोधात्तु धात्वस्य विकल्पे युक्ति-
भाह धातोरित्यधिकारात् । ककारस्य च गुणप्रतिषेधार्थस्यासञ्जनादवसीयते ।
धातवस्तावत्कण्ड्वादय इति कण्डूञ् हृणीञ् इति च दीर्घं गणे पठति । यदि
च नित्यः प्रत्ययः स्याद् व्यप्तेगित्यनेनैव दीर्घत्वस्य सिद्धत्वादनर्थकं दीर्घोच्चा-
रणं स्यात् कृतं च तस्मादवसीयते धातुत्वमेव कण्ड्वादिषु विभाषितमिति ।
तदुक्तम्—

धातुःप्रकरणाद्धातुः कस्य चासञ्जनादपि ।

आह धायमिसं दीर्घं नन्ये धातुर्विभाषितः ॥

स्वाद्यधिकारः क्रिम् । कण्डूनाम्नः स्यादयो भवन्ति । नदीसञ्ज्ञकश्चायं
स्त्र्याख्यत्वात् । तेन निर्याङ् भवन्ति । रणेन कण्ड्वास्त्रिदशैः समं पुनः ।
मन्तुः बलगः । पाणिनिशकटाङ्गजदिग्वस्त्रवामनमतेन स्वार्थं कण्ड्वादिभ्यः
प्रत्ययः । चन्द्रादीनां मतेन करोत्यर्थे । आकृतिगणोऽयम् । तेन रैधत्तलप्रभृतयो
द्रष्टव्याः ॥४५॥ इति कण्ड्वादिः ॥

भृशतृपञ्चपलाण्डररेहतो हरितपण्डितकण्डररेफतः ।

अभिमानःशुचिदुर्मनसोजसः सुमनसोन्मनसोत्सुकवेहतौ ४४०

कर्तुर्भृशादेर्हल्लुक् चाच्चेरित्यनेन भृशादेरच्चन्ताद् अभूततद्भावविषयात्
कर्तृभूतात् षड् भवति । तत्संनियोगेन हलो लुक् । अभृशो भृशो भवति
भृशायते । वृषत् चन्द्रः समुद्रश्च । वृषायते । चपलायते । आण्डरो मूर्खो
मुष्करो वा । आण्डरायते । अण्डर इत्यन्ये । रेहत् नैर्घृणयधर्मवृत्तिभिर्लाभि-
लापधर्मवृत्तिर्वा । रहसि वर्तत इत्यन्ये । रेहायते ॥ हरितायते । परिहृतायते ।

कखडरायते ॥ रेफत् सदोष इत्यर्थः ॥ रेफायते ॥ अभिमनायते । शुचीयते ।
दुर्मनायते ॥ ओजःशब्दस्तद्धति वर्त्तते । ओजायते ॥ सुमनायते ॥ उन्मनायते ॥
उत्सुकायते ॥ वेहत् गर्भघातिनी । वेहायते ॥ सुमनसोन्मनसेति वृत्तीयान्ते पदे४४०
शीघ्रं फेनो नीलमन्दौ च वर्चः संश्वन्मद्रौ भद्रयुक्तौ भृशादौ ॥

शीघ्रायते ॥ फेनायते ॥ नीलायते ॥ दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि ॥
वर्चायते ॥ संश्रायते सातत्येन भवति ॥ शश्वदिति शाकटायनः ।
सद्गायते ॥ भद्गायते ॥ ननु उदमनायतेत्यादयः प्रयोगाः कथं सिध्यन्ति ? ।
सप्रादीनामेपां पाठात् । नैवस् । सद्गामयतेः सप्रादेः स्वादिषु पाठात् ।
अन्येभ्योऽपि निरुपसर्गभ्य एव क्यडादिविधिः । तेन । उदपुच्छयत समभा-
शयतेत्यादयोऽपि सिद्धाः ॥ इति भृशादिः ॥

शब्दाटाट्याकएवमेवाश्रकोटाः षोटासोटाशुभ्रनीहारशीकाः४४१

शब्दादि करोति ष्यङ् वेत्यनेन शब्दादेः करोतीत्यर्थे ष्यङ् वा भवति ॥
शब्दं करोति शब्दायते ॥ शब्दयति शाब्दिक इत्यपि ॥ अटाट्यायते । कखवं
पापम् । कखायते ॥ मेघायते तपात्यये षायुः ॥ अश्रायते ॥ कुट कौटिल्ये ।
कोटयतीति कोटा स्त्री । कोटायते । षोटा स्त्री । षोटायते ॥ सोटायते ॥
शुभ्रायते शशी ॥ नीहारायते हिमर्तुः ॥ शीकायते । शीत्कारं करोतीत्यर्थः ॥४४१॥

सुदिनं दुर्दिनं युद्धं वैराटाटाट्टशीकराः ।

मुष्वावेगौयकएड्वाटा ममश्च कलहो मतः ॥४४२॥

सुदिनायते शरत् ॥ दुर्दिनायते प्रावृट् । युद्धायते सुभटः ॥

वैरायितारस्तरलाः स्वयं सत्सरिणः परे ॥

अटाटायते ॥ अट्टायते ॥ शीकरायते ॥ सुषदाहे । वन्नप्रत्यये । मुष्वा ।
मुष्वायते(१) । वेगायते तुरगः ॥ श्रीघायते ॥ कणैर्वप्रत्यये डक्चागमः ॥ कखडूज्
इत्यस्य वा वप्रत्यय ऊकारलोपश्च । कखड्वा कृपा । कखड्वायते ॥ अटायते ।
ससेति पष्ठमन्तानुकरणम् । ममायते ॥ कलहायते ॥४४२॥ इति शब्दादिः ॥

लोहितत्रयामदुःखानि हर्षगर्वसुखानि च ।

मूर्च्छानिद्राकृपाधूमाः करुणा जिह्वचर्मणी ॥४४३॥

(१) मुष्वा मुष्वायते । मुष्वा मुष्वायत इत्यधि० ।

डालोहितादेस्तु क्यप् । इत्यनेन लोहितादेर्गणात् क्यप् भवति ॥ अलो-
हितो लोहितो भवति लोहितायते । लोहितायति । यथा—

लोहितायति सहस्रमरीचौ ॥

श्यामायति । श्यामायते । यथा—श्यामायमानानि वनानि पश्यन् ॥
दुःखायति । दुःखायते ॥ हर्षायति । हर्षायते ॥ गर्वायति । गर्वायते ॥ सुखा-
यति । सुखायते ॥ सूच्यायति । सूच्यायते ॥ निद्रायति । निद्रायते ॥ कृपायति ।
कृपायते ॥ धूमायति । धूमायते ॥ करुणायति । करुणायते ॥
जिह्वायति । जिह्वायते ॥ चर्मायति । चर्मायते ॥

लोहितश्यामवर्जमन्वेषां तद्धति प्रत्ययः । तेनादुःखवार्त्तं दुःखवान् भव-
तीत्यादि वाक्यम् ॥ तुग्रहणं क्यपोऽवधारणार्थम् ॥ लोहितादेरेव क्यप् नान्वेश्यः ॥
आकृतिगणोऽयम् ॥ तेन । असुतं यस्य विषायति । इत्यादयः सिद्धाः ॥ ४४३ ॥

इति लोहितादिः (१) ॥

सुखदुःखास्त्रकच्छ्राणि प्रतीपः करुणस्तथा ।

कृपा चालीकतृप्रास्त्रकृपणाः सोढसंयुताः ॥ ४४४ ॥

सुखादिर्भुङ्क्ते इत्यनेन सुखादेर्गणाद् भुङ्क्ते वेदयतेऽनुभवतीत्यर्थे क्यङ्
भवति ॥ सुखं वेदयते सुखायते ॥ दुःखायते ॥ अस्यतेऽनेन अस्त्रम् । अश्रु(२)
रुधिरं वा । अस्त्रायते ॥ कृच्छ्रायते ॥ प्रतीपं प्रतिकूलम् । प्रतीपायते ॥ करुणं
शोचनम् । करुणायते ॥ कृपायते ॥ अलीकम् अनृतम् । अलीकायते ॥ तृप्रं(३)
दुःखम् । तृप्रायते ॥ अस्त्रमेवास्त्रम् । अस्त्रायते ॥ कृपणं दैन्यम् । कृपणायते ॥
सोढं सहनम् अभिभवो वा । सोढायते ॥ सुखादीन्वेषे लोहितादिष्विच्छन्ति ।
तेषां मते । असुखः सुखो भवति सुखायति ॥ सुखायते ॥ ४४४ ॥ इति सुखादिः ॥

ग्रहस्निहौ वदं दीधीभणौ रणपठौ कुचम् ।

लिखं च कम्पमन्दोत्तिमुम्भिं लोचं मथिं विदुः ॥ ४४५ ॥

(१) यत्तु गणरत्नमहोदधौ लोहितश्यामदुःखानि० इति पठित्वा श्यामादि-
स्योऽपि क्यपि पद्यद्वयमुदाहृतं तत्तूक्तभाष्यवार्तिकविरुद्धम् । तस्मात्तेभ्यः
क्यप्तेवेति ध्येयमिति के० ॥ (२) अस्यतेऽस्तु अस्त्रं च । अश्रुते आकण्ठ अश्रु
वाप्यो नानार्थे । इत्यधि० । (३) तृप्रं दुःखं चन्द्रं समुद्रं वा तृप्रायते इति० ।

क्षैरग्रहादेरित्यनेन ग्रहादिवर्जितात्परस्य क्षैरिङ् न भवति ॥ निगृ-
हीतिः ॥ अपस्निहितिः ॥ उदितिः ॥ दीधितिः ॥ भणितिः ॥ रणितिः ॥
निपठितिः ॥ निकुचितिः ॥ लिखितिः । विकम्पितिः ॥ अन्दोलितिः ॥ उ-
म्भितिः ॥ आलोचितिः । मथितिः ॥ ४४५ ॥ इति ग्रहादिः ॥

वारतर्परगराः द्वारभरे कन्दरः करभमण्डरकाराः ।

रघवरं कपरिकाङ्गुरिरिखा रोमकर्मपुरुषासुररिक्षाः ॥४४६॥

वारादेर्वेत्यनेन रश्रुतेर्लश्रुतिर्वा भवति ॥ वारः क्रियाभ्यावृत्तिः । बालः
केशः ॥ तर्परः धशूनां कण्ठघण्टा । तल्पलो गजपृष्ठैकदेशः ॥ गरो विषम् ।
गलः प्राण्यङ्गम् ॥ शरभोऽष्टापदः । शलभः पतङ्गः ॥ इराऽसृतम् । इला भूमिः ॥
कन्दरो गिरिगुहा । कन्दलः कन्दविशेषः ॥ करभ उष्ट्रः । कलभो बालहस्ती ॥
अण्डरो जीवविशेषः । अण्डलं बिम्बं सङ्घातो वा ॥ कारो रक्षानिर्वेशः । कालो
वर्णः ॥ रघुः राजा । लघुः अपचितपरिमाणः ॥ अरम् अत्यर्थम् । अलं पर्या-
प्तम् ॥ एतेषामर्थभेदे लत्वं रूढिवशात् । भोगस्तु सान्दान्येनाह ॥ कपरिका ।
कपलिका ॥ अङ्गुरिः । अङ्गुलिः ॥ रेखा । उखा ॥ रोम । लोम ॥ कर्म ।
कतन ॥ पुरुषः । पुलुषः ॥ असुरः । असुलः ॥ रिखा । लिखा ॥४४६॥

पांसुरकरीरमूर्त्तिर्पिरिकातरुणशुक्रपर्यङ्काः ।

परियोगमुकुरसरिरं रोहितपरिधौ सरोहियथौ ॥४४७॥

पांसुरः । पांसुलः ॥ करीरः । कलीलः ॥ मूरम् । मूलम् ॥ तिर्पिरिका ।
तिल्लिपलिका ॥ तिर्परीकसिति वामनः ॥ तरुणः । तलुनः ॥ शुक्रः । शुक्लः ॥
पर्यङ्क । पल्यङ्कः ॥ परियोगः । पलियोगः ॥ मुकुरम् । मुकुलम् ॥ सरिरम् ।
सलिलम् ॥ रोहितम् । लोहितम् ॥ परिधः । पलिधः ॥ रोहिणी । लोहिनी ॥
आकृतिगणोऽयम् । तेनान्येषामपि लत्वं भवति ॥४४७॥ इति वारादिः (९) ॥

समादितः पर्दिं सदिं विदिं नहिं वृषिं प्रुषिम् ।

इणं वृतिं यतिं श्रुवं स्रुवं भरिं विदेन्धिना ॥४४८॥

(९) ऋफिडादीनां इञ्चलः । ऋफिहः । वृफिहः । लृतकः । ऋतकः ।
कपरिका । कपलिका । इत्थेधिकम् ।

सम्पदादेः क्विप् क्तिरित्यनेन सम्पदादेः स्त्रियां भावेऽकर्त्तरि च कारके
क्विप्क्तिप्रत्ययौ भवतः ॥ सम्पत्तिः । सम्पत् ॥ विपत्तिः । विपत् ॥ व्यापत्तिः ।
व्यापत् ॥ प्रतिपत्तिः । प्रतिपत् ॥ संसत् । परिषत् । उपसत् । उपनिषत् ॥
संवित् । निर्वित् ॥ उपानत् ॥ प्रावृट् ॥ विप्रुट् ॥ ससित् ॥ नीवृत् । उपा-
वृत् ॥ संयत् ॥ प्रतिश्रुत् ॥ उपस्रुत् । उपभृत् ॥ विदेति जानात्यर्थेत्यन्यः ॥
समर्थितेऽनया ससित् ॥ वामनमते क्तिप्रत्ययो द्रष्टव्यः ॥४४८॥

ऋधिं युधिं क्षुधिं तृधिं त्विधिं रुधिं रुजं शुचम् ।

ऋचिं मुदिं मृदिं गिरिं ह्रियं भियं लुवं भुवम् ॥४४९॥

ऋत् ॥ युत् ॥ क्षुत् ॥ तृट् ॥ त्विट् ॥ रुट् ॥ रुक् ॥ शुक् ॥ ऋक् ॥ मुत् ॥
मृत् ॥ गीः ॥ अत्रापि क्तिप्रत्ययो वामनमतेन ॥ भोजस्तु क्तिप्रत्ययं न ददर्श ॥
ह्रीतिः । ह्रीः ॥ भीतिः । भीः ॥ लूनिः । लूः ॥ भूतिः । भूः ॥४४९॥

कृत्रं भिदिं छिदिं नुदिं दृशिं नशिं युजिं ज्वरम् ।

अवं त्वरं श्रिवं मवं शकिं नुवं विदुर्बुधाः ॥४५०॥

कृतिः । कृत् ॥ भित्तिः । भित् ॥ छित्तिः । छित् ॥ नुत्तिः । नुत् ॥
दृष्टिः । दृक् ॥ नृष्टिः । नृक् ॥ युक्तिः । युक् ॥ जूर्तिः । जूः ॥ कृतिः । कृः ॥
तूर्तिः । तूः ॥ श्रुतिः । श्रूः ॥ मूतिः । मूः ॥ शक्तिः । शक् ॥ नुतिः । नुत् ॥
भोजोऽपि क्तिक्विपौ ददर्श ॥ आकृतिगणोऽयम् । तेन शासित्रैकशूयप्रभृतयो
द्रष्टव्याः ॥४५०॥ इति सम्पदादिः ॥

भिदिं छिदिं विदिं दयिं रुजिं मृजिं प्रछिं चुरिम् ।

अनामनि क्षिपिं तथा गुहिं तुलिं कसिं वपिम् ॥४५१॥

पिङ्गिदादिभ्योऽङ् इत्यनेन पितो भिदादेश्च स्त्रियां भावेऽकर्त्तरि च कार-
केऽङ् भवति ॥ भिदा विदारणम् ॥ छिदा द्वैधीकरणम् ॥ विदा लाभो ज्ञानं
या । दया कृत्वा । रुजा [रोगः] ॥ मृजा [शरीरसंस्कारः] ॥ पृच्छा [प्रश्नः] ।
अत्र च्छन्दोभङ्गभयाद् द्विनं कृतः ॥ चुरा चौर्यम् ॥ क्षिपा [प्रेरणम्] । अना-
म्रीति किम् । भित्तिः । विच्छित्तिः । विलिप्तिरित्यन्तः ॥ अत ऊर्ध्वं नागनि ॥
गुहा पर्वत कुहरम् औपधियिशेषश्च ॥ तुला उन्मानम् ॥ वसा (१) स्नेहः ।
यषा जेदोविशेषः ॥ ४५१ ॥

(१) यथा स्नेहद्रव्यं धातुविशेषश्च । उष्टिरन्या इति पा० ॥

क्षपिं क्षियं रिखिं लिखिं शुभिं सिधिं मिधिं गुधिम् ।

अरिं गदिं घृजं तरिं करिं हरिं खिदिं विदुः ॥ ४५२ ॥

क्षपा रात्रिः (१) ॥ क्षिया आचारभेदः ॥ रेखा राजिः ॥ लेखा सैव ॥ रिखि-
लिखेः समानार्थः सौत्रधातुः ॥ शोभा कान्तिः ॥ सेधा सखम् । मेधा बुद्धिः ॥
गोधा प्राणिविशेषः । एतेषामरेड् च ॥ आरा शस्त्री ॥ गदा प्रहरणम् ॥ धारा
प्रपातः । तारा ज्योतिः ॥ कारा गुप्तिः । हारा मुक्ताफलमाला ॥ मानमिति
भोजः ॥ एतेषां वृद्धिश्च ॥ खेदा दैन्यम् ॥ निपातनादरेड् ॥ आकृतिगणश्चा-
यम् । तेन चूडा ङीडा ऊहा प्रभृतयो द्रष्टव्याः ॥४५२॥ इति भिदादिः ॥

नन्दिर्वासिर्वर्धिनर्दी च रोचिर्-दूषिर्भाषिर्भूषिशोभी मदिश्च ।
साधिर्यन्ताः सर्व एते च नास्मि क्रन्दिः कर्षिः स्यात्समोहर्षियुक्तः ॥

नन्दिप्रचिग्रहादिभ्योऽनाजिण इत्यनेन नन्द्यादिभ्यः पचादिभ्यो ग्रहा-
दिभ्यश्चाऽन अच् णिन् इत्येते क्रमेण कर्त्तरि प्रत्यया भवन्ति ॥ नन्दयतीति
नन्दनः ॥ वासयतीति वासनः ॥ वर्धनः ॥ नर्दनः । अयं
भोजसतेन ॥ रोचनः ॥ दूषणः । विभीषणः ॥ भूषणः । शोभनः ॥ मदनः ।
साधनः ॥ संक्रन्दनः ॥ संकर्षणः । संहर्षणः ॥ ४५३ ॥

रभिरुचिकृतितपितृदिपूदहिसहियुक्ता जुजल्पिदमयः स्युः ।

सञ्ज्ञायां लवणोऽथो आद्याद्वम्यर्दिनाशिसूदिमतम् ॥४५४॥

रमयतीति रमणः ॥ रोचत इति रोचनः विरोचनः ॥ विकर्त्तनः ॥
तपनः ॥ तर्दनः ॥ पवनः ॥ दहनः ॥ सहनः ॥ जवनः (३) ॥ जल्पनः ॥ दसनः ॥
सुनातीति लवणः (४) निपातनासत्त्वम् ॥ सर्वदसनः । जनार्दनः । वित्तविना-
शनः । मधुसूदनः ॥ असञ्ज्ञायामपि । रिपुदमनः । पुरार्दनः । रोगनाशनः ।
अरिसूदनः ॥ इति नन्द्यादिः ॥ ४५४ ॥

(१) क्रपेः संप्रसारणं च । कृपा । इत्यधि० ।

(२) वायु शब्दे । वाशि-वाशनः । इति पा० । (३) यु यीति निश्रभावं
प्राप्नोतीति यवन इति पा० । (४) लवणो राक्षसविशेषः । क्षारविशेषं
लवणमिति के० ।

पचं पतं वदं वशं व्रणं रणं क्षमं भृञ्जम् ।

वृत्रं गुपिं सृपिं नृतिं वृशिं मिपिं मिधिं विदुः ॥४५५॥

पचः । श्वपच इत्यपि ॥ पततीति पतः । पारापत इत्यपि । गस्तु
 उवलादिपाठात्पक्षे भवत्येव निपातः ॥ वदतीति वदः ॥ कद्ददो यद्दद इत्यपि ॥
 वष्टीति वशः ॥ व्रणयतीति व्रणः (१) ॥ अरिव्रणाशक्तिरित्यण् न भवति ॥ रण-
 यतीति रणः ॥ क्षमः । भरः । जारभरः ॥ नृणोतीति नृः । कन्यावर इत्यपि ॥
 गोपः । सर्पः ॥ नर्त्तः । दर्शः । मेघः । अनिमिष इति बहुलाधिकारात् कोऽपि
 भवति ॥ मेघः ॥ लगी प्रमाशयनन्तरम् ॥ ४५५ ॥

मिहिदिहिरुहयो नदभषदिवयः सिविचोरिगाहिगृचिलयः ।

तृदृचरयः सूदिस्कन्दी शिषिटृभिवहृष्टुदंशाः स्युः ॥४५६॥

मेघः ॥ देहः ॥ मारोहः ॥ नदः ॥ भषः ॥ देवः ॥ सेवः ॥ चोरः ॥
 गाहः ॥ गरः ॥ ब्राह्मणचेलः ॥ तरः ॥ दरः ॥ धरः ॥ सूदः ॥ स्कन्दः ॥ शेषः ॥
 दर्भः ॥ घहः । रघूदृहः ॥ रघावहः ॥ स्रवः ॥ दंशः ॥ आकृतिगणोऽयम् ॥
 तेनान्येऽपि द्रष्टव्याः ॥ ४५६ ॥ एति पचादिः ॥

ग्रहिसंमर्दी मन्त्रिः स्याद् अपराधिरवरुध्युपरुधिस्थाः ।

ह्रस्वो वाभवः परिवेरुत्पूर्वा भासिदसिसहयः ॥ ४५७ ॥

गृह्णातीति ग्राही ॥ सम्मर्दी ॥ मन्त्री ॥ अपराध्यतीति अपराधी ॥
 अवरोधी ॥ उपरोधीति भोजः (२) ॥ स्यायी ॥ परिभाषी । परिभवी ॥ विभा-
 धी । विभवी । द्वयं भोजनतेन ॥ उद्गासी ॥ उद्गासी ॥ उत्साही ॥ ४५७ ॥

श्रुर्विशौ वपिरक्षी ज्ञावसिशीङ्श्व नेः पराः ।

याचिसंव्यवहृव्याहृव्रजा वदवसौ नञः ॥ ४५८ ॥

निश्राधी ॥ निवेशी ॥ निवापी ॥ निरक्षी ॥ निश्यति निशायी ॥
 नियासी ॥ निज्ञायी ॥ न याचते अयाधी ॥ असंव्यवहारी । असंव्याहारीति
 शकटाङ्गजयामनी ॥ अव्याहारी । अव्राशी ॥ अघादी ॥ अव्रासी ॥ ४५८ ॥

• (१) व्रणयति शब्दं कारयतीति व्रणः इति पा० ॥

(२) उपराधोतीत्युपराधी । एवमपराधी ।

नञ्पूर्वादेव स्यादचश्च धातोरचित्तकर्त्तृकतः ।

अभिवेर्भुवस्तु भूते विशयीविषयी च देशे स्यात् ॥ ४५९ ॥

अकारी परशुः ॥ अहारी गन्धः ॥ अचित्तकर्त्तृकादिति किम् । अकर्त्ता । अहर्ता ॥ केचिन्नञ्पूर्वादि न मन्यन्ते । तन्मते कारी हारीति स्यात् ॥ अभि-
भूतवान् । अभिभावी ॥ विभूतवान् । विभावी ॥ गुणैश्चित्ते विशेते विशिनोति
वा । विशयी विषयी वा देशः । निपातनात्पत्वञ् ॥ ४५९ ॥ इति ग्रहादिः ॥

सूलविभुजो महीध्रः पृथ्व्यादिभ्यो रुहश्च विज्ञेयः ।

रुत्र्याख्योर्षर्बुधनखसुचकुमुदं दाय्यादकाकगुहौ ॥ ४६० ॥

सूलविभुजादेरित्यनेन सूलविभुज इत्यादयः कप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ॥
सूलानि विभुजति वक्री करोति सूलविभुजो रथः ॥ तर्ही धारयतीति महीध्रः ॥
पृथ्व्यां रोहति पृथ्वीरुहः । त्ररित्यादयः ॥ स्त्रियमाचष्टे स्त्र्याख्यः ॥ उपसि
बुध्यते उपर्बुधोऽग्निः ॥ नखान् मोचयन्ति नखमुचानि धनूंषि ॥ कौ पृथिव्यां
सोदते कुमुदम् ॥ दायमादत्ते दाय्यादः ॥ काकेस्थो गूहितव्याः काकगुहास्तिलाः ॥
आकृतिगणोऽयम् (१) ॥ ४६० ॥ इति सूलविभुजादिः ॥

इति श्रीगोविन्दचूरिशिष्यपण्डितश्रीवर्धमानधिरचित्तायां स्वीयगणर-
त्नमहोदधिवृत्ताद्याख्यातकृदाश्रितप्रत्ययगणनिर्णयो नामाष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

किञ्चित्कञ्चित्कथञ्चिद्गचितं पद्यानुसारतोऽस्माभिः ।

सुन्दरमसुन्दरं वा तल्लङ्घ्यं सहृदयैरेव ॥ १ ॥

सप्तनवत्यधिकेष्टवेकादशसु शतेष्वतीतेषु ।

वर्षाणां विक्रमतो गणरत्नमहोदधिर्विहितः ॥ २ ॥

इति श्रीवर्धमानधिरचितः स्वीयवृत्तिसहितो गणरत्नमहोदधिः समाप्तः ॥

(१) अपो विभर्त्ति अठ्ठं मेघः धर्माय प्रददाति धर्मप्रदः । एषं कामप्रदः ।
स्वर्गप्रदः । शास्त्रेण प्रजानाति शास्त्रप्रदः । एषमागमप्रद इत्यधिकम् ॥

अथ गणरत्नमहोदधेः-शुद्धिपत्रम् ॥

| पृ०-प० | अशुद्धम् | शुद्धम् । |
|--------|---------------|-------------|
| २-२६ | गणनाह | गणानाह |
| ३-१६ | कारे वार्थो | कारेवार्थो |
| ८-८ | तुव | तुवै |
| ८-२५ | लोभं न यन्ति- | लोभं नयन्ति |
| १४-१५ | द्युर्दिन | द्युर्दिन |
| १५-१५ | भोजं | भोजं |
| १६-२ | उपकुम्भम | उपकुम्भं |
| १६-१७ | दीप्त्यादन | दीप्त्यादान |
| १८-२२ | नभयन्ती | नभयन्ती |
| २२-२२ | पुरा | पुरः |
| २१-२३ | अन्नस् | अन्नस् |
| २२-१ | क्रोष्टमा० । | क्रोष्टुमा० |
| | कोष्टमा० | क्रोष्टुमा० |
| ३६-११ | काश्यावतानी | काश्यावतानी |
| ३७-६ | चैयट | चैटय |
| ३८-४ | गौकक्ष्या | गौकक्ष्याः |
| ३८-१७ | पायति | पाययति |
| ४३-२ | गोरिष | गोरिवा |
| ४५-१४ | कोपातका | कोशातका |
| ४९-१३ | नेच्छौ | नेच्छायां |
| ५०-४ | १६ | ५६ |
| ६०-३ | कुक्कटं । | कुक्कुटं । |
| | कुक्कटः | कुक्कुटः |
| ७१-१८ | १८ | ९१ |
| ७२-११ | कथनमयं | कथमयं, |

| पृ०-प० | अशुद्धम् | शुद्धम् । |
|--------|------------|-------------|
| ७८-२६ | गौप्ट | गोप्ट |
| १००-१० | दूर | दुर |
| १०१-२२ | लक्षयो | लक्ष्म्यो |
| १०२-१ | मनसौ | मनसो |
| १०३-१० | उद्य | उद्यद् |
| १०३-२७ | ऋषीणा | ऋषीणा |
| १०४-१८ | आर्चयत | आर्चयत |
| १०६-१३ | श्रद्धासि | श्रद्धांसि |
| "-२२ | समा- | समानः |
| | नः । | समानः |
| १०७-२३ | सुजू | सुज् |
| १०८-३ | दुन्दुभि- | दुन्दुभि- |
| | सेचनम् | पेचनम् |
| ११४-२४ | राहोरत्यम् | राहोरपत्यम् |
| ११७-२१ | हूत | हूतै |
| १२३-१७ | पञ्चम्य | पञ्चस्य |
| १२४-६ | ऽल्यो | ऽल्पो |
| १३३-११ | कश | कशा |
| १३४-१९ | ०जीव० | ०जीवि० |
| १३७-१० | कृष्णाय | कृष्णस्य० । |
| | यथा | यथा |
| १३८-४ | न्मुनेः | मुनेः |
| १५०-२३ | दृपगण | दृपगण |
| १५१-२९ | वमुञ्ज | वमुञ्ज |
| १५४-१८ | जहः | जहः |
| १६३-७ | शकाटा | शकटा |

| पृ०-प० अशुद्धम् । | शुद्धम् । | पृ०-प० अशुद्धम् । | शुद्धम् । |
|----------------------|---------------|---------------------|---------------|
| १६९-७ वैस्ववन | वैस्ववन | २१८-१३ व मुकुकु- | वकुसुं मु- |
| १९७-१८ सप्तम्यन्ता | सप्तम्यन्ता | लमूलं | कुलम् |
| १७३-२२ सुतंगता० | सुतंगमा० | २१८-२५ मोदनी | मेदिनी |
| १७५-१ च्छैरीषम् | च्छैरीषकम् | २१९-७ भोक्तु | भोक्तृ |
| १७६-६ इन्द्रस्य | इन्द्रस्य | २२०-१२ भोजममतेन | भोजमतेन |
| १८३-१३ आयुर्वेदि | आयुर्वेदि | —२५ रजजश्रोद्धत | रजजश्रोद्धत |
| १८४-२ तेन | मतेन | २२२-१९ वैदग्ध्यम् | वैदग्ध्यम् |
| १८५-२७ अविमारक- | ० | २२५-६ आक्षेत्रज्ञम् | आक्षेत्रज्ञम् |
| रित्यधिकम् | ० | २२७-३ दृहृन्मि | दृहृन्मि |
| १८६-१४ वसुप्ति० | वसुप्ति | —४ दीहार्दम् | दीहार्दम् |
| १९१-१६ देशा | देश | २२८-४ विधयच्छन्द | विधयश्छन्द |
| १९०-२३ स्त्रीक्रियते | स्त्रीक्रियते | —९ दुहदु | दुहदु |
| १९४-२५ द्वैपो | द्वैप्यो | २३०-२८ याद्येष्विति | याद्येष्विति |
| १९५-१५ क्षत्रियाः | क्षत्रियाः | २३१-२६ यथायोग | यथायोग |
| —१८ आराक्षी | आराक्षी | २३४-१६ कद्रुणः | कद्रुणः |
| २०४-७ क्रौष्टकर्णः | क्रौष्टकर्णः | —२५ दद्र० कद्र | दद्र० कद्रु |
| २०५-५ पीलुकुणः | पीलुकुणः | २४४-१० अपरोधात्तु | अपरो |
| २१२-२७ इत्यके | इत्यके | धात्वस्य | धातुत्वस्य |
| २१७-३ किसरा | किशरा | २४७-३५ लफिहः | लफिहः |

अथ गणारत्नमहोदधेः शब्दानुक्रमणिका ॥

| | | | | | |
|------------|--------|---------------|--------|-------------|--------|
| अङ्क | १५३-१६ | अकलुष | १५२-१६ | अग्निपद | २०९-३ |
| अङ्कुर | २१८-१३ | अकाल | २००-५ | अग्निवेश | १५८-१९ |
| अङ्कुकुश | ५८-१० | अकिञ्चन | २२०-८ | अग्निशर्म | १५०-६ |
| अङ्ग | १०-६ | अकिञ्चन | ८७-२६ | अग्निशर्म | १३९-१० |
| अङ्ग | १७२-२ | अकुतोभय | ८९-५ | अग्नीषोमौ | ९१-२३ |
| अङ्ग | २१५-१९ | अकुशल | २२५-१० | अग्नीन्द्रौ | ६९-१ |
| अङ्ग | १७२-२ | अकारी | २५१-३ | अग्न्याहितः | ७०-९ |
| अङ्गविद्या | २०१-२५ | अक्ष | २११-३ | अग्नौकत्य | ७७-१६ |
| अङ्गार | ५७-१७ | अक्षर | २०६-१ | अग्नौकत्वा | " " |
| अङ्गार | १९४-१४ | अक्षकितव | ८०-५ | अग्र | १४९-१५ |
| अङ्गार | १६५-१७ | अक्षण | ९६-२१ | अग्रतः | १२२-२५ |
| अङ्गार | २१८-२० | अक्षणक | " " | अग्रवणम् | ६५-७ |
| अङ्गार | १६४-२० | अक्षधूर्त्त | ८०-७ | अग्रे | ११-१६ |
| अङ्गारक | २१८-११ | अक्षभार | २१०-२६ | अग्रवणम् | ६५-३ |
| अङ्गारवेणु | ११२-२ | अक्षद्युत | २१४-१२ | अग्निशर्म | १९०-११ |
| अङ्गिरस् | ३१-१ | अक्षशौण्ड | ७९-१९ | अघ | २३९-२१ |
| अङ्गीकृत्य | ७४-२१ | अक्षि | २०४-२७ | अचपल | २२६-११ |
| अङ्गुरि | २४७-१४ | अक्षिभ्रुव | ६८-५ | अच्युत | १९१-१८ |
| अङ्गुलि | " " | अक्षेत्रंक्ष | २२५-६ | अच्युतन्त | १३५-३ |
| अंशु | १७७-१४ | अगद | २४३-१६ | अज | १५७-१२ |
| अंश | १७१-२२ | अगस्त्य | १५७-१३ | अज | १६५-४ |
| अंशुक | १७३-९ | अगणित | २२९-२४ | अज | १४९-१३ |
| अंस | ५७-३ | अगारवेणु | ११८-१ | अजक | २३६-१९ |
| अंसभित्ति | ८६-२ | अगारधेनु | "-२ | अजधेनु | १३८-१० |
| अंसभार | २१४-५ | अग्निशर्म | १३८-९ | अजपघ | १२७-१४ |
| अंसभार | "-५ | अग्नाविष्णु | २४०-१२ | अजपाद | ९३-१९ |
| अ | १३-२३ | अग्निममीरणी | ६९-८ | अजवस्ति | ३१-१८ |
| अकस्मात् | ११-१० | अग्निवेशदशोरक | ३६-२ | अजवार | १४०-२० |
| अकशाय | १४५-६ | अभिगष्टुन् | १०८-२२ | अजमारक | १४०-२० |
| अकशाय | "-१ | | | अजतुन्द | १०४-२५ |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|--------------|--------|
| अजस्तुन्द | १०४-२४ | अण्डर | २४४-२७ | अधीनाभ | ७२-१७ |
| अजवाप | १९४-१६ | अण्डम् | ५३-२३ | अध्वर | १५०-१ |
| अजस्त्रम् | १९-२५ | अत् | ९-२१ | अध्वर | २०२-५ |
| अजा | ३८-१० | अतसी | ४५-२ | अध्वर्युं | २२६-२२ |
| अजाविक | ९२-४ | अतिथि | १४५-२ | अध्वन् | २०६-१ |
| अजाशत्रु | ११३-८ | अतिखर | ६३-११ | अध्वर | ६१-१३ |
| अजाकपाणीय | १३३-२० | अन्त्रि | ३०-१८ | अध्यापकोदिता | ८४-२१ |
| अजिर | १४४-१४ | अतीव | २०-७ | अध्ययनतपसी | ९१-१४ |
| अजिर | १७३-२३ | अथ | १२-३ | अनुगङ्ग | २०१-३ |
| अजिरवती | ९९-१७ | अथकिम् | ९-१० | अनन्त | १२०-२६ |
| अजिनफला | ४०-१ | अथर्वन् | १६४-२१ | अनडुह | १५४-५ |
| अजीगर्त | १३७-१० | अथो | १०-१९ | अनडुहं | १३७-१२ |
| अजैडकम् | ९२-१५ | अदस् | २७-२४ | अनडुह | १५८-१० |
| अञ्जन | २४१-१५ | अदोरूप | २२९-१२ | अनडुह | २०३-३ |
| अञ्जनक | २२४-२३ | अर्द्धासन | २०४-१ | अनडुही | ४५-१९ |
| अञ्जनिक | २२४-२२ | अद्य | १४-१० | अनड्वाही | " २४ |
| अञ्जलिक | २२५-१ | अद्वा | २०-१७ | अनभिहित | ३४-१ |
| अञ्जनागिरिः | ९८-२४ | अद्यद्वितीया | ९०-२५ | अनभिज्ञान | १४२-९ |
| अञ्जसा | २०-१८ | अद्यपञ्चमी | " " | अनिधि | १४५-१७ |
| अञ्जीकूल | १९५-२४ | अध | १०-२४ | अनिपुण | २२५-११ |
| अञ्जिकूल | " " | अर्द्धारुत्य | ७७-२० | अन्तिषत् | १०८-५ |
| अज्ञातक | १२८-२० | अधरेद्यु | १४-८ | अनीक | ५३-१८ |
| अट्ट | २४५-२१ | अधिकारी | ४७-५ | अनीश्वर | २२५-१० |
| अट्ट | २४५-२३ | अधमर्ण | ६५-१९ | अनुकूल | २२४-१६ |
| अट्टाट | " २१ | अधरौष्ठम् | ६७-२६ | अनुगत | २१४-१९ |
| अट्टाट्या | २४५-१३ | अधमशाख | १९०-९ | अनुगणित | २३०-१ |
| अड | १३-२० | अधिदेव | ११२-२२ | अनुगणित | "-१३ |
| अडारक | ३३-१० | अधिपति | १६२-२ | अनुधरी | ४१-२१ |
| अणीष | १४४-१६ | अधिपति | २२२-२५ | अनुचारक | २१५-१० |
| अणु | ६४-३ | अधिराज | २२४-१७ | अनुजन | १९९-४ |
| अणु | १२९-१७ | अधिभूत | ११३-७ | अनुदृष्टि | १४५-७ |
| अणुक | १२९-१७ | अधुना | १४-१० | | |
| अणुक | १२४-८ | अधेनु | ११२-२ | | |
| अण्ड | १७२-२५ | | | | |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|---------------|--------|
| अनुद्विष्टि | १४६-१० | अनुसीर | २०१-४ | अन्यतर | २७-१५ |
| अनुतिल | २००-२८ | अनुसीत | २००-२८ | अन्यतरेद्यु | १४-८ |
| अनुनाश | १७१-२० | अनुसूप | "-२६ | अन्यत्र | १२-१ |
| अनुपथ | २००-२८ | अनुसंवरण | ११२-१८ | अन्येद्युः | १४-८ |
| अनुपथ | ९५-११ | अनुसंवत्सर | ११२-१६ | अन्योऽन्यस्य | ९-३ |
| अनुपद | ३२-२४ | अनुसृष्टि | "-१७ | अन्यभाव | २२२-१६ |
| अनुपद | २१२-१० | अनुहोड | "-५ | अन्यभाव | १२१-११ |
| अनुपद | २००-२६ | अनुयूप | २००-२६ | अन्वक्ष | ९५-१९ |
| अनुपान | २०९-२० | अनूप | १९४-१४ | अन्वक् | २१-११ |
| अनुप्रवचन | २०९-१९ | अनृत | २१६-१२ | अन्ही | ४८-५ |
| अनुभङ्ग | २०१-३ | अनृशंस | २२५-१० | अपजग्ध | ३४-२० |
| अनुमाष | २००-२८ | अनृशंस | २२७-१ | अपदग्ध | " " |
| अनुपूर्व | २२४-४ | अनेकप | ६०-२१ | अपदक्षिण | ७३-१६ |
| अनुयुक्त | २३०-१ | अन्त | २००-२ | अपधारय | १३५-२३ |
| अनुरथ | २०१-४ | अन्तर | २९-२६ | अपर | २८-२९ |
| अनुरहत् | "-१९ | अन्तरेण | १२-१३ | अपर | ६१-३ |
| अनुरहत् | ११२-४ | अन्तरे | १२-१९ | अपरसमम् | १३-२५ |
| अनुरोहण | २०९-२२ | अन्तरा | १८-११ | अपराधि | २५०-१७ |
| अनुलेपिका | २१५-८ | अन्तर् | १८-१४ | अपराह्ल | ५५-१३ |
| अनुलोम | ३४-२१ | अन्तरीप | १९४-१५ | अपरापहाणा | ३९-११ |
| अनुपठित | २२९-२६ | अन्त | १२२-२५ | अपरेद्यु | १४-८ |
| अनुवचन | २०९-१९ | अन्तादी | ६९-२ | अपवद् | १६२-१२ |
| अनुवंश | २००-२६ | अन्तेगुस्तु | ७१-२ | अपस्तम्ब | १५६-९ |
| अनुवादन | २०९-२० | अन्तेवासि | ९७-३ | अपिधान | ६२-०२ |
| अनुवासन | २०९-२१ | अन्तस्थ | १८९-१७ | अपिराधि | २२४-४ |
| अनुवाक | २१५-१४ | अन्दोलि | २४७-३ | अपिशुन | २२५-९ |
| अनुवेशन | २०९-२० | अन्धकार | ५८-९ | अपूप | १९८-१८ |
| अनुपण्ड | १९४-१० | अन्य | २६-२२ | अपूप | २०६-१३ |
| अनूपण्ड | "-" | अन्योऽन्य | २७-१२ | अपेहिप्रकमा | ८७-२१ |
| अनुशक्तिक | १११-२१ | अन्यकवर्त्तक | १३३-८ | अपेहिप्रघसा | " " |
| अनुष्टुम् | १६२-१९ | अन्यतः | १२२-२७ | अपेहिस्वागता | ८७-२० |
| अनुसात | २०१-२ | अन्यत् | ११-१४ | अपेहिद्वितीया | " " |
| | | अन्यतर | १४४-२१ | अपेहिविघमा | "-२० |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|-----------|--------|
| अपेहिवाणिजा | ८७-१९ | अमितौजस् | १३८-२७ | अयःस्थूणा | ४४-२५ |
| अबन्धक | ३४-२४ | अम्भोज | २३७-१२ | अयःस्थूणा | १४२-५ |
| अवद्भुक्त | ७-२५ | अमुत्र | २१-७ | अयि | ९-१२ |
| अञ्ज | २३७-१२ | अमुत्र | १८६-२० | अयुत | ५५-५४ |
| अभय | १५८-२४ | अमुष्य | १५०-७ | अये | ९-११ |
| अभयजात | १५८-२४ | अमुष्मिन् | १८६-२५ | अरर | २४३-१८ |
| अभिगम | ११२-९ | अमुष्यकुल | २२९-१२ | अरस् | २४७-१२ |
| अभिजात | २२३-१९ | अमुष्यपुत्र | ७-७ | अरस | १७७-१ |
| अभिजित् | १६०-५ | अमुष्यकुल | १९९-६ | अरदू | १४८-१८ |
| अभिधान | ५५-१४ | अमूला | ४०-३ | अरहु | १७७-१७ |
| अभिधानतः | १२३-१ | अमृत | ६०-१९ | अरगघ | १८१-१३ |
| अभिन्नतर | १२८-१३ | असू | २३९-१८ | अरराका | १५८-८ |
| अभिभूतवान् | २५१-४ | असू | २२१-११ | अरघ्या | १४८-१७ |
| अभिमानस् | २४५-१ | असूस् | २१-२२ | अरम् | १८-६ |
| अभिरूप | २२३-५ | अम्बर | ५५-५ | अराली | ४९-२ |
| अभिरूप | २२८-२२ | अम्बर | २४३-१० | अरविन्द | २३७-१२ |
| अभिहित | ३४-२ | अम्बरीष | ५८-१९ | अरिसूदन | २४९-२२ |
| अभीक्ष्ण | २२२-२५ | अम्बरीषपुत्र | १३९-३ | अरिन्दम | १९१-२२ |
| अभीक्ष्ण | १९-२३ | अम्बा | ३८-२२ | अरित्र | १९२-२६ |
| अभ्यवकाश | २१५-१ | अम्बिका | १४४-७ | अरिभ्रम | १७६-१३ |
| अभ्युत्तति | २१२-१ | अरभस् | २१६-१ | अरिष्ट | १७६-१२ |
| अभ्र | २३९-१५ | अरभस् | १३८-२७ | अरीहणी | ४१-१९ |
| अभ्र | २४५-१४ | अरभोज | ६०-१८ | अरीहण | १८१-२१ |
| अभ्र | १४०-१८ | अयस | १७६-१८ | अरीहण | १७५-६ |
| अभ्र | २१७-२१ | अयथातथ | २२५-७ | अरुण | १९५-१० |
| अभ्रावकाश | २१५-१ | अयथातथ्य | २२५-८ | अरुण | १७६-१३ |
| असरी | ४३-२७ | अयथापुर | ७-९ | अरुण | १३८-६ |
| असा | ५-१२ | अयस्कण्ड | २४-१७ | अरुण | १३८-६ |
| असाकृत्य | ७७-२० | अयस्कान्त | २५-६ | अरुण | १३८-६ |
| असावस्या | १९७-९ | अयस्काण्ड | २५-१४ | अरुण | १३८-६ |
| असावास्या | ७-७ | अयःस्थूणा | ३२-२ | अरुण | १३८-६ |
| असिन्न | २००-५ | अयःस्थूणी | ४४-२४ | अरुण | १३८-६ |
| असिन्न | १४८-८ | | | अरुण | १३८-६ |

| | | | | | |
|---------------|--------|------------|--------|---------------|--------|
| अर्कलूप | ११३-१६ | अर्पितोत | ६४-२१ | अवस्यन्दन | १९०-५ |
| अर्कचन्द्रौ | ६९-२ | अर्षुदः | ५६-१५ | अवस्यन्द | १९०-५ |
| अर्कलूष | १५२-१५ | अर्म | ६२-२१ | अवादि | २५०-२४ |
| अर्कलुप | १५२-१६ | अर्वाक् | २२-२४ | अथक्लिन्नपक्व | ६४-२४ |
| अर्कलुष | " " | अर्शस | २३९-१४ | अवटकच्छप | ८२-१५ |
| अर्कस्वन | १५३-१५ | अर्ह | १५३-२४ | अवदातिका | १२५-६ |
| अर्गल | २०६-२० | अर्हन् | १२७-४ | अवधारित | २३०-१२ |
| अर्शासा | १७८-२३ | अर्हत् | २२२-४ | अवमुक्त | २३०-१२ |
| अर्शाव | २३६-७ | अलका | ५२-२२ | अवमुक्तोपानरक | ९६-३ |
| अर्जुन | १९६-१४ | अलङ्कारवती | ९९-१७ | अवर | २८-२९ |
| अर्जुन | १७९-३ | अलिगु | १५८-११ | अवरोह | २३५-१८ |
| अर्जुन | १३६-२७ | अलम् | ७-६ | अवश्य | २२९-१४ |
| अर्जुन | १५३-११ | अलम् | २४७-१२ | अवश्यम् | १९-१० |
| अर्जुनभीमसेनौ | ६९-१४ | अलस | २२२-२ | अवासि | २५०-२४ |
| अर्जुनपुरुषम् | ९२-२५ | अलिन्दी | ४१-२४ | अवसान | २०३-२४ |
| अर्जुनपुरुषः | " " | अलीक | २००-५ | अवरसम | ७३-२५ |
| अर्जुनशिरीषम् | " २६ | अलीक | २३६-२७ | अवसाय | १९६-१७ |
| अर्थ | २१३-३ | अलीक | २४६-१८ | अवसानविरस | ८०-११ |
| अर्थधर्मौ | ६८-२५ | अलेखन | १४२-४ | अवरकर | १०४-१९ |
| अर्थकामौ | " २६ | अल्पशः | १५-१४ | अवि | १२८-१५ |
| अर्थशब्दौ | " २५ | अल्पदृशवा | ८१-१८ | अवरोधि | २५०-१८ |
| अर्थगत | ७०-१७ | अव | १३-२० | अवरोहित | १८१-१९ |
| अर्थकृत्य | ७७-१० | अवस् | २०-२० | अविदूर | २२५-९ |
| अर्थप्रवीण | ८०-४ | अवका | ५२-२२ | अविषम | ७३-२४ |
| अर्थतः | १२३-१ | अवकरः | १०४-२१ | अवेरे | १०-१५ |
| अर्द्धासन | २०४-१ | अवकल्पित | २३० २ | अवोष | २०६-१७ |
| अर्द्धवाह | २१३-८ | अवगणित | "-११ | अव्यय | ५७-५ |
| अर्द्धकरतीयम् | १३३-१० | अवकीर्ण | २२९-२४ | अव्याहारी | २५०-२४ |
| अर्थर्व | ५३-७ | अवट | १०१-८ | अत्राजी | २५०-२४ |
| अर्थम् | ६२-२० | अवट | १५७-११ | अशनि | ४८-१७ |
| अर्थिका | १२४-१९ | अवतंस | ५६-१६ | अशनि | १९७-२० |
| | | अवतण्ड | १९६-१५ | अशनि | १७७-१३ |
| | | अवनत | १७६-१८ | अशनि | १३४-१४ |

| | | | | | |
|----------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|
| अशीतिपदी | ९४-२४ | अशवावतान | १५६-३ | अश्वित | १७३-४ |
| अशोक | ६०-२१ | अष्टक | २३५-१९ | अस्तु | १७-४ |
| अशोक | १७१-४ | अष्टकिक | २३५-१९ | अस्थि | १६९-७ |
| अशोक | १४४-१० | अष्टका | २०५-२४ | अस्मद् | २७-७ |
| अश्न | १७७-१४ | अष्ट | १३८-५ | अस्मभ्यम् | ४०-१४ |
| अश्म | २१०-२२ | अष्टम | २०७-१३ | अस्पहत्या | ११२-३ |
| अश्मरथ | १५९-८ | अष्टम | २१५-२६ | अस्यहेति | „-६ |
| अश्मर | १७०-२१ | अष्टापद | ५६-९ | अस्यहेत्वा | „-७ |
| अश्मन् | १७१-२१ | अष्टापदी | ९४-१४ | अस्युद्यत | ७१-२५ |
| अश्रीतपिबता | ९०-१ | अष्टीवान् | २३१-६ | असृ | २४६-१६ |
| अश्र | १५०-१ | अस | ११६-१७ | अस्र | २३६-२६ |
| अश्व | १७८-६ | असङ्कुला | ७५-२४ | अस्त्रव्याड | ७९-२६ |
| अश्व | २०६-२१ | असंकृति | १५९-२६ | अस्मद् | २७-६ |
| अश्व | २१०-२१ | असम्प्रति | ७३-१७ | अह | ३-९ |
| अश्व | २१३-२ | असंव्यवहारी | २५०-२३ | अहह | १२-२२ |
| अश्वकुञ्जर | ८५-१८ | असायस | १७६-१९ | अहहा | १२-२४ |
| अश्वल | १५०-६ | असि | १७-९ | अहकम् | २७-७ |
| अश्वत्थानां | १०१-१२ | असि | ६१-३ | अहरणि | ४८-१९ |
| अश्वत्थ | १००-७ | असिनास | ११६-२१ | अहर्पतिः | २६-२४ |
| अश्वत्थ | १७८-१२ | असिहत्य | ११२-४ | अहःपतिः | „ |
| अश्वत्थ | १८१-१८ | असिबन्ध | ११६-१६ | अहर्पुत्रः | „ |
| अश्वत्थ | २०५-६ | असु | २४३-४ | अहःपुत्रः | „ |
| अश्वत्थ | २१२-२५ | असुर | ११६-३ | अहस्कर | २५-१५ |
| अश्वत्थ | १७४-२२ | असुर | १७७-५ | अहमह्निका | ८९-१६ |
| अश्वत्थकपित्थौ | ६९-१४ | असुर | २४०-९ | अहंपूर्विका | ९०-१४ |
| अश्वपति | १६२-१ | असुर | २४७-१५ | अहंप्रथमिका | „-२४ |
| अश्वपत्र | २०६-१९ | असुल | „-” | अहा | ४८-७ |
| अश्वप्रपदन | २०९-२४ | असुर | २०५-२४ | अहाय | ९-१२ |
| अश्वपाली | १४७-१२ | असुर | १३४-७ | अहिर्याग | ३१-१७ |
| अश्वमतल्लिका | ८५-२४ | असुर | १३७-२० | अहिंस | ११६-१३ |
| अशवा | ३८-११ | अस्तम् | २१-१५ | अहीवती | ९९-८ |
| अशवावतान | ३६-१६ | अस्त | २१-१५ | अहो | १०-१ |

(आ)

| | | | | | |
|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|
| आ | १३-१६ | आज्यानुवाक्ये | ९१-२३ | आदित्यव्रत | २१०-१३ |
| आकाश | ५६-७ | आटरूपः | ११९-२१ | आनन्दी | ४२-९ |
| आकाश | २००-५ | आट्टस्यली | १९६-९ | आनट | ५३-२५ |
| आकाश | १५३-१७ | आढकम् | ५३-१४ | आनुषक् | २१-१७ |
| आकन | १७३-१७ | आढकी | ४१-२३ | आनुषद् | ॥-१८ |
| आकर्ष | १९७-२२ | आढगी | ॥-२३ | आनुतिः | ११६-२७ |
| आक्रन्द | २१२-१२ | आढ्यः | १०२-१९ | आनुराहति | ११७-१ |
| आकष | ॥-२६ | आणीवि | १४४-१६ | आनुष्टुभम् | ११७-२५ |
| आकर्ष | २१३-१ | आण्डर | २४४-२६ | आनुषुकः | ११९-५ |
| आकथम् | १०४-२६ | आण्डायन | १७२-२५ | अनुगादिक | १३२-१२ |
| आकस्मिक | १३२-१२ | आण्डीवत | १७३-१५ | आनर्त | १९५-१५ |
| आखनिकवकः | ८१-२८ | आत् | ११-९ | आनकस्य | १९६-८ |
| आख्यान | १८४-२० | आत् | १५-११ | आनुडुह्य | १७३-१५ |
| आख्यात | २०२-५ | आतङ्क | १६-२६ | आनृत | १६८-२४ |
| आग्रहायणी | ४७-१७ | आत्मम्भरिः | ४८-१८ | आनृशंसि | १८८-२३ |
| आग्रहायण | ११८-२१ | आताली | ७६-१ | आपिक्षिति | ३७-१ |
| आग्नीध्र | ११९-३ | आत्मचतुर्थ | ७९-४ | आपिशलि | ॥-७ |
| आग्रयण | ॥-२४ | आतपरमणीय | ८०-१३ | आपञ्चिक | ४७-७ |
| आग्रयणम् | ॥-२५ | आत्ययिक | १३२-१० | आपद | १०५-६ |
| आग्रायणी | ॥-॥ | आत्मकामेय | १६८-१८ | आपत्काल | १९२-२१ |
| आगारम् | १२०-२ | आतव | १५३-२१ | आम् | १३-२० |
| आङ्गुलिक | १३१-२१ | आतप | १८१-५ | आमलकी | ४६-९ |
| आङ्गुलिकी | ॥-॥ | आथर्वण | १८४-८ | आमिष | ५८-१५ |
| आचारनिपुण | ७९-२६ | आदह | १६-२२ | आमात्य | ११९-१५ |
| आचपराचम् | ८९-४ | आदङ्क | १७-८ | आमिषी | १८०-१६ |
| आचोपचम् | ॥-७ | आद्यन्ती | ६९-२ | आमित्रि | १९०-७ |
| आच्यपदि | ९६-२८ | आदित्यचन्द्रौ | ६९-३ | आम्र | २२१-२१ |
| आचर्यम् | १०४-१९ | आदितः | १२२-२४ | आम्रात | २३०-१ |
| आच्युतदन्ति | १३५-१ | आदित्य | १२७-४ | आयतीगव | ७३-२३ |
| आज्जीकूल | १९५-२३ | आद्यवसाने | ९१-८ | आयतीसम | ॥-२५ |
| आजमारक | १४०-२० | आध्यषिव. | १८९-१० | आयःस्थूणी | ४४-२३ |
| | | आदि | १९९-२४ | आयःस्थेणी | ४४-२५ |
| | | आद्यन्त | २०२-७ | | |

| | | | | | |
|------------------|--------|--------------------|--------|--------------|--------|
| आयान | २३५-१० | (आर्जुनायनक) १६९-३ | आशु | २१९-१९ | |
| आयास | २३५-१९ | आरि | १७६-१३ | आयाह | ६०-१७ |
| आयुध | ५५-२६ | आरुणि | १८२-८ | आस | १६-१६ |
| आयुर्वेद | १८३-१३ | आरोहण | २०९-२१ | आसन्दी | ४२-९ |
| आयुष् | २०९-१५ | आरोह | २३५-१८ | आस्यानी | ४४-११ |
| आयुक्त | २३०-१३ | आलम्बी | ४५-१ | आसन | ५६-६ |
| आराव | ५९-२६ | आलक्षी | ४६-४ | आस्थाकृत्य | ७७-२८ |
| आरट्टी | ४५-४ | आलजी | "-५ | आस्कथम् | १०४-२५ |
| आरटी | ४२-२ | आलव्धी | ४६-१० | आस्पद | १०५-६ |
| आरकूट | ६३-२४ | आलिंगव्यायनी | ५१-१६ | आसन्दी | १८०-९ |
| आरट्ट | ६७-१४ | आलम्बीकृत्य | ७६-१५ | आसुति | "-१३ |
| आरट्टायनि | ६७-१४ | आलम्बि | १८२-१५ | आसुरि | १८९-२० |
| आरट्टायनिचान्धनि | ६७-१६ | आलापी | १६०-४ | आसुत् | "-" |
| आरट्टायनिबन्धनि | ६७-१७ | आलोष्टी | ७६-१६ | आस्य | २०५-१ |
| आरट्टायनिबन्धकि | " " | आक्ती | "-१६ | आस्था | २१६-२३ |
| आरवध | १०२-१८ | आलेखन | १४२-४ | आस्तिक | २२४-११ |
| आराज्ञी | १९५-१७ | आलीढ | १४४-१६ | आसेवित | २३०-५ |
| आराल | २१८-१५ | आवसथ | २१५-१ | आस्र | २३६-२६ |
| आराधय | २२३-१४ | आवय | १९५-६ | आसुति | २३७-२४ |
| आरा | २४९-५ | आवसथ | १२१-१४ | आहोस्वित् | ७-१ |
| आर्ह्यायणी | ५१-२८ | आवास | २०४-६ | आहि | १५-१० |
| आर्द्रकृत्य | ७७-२६ | आवान्तरदीक्षी | २१०-८ | आह | १७-१५ |
| आर्द्रकृत्य | "-२७ | आविः | १९-१६ | आहिताग्नि | ७०-९ |
| आर्द्रपदी | ९४-१२ | आविष्कृत्य | ७७-४ | आहूतब्राह्मण | ७१-१७ |
| आर्द्रवृक्ष | १४०-४ | आविदन्तीय | १३५-१ | आहरचेला | "-८८-४ |
| आर्यश्वेता | १४२-३ | आवृत | १६८-२४ | आहरवसना | "-५ |
| आर्य | २२-२३ | आशु | १८-२५ | आहरवनिता | "-६ |
| आर्यहलम् | "-२२ | आश्वक्या | ३७-२७ | आहरवितता | "-" |
| आर्द्र | ६०-४ | आश्वत्थि | १९०-१७ | आहोपुरुषिका | ८९-१३ |
| आर्यमिश्र | ८६-१ | आश्रम | ५७-७ | आहिंसि | १९०-१२ |
| आर्ग्यण | १०९-१० | आशीविष | १०२-९ | इकाट | १७७-२२ |
| आर्द्रवृक्ष | १८०-२६ | आश्रय | १०४-१८ | इकाट | १७९-१८ |
| | | आशन | ११८-३ | | |

| | | | | | |
|-----------------|--------|--------------|--------|-------------|--------|
| इ | १३-२३ | इन्द्रायुध | १६७-६ | ईषत् | २१-१२ |
| इक्रसु | ५८-१७ | इन्द्राविश | १६६-१६ | ईपा | २१५-२७ |
| इक्षुक | १२५-२ | इन्द्रालिश | "-२० | (उ) | |
| इक्षु | २३०-२२ | इन्द्रमौलि | ७१-३ | उकणी | ४६-३ |
| इक्षु | १९८-६ | इन्द्रोद्यान | १०९-२० | उवध | १८२-२६ |
| इक्षु | १६६-२३ | इज | १४०-१२ | उवध | १५८-२१ |
| इक्षु | १८०-२ | इभ | २११-२० | उक्षन् | १६५-११ |
| इक्षुकीय | १७०-१४ | इमकान्त | १९६-१९ | उखा | २००-६ |
| इक्षुभार | २११-१ | इमस् | २४४-४ | उखा | ४१-४ |
| इडा | १८१-१९ | इयस् | २४३-११ | उख्या | १८८-१६ |
| इडा | २४०-१३ | इरज् | "-१३ | उच्चनीच | ८८-२६ |
| इतः | १२२-२७ | इरध् | "-१६ | उच्चावच | "-२१ |
| इत् | १२-७ | इरा | २४७-९ | उच्चार | २१८-२१ |
| इतर | २७-१२ | इला | २४७-९ | उच्चैः | १९-९ |
| इतर | १८४-२ | इला | २४०-१३ | उचित | १२२-१३ |
| इतरा | १४४-१५ | इला | १४२-३ | उज् | १२-२४ |
| इतरेद्युः | १४-८ | इव | ४-२२ | उज्जयनी | १९५-११ |
| इतिश | १५०-७ | इषु | ६३-२२ | उज्जहिजोडम् | ९०-६ |
| इति | १३-६ | इषुक | १२४-१५ | उज्जहान | ११५-१८ |
| इतिक | १४९-४ | इषुध | २४३-१५ | उज्जिहान | "-१७ |
| इतिहास | १८३-१४ | इषेत्वा | २४१-१० | उदज | ६३-३ |
| इतिह | ५-१७ | इषका | ५२-९ | उदुप | २१३-२४ |
| इतिह | २२३-७ | इषका | १८०-४ | उदुप | २१३-२५ |
| इदम् | २७-२४ | इषका | २३६-७ | उदुलीमन् | १३७-९ |
| इदं पर | २२२-९ | इषि | २१५-२७ | उत | ११-१० |
| इदं युग | १९९-९ | इह द्वितीया | ९०-२५ | उताही | ४-१० |
| इडा | २१-२४ | इह पञ्चमी | ८९-१४ | उत्तम | १८९-१७ |
| इदमावर्हिषी | ९१-२३ | इह पञ्चमि | "-१५ | उत्तमर्ण | ६५-१९ |
| इन्द्रजनन | २०३-१५ | इह लोक | ११२-८ | उत्तमशाख | १९०-९ |
| इन्द्रवृक्ष | १८०-२४ | (इ) | | उत्तुप | २१३-२५ |
| इन्द्रशर्मन् | १३८-९ | ई | १३-२३ | उत्करुटा | २१८-१ |
| इन्द्रहू | १५८-२१ | ईयम् | २४४-५ | उत्कर्ष | २१८-२ |
| इन्द्रावधारिताः | ८४-२२ | ईप्रम् | २२३-१९ | | |
| इन्द्रावधान | १६२-१४ | | | | |

| | | | | | |
|---------------|--------|---------------|--------|--------------|---------|
| उत्कर | १८०-२३ | उदञ्चन | १७५-९ | उद्गाहनी | ४७-७ |
| उत्कास | ३०-१५ | उदस्यान | २१६-१३ | उन्मनस् | २४५-२ |
| उत्क्रोश | १८१-९ | उदकशुद्धि | ११३-२ | उज्जेत् | २२७-२३ |
| उत्थापन | २०९-१८ | उदभृज्ज | ११५-२ | उन्मृजावसृजा | ९०-२२ |
| उत्पचनिपचा | ८९-२० | उदमेघ | "-३ | उपक | ३२-१८ |
| उत्पल | ५७-२८ | उदन्वान् | २३१-४ | उपकलमक | ३५-८ |
| उत्पन्नतृप्रा | ७१-१४ | उदपान | २०२-१४ | उपरिमेखला | ३०-२२ |
| उत्पत्यपाकला | ९०-१२ | उदर | २३२-३ | उपवास | ५९-२२ |
| उत्पतनिपता | " २० | उदपान | १९३-२४ | उपशरद् | ९५-४ |
| उत्पात | २०१-१८ | उदपान | १६२-११ | उपत्रिपाशम् | ९५-४ |
| उत्पाद् | " २५ | उद्गृहीती | २३०-६ | उपचतुरम् | "-१४ |
| उत्पुट | २१३-२५ | उद्गात् | २२७-६ | उपतदम् | " " |
| उत्पुत | " " | उद्गुरीस्सृजा | ९०-१७ | उपजरसम् | " १४ |
| उत्तर | २९-१५ | उद्गानम् | १८०-२० | उपनिषद् | २०२-२१ |
| उत्तरक | १९१-७ | उद्गासि | २५०-१९ | उपनिषद् | २०१-१५ |
| उत्तरपद | १९१-७ | उद्गासि | २५०-१९ | उपनिषद् | २४८-३ |
| उत्तरपथ | २०७-२५ | उद्गारी | ४९-४ | उपनिषद् | २१३-८ |
| उत्तराशन | १७७-१६ | उद्गासीन | २२४-२१ | उपगूढ | १७७-१५ |
| उत्तराहि | १५-१० | उद्गशिवत् | १३७-७ | उपवास | १९८-१२० |
| उत्तरात् | "-११ | उद्गम्बर | १६७-७ | उपाकृत | २३०-१९ |
| उत्तराधर | २२३-२४ | उद्गम्बरकमि | ८१-१९ | उपानस | ९५-१ |
| उत्तरेद्युः | १४-८ | उद्गम्बर | १६९-२ | उपांशु | २१-८ |
| उत्स | १६२-१० | उद्गम्बरमशक | ८२-२४ | उपास्ति | २१३-१५ |
| उत्सङ्ग | २१३-२३ | उद्ग्रावसृजा | ८८-१८ | उपसित | २२९-२३ |
| उत्साहि | २५०-१९ | उद्गमविधमा | ८९-१३ | उपोपानहम् | ९५-१४ |
| उत्साह | २३७-२६ | उद्यान | ५५-१६ | उत्सगाढ | ६५-१ |
| उत्साही | २३५-१४ | उद्गण्ड | १७५-६ | उपकलाप | २००-२२ |
| उदस्यान | १६३-११ | उद्गाम | २३५-७ | उपस्थान | " " |
| उदङ्ग | ३२-२० | उद्गास | " " | उपसृणु | "-२१ |
| उदकंरुत्य | ७७-२६ | उद्यग | २३५-१७ | उपसीर | "-२२ |
| उदक | २००-९ | उद्यम | ६२-१६ | उपयन्ता | २०८-३ |
| उदक | २०२-१५ | उद्यतासि | ७१-२४ | उपवास | "-११ |
| उदक | २३२-५ | उद्योग | ५४-३ | उपवास | "-२४ |
| उदक | २११-२० | उद्गपनिषपा | ८८-१२ | उपयन्ती | २१३-९ |

| | |
|-----------|--------|
| उपवेश | २१३-१० |
| उपदेश | "-१६ |
| उपनिजस्त | "-१६ |
| उपहस्तिन् | "-१७ |
| उपवेश | "- |
| उपस्य | "-१८ |
| उपस्यान | "- |
| उपयास | २१४-१५ |
| उपस्यान | २१६-२४ |
| उपराधि | २२४-४ |
| उपसादिता | २२९-२५ |
| उपकृत | "-२६ |
| उपपादित | २३०-७ |
| उपयाम | २३५-११ |
| उपसत् | २४०-१८ |
| उपसदि | २४८-३ |
| उपानत् | "- |
| उपावृत् | "-४ |
| उपस्तुत् | "-५ |
| उपभृत् | "- |
| उपकृधि | २५०-१८ |
| उपधारय | १३५-२३ |
| उपगाढम् | ६५-१४ |
| उब्जककुम् | ३५-१८ |
| उभय | २७-१ |
| उभ | २७-१० |
| उभय | ४३-१६ |
| उभयेद्यु | १४-६ |
| उभयद्यु | "- |
| उभयाञ्जलि | ९७-९ |
| उभयादन्ति | "- |
| उभयापाणि | "-१० |
| उभयाबाहु | "-११ |
| उभयाहस्ति | "-१३ |

| | |
|-----------|--------|
| उभयाकर्णि | "-१० |
| उभयत | १२२-२७ |
| उभाञ्जलि | ९७-९ |
| उभादन्ति | "-१० |
| उभापाणि | "- |
| उभाकर्णि | "- |
| उभाबाहु | "-११ |
| उभाहस्ति | "-१३ |
| उम् | ७-११ |
| उमा | ४२-२५ |
| उम्भि | १८८-७ |
| उम्भि | २४७-३ |
| उररी | ७४-२५ |
| उरःकवाट | ८६-६ |
| उरभ्र | १६५-१० |
| उरल | १७२-१९ |
| उरस | २३६-५ |
| उरगा | २४३-२ |
| उपचार | १३२-१७ |
| उपमा | १२१-१६ |
| उपाय | १३२-१७ |
| उरसा | २०३-२५ |
| उरस् | २३९-१७ |
| उरस् | १४७-२६ |
| उरस् | २४३-२१ |
| उरस्यः | १३०-१७ |
| उरु | २२०-५ |
| उदी | ४६-५ |
| उर्वशी | २४०-१२ |
| उर्वभुद् | २६-७ |
| उल | २३५-१५ |
| उल | १७२-१७ |
| उलूक | १६४-१९ |
| उलूक | १५८-५ |

| | |
|------------------|--------|
| उलूखलमुसल | ६८-४ |
| उलूखनमुसले | ९१-२० |
| उलूखल | १०२-२३ |
| उशीरवीजम् | ६७-१९ |
| उशीरबीजः | "-२० |
| उशीरवीजसिञ्जास्य | ६७-२२ |
| उशीनर | १३४-१३ |
| उशीनर | १३६-५ |
| उशीनर | १६२-१० |
| उशीर | २१७-५ |
| उपस् | २४३-५ |
| उपबुधा | २६-७ |
| उपबुध | २५१-१२ |
| उपान | २४१-१२ |
| उष्ण | १२९-१९ |
| उष्णक | "- |
| उष्ट्रखर | ९२-२१ |
| उष्ट्रशश | ९३-२ |
| उष्णिहा | ३९-२३ |
| उष्णिक् | "- |
| उष्णिक् | १६२-११ |
| उष्णिक् | ११९-९ |
| उष्ण | २२१-१० |
| उष्ट्र | १६५-८ |
| उष्ट्र | १७५-१६ |
| उष्ट्रग्रीवा | १२७-१६ |
| ऊ | |
| ऊ | १३-२४ |
| ऊक् | १६६-६ |
| ऊक | ८४-२५ |
| ऊकावकल्पिता | ८४-२५ |
| ऊम् | ६-१२ |

| | | | | | |
|---------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|
| कडभाय्यं | ७०-१७ | ऋजुनी | १९५-४ | एहिविघसा | ८७-२० |
| कधस् | २०६-१ | ऋतभाग | १५६-६ | एहिप्रघसा | ५-२१ |
| करीकृत्य | ७४-२१ | ऋतम् | ८-१४ | एहिप्रकसा | ०" " |
| करीवत् | "-२६ | ऋतु | २०८-२ | एहीडम् | ८८-११ |
| कर्णनाभ | १४१-२६ | ऋत्विक् | २२३-७ | एहियधम् | "-१६ |
| कर्णनाभ | ७१-९ | ऋते | १८-१८ | एहिरैयाहिरा | ९०-१० |
| कर्णा | २१०-२२ | ऋष्य | ४५-१८ | एकपदी | ९४-८ |
| कर्णावत् | १६०-६ | ऋषि | २०१-१६ | एकतः | १८२-२७ |
| कध्वदम | १८६-२० | ऋषीवती | ९९-९ | एरगडक | १२५-१३ |
| कध्वदम | "-२३ | ऋष्य | १७७-११ | एक | २७-२३ |
| कध्वमुहूर्त्त | "-२४ | ऋष्य | १८०-१८ | एक | १५८-७ |
| कध्वदेह | १८७-६ | ऋषिषेण | १४३-१६ | एकलू | "-१३ |
| कध्वदेह | "-७ | ऋषिषेण | १५६-९ | एकपलाशिका | १८९-११ |
| कध्वकाल | १९२-२२ | (ए) | | एकशाख | १९०-९ |
| कर्मि | २३०-१९ | ए | १३-२४ | एकग्राम | "-१० |
| कप | २३९-१ | एकपदे | १२-२२ | एकतर | "-१२ |
| कषर | २६९-१ | एधा | १५-९ | एकवृक्ष | "-१५ |
| कपर | १७०-२३ | एतर्हि | "-८ | एकभक्त | २०७-१३ |
| कधमन् | २३३-१७ | एन | "-१० | एकभाव | २२२-१५ |
| कधमन् | २३४-" | एहि | १७-८ | एडका | १४०-६ |
| कहा | २४९-८ | एतद् | २७-" | एरका | १४०-७ |
| ऋ | | एक | २७-२३ | एला | २४२-१९ |
| ऋ | १३-२५ | एडका | ३८-१४ | (ऐ) | |
| ऋकसामे | ९१-८ | एकपुष्पा | ४०-४ | ऐ | १३-२१ |
| ऋक् | २०२-४ | एव | ३-१३ | ऐकपदि | ९७-६ |
| ऋक्ष | १५९-१ | एवम् | ३-१६ | ऐकाग्रः | ११९-२८ |
| ऋक | १५०-१७ | एपणी | ५१-१० | ऐकभाव | १२७-१० |
| ऋक् | १०५-१२ | एपणां | " " | ऐकद्य | १४-११ |
| ऋक् | २४८-९ | एरका | ५२-१३ | ऐतिद्या | १२१-७ |
| ऋगयन | २०१-१३ | एडका | "-२५ | ऐपुकारिभक्त | १६९-२२ |
| ऋगिन्य | १५०-१२ | एकान्त | ७२-२७ | ऐहलौकिकम् | ११२-७ |
| ऋचभाग | १८२-१५ | एहिवाणिजा | ८७-१७ | ऐन्द्रायण | १७६-६ |
| ऋजीव | २१८-१६ | एहिस्वागता | "-१९ | ऐरस् | १७७-१ |
| ऋजु | २२०-११ | एहिद्वितीया | ५८-२० | ऐरावत | ५५-५ |

(अ)

| | |
|------|--------|
| ओ | १३-२४ |
| ओकशी | ४६-३ |
| ओजस् | २४५-५ |
| ओडवि | १३४-२३ |
| ओदन | २०६-१६ |
| ओदन | २०८-१७ |
| ओद्य | २४५-२५ |
| ओदन | ५६-२१ |
| ओदन | १९८-७ |
| ओम् | ११-५ |
| ओम् | २०-१ |
| ओष्ठ | २०४-२८ |

(औ)

| | |
|-------------|--------|
| औडायनभक्त | १७०-५ |
| औदमञ्जि- | ११५-१६ |
| औज्जहानिः | "-१७ |
| औज्जहानिः | "-१८ |
| औदव्रजि | ११५-१३ |
| औदन्य | "-" |
| औदशुद्धि | ११५-११ |
| औदकशुद्धि | ११५-११ |
| औदञ्चि | ११४-२४ |
| औद्गाहमानिः | ११५-१५ |
| औद्गाहमानी | ४६-८ |
| औरसलङ्कट | ३५-६ |
| औपध | ५५-२५ |
| औपचेय | ११९-१८ |
| औपध | १२०-२० |
| औपयक | १२३-१७ |
| औपविन्दधि | १९०-१६ |
| औद्गाहमानि | १९०-१७ |

| | |
|--------|--------|
| औदमेधि | २०५-१६ |
| औदवापि | "-१७ |
| औदवाहि | "-" |
| औलपि | १३५-१ |
| औदङ्गि | १३५-१ |

(क)

| | |
|------------|--------|
| कं | ४-७ |
| कम् | २०-२ |
| कंकट | ५३-६१ |
| कंथक | १५७-१८ |
| कंस | २०४-१ |
| कंस | ५९-२४ |
| कंस | १६७-४ |
| कवाट | ६०-३ |
| कंकट | १७७-२२ |
| कंकट | १७८-१२ |
| कङ्कटिल | "-१२ |
| ककुप् | १६३-२० |
| ककुभ | ६४-१० |
| ककुभ | १४१-१८ |
| ककुत्स्थ | "-१३ |
| कञ्जु | २३९-१० |
| कञ्ज | १९४-४ |
| कञ्चुकं | २१८-१३ |
| कज्जल | २१८-९ |
| कटशाठ | १८२-६ |
| कटोलपाद | ९३-१८ |
| कहस | ३२-५ |
| कडारजैमिनि | ६९-२२ |
| कणक | १२६-१३ |
| कण्टकारी | १६६-१४ |
| कण्टकमर्दन | २१४-१५ |
| कण्ट, | १५८-७ |

| | |
|----------|--------|
| कण्ठगुडु | ७१-१ |
| कण्डू | २३९-८ |
| कण्डू | २३३-१ |
| कण्डूज् | २४२-८ |
| कण्डर | २४५-१ |
| कण्टक | २१८-१० |
| कण्व | २४५-१४ |
| कण्ड्वा | "-२३ |
| कैचन | ३-२६ |
| कच | १७८-५ |
| कच्चन | ६-४ |
| कच्चित् | १०-४ |
| कट | १७९-१ |
| कटक | ६२-२० |
| कटक | २०६-१५ |
| कटा | ५१-९ |
| कटी | "-" |
| कटुमन्थ | ३१-२१ |
| कटुक | ३१-२१ |
| कटेट | ४७-३ |
| कटोलपाद | ९३-१८ |
| कठेरणि | ३३-१२ |
| कत | २०४-१९ |
| कत | १९०-२ |
| कत् | १०-२२ |
| कतम | २७-२६ |
| कत | १५८-९ |
| कथम् | १४-१५ |
| कथा | १९८-६ |
| कथञ्जन | ३-२६ |
| कथक | १५७-१८ |
| कथञ्चित् | १३२-१६ |
| कदली | ४२-१८ |

| | | | | | |
|-----------|--------|--------------|--------|------------|--------|
| कदरी | ॥— | कवन्ध | ५८-६ | करीर | २०५-६ |
| कदम्ब | १२६-११ | कम | ४-९ | करीर | २४७-१८ |
| कदम्बक | ॥— | कमक | ३२-२२ | करीर | १८०-८ |
| कदल | १७१-१० | कमन्दक | ३३-१५ | करीरी | ४४-११ |
| कदाचन | ३-२६ | कमन्तक | ३४-१६ | करीष | ५८-२० |
| कदासत् | ३४-१७ | कमली | ४८-४ | करीरवान् | ९२-१९ |
| कद्रु | १४४-१७ | कमला | ॥— | करुण | २४६-१७ |
| कनल | १७५-२२ | कमल | १८२-८ | करुश | १३६-५ |
| कनिष्ठा | १४६-२० | कमल | २३७-१२ | करुष | ॥— |
| कन्दर | १७०-२४ | कमलकीरक | १९३-२४ | कर्कटी | ४१-२० |
| कन्दर | २४७-१० | कमलभिद् | ॥—२५ | कर्करी | ॥— |
| कन्दर | ६१-२० | कम्पन | २१५-२७ | कर्कट | १५९-८ |
| कन्दली | ४५-४ | कम्पिल | १७१-२६ | कर्कन्धु | २०५-६ |
| कन्यका | ५२-२२ | कम्पील | ॥— | कर्कन्धु | १०३-१ |
| कन्दल | २४७-१० | कम्बलहार | ३२-६ | कर्कन्धु | २०५-९ |
| कन्दल | २१८-९ | कम्बलाश्वतरौ | ९१-१८ | कर्कन्धु | १८०-१६ |
| कपट | ५३-१९ | कम्बलिका | १७२-२७ | कर्कन्धु | १६६-२३ |
| कपरिका | २४७-१३ | कम्बोज | २०४-६ | कर्ण | १७३-१३ |
| कपलिका | ॥—१४ | कम्बोज | १९४-१४ | कर्ण | १७४-२ |
| कपाल | ५९-१६ | कम्बोज | १३५-१७ | कर्ण | २०४-२३ |
| कपाटिका | १३१-१५ | कम्बोजमुण्ड | ८७-९ | कर्ण | २०३-२५ |
| कपालिका | ॥—१३ | करका | ५२-१९ | कर्ण | २३९-२५ |
| कपि | १५९-२९ | करण | १९२-४ | कर्ण | १७४-२३ |
| कपिष्ठल | ३४-५ | करण | २१४-६ | कर्ण | १४१-२३ |
| कपित्थ | ६०-१७ | करट | ॥—७ | कर्णक | २१७-१९ |
| कपित्थ | १००-८ | करभरासभ | ६९-७ | कर्णक | ३२-२१ |
| कपिष्टिका | १३१-१६ | करस्कर | १०४-९ | कर्णकार | १४०-२६ |
| कपिलिक | १४३-१६ | करभ | १२६-१२ | कर्णकग्राह | १४७-११ |
| कपीवती | ९९-९ | करभ | २४७-१० | कर्णवेष्ट | २०६-१७ |
| कपोतकीय | १७०-१४ | करवीर | १७१-४ | कर्णवेष्टक | ॥— |
| कपोतपाद् | ९३-१९ | करि | २४९-६ | कर्णाट | ३१-४ |
| कवरा | ४९-२८ | करिपथ | १६७-१४ | कर्णाढक | ॥—५ |
| कंवरी | ॥— | करीर | १६७-६ | कर्णु | १९४-१४ |

| | | | | | |
|----------------|--------|----------------|--------|-----------------|--------|
| कर्णचुरचुरा | ८२-१० | कल | २२१-९ | कशकृत्स्न | ३४-८ |
| कर्णटिहितिः | ७-१२ | कलापिन् | १४२-१० | कशकृत्स्न | १७५-१० |
| कर्णबुद्धचक्रः | ७-७ | कलितहरण | ७१-२५ | कशा | २००-८ |
| कर्तुम् | १५-१४ | करवीर | १७२-४ | कशा | ५१-८ |
| कर्दम | २१८-१६ | कला | १७३-१० | कशा | २११-२१ |
| कर्दम | १७७-१२ | कलक | ५४-९ | कशी | ५१-८ |
| कर्दम | १७८-१४ | कलम | २४७-१५ | कश्चन | ३-२६ |
| कर्दम | २३९-१६ | कलमा घी | ४३-८ | कश्मीर | १७१-१८ |
| कर्पट | ५३-२३ | कलमासी | ४३-९ | कश्मीर | १३६-६ |
| कर्पासी | १६६-२३ | कल्पसूत्र | १२५-१६ | कश्मीर | १९४-७ |
| कर्पूर | ६३-१८ | कल्याणी | १४६-६ | कश्मीर | २०४-१ |
| कर्पूर | १४४-१७ | कल्याणक्रोडा | ४०-२७ | कश्यप | १३८-१७ |
| कर्पूर | १७८-१४ | कल्याणवाला | ४१-२ | कश्यप | १५५-२६ |
| कर्पट | ५३-२२ | कल्याणगोखा | ७-५ | कषक | ३२-५ |
| कर्म | २१६-१९ | कल्याणखुरा | ४१-६ | कषाय | १८२-६ |
| कर्म | २४७-१४ | कल्याणगुदा | ७-८ | कषाय | १९६-२७ |
| कर्मध्यानः | ८०-८ | कल्याणा | ४८-२६ | कसकृत्स्न | ३४-९ |
| कर्मा | ५५-१४ | कल्याणी | ७-७ | कस्क | २४-७ |
| कर्मार | १३९-१० | कल्याणीप्रियः | ९७-२४ | कहय | १४१-१७ |
| कर्प | २११-१० | कल्याणीस्त्रः | ७-७ | कहूय | १४१-१७ |
| कर्ष | १४४-३ | कल्याणीदुर्भग | ९८-१ | कहूष | १४३-८ |
| कर्पापण | १३४-१३ | कल्याणीसुभग | ७-३ | कहोड | १४१-२५ |
| कलन्दन | ३१-३ | कल्याणीदुहितृक | ७-७ | कहोडहोड | ७०-५ |
| कलल | ५८-१९ | कल्याणीवालः | ७-४ | क्षम | २५०-६ |
| कलभ | २४७-१० | कल्याणौतनय | ७-७ | क्षमा | २२-२४ |
| कलश | ५८-१८ | कल्याणप्रिया | ७-५ | क्षय | ६०-२१ |
| कलशीपदी | ९४-७ | कल्याणमनोज्ञा | ७-७ | क्षत्रियोच्छादक | ७८-१७ |
| कलशीकरुठ | ३२-२३ | कल्लोल | २३७-१३ | क्षत्रियमता | ८४-२१ |
| कलाविद्ध | १०३-१६ | कल्लोल | २१८-१० | क्षत्रियभीरुः | ८६-१९ |
| कलाह | २४५-२४ | कवच | ६०-२१ | क्षपा | २४९-३ |
| कलकूट | १९३-२० | कवन्तक | ३४-१२ | क्षरा | २०६-८ |
| कलङ्क | २१८-१६ | कषाट | ६०-३ | क्रकच | ६१-१९ |
| | | कवि | १४०-३ | क्रम | १८६-३ |

| | | | | | |
|-------------|--------|----------------|--------|--------------|--------|
| क्रमेतर | १८४-१० | काथल | १४८-२४ | काल | २४७-११ |
| क्रमेतर | २०१-२१ | कान्तारपथ | २०७-२५ | कालकीट | १८३-२० |
| काञ्चन | १६७-१२ | कान्तार | ५९-२६ | काल | २२०-१२ |
| कांदिशीक | ८९-८ | कान्थक्यायली | ५१-१९ | कालापा - | १११-८ |
| कांदिशीक | १००-१७ | कान्ति | २३०-२१ | कालिका | १२५-६ |
| काकणी | ४६-४ | कापिष्ठलि | ३७-६ | काला | २३३-२४ |
| काकमयूरौ | ६८-९ | कापुरुष | २२२-२४ | काली | ४९-१७ |
| काकताल | १३३-४ | कापिञ्जहादि | १४०-२ | काव्य | १२२-१२ |
| काकशाव | ९८-१३ | काप्यायनी | ५१-१९ | काव्य | १५०-१२ |
| काकारह | "-१४ | काम | १८-७ | काश | २००-२ |
| काकादनी | ४७-११ | कामप्रस्य | १९०-३ | काश | १७८-११ |
| काध्यरह | "-१३ | काम्पित्यसिद्ध | ८०-१० | काश | १५३-१७ |
| काक | १४७-१८ | काम | २३८-१७ | काश्य | १४९-१५ |
| काकगुहा | २५१-१३ | कामलकीट | १८३-२० | काशकुशम् | ६९-८ |
| काकदन्तक | १३४-२३ | काम | २०९-१४ | काश्यप | १२७-९ |
| काकीशाव | ८-१३ | कामार्थौ | ६८-२६ | काश्यप | १५०-१ |
| कावन्दकि | १३४-२२ | कामुकी | ४९-१४ | काशफरी | १८७-२४ |
| काकन्द | १३४-२२ | कामुक | १४९-१४ | काशस्यली | "-" |
| काचन | ३-२६ | कामक | १४९-२२ | काश्या | ३७-२७ |
| काशद्रोण | ७०-५ | कायायस | ८०-१० | काशि | १९१-१७ |
| काण्यविध | १६९-१६ | कार | ११९-२ | काष्ठकीय | १७०-१५ |
| काण्ड | ५४-१९ | कार | २४७-११ | कास्तीर | १०४-२४ |
| काण्डपुष्पा | ४०-४ | कारणवती | ९९-१९ | क्षत्रविद्या | २८५-११ |
| काण्डधार | २०३-२६ | कारस्कर | १०५-३ | क्षान्त | १५३-१२ |
| काण्डवरक | "-" | कारेणुपालि | ११६-१४ | क्षान्ति | १८१-१५ |
| काण्डर | १७०-२४ | कार्कट्य | १४७-२१ | किम् | १२-११ |
| काण्ड | १६६-१६ | कार्यसाधय्य | ८०-८ | किम् | २७-४ |
| काठेरिणि | १८९-२४ | कार्यशब्द | २१२-१९ | किंकर | १४९-७ |
| काठेरिणि | "-२५ | कार्यापण | ५४-१७ | किंकल | "-२३ |
| कातर | १४९-७ | कार्यकारी | १४०-२६ | किंकिल | ७-४ |
| कातल | "-२४ | कार्यापण | ११९-१७ | किंवदन्ती | ८३-१७ |
| कातीर | १०४-२५ | कार्या | १२०-१९ | किंकिरात | "-" |
| कात्यायनी | ५१-१५ | कार्किक | १३१-२३ | किंनर | "-" |

| | | | | | |
|--------------|--------|--------------|--------|---------------|--------|
| किञ्चन | ३-२६ | किरणा | १७६-३ | कुटिल | १५८-१९ |
| किञ्चत्क | १५२-७ | किन्न | १३-४ | कुटीगु | १५९-७ |
| किञ्चव | २०६-१५ | क्षिप | २४९-३ | कुठार | १४२-१२ |
| कित | १५४-७ | क्षिपका | १७९-१९ | कुण्ड | २४०-१ |
| कितव | १५३-१४ | क्षिपा | २४८-२४ | कुठारिका | १४५-२ |
| कितव | १४८-४ | क्षिप्र | २२०-७ | कुटीनय | १६८-१२ |
| कितव | १०२-३ | क्षीरहृद् | १४३-१५ | कुडीकुड | ९३-५ |
| कितव | १८१-१३ | क्षीरहोता | ७९-५ | कुण्डो | ४९-१० |
| कितव | २२६-१५ | कीर्ध | १५५-२४ | कुण्डल | ५९-६ |
| किर्ध | १५५-२४ | कुङ्कुमा | ८५-३ | कुण्डप | ६१-१९ |
| किंदात् | ७-१८ | कुङ्कुटागिरि | ९९-५ | कुण्डमाण्डितः | ६९-२५ |
| किंदास | १५२-७ | कुङ्कुटाक्ष | १४७-९ | कुण्डल | १७४-२० |
| किंनर | २०४-३ | कु | २०-१४ | कुण्डना | १८८-५ |
| किंपुत्रष | ८३-१७ | कुञ्ज | ५२-७ | कुण्ड्या | ७-१४ |
| किंशुक | ७-१६ | कुञ्ज | २३९-२ | कुड्या | ७-१४ |
| किंशुकागिरि | ९८-२५ | कुञ्ज | १५६-१८ | कुडि | ३०-१७ |
| किंशुलकागिरि | ९९-३ | कुङ्कुटाण्ड | ९८-१२ | कुण्डल | २३१-२२ |
| किंस्वित् | ६-१ | कुङ्कुट्यण्ड | ७-७ | कुङ्कुल | २१८-२० |
| किंतराम् | १५-८ | कुक्कट | ६०-३ | कुण्डोपरध | १४३-१३ |
| किमुत | ४-१६ | कुच | २४७-३ | कुण्डिनी | १५८-७ |
| किल | ७-१ | कुचवार | १५६-१० | कुण्डलरम् | १७०-२५ |
| किलात् | १५५-२५ | कुचवार | २०४-१६ | कुण्ड | १७२-२५ |
| किशत् | १८०-९ | कुक्षि | १९५-२० | कुणप | १६३-१२ |
| किशर | २१७-४ | कुञ्जर | १०२-२४ | कुणप | ५६-१ |
| किशोरिका | १४४-२५ | कुट | १५४-६ | कुणपदी | ९४-१५ |
| किष्कु | १०४-११ | कुट | २११-३ | कुणया | १८८-१७ |
| किष्किन्ध | १०४-२६ | कुट | १४०-४ | कुचकलशी | ८४-३ |
| किष्किन्धा | १०५-१२ | कुट | ५३-२० | कुतः | १५-१ |
| किष्किन्धा | २०४-८ | कुटमार | २१०-२७ | कुतप | ५६-१ |
| किष्कुत | १०५-८ | कुटजभार | ७-७ | कुतुक | २२६-१५ |
| कितलय | ४१-१० | कुटीकुट | ९३-४ | कुतुप | २३१-२१ |
| किमलय | २१८-१० | कुन्दिम | ५६-१५ | कुतुगण | २२०-१ |
| किरीट | ५३-२० | | | कुतुगण | २१८-११ |

| | | | | | |
|-----------------|--------|----------------|--------|------------|--------|
| कुरसा | ३०-१६ | कुमारीश्वसुरक | १२५-१३ | कुलपुत्र | २२९-१४ |
| कुत्स | १७२-२७ | कुम्भकार | २०२-२५ | कुल्लत | १९४-४ |
| कुङ्कि | १४७-१ | कुम्भ | १७१-२२ | कुल | १९४-१० |
| कुन्ती | १७३-१८ | कुम्भ | १७२-२५ | कुन्व | "-" |
| कुनास | १९२-२ | कुम्भी | "-" | कुलिश | १७३-१९ |
| कुन्दुस | ८४-२७ | कुम्भीपक्व | ८०-११ | कुलनाप | १९८-२० |
| कुन्दुमा | ८५-१ | कुम्भपदी | ९४-५ | कुलाल | २०२-२० |
| कुन्दुम | १६६-६ | कुम्भ | १२६-१५ | कुल | १५४-६ |
| कुपिञ्जल | १४२-१८ | कुम्भिका | "-१६ | कुलार | १७०-२४ |
| कुपुत्र | २२९-१४ | कुमुद | १७४-२० | कुवली | २०५-१० |
| कुवेरकेशवी | ६६-१ | कुमुद | १७८-५ | कुवली | ४३-२५ |
| कुब्जवामन | ९२-५ | कुम्भी | १८८-६ | कुवल | २०५-९ |
| कुब्जकिरात | "-१९ | कुमार | २३६-६ | कुवत् | ११-१६ |
| कुब्जकैरातक | "-" | कुमुद | २३७-७ | कुमलय | २१८-३ |
| कुब्जक | १२६-९ | कुमुद | २५१-१३ | कुवेरिका | १४४-२३ |
| कुमारभ्रमणा | ८३-४ | कुमार | १४९-१४ | कुशनाख्यात | ८४-२६ |
| कुमारप्रव्रजिता | "-" | कुरङ्ग | १२०-१९ | कुशकाश | ६९-८ |
| कुमारकुलटा | "-५ | कुरगडस्यलपूलास | ६७-१० | कुशा | ४९-२४ |
| कुमारपटु | "-" | कुरुश्रेष्ठ | ६५-१६ | कुशी | ४९-२४ |
| कुमारसृदु | "-" | कुव | १२६-१० | कुशावती | ९९-९ |
| कुमरतापसी | "-८ | कुवक | १२६-१० | कुशल | २२२-१२ |
| कुमारनिपुष्या | "-" | कुर्पासक | ६३-१८ | कुशल | २२७-१ |
| कुमारदासी | "-" | कुरु | १९४-८ | कुश | २३३-१२ |
| कुमारगर्भिणी | ८३-८ | कुरु | १३९-१५ | कुशाम्ब | १४५-१७ |
| कुमारध्यापक | "-" | कुरु | १४२-१९ | कुशीतक | १४६-१ |
| कुमारकुशल | "-९ | कुरु | १४८-३ | कुशिक | १५६-५ |
| कुमारपरिडत | "-" | कुरुकत | १५८-१२ | कुशीरक | १७१-१० |
| कुमारचपल | ८३-९ | कुरु | १६२-१५ | कुपीतक | ३२-२० |
| कुमाराभिरूपक | "-" | कुरुकत | १६३-१२ | कुपुभ | २४४-३ |
| कुमारपट्टी | "-१२ | कुल | ६०-१८ | कुष्ठवित् | १९८-२२ |
| कुमारसृष्टी | "-" | कुल | १७२-१८ | कुसुभ | २१७-१७ |
| कुमारनन्दी | १०९-२४ | कुलनास | १९२-३ | कुसुम | ५८-१६ |
| कुमारीपुत्रक | १२५-१३ | कुलटा | १०१-८ | कुसुम्भी | ४६-१६ |

| | | | | | |
|--------------|--------|------------------|--------|------------------------|--------|
| कुसूलपाद | ९३-१९ | ककण | २०२-१४ | कष्णा | १३७-१० |
| कुस्तम्बुरु | १०५-८ | ककला | १३७-२० | कष्णा | २३३-२ |
| कुस्त्री | २२६-१६ | कति | २४८-१४ | कष्णाजिनकष्णासुन्दर | |
| कुन् | ३९-२१ | ककलास | १०३-१६ | | ३५-७ |
| कुद्र | २२०-१२ | ककलाश | "- | कष्णाजिन | ३२-२४ |
| कुद्र | १८१-१४ | ककिलास | "- | कष्णापिङ्गल | ३३-११ |
| कुधा | २१८-३ | कच्छू | २३६-२७ | कष्णासुन्दर | ३३-१८ |
| कुधा | ३९-२१ | कच्छु | २४६-१७ | कष्णापदी | ९४-११ |
| कुत | २४८-९ | कडु | २२०-१६ | कषि | २३७-२२ |
| कुद्रकमाला | १६४-२६ | कतवीर | १६०-४ | कष्णोऽस्य | २४१-६ |
| कुङ् | ३९-२१ | कत | ६-९ | कष्णोऽस्य | २४१-७ |
| कुञ्जा | ३९-२१ | कतान्त | १८४-११ | कष्णोऽस्याखरेष्टक२४१-७ | |
| कुञ्जा | २३०-२० | कत | २३०-१३ | केकर | १५०-१३ |
| कुञ्जा | १४१-२१ | कति | २४९-१८ | केकय | १३६-९ |
| कुञ्जकीय | १७०-१६ | कत्वस् | १४-२४ | केका | २३५-१७ |
| कुत् | २४९-९ | कन्दिद्विचक्षणा | ८९-१ | केचन | ३-२६ |
| कुचवार | १५६-१० | कन्दिद्विविक्षणा | "-१ | केशिनी | १४०-२७ |
| कुन | २३५-१४ | रुपणा | ४९-२ | केशभ्रमश्रु | ६७-२ |
| कुल | १९६-१९ | रुपणी | ४८-२६ | केशर | ६२-१० |
| कुट | १७१-२१ | रुपणाख्यात | ८४-२३ | केशहस्त | ८६-२ |
| कुट | १७४-२१ | रुपण | २३६-२७ | केशपास | "- |
| कुट | ५३-२० | रुपा | २४६-६ | केतकी | ४४-११ |
| कूपमराडुक | ८१-२० | रुपा | "-१८ | केवाती | ७६-१६ |
| कूपकच्छपावट- | | रुपा | "-१९ | केवाली | "-१५ |
| कच्छप | ८२-१४ | रुपण | २३०-२० | केदार | ५७-७ |
| कूपक | १७६-१८ | रुमि | ३२-३ | केदार | १६५-४ |
| कूप | २०५-२६ | रुश | २२१-१२ | केरल | १३५-१७ |
| कूपत् | ७-२६ | रुश | १७६-१० | केला | २४२-१४ |
| कूप | १७७-२१ | रुशाश्व | २४१-१५ | क्षेत्र | १६४-१५ |
| कुर्व | ५३-१४ | रुगानु | २१६-१५ | क्षेमघृत्विन् | १३७-२६ |
| कुर्प | २०६-७ | रुपि | ४२-२२ | द्वेहित | ५५-११ |
| कुवाचर | १५६-१० | रुषी | १५८-११ | कौरव | २३७-७ |
| ककलास | १४५-६ | रुष्णा | १५०-१३ | कैर्मदुर | २०४-१ |
| | | रुष्णा | | कैशीरि | १३९-२६ |

| | | | | | |
|--------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|
| क्षेमधृत्वि | १९०-१५ | कौशास्वी | १८७-२० | खद | २०५-२५ |
| क्षेमवृत्ति | २०५-१८ | कौत्तार | १६८-११ | खदिर | २०५-१० |
| कोकिला | ३८-१२ | कौषुम | १११-१० | खदिर | १८०-२४ |
| कोकिला | १४१-२२ | क्रीञ्जा | ११८-२३ | खदिर | १७७-१३ |
| कोलाहल | ६४-१० | क्रीष्टायणा | १७६-४ | खदिर | १७५-२० |
| कोटर | ६३-७ | क्रीष्टिक | १३५-११ | खदिर | १७४-१५ |
| कोटरावण | ९८-३२ | | | खदिरवती | ९९-१७ |
| कोटरवन | ९९-२१ | ख | २३९-३ | खदूर | १४५-१ |
| कोटर | १७०-२६ | खञ्जुवाटस्य | ७०-१ | खदूरक | १४२-१२ |
| कोटा | २४५-१५ | खञ्जु | २४०-१ | खपुरवती | ९९-१८ |
| कोहित | १४२-३ | खञ्जार | १४१-१३ | खरप | १४९-११ |
| कोरक | २१८-१० | खञ्जाल | १४२-४ | खर | २०५-२४ |
| कोश | ५८-१५ | खञ्जेन | "-१८ | खरप | ३०-१७ |
| कोशातकी | ४५-२४ | खञ्जेर | १४१-१४ | खरकुटी | १२७-६ |
| कोष | ५८-१६ | खड | १८०-२० | खरनादि | १३६-२६ |
| क्षोध | १८१-२० | खड | १५४-६ | खर्जूरकर्ण | १४३-३ |
| क्रौष्ट | १५०-१४ | खडोन्मत्त | १४५-१८ | खर्जूर | १५३-१४ |
| क्रौष्टपाद | ३१-२६ | खट्टा | २११-३ | खर्जुल | "-" |
| क्रौष्टमाय | ३१-२१ | खट्टाभार | २१०-२७ | खरीजङ्घ | ३२-२७ |
| क्रौष्टमान | ३२-१ | खरड | ५४-३ | खरीख | ३४-१८ |
| क्रौष्टकर्ण | २०४-७ | खरड | ५३-२५ | खरोन्मत्त | १४५-१९ |
| क्रौष्टकशब्द | "-" | खरिडक | १६४-९ | खलु | ८-९ |
| क्रौष्टकर्णक | "-" | खरडर | १७०-२५ | खलिना | ६०-२० |
| कौरुकाट्य | १११-२४ | खरिडित | १७४-२ | खलतिखारपायण | ६९-२३ |
| कौरव्य | १३६-१४ | खरिडक | १७४-१ | खल | ७३-६ |
| कौरव्य | १४८-९ | खरिडक | २२४-२२ | खल | १६५-२४ |
| कौरुठोपरथ | १३५-९ | खरडल | ५९-६ | खला | ५०-१९ |
| कौरुडोपरथ | १३५-८ | खरडु | १७५-२० | खलाजिन | १८१-५ |
| कौरुद्रायण | १७६-७ | खरड | १७७-१३ | खली | ५०-१९ |
| कौडि | २६-२२ | खरडाजिन | १८१-५ | खलीन | ६०-२० |
| कौतुस्कृत | २४-१० | खरड | "-२३ | खलेबुध | ७२-१७ |
| कौसुक | १८०-१ | खरडु | २२०-५ | खलेबुध | ७३-७ |
| कौलिशिक | १३२-१ | खदिर | १५३-२३ | खलेयव | "-" |

| | |
|---------------|--------|
| खलवाटविल्वीय | १३३-६ |
| खलवाट | २४०-२ |
| खलवा | १४८-११ |
| खलवका | "-" |
| खस | १३५-१७ |
| खाटूर | १९६-१८ |
| खाडायन | १८२-१३ |
| खाडायन | १८९-१ |
| खाज्जागिरि | ९८-२६ |
| खाशहवीरगा | १७५-२ |
| खाडायनसता | १७०-६ |
| खादतसोदता | ९०-२ |
| खादिरी | १८७-२३ |
| खारी | ४१-१९ |
| खारपारायणखलति | ६९-२४ |
| खासिक | १३२-३ |
| खिल | १७३-५ |
| खिव | १५४-७ |
| खेदा | २४९-७ |
| खेलशासिडलय | ७०-६ |
| खेला | २४२-२४ |
| खेल | "-" |
| खोः | १३-१९ |
| खोटकहोड | ७०-५ |

(ग)

| | |
|-------|--------|
| गङ्गा | १४८-४ |
| गङ्गा | १४१-२१ |
| गङ्गा | १४४-११ |
| गहिक | १७४-६ |
| गहु | २३२-१८ |
| गहुल | २२२-१४ |
| गहुली | ४३-७ |

| | |
|-------------|--------|
| गडुक | ३३-१ |
| गडुलगाखव | ७०-२ |
| गडेर | ३५-२३ |
| गडुकखठ | ७१-१ |
| गडुशिरख | "-२ |
| गगा | १८३-१० |
| गगा | १५६-२२ |
| गगा | १९८-१० |
| गगा | १९८-२३ |
| गगा | २१०-२७ |
| गगापति | २२३-२ |
| गगाित | २३०-६ |
| गगाकार | १४०-१७ |
| गगापति | १६२-२ |
| गगहु | १५८-२१ |
| गगडपाद | ९३-१९ |
| गगडोलपाद | "-१८ |
| गगडोलकपाद | "-२१ |
| गगिकापाद | ९३-१७ |
| गगाित | १८३-१२ |
| गजघटा | ४९-२६ |
| गजाश्व, | ६८-६ |
| गतार्थ | ७०-१७ |
| गतागत | २१४-१३ |
| गद | १५३-२२ |
| गद | १३७-२६ |
| गदा | २३५-१८ |
| गदद | २४२-१२ |
| गन्ध | १२४-१३ |
| गन्धार | १९४-५ |
| गन्धार | २०३-२५ |
| गन्धपिङ्गला | १४३-२३ |

| | |
|-------------|--------|
| गडिका | २०४-६ |
| गभरित | १००-१५ |
| गर | २४७-८ |
| गर | २१८-४ |
| गरी | ४६-७ |
| गरुत | २३०-२४ |
| गर्भ | १५७-१० |
| गर्गर | १३९-२६ |
| गर्जा | २१९-१ |
| गर्भिणी | १६४-२३ |
| गर्त्त | १७८-६ |
| गर्त्त | १७९-१७ |
| गर्त्त | १९५-८ |
| गर्त्त | १८१-१२ |
| गर्भेशूर | ८१-११ |
| गर्भसुहित | "-" |
| गर्भतप्त | "-१३ |
| गर्भद्रुप्त | ८१-१४ |
| गर्भधीर | "-१६ |
| गर्व | २४६-५ |
| गार्ध | २१८-३ |
| गर्व | "-१ |
| गल | १६५-२५ |
| गल | २४७-९ |
| गलहा | ३३८-२२ |
| गवयी | ४३-३ |
| गवादनी | ४०-६ |
| गवाश्व | ९२-४ |
| गवाविक | "-७ |
| गविष्ठल | १५२-१९ |
| गविष्ठिर | १५२-५ |
| गवेषुक | १६६-२२ |
| गह | १८८-१३ |

| | | | | | |
|--------------|--------|---------------|--------|---------------|--------|
| गहू | १७०-२४ | गिरि | २३४-११ | गुपि | २५०-७ |
| ग्रन्थि | २३२-१५ | गिरिगादी | १०९-४ | गुल्म | ५७-१५ |
| ग्रह | २३२-६ | गिरिगाख | "- | गुल्फ | २०४-२७ |
| ग्रह | १७८-१८ | गिरिगद्दु | "-५ | गुल्म | २०४-८८ |
| ग्रहि | २५०-१७ | गिरिगितम्ब | "- | गुरु | २२०-८ |
| गाजवाज | ६७-११ | गिरिनदी | "-४ | गुरुपरिचारक | ७८-२२ |
| गाण्डी | २३६-७ | गिरिनख | "- | गुरुमध्य | ७१-२ |
| गाण्डि | "-१५ | गिरिनद्दु | "- | गुर्वन्त | ७१-२ |
| गाधेर | १४७-१९ | गिरिनितम्ब | "- | गुल्गुधाकृत्य | ७४-२६ |
| गन्धर्व | ११८-२१ | गिरिक | १२९-२५ | गुल्गुधा | ७५-१ |
| गायत्र | ११९-१७ | गी | ४०-५ | गुहलु | १६०-३ |
| गायत्री | ४६-८ | गीर्पति | २६-५ | गुह | २३२-५ |
| गालवगडुल | ७०-२ | गीर्पुत्र | "- | गुहा | २४८-२४ |
| गारि | १८७-२२ | गीष्यति | "- | गुहर | १००-२६ |
| गारेट | १४७-२० | गीःपुत्र | "- | गुलुगुसा | ७६-१ |
| गाहि | २५०-१२ | ग्रीवा | १५३-७ | गुहा | १७८-१४ |
| गाही | ६३-५ | ग्रीष्म | १६२-१८ | गुध | ५६-१ |
| ग्रामिक | २२४-१० | ग्रीष्म | १५३-८ | गूर्दी | ४३-७ |
| ग्रामपुत्र | २२९-१४ | ग्रीष्म | १८४-७ | गृह | ६०-१ |
| ग्रामकुमार | "-१५ | ग्रीष्मवसन्ती | ६९-३ | गृहीतपाणि | ७१-१२ |
| ग्रामकुलाल | "- | गुगुलु | २१७-६ | गृहदीपक | ७९-१० |
| ग्रामकुल | "- | गुहप्रियः | ७०-१९ | गृहकलविद्ध | ८१-२६ |
| ग्राममण्ड | "-१६ | गुहूनी | ४३-२६ | गृहसर्प | ८२-१६ |
| ग्रामसाण्ड | "-१७ | गुदरम् | १७०-२४ | गृहमवेशन | २०९-२५ |
| ग्रामपण्ड | "- | गुहरम् | "- | गृहीत | २२९-२५ |
| ग्राम | १८८-१० | गुणवृद्धी | ६९-७ | गृष्टि | १४६-२० |
| ग्रामटी | ४१-२० | गुणवदी | ९४-१६ | गृष्टपति | १६२-१ |
| ग्रामपृष्ट | ८६-२० | गुण | १८३-१४ | गृ | २५०-१२ |
| ग्रामकुरख्या | १८८-१५ | गुह | १९८-९ | नेष्ट | ६४-१४ |
| ग्राम्य | १४८-८ | गुण | "-११ | नेष्टप्रगल्भ | ८१-४ |
| गिरा | ४०-५ | गुणसगर | २०३-२७ | नेष्टद्वेषी | ८१-६ |
| गिरि | १८०-२१ | गुधि | १६९-५ | नेष्टनर्दी | "- |
| गिरि | १८०-२१ | | | | |

| | | | | | |
|-------------|--------|---------------|--------|----------------|--------|
| गेहे विजिती | २-८ | गोधूम | १६६-१६ | गौपालिधानपूलास | |
| गेहे पटु | २-९ | गोफिल | १७१-६ | | ६६-१२ |
| गेहे पशिडत | २-१० | गोप्रकारड | ८६-१ | गौरी | ४१-१८ |
| गेहे व्याडः | ८१-१० | गोमचर्चिका | २-३ | गौरगोतम | ६९-२३ |
| गेहेशूर | २-११ | गोमूत्र | १२६-१९ | गौरिषक्थ | १०८-२० |
| गेहे नन्दी | २-२५ | गोलोमन् | १३१-१० | गौरषक्थ | २-११ |
| गेहे नर्ती | २-२६ | गोमतल्लिका | ८५-२४ | गौर | ११८-३ |
| गेहे मेही | ८२-५ | गोविन्दारक | ८५-१८ | गौरव | २१७-१८ |
| गेहे दाही | २-१५ | गोशी | ४९-१९ | गौवासन | १९१-२१ |
| गेहे मेली | २-२६ | गोतेमगौर | ६९-२३ | गौरपीव | २०५-१६ |
| गेहे विचिती | २०५-२३ | गोतम | ३१-२० | गौहलव्यायनी | ५१-२४ |
| गो | १६५-१९ | गोपवन | ३६-१३ | गौगिक | १३२-३ |
| गोकस | १५८-७ | गोपालिका | ३९-१५ | गौपुच्छ | १३१-१० |
| गोमठ | १७४-२५ | गोमय | ६३-११ | | |
| गोमन | १७५-१५ | गोमयपावक | ७९-१० | घ | १२-३ |
| गोलक्षण | १८५-१५ | गोभिल | १७१-५ | घटक | १२८-२१ |
| गौवासन | १९१-२० | गोऽश्व | ९३-१२ | घटा | ४९-२६ |
| गोमती | १९३-१२ | गोलन्द | १५८-१० | घटा | २३९-२१ |
| गोदान | २१०-१३ | गोष्ठा | ५०-१६ | घटी | ४९-२६ |
| गोनत्त | २११-११ | गोष्ठी | २-१५ | घाट | २३९-२० |
| गोकल्प | १४८-१३ | गोष्ठी | १९३-१३ | घाटा | २३३-२४ |
| गोमिन् | १५३-१३ | गोष्ठेप्रगल्भ | ८१-५ | घास | २१३-२ |
| गोलाहू | १५३-१६ | गोष्ठेदेवेही | २-६ | घासकुन्द | १७४-२२ |
| गोधापदी | ९४-७ | गष्ठेनदी | ८१-६ | घुणाक्षर | १३३-१५ |
| गोधा | २४४-५ | गोष्ठेविजिती | २-९ | घृणा | २३५-१४ |
| गोपत् | २४१-२ | गोष्ठेपटु | २-११ | घृत | ५५-१२ |
| गोमयपायस | १३३-१९ | गोष्पद | १०५-१३ | घृतपीत | ७८-१८ |
| गोपिका | १४२-४ | गोष्ठेपशिडत | ८१-९ | घृतपरिवेपक | ७८-२४ |
| गोपालिका | १४३-१० | गोष्ठेव्याड | २-१० | घोपस्थान | १९६-९ |
| गोफिल | १४३-१३ | गोष्ठेशूर | २-११ | घोष | १९५-८ |
| गोधा | १४४-६ | गोकली | ३८-१ | घोषदा | २४१-१७ |
| गोदन्त | १४५-१७ | गोतमी | ४६-२७ | | |
| | | गौपालिधान | ६६-११ | घ | २-१८ |

| | | | | | |
|--------------|--------|---------------|--------|----------------|--------|
| च | १०-२४ | चन्द्राकौ | ९१-२० | चर्मि | १४७-२० |
| चक्र | १५३-१४ | चन्द्रराहू | "-३ | चर्मि | १६४-२३ |
| चक्रवाक | १७१-२१ | चन्द्रादित्यौ | ६९-२ | चर्मशक्ती | १८८-८ |
| चक्र | १७१-१४ | चन्द्रमसू | १४८-१२ | चर्मिक | २२४-११ |
| चक्र | ५८-८ | चतुर | १३९-१६ | चपक | ५९-१२ |
| चक्रवाकवती | ९९-१८ | चतुर | २२३-६ | चषाल | ५९-६ |
| चक्रीवान् | २३१-७ | चपन | १५३-७ | चाक्षुष | ११८-८ |
| चञ्चत् | १२३-२४ | चपल | २२२-९ | चाक्र | १११-११ |
| चञ्च | १२४-१२ | चंपल | २२६-१० | चातुराग्रभ्य | १२१-२४ |
| चञ्चा | १२७-६ | चपटक | १३९-२७ | चातुर्वर्ग्य | १२२-१५ |
| चटक | १४९-११ | चमसी | ४७-१६ | चातुर्युग्म | "- |
| चणक | १५८-१९ | चमस | ५९-२२ | चान्द्रायणभक्त | १७०-५ |
| चणक | २०४-१८ | चमस | १५७-१२ | चान्द्रभागा | ४८-८ |
| चटु | २३२-१५ | चमर | १६७-५ | चातुर्वैद्य | ११२-२० |
| चटका | ३८-१३ | चमसि | १४९-१६ | चातुर्वैद्य | १२१-२२ |
| चटका | ५२-२१ | चय | १९७-२४ | चाप | ६३-३ |
| चण्डा | ४८-२२ | चय | १६७-४ | चाफट्टिकि | ११७-३ |
| चण्डी | "- | चर | १४९-२ | चार | ११९-९ |
| चण्डाल | ११७-२७ | चर | ४१-१२ | चारित्र | ११७-१९ |
| चण्ड | २२०-४ | चर | २५०-१२ | चारुनद | ११०-९ |
| चण्डाल | २०२-२४ | चरक | ५५-१० | चारु | २२०-९ |
| चण्डाल | १३९-८ | चरका | ५२-१८ | चारु | २३०-२४ |
| चण्ड | १४१-११ | चरण | ५४-२७ | चिकित | १५८-१९ |
| चतस्तः | ४०-१३ | चरय | १३७-१६ | चित्रास्वाती | ६६-४ |
| चतुष्पाश्र्य | १२०-१६ | चरण | १७८-१८ | चित्ररथवातहीकौ | ६८-१३ |
| चतुर्दशी | १९७-१३ | चरम | १८३-१६ | चित्ररथमल्लिक | "-१५ |
| चन | २१-५ | चरमगुण | १८३-१७ | चित्रक | १२४-१३ |
| चन्द्रक | २१७-२६ | चरण | २४३-२ | चित्र | १७२-२४ |
| चन्द्रक | १२५-१२ | चर्चा | १८३-८ | चित्र | १४९-१५ |
| चन्दन | ५६-२० | चर्चा | २०१-१७ | चित्रहू | २४४-६ |
| चन्द्रभागा | ४८-९ | चर्म | १८१-२२ | चित् | १२-८ |
| चन्द्रभागी | "-१० | चर्म | ६१-२ | चिन्ताकृत्य | ७७-१ |
| चन्द्राकौ | ६९-१ | चर्म | १६४-२४ | चिन्ताकृत्य | ७७-२ |

| | | | | | |
|--------------|--------|----------------|--------|------------|--------|
| चित्ताकृत्वा | ७८-२ | चैतयत | १४८-२० | छान्दसवठर | ७०-२ |
| चित्तीन्माकद | ७९-४ | चैतयतविध | १६९-१७ | छायाशुक्क | ८०-११ |
| चिरम् | २१-१३ | चैकयत | ३७-४ | छित्ति | २४८-१४ |
| चिरस्य | ७-११ | चैतयत | १६९-६ | छिद्रा | ४-२२ |
| चिररात्राय | १३-५ | चैकीर्षित | ११८-२५ | छिन्नशीर्ष | ७१-२२ |
| चिरन्त | १७१-२६ | चोरी | ४४-१२ | छेद | २११-९ |
| चिरात् | ८-१३ | चोर | २२२-९ | | |
| चिराय | ७-२१ | चोर | २२८-२५ | (ज) | |
| चिखल्ल | १०३-२१ | चोर | २५०-११ | जघन | २००-५ |
| चिकीर्षित | ११८-२४ | चोल | १३५-१७ | जग्धसारङ्ग | ७१-१२ |
| चिरेण | ८-२४ | चौक्ष | २२४-२१ | जङ्गलपथ | २०७-२५ |
| चीर | १७१-१२ | चौपयत | ३७-१० | जङ्गारथ | ३०-१९ |
| चुक्षा | २१६-२० | चौर | ११७-१९ | जङ्गा | २३३-२३ |
| चुप | १५४-७ | चौपयतविध | १६९-१७ | जङ्गा | १३६-२८ |
| चुपदासक | १५४-४ | | | जङ्गाप्रहत | २१४-१२ |
| चुरा | २१६-११ | (छ) | | जङ्गाप्रहत | "-" |
| चुरण | २४३-१८ | छगल | १७१-५ | जटिलक | ३४-९ |
| चुरा | २४८-२४ | छगल | २०४-१ | जतुक | ३३-१ |
| चुल्या | १७२-१६ | छगला | १३८-२१ | जतुरक | ३४-७ |
| चुलुक | १५८-१८ | छत्र | ५६-७ | जटा | २३३-२४ |
| चूर्ण | ६४-५ | छत्र | २१६-६ | जटा | २३९-१९ |
| चूर्णाक | १२४-१६ | छत्रवंशक | ८७-४ | जटिलक | १४१-११ |
| चूडारक | ३३-१७ | छत्रिक | २२५-१ | जठर | ५९-२५ |
| चूडार | १७१-१९ | छन्दोभाष | २०१-२३ | जड | १५४-११ |
| चूडा | २०९-१० | छन्दोनाम | "-२४ | जड | २२१-९ |
| चूहा | २३३-२२ | छन्दोविजित | "-२३ | जतु | १७८-१९ |
| चूहा | २३५-१० | छन्दोविचित | "-" | जन | १५०-१२ |
| चूहा | २४९-८ | छन्दोव्याख्यान | "-२४ | जन | १५३-२२ |
| चूहा | १३७-८ | छन्दोमान | "-२३ | जनन्धर | १४९-१७ |
| चैदी | ४२-७ | छम्बट् | १०-१३ | जनराज | २२४-३ |
| चैत् | ९-११ | छागमित्र | १९२-१५ | षान | १९१-४ |
| चैदि | १९२-४ | छात्र | २२२-२ | जनार्दन | २४९-२० |
| चेल | २५०-१२ | छात्रव्यंसक | ८७-७ | जनश्राद् | १८८-१९ |
| | | छारदस | २२२-२ | जनेवाद | ४-१७ |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------------|--------|-----------|--------|
| जनोवाद् | १९८-२० | जातशमश्रु | १७-२१ | कटिति | २०-४ |
| जन्ययात्रा | २१२-१२ | जातु | ६-८ | कगिति | २-५ |
| जन्या | १८१-६ | जानकि | १३५-१० | (ट) | |
| जन्तुक | ३३-२७ | जानु | ६४-१० | टङ्क | ५३-१९ |
| जन्तु | ६४-८ | जाम्बवान | १७५-१२ | टिक | १४५-२० |
| जम्बूक | १७५-१९ | जारस्त्री | १४६-२० | टिरिटिरा | ८२-६ |
| जम्भ | १४१-२६ | जायापती | ६६-८ | (ड) | |
| जम्पती | ६६-८ | जाल | २१३-१ | डतर | २७-२५ |
| जय | १९७-२१ | जालपदी | ९४-१२ | डतम | २७-२५ |
| जया | ४२-२६ | जाल | २१३-१३ | डहाल | ११९-१६ |
| जरति | १४५-१ | जालकीट | १९३-२० | (त) | |
| जरती | १४६-२० | जालमानि | १३५-१० | तक्षन् | १४१-२४ |
| जगत्कारु | १४२-१० | जालन्वर | १४९-१७ | तक्षकीय | १७०-१६ |
| जरा | २३५-१४ | जित्याविपूयविनीयाः | ६९-१६ | तक्षशिला | २०३-२४ |
| जल्पन | २४९-१९ | जिनवचनाधीन | ८०-५ | तगर | २१७-४ |
| कालापाह | १०८-२२ | जिह्माशिन | १४५-१७ | तट | २३७-७ |
| ज्वर | २१८-४ | जिह्म | २४६-८ | तटी | ४६-२४ |
| जलहृद् | १४१-१४ | जीमूत | १०२-२६ | तडाग | ५४-२२ |
| कर्त्त | १३५-१७ | जीव | १४५-१० | तगृह | १५८-५ |
| जलहा | १३७-१३ | जुहूत् | ११८-१२ | तगडक | ६०-२२ |
| जलन्वर | १४९-१७ | जूर्ति | २४९-१५ | तगिहन् | १५८-५ |
| काहिजीह | ९०-६ | जृम्भ | ५८-५ | तगडुल | २०६-१६ |
| जवन | १३५-१७ | जैव | ११८-४ | तगडुलकियव | ६६-२० |
| जवन | २४९-१९ | ज्येष्ठा | १४६-७ | तत् | २७-३ |
| जाजला | १११-९ | ज्येष्ठ | २२३-५ | तत् | ११-१३ |
| जाजल | १४८-२० | ज्येष्ठा | ३९-२ | ततस् | १५-१ |
| जात | १५४-१३ | जैमिनिकहार | ६९-२२ | ततस् | १२२-२६ |
| जातदन्त | ७०-२४ | जैगीपव्यायणी | ५१-२८ | तरपर | २२२-९ |
| जातपुत्र | २-२५ | जोष | १९-१९ | तत्र | १५-८ |
| जातनामा | ७१-१३ | ज्योतिष | १८३-१९ | तथा | ५-५ |
| जातसंवत्सरा | २-२ | ज्योक् | २२-११ | तत्स्य | २२३-६ |
| जातसुरा | २-२ | ज्योरत्रा | २३१-२० | तक्षानीम् | १४-९ |
| जातदुःखा | २-१४ | | | | |

| | | | | | |
|--------------|--------|------------------|--------|-----------------|--------|
| तद्वैष | २४१-६ | तरङ्ग | २३७-८ | ताम्र | २२१-२१ |
| तन | ७-१४ | तरङ्गवती | १८५-१९ | तारङ्गि | १९२-२६ |
| तनु | २२०-७ | तरङ्ग | २१७-२० | तारका | २१७-१७ |
| तनु | १५७-१९ | तरुणा | २२१-१० | तारक | "-" |
| तनु | १२२-२५ | तरुण्ड | ६४-४ | तारसिक | १३१-२८ |
| तनुक | १२९-२५ | तरसा | २०-६ | तारा | २४९-६ |
| तनुवृणविन्दु | ६९-२४ | तरतम | २२२-१४ | ताक्षर्यायणभक्त | १७०-८ |
| तनूनपात् | १०६-१८ | तरी | ४६-११ | तारुक्षयायणी | ५१-२१ |
| तन्तु | १५९-१५ | तरुणी | ४७-१६ | ताल | १६६-१३ |
| तन्तस् | २४२-१६ | तरुक्ष | १५८-१० | तालीकृत्य | ७५-२२ |
| तन्त्र | १८४-१२ | तरुण | १६२-२४ | ताली | ५०-१४ |
| तन्त्र | २१८-२१ | तरुणा | २४७-१९ | तालुक्षयायणी | ५१-१९ |
| तन्त्वय | १९०-१७ | तर्कारी | ४२-२७ | तावत् | ८-१५ |
| तन्द्रा | २१७-२० | तर्पितदाक्षि | ७१-१७ | त्यास्मक | १४९-२३ |
| तन्द्रा | २१८-२१ | तर्पर | २४७-८ | त्रयाहाव | १९५-२१ |
| तपन | २४९-१९ | तर्हि | १५-८ | त्वाव | ८-६ |
| तपस् | २१६-२४ | तस्कर | १०१-२ | त्वावत् | "-" |
| तमस्कारण्ड | ८६-५ | त्रयोदशी | १९७-१० | तिक | १५०-९ |
| तमस्कारण्ड | २५-१२ | त्र्यक्षयायणभक्त | १७०-४ | तिक | १४७-२५ |
| तमा | ४५-११ | त्व | २७-१५ | तितिक्षा | २१६-२१ |
| तमाल | १७१-१० | त्वत् | "-११ | तिमि | २३०-२२ |
| तमाल | २३७-६ | त्वचिसार | ८०-९ | तिरस् | २४३-१४ |
| तमिस्रा | २३१-२१ | त्वस्त | १९७-२२ | तिर्पिरिका | २४७-१८ |
| तमी | ४५-६ | तारङ्गव | ५४-१९ | तिर्परीक | "-१९ |
| त्यत् | २७-८ | तारण्ड्य | १८२-७ | तिलिपलिका | "-" |
| तल | ६२-२६ | तारुक्षयायणी | ५१-१९ | तिन्दुकज्योति- | |
| तलुन | २४७-१९ | तान्तव्यायनी | ५१-२१ | वीय १३४-२ | |
| तलुक्ष | १५९-१२ | तानव्यायनी | ५१-२१ | तिक | १८०-२५ |
| तलुनी | ४७-१७ | तापसी | ४६-२५ | ति तिरुभ | १५९-२६ |
| तलुन | १६२-२४ | तातपाद् | ८६-२ | तित्तिरि | १५८-२४ |
| तलपल | २४७-८ | तात | ११९-१ | तितिक्षा | १५८-१२ |
| तर | २५०-१२ | तादृश्य | १२२-१४ | तिमिर | ५९-२१ |
| तरुण | २४३-२३ | तापसापसद् | ८६-१९ | तिलक | १२५-१० |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|--------------|--------|
| तिलकालक | २-९ | तुरण | २४२-१० | तृट् | २१८-१० |
| तिर | २२-१२ | तुगिडन् | २३३-११ | तृष्णा | २२१-२२ |
| तिककितव | ३५-४ | तुगिडभ | २३३-११ | तृप्र | २२०-११ |
| तिसृ | ४०-१३ | तुलभ | १३४-२१ | तृप्र | २३६-२६ |
| तिष्ठद्गु | ७२-१० | तुना | २४८-२६ | तृप्र | २४६-१८ |
| तिषिर | १८०-८ | तुवै | ८-७ | तृपत् | २४४-२६ |
| तिलव्रत | २१०-८ | तुप्र | १७२-२४ | तृट् | २४८-९ |
| तिलक | २१७-२५ | तूणा | ४८-३ | तृदन | २४९-१९ |
| त्रिगर्त | १३६-१३ | तूणी | २-२ | तृक्षाक | १४१-१२ |
| त्रिलक्षण | १८५-२२ | तूर्ण | २०-६ | तृणकर्ण | १४२-१० |
| त्रिभाव | २२२-२६ | तूर्तिः | २४८-१६ | ते | ७-१३ |
| त्रिवेणी | १४३-१३ | तूरः | २-२ | तेजनी | ४७-७ |
| त्विट् | २४८-९ | तूर्यनाण | १०९-७ | तेजु | १६९-४ |
| त्रिकोय | १७०-१५ | तूर्यमान | १०९-७ | तैतल | १४८-५ |
| त्रिपदी | ९४-१३ | तूलकत | ८५-८ | तैतली | १११-९ |
| त्रिभाष | १२२-१ | तूष्णीम् | १९-१७ | तैल | ५९-१५ |
| त्रिष्टुम् | १६२-२० | तृण | १४९-१४ | तैलवलि | ११५-२३ |
| त्रिफला | ४०-२ | तृण | १७८-२२ | तैलवल | १६९-८ |
| तीर्थ | ५५-२१ | तृण | १६५-१७ | त्रैगर्त | १७५-१६ |
| तीर्थ | १९५-९ | तृण | १७८-१२ | त्रगर्त | १६९-५ |
| तीर्थ | २०२-१४ | तृण | १८०-२४ | त्रैष्टुभ | ११९-१७ |
| तीर्थ | २०८-२५ | तृण | २०२-१४ | त्रैशब्द | १२२-२ |
| तीर्थयात्री | २०९-१२ | तृणविन्दु | १३८-४ | त्रैकाल्य | २-८ |
| तीव्र | १६९-१ | तृक्ष | १५८-२० | त्रैलोक्य | २-७ |
| त्रिविद्य | १८५-१० | तृण | ५५-१५ | त्रैविद्य | २-५ |
| तु | ४-२३ | तृणकर्ण | ३१-१८ | त्रैश्वर्यम् | २-२ |
| तुगड | २३९-१८ | तृणमय | १६८-१ | त्रैषण | १८१-२१ |
| तुद | १४४-१८ | तृणविन्दुननु | ६९-२ | त्रै | १०-११ |
| तुगडदेवभक्त | १७०-९ | तृणकाष्ठम् | ९३-४ | तोणक् | २१-४ |
| तुन्द | २३२-५ | तृणोलप | ९२-११ | तोसर | ५७-१८ |
| तुन्द | २३९-१५ | तृणोत्पन्ना | ७१-४ | तोरणम् | ५४-१८ |
| तृम् | २०-१४ | तृणोति | १०९-१९ | तीलवलि | ११५-२३ |
| तृयुक्त | १८२-७ | तृयया | १८८-१६ | | |

(ध)

| | |
|-----------|--------|
| थलाथल | ३३-१० |
| था | १५-१२ |
| द | |
| दक्ष | १४८-१३ |
| दक्षिण | १६४-९ |
| दक्षिणापथ | १८६-१ |
| दक्षिण | २९-९ |
| दक्षिणा | १५-१३ |
| दण्ड | २११-१७ |
| दण्ड | ११३-७ |
| दण्ड | १७७-१५ |
| दण्ड | १८२-१३ |
| दण्ड | २१५-२६ |
| दण्ड | २२०-५ |
| दण्ड | १४२-३ |
| दण्डग्राह | १४७-११ |
| दण्डप | १५०-१ |
| दण्डन | "-" |
| दण्ड | १२७-१९ |
| दण्ड | १२६-१४ |
| दण्ड | ५४-२० |
| दण्डका | ५२-५ |
| दण्डक | ६१-१९ |
| दण्डपाणि | ७१-२६ |
| दण्डमाथ | २१२-९ |
| दत्त | १७१-६ |
| दण्डिन् | १४९-१६ |
| दद्रु | २३४-२४ |
| दद्र | "-२५ |
| दधिपयसी | ९१-७ |
| दधिपीत | ७१-२२ |
| दधिरथः | १०३-१ |

| | |
|----------------|--------|
| दन्त | २३८-६ |
| दन्त | २०४-२८ |
| दन्तजात | ७०-२४ |
| दन्ताग्र | १८९-२४ |
| दम्भ | १४०-१७ |
| दमन | २४९-१९ |
| दम्पती | ६६-८ |
| दाय | २४८-२३ |
| दर | ५९-२५ |
| दर | २०५-२४ |
| दरद | २०३-२४ |
| दर्भ | १७०-२२ |
| दर्भशर | ९२-७ |
| दर्भपूतीक | ९३-८ |
| दर्भपूतिक | "-९ |
| दर्भपूलिक | "-" |
| दर्शनीयाकान्तः | ९७-२४ |
| दर्शनीयासप्त | ९८-२ |
| दश | १७१-२१ |
| दशाहं | १३४-१४ |
| दशाहं | २४०-२२ |
| दशाहं | "-१५ |
| दल | १७२-१७ |
| दल | २३६-२७ |
| दलवृ | १७६-३ |
| दलीप | ११६-२६ |
| दत्तम | १५८-२० |
| दशाहं | १२०-१७ |
| दशोरकगडेरक | ३६-१ |
| दशाहं | १२९-३ |
| दशग्राम | १७४-२३ |
| दशग्राम | १७८-५ |
| दशुग्राम | १९२-१० |

| | |
|---------------|--------|
| दहन | २४९-१९ |
| दंश | १६३-१२ |
| दंष्ट्रा | ३९-१२ |
| दंष्ट्रा | २३५-१५ |
| दर्भमय | १६८-१२ |
| द्रवस् | २४३-१२ |
| द्रव्य | १३०-२० |
| दाक्षायणभक्त | १७०-७ |
| दाक्षायण | १६८-२५ |
| दाक्षि | १६९-४ |
| दाडिमी | ४७-१६ |
| दाडिम | ५८-१३ |
| दाक्षिकूट | ७०-६ |
| दाक्षिभिक्षुक | ६९-२४ |
| दाण्ड | १११-११ |
| दाण्डकि | १३५-१० |
| दान | १२९-१२ |
| दानक | "-" |
| दामकरठ | ३४-२२ |
| दामनि | १३४-१९ |
| दामोष्णीवि | १४०-३ |
| दायाद | २२२-१९ |
| दायाद | २५१-१३ |
| दारगव | ६७-१ |
| दारकार | "-२७ |
| दारार्थ | ६८-१० |
| दाण्डायन | १९६-१० |
| दास | ६२-१३ |
| दावा | १८७-२३ |
| दालीपि | ११६-२५ |
| दाशी | ४३-२२ |
| दाशग्राम | १९२-११ |
| दासमित्रायण- | |
| भक्त | १७०-५ |

| | | | | | |
|----------------|--------|------------------|--------|--------------|---------|
| दासमित्रिभक्त | १६९-२४ | दिवोद्यान | ॥-९ | द्वीप | ५५-२६ |
| दास | १४९-३ | दिवोहा | ॥-११ | द्वीपिन | ६३-२४ |
| दास | ॥-४ | दिवीकस | १०३-७ | दुन्दुभिसेचन | १०६-३ |
| दासक | १५४-४ | दिश | १४४-१५ | दुन्दुभिवैरा | ॥-४ |
| दासमित्र | १९२-१५ | दिशा | ३९-२१ | दुर्ग | १३७-१९ |
| दासीदास | ९२-१४ | दिषट्क्या | ७-८ | दुर्विज्ञा | १४९-१९३ |
| दासीसाणवक | ॥-१५ | द्विपदी | ८४-१७ | दुर्मनस् | १५४-८ |
| दासीपदी | ९४-१० | द्विपयः | ९६-८ | दुर्विन | २४५-१९ |
| दासी | १२७-७ | द्विदण्डिप्रहरति | ९६-२६ | दुर्मनस् | २४५-२ |
| दासी | ४३-२० | द्विसुसलिप्रहसति | ॥-२७ | दुर्भ्रातृ | २२८-८ |
| द्राक् | २०-१० | द्विदण्डा | ९७-१५ | दुर्याधन | १२७-४ |
| द्राक्षा | २३०-२३ | द्विसुसल | ॥-॥ | दुर्हृत् | २२७-२ |
| द्वादशाह | २०९-१२ | द्विपद | १८४-१७ | दुर्भगा | १४६-१७ |
| द्वापर | १००-१७ | द्विभाव | २२२-२१ | दुल | १७२-१७ |
| द्वारका | ५२-१० | द्विभाव | १२१-१५ | दुपन्धि | १०७-२६ |
| द्वारपालिका | ३९-१७ | द्विदन् | १२०-२ | दुःषमस् | ७३-२६ |
| द्वार | १०३-२२ | द्विप्रिय | ७०-२० | दुःषाम | १०७-२२ |
| द्वारपाली | १४७-१२ | द्विता | ११८-६ | दुःपेध | १०७-२७ |
| द्वयक्षायणभक्त | १७०-४ | द्विः | १४-२३ | दुष्कुल | २२२-१४ |
| द्वयाहाव | १९५-२२ | द्वि | २७-७ | दुष्पुरुष | २२३-१७ |
| द्विक् | ३९-२१ | द्विषूथ | ५५-२७ | दुष्टु | २२६-१३ |
| द्विक् | १९९-१९ | द्वीक्षा | २१९-१ | दुष्टु | २२-६ |
| द्विन | ५६-२२ | द्वीक्षातपसी | ६८-१२ | दुहिता | ४०-१३ |
| द्विवरूपतिः | २५-१८ | द्वीक्षातपसी | ९१-१४ | दुःस्त्री | २२६-१३ |
| द्विवस | ५९-२२ | द्वीप | २०६-१८ | दुहितृ | ४०-१२ |
| द्विवा | १८-४ | द्वीर्षान्ही | ४८-५ | दुःख | २४२-१३ |
| द्विवाधीश्वर | १०३-६ | द्वीर्षाहा | ॥-७ | दुःख | २३६-२७ |
| द्विवाङ्गना | ॥-॥ | द्वीर्षलघू | ६९-९ | दुःख | २१७-२० |
| द्विविपद | १०८-१८ | द्वीर्ष | २२१-१९ | दुःखजाता | ७१-१४ |
| द्विवूहा | १०३-११ | द्वीन | २२२-१२ | दुःख | २४६-५ |
| द्विवेश्वर | १०३-८ | द्वीस | ॥-८ | दुःख | ॥-१६ |
| द्विघोटा | १०३-८ | द्वीप | १९५-१० | दुः | १४-१४ |
| द्विवीतिः | ॥-॥ | द्वीप | १९४-१० | दुःघण | १७५-२१ |

| | | | | | |
|-----------|--------|--------------|--------|-------------|---------|
| ब्रह्मि | ३०-३३ | देव | २४०-९ | दैवति | ११६-६ |
| ब्रह्मिणी | ४४-२१ | देव | १९१-४ | दैवोति | "-" |
| ब्रह्मन | २०-६ | देव | २५०-११ | दैवयज्ञि | "-२० |
| ब्रह्मपद | १७३-१६ | देवदत्त | १९१-२३ | दैलीपि | "-२६ |
| ब्रह्म | २३०-२४ | देवदर्श | १८२-१३ | दैवमति | ११७-७ |
| ब्रह्म | १४१-२३ | देवराज | १९२-१९ | दैवत | ११८-८ |
| ब्रह्मभ | १००-२२ | देवराज | २०२-२३ | दैवशर्मि | १८९-१८ |
| ब्रह्मभ | "-" | देवहू | १५९-१५ | दैवम् | १५-१२ |
| ब्रह्मश | १०१-२ | देवयातव | १६८-२५ | दीटो | ४५-५ |
| ब्रह्मशा | १००-१० | देवराजन् | २०२-२३ | दीलक | १२९-८ |
| ब्रह्म्य | "-११ | देवयात्रा | २२९-१२ | दीषा | १८-९ |
| ब्रूत | २२३-८ | देवव्रत | २१०-७ | दीह | २११-१० |
| ब्रूता | ५०-२० | दैवस्यत्वक | २४१-४ | द्रोह | २१८-२ |
| ब्रूती | "-" | दैवशर्मन् | १३८-९ | द्रोह | २११-१० |
| ब्रूषण | २४९-१४ | दैवर | १४८-२ | द्रोणी | ४१-२४ |
| ब्रूत | ६०-१९ | दैवत्रा | १४-२४ | द्रोणा | ५४-१४ |
| ब्रूदतिः | १०३-११ | दैवरथ | "-" | द्रोणभीष्मौ | ६९-२ |
| ब्रूहा | "-" | देवापिशन्तनू | ६९-१७ | द्रोणीपदी | ९४-१० |
| ब्रूक् | ३९-२१ | देवाज्ञात | ८४-२२ | दौवारिक | ११३-२२ |
| ब्रूह | ५६-२० | देवासुर | २०३-७ | दौवारपालि | ११४-३ |
| ब्रूर्म | २५०-१३ | देवासुर | २४०-९ | दौवारपालिक | "-४ |
| ब्रूशा | ३९-२१ | देवीधिष | २४१-८ | (ध) | |
| दर्श | २५०-७ | देवीराघप | २४१-६ | धन | २०९-१५ |
| द्रुष्टि | २४८-१५ | देवी | ४३-९ | धन | २१०-२० |
| द्रुक् | २४८-१५ | देशविरतिव्रत | २१०-८ | धन | ० ६२-२२ |
| द्रुपदुपल | ६७-८ | देह | ५८-१३ | धनज्जय | १५७-१२ |
| दर | २५०-१२ | देह | २५०-११ | धनपति | १६१-२७ |
| देवका | ५२-१३ | देही | ४७-६ | धनुः | ६१-१३ |
| देविद् | ३९-२२ | देहली | ४६-२४ | धनुष्कपाल | २५-१९ |
| देवाविशा | "-" | देधा | १५-१० | धनुष्पाणि | ७२-२ |
| देवदाली | ४७-२४ | दैवदत्ति | ३७-३ | धनुर्दण्ड | २१३-१६ |
| देवपथ | १२७-१२ | दैवत | ६२-४ | धनुष | "-१७ |
| देव | २०२-२३ | दैवः स्यानि | ११४-२६ | धनुवपति | १६२-२ |

| | | | | | |
|--------------|--------|------------|--------|------------|--------|
| धन्व | २३५-१५ | धिग् | २१-१६ | नकुल | १०६-२ |
| धन्य | १५३-२१ | ध्रुवक | २३२-७ | नक्र | ८-४ |
| धमनी | २३३-८ | ध्रुवका | ५२-१७ | नक्षत्र | ८-८ |
| धर्मविद्या | १८५-१० | ध्रुवका | १७९-१५ | नकिर | ९-१५ |
| धर्मपति | १६२-२ | ध्रुवका | १३८-४ | नक्तंचर | १८-१३ |
| धर्मकारक | ७८-१६ | ध्रुवक | २३२-७ | नखमुच | २५१-१२ |
| धर्म | ६०-२३ | ध्रुवक | १२४-२८ | नखर | २३९-१ |
| धर्मा | ६१-१ | ध्रुवका | ५२-२४ | नख | १००-८ |
| धर्मांशौ | ६८-२५ | ध्रुवका | १७९-१४ | नख | २०४-२७ |
| धर्मांशि | ६०-२४ | ध्रुवका | १३७-२७ | नख | १०६-७ |
| धनी | १६४-१४ | धूम | १६५-१७ | नख | ५४-११ |
| धर्मिणी | १४५-२१ | धूमावती | ९९-११ | नख | ६३-२२ |
| धर्म्य | १५३-९ | धूर्त | १५७-१२ | नखर | २३१-२२ |
| ध्वजवत् | १४८-१७ | धूर्जटिः | १०१-११ | नग | २३९-६ |
| ध्वज | ५३-७ | धूर्त | २२२-१ | नगर | १७०-२६ |
| ध्वजा | ४९-१ | धूर्त | २२८-२६ | नगरी | १८८-६ |
| ध्वजी | ८-८ | धूर्पतिः | २६-२५ | नग्न | १०६-१३ |
| ध्वजे | १२७-५ | धूर्पुत्रः | ८-२६ | नग्नमुषित | ६७-४ |
| ध्वंसकला | ७५-१७ | धुःपतिः | ८-२५ | नगरप्रवा | ८२-६ |
| ध्वन | १५४-१३ | धुःपुत्रः | ८-२६ | नगरकाक | ८-१६ |
| धातकी | १८७-१३ | धूलीकृत्य | ७५-१७ | नगरवायस | ८-१७ |
| धात्रीगोपक | ८-२० | धूसीकृत्य | ८-१ | नगरमर्दिन् | १३८-२० |
| धान्यक | १२५-९ | धूम | १७६-११ | नचेत् | १३-१४ |
| धान्यपति | १६२-१ | धूकर | १७७-१ | नञ् | ५-१९ |
| धामा | ६०-४ | धूम | १९५-४ | नटी | ४६-१ |
| धाया | १९९-२३ | धूम | २४६-७ | नट | १२७-५ |
| धारका | ५२-१० | धूम | १५३-८ | नह | १६५-२५ |
| धारिणि | ११५-२५ | धेनु | १६२-११ | नहभक्त | १६९-२५ |
| धातंराज्ञी | १९५-१७ | धेनु | १५५-२५ | नह | २७०-१४ |
| धातंराष्ट्री | ८-१८ | धैवर | १४८-१८ | नह | १७८-१९ |
| धारा | २३३-१२ | धूमत | १७६-४ | नह | १७९-४ |
| धारा | २४९-५ | | | नह | १४९-२ |
| ध्रास्ता | २३०-२३ | | | नतानत | २०२-७ |

(न)

ग

६-५

| | | | | | |
|-----------|--------|-----------|--------|------------|--------|
| मर्त्त | २५०-७ | नरवाहन | ११०-५ | नाम | ११-२३ |
| मर्त्त | २११-१० | नराची | १३१-१४ | नाम | २०२-६ |
| नदर | २७०-२२ | नल | १७२-२ | नाम | १५३-२४ |
| नद | २५०-११ | नल | १-१७ | नामा | ५५-१४ |
| नदी | १८७-११ | नग | ५७-२६ | नामाख्यात | २०२-५ |
| नदी | ४२-९ | नलद | २१७-६ | नारङ्ग | १०६-१० |
| नर्दन | २४९-१३ | नलागिरि | ९८-२७ | नाराच | १०६-४ |
| ननुव | ५-१५ | नलिन | ५५-२१ | नाल | ५७-२६ |
| नन्द | २४४-२ | नवर्त्तते | १७-१ | नाला | ५७-२७ |
| ननान्द्रु | १५२-१८ | नवा | ३-२० | नालीक | २३७-११ |
| ननान्द्रु | ४०-१२ | नवेदा | १०६-१५ | नाशिका | १७१-२५ |
| ननान्द्रु | १०६-१७ | नवै | ६-१९ | नासत्या | १०६-३ |
| नर्नत्ति | ११०-१० | नष्टि | २४८-१५ | नासा | १७१-१९ |
| नन्दा | ११९-१५ | नह | ३-१९ | नासिका | २३९-२६ |
| नमन्दन | २४९-१२ | नहवै | ७-२२ | नास्ति | १७-५ |
| नन्दी | ४७-२२ | नहि | ३-२० | नास्तिक | १०६-१४ |
| नपात् | १०५-२६ | नहिकम् | ४-९ | नास्तिक | २२३-२२ |
| नपुंसक | ६३-६ | न्यग्रोध | १७८-५ | न्याय | २००-८ |
| नपुंसक | १०६-१० | न्यग्रोध | १७९-१८ | न्याय | २०१-१६ |
| नभ्राट् | १०५-२६ | न्यग्रोध | १७७-१३ | न्याय | १८४-११ |
| नभस् | १०६-१४ | नाक | १०६-९ | न्यास | १८३-५ |
| नभाग | १-१६ | नाग | १०५-२६ | निकटिन | २३०-६ |
| नभाग | १४२-५ | नागी | ४९-१४ | निकट | २२३-५ |
| नमस् | १८-१३ | नाची | ४५-१ | निकट | २१४-२४ |
| नमस्कृत्य | ७६-२७ | नाचिकेत | १०६-११ | निकट | ५४-१० |
| नमेरु | १०६-१ | नाटी | ४२-२ | निकषा | १८-१० |
| नय | १९७-२४ | नाट्य | १४९-१२ | निकथित | २३०-५ |
| नयाति | १६-१९ | नाथ | १७२-२ | निकाम | १९-२० |
| नर | १४९-३ | नाना | २३-२ | निकुञ्ज | ५३-९ |
| नरद | २१७-७ | नान्तरीयक | १०६-८ | निकुञ्चकशि | ८८-१४ |
| नरनारायण | ९१-२२ | नापित | १०६-१४ | निकुञ्चकशि | ९६-२८ |
| नरनारायण | ६८-१२ | नाभि | २३२-१८ | निखदित | २३०-१३ |
| नरव्याघ्र | ८५-१९ | नाभी | २०६-२ | निगड | ५९-७ |

| | | | | | |
|----------------|--------|--------------|--------|----------|--------|
| निगम | ११८-१७ | निरुक्त | १८४-७ | निष्पदी | ९४-१६ |
| निगम | २०१-१७ | नित्त्वयनी | १०२-१६ | निष्पात् | २३३-६ |
| निघातिन् | २२४-५ | निर्धनोपकृता | ८४-२४ | निष्पा | १-१० |
| निचय | १९७-२४ | निर्वित् | २४८-४ | निष्पाल | १-११ |
| निचयोच्चारिताः | ८४-२१ | निर्यास | १७८-६ | निष्ठेव | ६३-२१ |
| निचुल | २३५-७ | निर्यास | ५८-१८ | निष्ठा | १८६-२६ |
| निताज्जवृक्ष | १८१-१० | निवास | २५०-२३ | निःषर्ग | २०९-११ |
| नित्य | २०९-१ | निषात | १७३-८ | निसर्ग | २०८-१० |
| नित्य | १९-२४ | निषाकु | १३७-२७ | नीचैः | १९-९ |
| नित्य | १२९-२ | निवलि | २५०-२३ | नीह | ५५-१६ |
| नित्यशब्द | २१२-१९ | निवेशिन् | २५८-२२ | नीचापक | १८१-१८ |
| निराघ | ३३-१६ | निषपिन् | १-११ | नील | १४८-१० |
| निदाघ | ५४-११ | निवृत् | २४८-४ | नील | २४५-५ |
| निद्रा | २१७-२५ | निश्चप्रचा | ८८-२७ | नीली | ५०-१ |
| निद्रा | २४६-६ | निश्चत्वम् | १-२८ | नीहार | २४५-१६ |
| निधन | ५५-२६ | निःषम | ७२-२६ | नुत् | २४८-१६ |
| निधनकृत | ८४-१९ | निपक्षश्यामा | ९०-२१ | नु | ५-९ |
| निधान | १७७-१३ | निपद्यश्यामा | १-११ | नुकम् | १०-२४ |
| निपठित | २२९-२४ | निश्राविन् | २५०-२२ | नुत् | २४८-१४ |
| निपठिति | २४७-३ | निःषन्धि | १०८-७ | नुवै | ८-८ |
| निपत्यरोहिणी | ८८-४ | निःषामा | १-६ | नूपुर | ६४-३ |
| निपुण | २२६-२२ | निपाद् | १५२-८ | नृनम | १०९-२२ |
| निपुण | २२२-९ | निपाद् | १३९-८ | नृनमन | १-२१ |
| निपुणक | १९१-९ | निपाद् | २०२-२१ | नृवर | ६५-२ |
| निपुणोदाहृताः | ८४-१९ | निपादित | २३०-११ | नृवराह | ८५-१८ |
| निवृद्ध | १७४-१७ | निषेध | १०७-२३ | नेत् | १०-५ |
| निवन्ध | १७७-११ | निःषेध | १०८-१५ | नेत्र | १२६-१२ |
| निमग्न | १७४-१४ | निष्क | ५३-१८ | नेत्र | ५७-५ |
| निमित्त | २०१-१६ | निष्कला | ४४-५ | नेत्रक | ६१-१८ |
| निरनूप | ११०-४ | निष्कली | ४५-१२ | नेम | २७-१ |
| निरक्षी | २४०-२२ | निष्कल | २२२-१४ | नैकती | १९३-१६ |
| निराकृत | २२८-२६ | निष्कनय | २१८-२० | नैकी | १-११ |
| निरुक्त | २०१-१८ | निष्पात् | २३३-६ | नैमिषिः | ११७-५ |

| | | | | | |
|------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|
| त्रैमिशि | ११६-५ | पट् | १०-१५ | पताका | २६५-८ |
| त्रैमिवि | "-४ | पट | ६२-२७ | पत्र | २०६-१८ |
| त्रैवकि' | "-५ | पटाक | ३१-१९ | पत्तिगणक | ७९-३ |
| त्रैवाकत्र | १८१-८ | पटली | ४४-२७ | पत्तिगण | २२७-२५ |
| त्रै | १०-१२ | पटपटा | १५-१२ | पथिन् | २००-६ |
| त्रोचेत् | १३-१५ | पटक | १२८-२० | पथिकारिन् | १४०-२८ |
| त्रो | ३-२० | पटच्चर | १९३-१७ | पदक | ३२-४ |
| त्रोहि | १०-३ | पट्टी | ४६-१ | पदव्याख्यान | २०१-१६ |
| त्रौ | १२६-१६ | पट्टार | १९६-२ | पद् | २०१-१९ |
| त्रौका | "-१६ | पट्टु | २२०-४ | पदवी | २१२-९ |
| त्रौषेचिका | १०८-१ | पट्टोली | ४७-२४ | पद् | १८६-४ |
| त्रौषिका | १०८-२ | पठित | २३०-१२ | पद्गति | ४८-२५ |
| त्रौषेचन | "-" | पराडारी | ४९-१९ | पदक्रम | १८३-११ |
| | (प) | पराडा | २१८-९ | पद्म | २३९-२४ |
| पक्ष | २३५-६ | परिडत | २४४-२८ | पद्म | ६०-९ |
| पक्ष | १९९-२२ | परिडत | २२१-९ | पद्मनाभ | ७१-९ |
| पक्षमन् | २३३-११ | परिडतज्ञाता | ८४-२० | पद्मावती | ९९-१२ |
| पक्ष्म | ५३-१४ | पर्या | २३३-१७ | पदात्पद | १८५-७ |
| पक्ष्म | २३२-६ | परिण | १३७-१४ | पदेयपद | १८४-१८ |
| पक्ष्मज | २५७-८ | पञ्चकल्प | १८५-२२ | पदोत्तर | १८५-३ |
| पक्ष्मक | ६१-१८ | पतञ्जल | ३३-४ | पयस् | २४३-२३ |
| पञ्चकत्वस् | १४-२४ | पतञ्जलि | "-५ | पम्पस् | २४२-२२ |
| पञ्चधा | १५-९ | पंकभाटे | २१४-६ | पत्तिवान् | २४०-२२ |
| पञ्चकपाल | १२२-२ | पच | २५०-३ | पतत्रि | २४०-२१ |
| पञ्चरेवत | ५०-१३ | पचतभृजजता | ९०-३ | पत्वा | २४१-१६ |
| पञ्चुरीहिण | ५०-१३ | पञ्चव्याकरण | १८५-२३ | पन्नग | १०६-१७ |
| पञ्च | ४०-१४ | पत | २५०-३ | परिसीर | २००-१९ |
| पञ्च | १३७-२१ | पत्तन | ६३-१५ | परियोष्ठ | "-१९ |
| पञ्चसूच | ४२-२० | पत्त | ५८-१४ | परिहनु | "-" |
| पञ्चजन | १९९-१ | पत्तमूलक | १२४-८ | परिरथ | "-२० |
| पञ्चाल | १५०-८ | पत्रक | १२४-२२ | परिखा | १९३-१४ |
| पञ्चदशी | १९७-७ | पत्र | २३२-१८ | परिशाल | २००-२० |
| पचलवशा | ८८-१३ | | | | |

| | | | | | |
|-----------|--------|---------------|--------|---------------|--------|
| परिषत् | २००-२१ | परपहाणा | ३९-११ | पर्ण | २३३-१७ |
| पर्यत् | "-" | परःशता | ६४-२५ | पर्ण | २३२-८ |
| परिषत् | २०३-३ | परःसहस्रा | ६५-२० | पर्णाट | ३०-२१ |
| पर्यत् | २०४-८ | परस्त्री | १११-२० | पर्णाढक | ३१-१५ |
| परिषत् | २०८-२५ | परमस्य | २२३-६ | पर्णु | १३४-६ |
| परिवृत्त | १७७-१६ | परंपर | २२३-२४ | पर्यद् | १८४-२१ |
| परिवाप | १७८-१ | पर | १९१-४ | पर्णु | २३३-१२ |
| परिवाप | १७९-१८ | परकुल | १९९-६ | पर्याप्त | २१२-१८ |
| परिगूढ | १७७-१३ | परयुग | १९९-१२ | पर्य | "-२४ |
| परिवंश | "-१४ | परदारा | २१२-७ | पर्यिका | २४२-३ |
| परिपद् | १८४-२१ | परत्र | १८६-१८ | पर्याप्त | ११-१५ |
| परिभाषी | २५०-१८ | परलोक | १८७-७ | पर्यिक | २१४-२० |
| परिल | १४१-१२ | पराशर | १७६-१२ | पलाशडुभक्षिती | ७१-११ |
| परिसिन्धु | १९४-४ | परापहाणा | ३९-११ | पलाल | ५९-१० |
| परिमुख | २००-१८ | परारि | १४-११ | पलित | ५५-१३ |
| पर्यलूख | "-" | परिशेष | २२३-२२ | पलाश | १००-८ |
| परिख्यात | २२४-३ | परिमण्डल | २२३-१९ | पल्लि | १९५-१६ |
| परिव्राजक | २२८-१ | परिवृद्ध | २२०-२३ | पल्लव | ६३-७ |
| परिरक्षित | २३०-५ | परिल्लव | १२०-१७ | पल्लविका | १२४-२१ |
| परिकलित | "-६ | परिगहन | १०९-२५ | पवित्र | ५७-१९ |
| परिगणित | "-८ | परिनट | "-२७ | पवित्र | १५३-९ |
| परिपक | १४३-१३ | परिभर्त्तन | १०९-२१ | पविन्द | १५३-२५ |
| परिधि | १४४-२३ | परिज्याकौशिकी | ९१-२१ | पश्चार्ध | १०३-१२ |
| परिणाह | २३५-६ | परिचूत | १०९-२३ | पश्चानुपूर्वी | "-१५ |
| परिपत् | २३८-१ | परुत | १४-११ | पश्चाभिमुख | "-१५ |
| पर्यत् | २३८-१ | परुपांसक | १८२-१६ | पलाश | १८०-२६ |
| परिसारक | २४०-२१ | परेद्यवि | १४-११ | पलाश | १७८-१२ |
| पर्यद् | २४७-१९ | परोक्ष | २५-१६ | पलालिन् | २३४-२१ |
| पल्पद् | "-२० | पर्ण | १४१-२३ | पल्लव | २१७-१८ |
| परिष | "-१९ | पर्ण | १८१-१३ | पलित | २२९-१९ |
| परियोग | "-" | पर्ण | १७९-३ | पलियोग | २४७-२० |
| परस्पर | २७-१२ | पर्ण | २१७-५ | पलिघः | "-" |
| परभृता | ३८-११ | पर्ण | २२२-१५ | पलदी | १९३-११ |

| | | | | | |
|--------------|--------|------------------|--------|----------------|--------|
| यमिङ्ग | १८२-१२ | पाश | १७८-१२ | पायणी | २३३-८ |
| पशु | ८-२३ | पात्र | ५७-१९ | पांसु | २३२-१४ |
| पशुपालिका | ३९-१६ | पात्री | ५०-५ | पांसु | २३९-२ |
| पशुकृत्य | ७५-२८ | पात्रीव | ५९-४ | पांसुर | २४७-१८ |
| पश्य | २७-१४ | पाद | १५३-१४ | पांसुल | "-" |
| पश्यत | २६-२० | पादी | ४४-२७ | प्याट् | ९-२७ |
| पाक | २२०-९ | पादाली | ७६-१८ | पिङ्गर | १४९-२४ |
| पातक | ६३-७ | पादातिक | १३२-१५ | पिङ्गल | "-" |
| पाङ्क | १२०-३ | पादिका | १२४-२० | पिङ्ग | २३२-१७ |
| पाट् | १५-१४ | पानक | १२३-१६ | पिङ्गलक | ३३-१४ |
| पाठेय | १९५-१५ | पाप | ८९-२३ | पिङ्गल | ४७-२१ |
| पानक | १२३-२१ | पामन् | २३४-१५ | पिङ्गलमाण्डव्य | ६९-२२ |
| पाणिमण्डल | ११३-१७ | पास्पिकृत्य | ७६-१४ | पिङ्गलागिरि | ९९-४ |
| पाणिपञ्चव | ८४-४ | पास्पालीकृत्य | "-१६ | विचण्ड | २३२-५ |
| पाणिपद्म | "-" | पात्रेसमिता | ८०-११ | पिच्छ | "-३ |
| पाणिनीयरौढीय | ६९-११ | पाल्लेवहुला | ८१-२ | पिञ्जूर | १५३-२४ |
| पाणिगृहीती | ७१-१२ | पापसम | ७३-१३ | पिञ्जूलक | ३३-२० |
| पाणिवज्र | ७२-१ | पार | ५६-१६ | पिट | १२९-७ |
| पाणिदण्ड | ७१-२६ | पारकर | १०४-८ | पिटक | ५४-२१ |
| पाशहस्त | ७२-२ | पारस्कर | "-" | पिठरी | ४४-१ |
| पाण्टी | ४२-१ | पारस्त्रैण्य | १११-२० | पिण्डफला | ४०-१ |
| पाठा | १८७-१२ | पारलौकिक | ११२-९ | पिण्डीजङ्घ | ३१-२ |
| पाण्डु | २२०-४ | पाण्डी | ४२-१ | पिण्डी | ४२-६ |
| पाथेय | १९५-२२ | पाण्डुघृतराष्ट्र | ६८-११ | पिण्डिशूर | ८१-१७ |
| पाद | १९७-१९ | पाण्डु | १४२-२० | पिण्ड्याक | ६३-२१ |
| पाद | २०४-२७ | पाण्डु | २३९-४ | पिचण्ड | १९७-२४ |
| पाद | २१३-९ | पाण्डव | १४४-१२ | पितृदेवता | २११-२२ |
| पारायण | २०७-१४ | पारिमाण्डल्य | ११३-१० | पितृ | २३७-२६ |
| पाद | १८०-१५ | पारी | १०-६ | पितृक | १९१-१० |
| पादस्वेद | २१४-१४ | पाश्व | २३३-१० | पिप्पल | २०२-१५ |
| पादस्वेदन | २१४-१४ | पाश्व | ५९-४ | पिशाच | १९७-२१ |
| पामा | १८७-१२ | पाश्वतस् | १२२-२५ | पिशाच | १३४-१२ |
| पाषा | १८७-११ | पाश्वतस् | १८९-२ | पिप्पल | १८०-२५ |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|--------------|--------|
| पिप्पली मूल | १८१-७ | पीततैल | ७०-२५ | पुष्य | २४४-५ |
| पिचुक | १८१-८ | पीनमद्य | ७-२६ | पुष्कर | १८८-५ |
| पिटक | २१३-२३ | पीतदधि | ७१-२२ | पुष्करसद | १३६-२६ |
| पिटक | १४०-१२ | पीतविष | ७-२३ | पुङ्ख | ५४-४ |
| पिटाक | ७-७ | पीतक | १२८-२४ | पुच्छ | ५५-२६ |
| पिष्ट | १४०-१७ | पीत्वास्थिरक | ८७-२६ | पुण्डुक | १२५-१२ |
| पिटाक | २१३-२५ | पीनी | ५१-५ | पुण्यसन | ७२-२२ |
| पितृमत् | १४०-११ | पुक | १७९-१७ | पुण्य | १२९-८ |
| पितृमत्तु | ७-७ | पुटकं | २३७-१२ | पुत्र | १५२-१८ |
| पिण्ड | ७-७ | पुट | १७९-१४ | पुत्र ० | १२९-१९ |
| पितरिशूर | ८२-२३ | पुट | १५४-६ | पुत्रजात | ७०-२४ |
| पितमह | १०८-१४ | पुटक | १२८-२३ | पुत्रप्रौत्र | ९२-१९ |
| पितामही | ४२-१० | पुटी | ४२-२ | पुत्रपती | ६६-९ |
| पितापुत्री | ९१-१७ | पुण्यहाहवाचन | २१०-१ | पुत्रपशू | ६७-८ |
| पित्त | २३३-६ | पुतचाल | २१३-१३ | पुत्राध्यापक | ७८-१९ |
| पिनाक | ५३-१८ | पुत्र | २३७-२६ | पुत्र | ४३-५ |
| पिपास | २१७-१९ | पुनरुक्त | २०१-१५ | पुनः | १८-४ |
| पिप्पली | ४४-२ | पुनरुक्त | १८४-७ | पुनःपुनर् | २२३-२३ |
| पिप्पका | ५२-८ | पुरण | २४४-२ | पुनर्भूः | १५२-१९ |
| पिशङ्गी | ४३-२३ | पुराण | १८३-१० | पुनाग | ८५-१९ |
| पिशुन | २३७-१ | पुरगा | ९८-२३ | पुरार | १७६-१४ |
| पिशाच | १००-११ | पुरीष | २१८-३ | पुर | ५७-२४ |
| पिष्टमोदक | ७९-११ | पुरुष | २४७-१५ | पुर | २१-२० |
| पिष्ट | ३२-२० | पुरोहा | २१६-१४ | पुरस् | १४-१२ |
| पिष्टका | १२४-२० | पुरोद् | २१६-१४ | पुरस्तात् | १४-१७ |
| पिष्टातक | १३०-४ | पुल | १७९-४ | पुरतः | २०-६ |
| पीडा | १८०-१९ | पुल | २३५-१८ | पुरगावण | ९८-२३ |
| पीडा | २४९-८ | पुलिङ्ग | १८२-१२ | पुरःस्य | २२२-३ |
| पीमूल | १७८-१४ | पुलुष | २४७-१५ | पुरा | ९-१७ |
| पीलु | २०५-५ | पुष्य | २०५-८ | पुरागा | ९-१९ |
| पीलुमूल | २०९-३ | पुष्य | २१७-१८ | पुरागा | ४८-२६ |
| पीला | १४०-१८ | पुष्य | २०५-२ | पुरुषव्याघ्र | ८४-१ |
| पीतपृत्त | ७०-१८ | पुष्कर | २३७-६ | पुरुमहिय | ७-७ |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|------------------|--------|
| पुरुपत्तु | ८४-१ | पूली | ४६-२६ | प्रतित्यद् | ९५-१० |
| पुरुपकुञ्जर | "-२ | पूर्यते | १७-११ | प्रतिदिश | "-" |
| पुरुपवराह | "-" | पूर्व | २८-२४ | प्रतिपथ | "-११ |
| पुरुपवृषभ | "-" | पूर्व | ५९-५ | प्रतिष्कश | १०४-११ |
| पुरुपवर्ष | ८४-४ | पूर्व | "-५ | प्रतिकश | "-१४ |
| पुरुपवर्ष | "-" | पूर्त | २२९-२४ | प्रतिष्णिका | १०८-१९ |
| पुरुपहस्ती | "-५ | पूल | ५९-१५ | प्रतिकूल | २२३-२२ |
| पुरुपवृक | "-८ | पूजक | १२८-२३ | प्रतिभू | "-२३ |
| पुरुपवृष | "-१० | पूलासकुराड | ६७-९ | प्रतिहृत् | २२८-१२ |
| पुरुपसिंह | ८५-२० | पेट | ५४-२४ | प्रत्यक्ष | ९५-१६ |
| पुरुपोद्दा | ८६-१ | पेश | २३३-७ | प्रत्यनडुह | "-१४ |
| पुरोहित | १४२-१२ | पैठसर्प | १११-१० | प्रचार | २१८-१५ |
| पुरोडाश | १०२-१४ | पैङ्गलोदायनि | ११५-७ | प्रजापति | २१५-९ |
| पुरोहित | २२४-२० | पैल | ११४-२२ | प्रजावती | "-१० |
| पुलिन | ५५-२२ | पैशाच | ११७-१८ | प्रणय | २३६-२६ |
| पुलिभवती | ९९-१९ | पोटा | २४५-१५ | प्रतिजन | १९८-" |
| पुष्कला | ४४-५ | पौराडरीक | १३१-१५ | प्रतिपत् | २४८-३ |
| पुष्कली | ४७-१९ | पौष्यः | ११५-२६ | प्रतिपत् | १९७-११ |
| पुष्पक | १२०-१८ | पौर्णमासी | १९७-१३ | प्रतिबिम्ब | २१८-९२ |
| पुष्पक | १२८-१ | प्रकट | २२३-५ | प्रतिश्रुत् | २४८-५ |
| पुस्तम् | ६३-२२ | प्रकाश | "-१२ | प्रतीप | २४६-१७ |
| पूग | १९९-२२ | प्रज्ञा | २३२-७ | प्रद्युम्न | १३७-२७ |
| पूर्णाकाल | १९२-२२ | प्रज्ञा | १७६-१९ | प्रतीप | २३६-२६ |
| पूतर | १९२-२२ | प्रतिबोध | १५२-९ | प्रत्यय | २१८-२२ |
| पूप | २०६-२२ | प्रतिकियत | ९५-६ | प्रतूर्ण | २४१-८ |
| पूर्वपद | १८५-५ | प्रतियद् | "-" | प्रथम | २२२-७ |
| पूर्वपक्ष | १८९-२३ | प्रतिदूश | "-" | प्रद्युम्नाभिगमन | २०३-१५ |
| पूतयव | ७३-४ | प्रतिविद् | "-७ | प्रयास | २३५-९ |
| पूतयव | "-५ | प्रतिदिव | "-८ | प्रपापूरण | २०९-२६ |
| पूरुषः | १०१-११ | प्रतिदिव | "-८ | प्ररोहण | २०९-२२ |
| पूयमानयव | ७३-५ | प्रतिद्यव | "-" | प्ररोह | २१६-११ |
| पूयी | ४६-२१ | प्रतिविश | "-९ | प्रवास | १९८-८ |
| | | प्रतिमनस | "-" | प्रवास | २०८-१३ |

| | | | | | |
|---------------|--------|----------------|--------|----------------|--------|
| प्रभूत | २१२-१६ | प्रथम् | ७२-१६ | प्रान्तम् | ७२-२५ |
| प्रवेशन | २०९-२ | प्रशान् | २२-२२ | प्राधान्य | १२२-१२ |
| प्रलेपिका | २१५-८ | प्रशास्त्र | २२६-९ | प्रायः | १९-१ |
| प्रस्थ | १९१-६ | प्रविक | २२४-२३ | प्रायश्चित | १०१-९ |
| प्रस्थक | ॥-॥ | प्रष्टक | १२९-२ | प्रायश्चित्तिः | १०२-३ |
| प्रावृष | १४१-४ | प्रसह्य | २०-९ | प्रायोगिक | ११२-१० |
| प्राशिता | १०८-६ | प्रस्कषव | १०४-१७ | सु | १५०-१३ |
| स्रग्वा | १४५-११ | प्रहाणकलित | ७१-२५ | प्रिय | २१९-१० |
| प्रसादारोहण | १०९-१६ | प्रहितनरक | ३५-१७ | प्रियक | १५६-९ |
| प्रयोग | २११-११ | प्रहसनेकृत्य | ७७-१ | प्रियगुड | ७०-१४ |
| प्रकामम् | १८-७ | प्रहत | १५३-१३ | प्रियविश्वं | ॥-॥ |
| प्रचेतोरजन् | २६-२६ | प्राकृत | ११८-२२ | पियाद्वि | ॥-२० |
| प्रचेताराजन् | ॥-॥ | प्राकारसर्दी | १३६-२७ | प्रियमधुक | ९५-२६ |
| प्रतपने | ७७-७ | प्रचय | १५४-१२ | प्रियदधिक | ९६-३ |
| प्रकर्ष | २११-१० | प्राजरुहाकृत्य | ७७-२५ | प्रियपयस्क | ॥-६ |
| प्रतान | ३३-३ | प्रान्तपुष्पा | ४०-४ | प्रियपुस्क | ॥-॥ |
| प्रत्यवरोहिणी | ४७-११ | प्रादृत | १५४-७ | पियनौकः | ॥-७ |
| प्रतिलोम | ३४-३ | प्राकपुष्पा | ४०-४ | प्रियलक्ष्मीक | ॥-॥ |
| प्रथम | १८४-९ | प्राज्ञ | ११७-१४ | प्रियरूप | २२८-२६ |
| प्रथमगुण | ॥-॥ | प्राज्ञे | ९-१ | प्रियानहुक्त | ९६-६ |
| प्रदक्षिणम् | ७३-१४ | प्राग्रामात् | १५-१० | प्रियासचिव | ९८-१ |
| प्रमृग | ॥-१६ | प्राज्ञम् | ७२-२१ | प्रियावासन | ॥-॥ |
| प्रमाणत | १२२-२५ | प्राटाहति | ११७-६ | प्रियाक्षान्त | ॥-॥ |
| प्रग्रीष | ५८-१६ | प्राडाहति | ॥-॥ | प्रियारक्षान्त | ॥-२ |
| प्रकृत्य | १५-१६ | प्राण | १४९-५ | प्रियाचपल | ॥-॥ |
| प्रगे | ७-१२ | प्राठर् | १८-१५ | प्रियानिचित | ॥-॥ |
| प्रत्युत | ६-१ | प्रातिभाव्य | ११३-८ | प्रियावाम | ॥-॥ |
| प्रबाहुकम् | २२-९ | प्रतिभव | ॥-१७ | प्रीणितकट | ७१-१७ |
| प्रतिसर | ५६-७ | प्रातिभ | १२०-४ | प्रेषण | ११३-७ |
| प्रवाल | ५७-२७ | प्रादुस् | १९-१४ | प्रेषण | २११-१२ |
| प्रवर | ६२-२० | प्रादुस् | ७६-७ | प्रेषण | ॥-॥ |
| प्रवर्योपमदी | ९१-१३ | प्रादुष्कृत्य | ७८-३ | | |
| प्रयुत | ५५-११ | प्रादोहनि | ११६-२७ | | |

| | | | | | |
|---------------|--------|------------------|--------|-------------|--------|
| पेशिका | ११५-१५ | फलक | १७९-१९ | वर्बर | २०४-३ |
| प्रेक्षा | १७९-१० | फलक | ५५-१४ | वर्बर | १७८-१५ |
| प्रेहिस्वागता | ७-१४ | फलीकृत्य | ७-७ | वल | २३५-६ |
| प्रोहित | ९-६४४ | फलीकृत्य | ७५-२० | वल | ७-६ |
| प्रेहिवाणिजा | ८७-१२ | फलूकृत्य | ७-२५ | वल | १७९-४ |
| प्रोथ | १५५-२१ | फाला | ५१-८ | वल | ५८-१४ |
| प्रोष्ठ | १४-११ | फाली | ७-६ | बलय | ६१-३ |
| प्रोष्ठिक | ७-१३ | फेन | २३२-७ | वलवत् | १९-१३ |
| प्रोहकपर्दा | ८८-१४ | फेन | २३३-१५ | वलाका | २३५-७ |
| प्रोहकटा | ७-२५ | फेन | २४५-५ | वलाका | ७-५ |
| प्रोहकर्दमा | ९०-१६ | वक | १४९-२ | वलाहक | १०१-१५ |
| प्रोह्यपदि | ७-२५ | वकनखगुदपरिगृह्णा | ३५-१३ | वलाका | १३८-११ |
| पृच्छा | २४८-२३ | वठरछान्दस | ७०-१ | वलात् | २३-८ |
| पृथु | २१९-१९ | वकुल | २१८-१ | वत्त्वज | १७७-२ |
| पृथुक | २०६-१८ | बडवा | ४०५-५ | वत्त्वजभार | २१०-२६ |
| पृष्ठ | २०५-१ | बत | १०-१६ | वत्त्वज | २११-२ |
| पृथ्वीरुह | २५१-११ | बदर | २०५-३९ | वलीवर्द | १४६-१० |
| पृथा | १४२-१८ | बदर | १४९-१४ | वलीवर्द | १००-२१ |
| पृथक् | २३-४ | बध्योग | ११३-१ | वस्त | १५३-२४ |
| पृथोर्जककुभ | ३६-४ | बन्दी | ४७-१८ | बह्यस्क | १५२-८ |
| पृथिवी | ४५-२ | बन्धु | २३९-६ | बह्लीक | १३४-११ |
| पृथिवीप्रशवण | ८०-९ | बन्धुमित्र | २१२-१ | बर्हवत् | २४०-१५ |
| पृथिवीविदित | ७-७ | बन्धुका | १७९-१६ | बह्री | ४९-३ |
| पृथु | २३२-१५ | बध्योग | १५२-१४ | बहिः | १८-८ |
| पृदाकु | १५२-९ | बधिरक | ३५-२२ | बहिर्योग | २९-२४ |
| पृषोदर | १००-५ | बधिर | २४१-१२ | बहिर्योग | ३१-१७ |
| पृषोद्धान | ७-२० | बन्धा | १४८-१४ | बहु | ६०-७ |
| फट् | १३-३ | बन्धका | ४५-१८ | बहुभाषिन् | २२३-२३ |
| फल | २१८-११ | बन्धकी | १४४-२२ | बहु | २२०-१० |
| फल | २३५-६ | बन्धु | २३४-११ | बहुल | २२०-१३ |
| फल | १७९-४ | वरटी | ४२-७ | बहुल | २२९-११ |
| फल | १८१-६ | वर्वरी | ४७-१६ | बहुसर्पिष्क | ९५-२६ |
| फल | ५९-१० | वर्वर | १९२-२५ | बहुपयस् | ९६-८ |

| | | | | | |
|--------------|--------|--------------|--------|----------------|--------|
| बहुतन्त्री | ९६-१८ | विस | १७८-१९ | ब्रह्मवर्चस् | २१०-१९ |
| बहुतन्त्रीक | "-" | विस | १८०-१२ | ब्रह्मगुप्त | १३५-८ |
| बहुतर्द | ११८-२१ | विसाङ्कुर | ५७-२४ | ब्रह्मगुप्त | १४२-४ |
| बाहु | १७७-१२ | विन्दु | ३६-१३ | ब्रह्मगुप्त | १३५-८ |
| बान्धव | ११८-९ | बीज | १४४-१० | ब्रह्मदत्ता | १४९-१३ |
| बान्धकि | ११६-७ | बीजाश्व | "-११ | ब्रह्मकत | १४५-१९ |
| बाहुकि | "-१८ | बीजरुहा | ७६-२७ | ब्रह्मप्रजापति | ९१-२२ |
| बाणम् | ५४-१४ | बीजर्योक्त्य | ७७-५ | ब्रह्मचारिन् | २२६-१८ |
| बाभ्रवी | ५१-१६ | बीज | २३२-१७ | ब्रह्मन् | २१३-२४ |
| बारबाणम् | ५४-२६ | बीज | १७७-२२ | ब्राह्मण | २२२-२ |
| बाल | १४८-१० | बीज | २०६-७ | ब्राह्मण | २०२-५ |
| बालशिशु | "-" | बुक | १७९-१७ | ब्राह्मण | २०२-२४ |
| बाला | "-" | बुभुक्षा | २१६-२४ | ब्राह्मण | १८५-३ |
| बाल | ५७-१० | बुध | ५७-२३ | ब्राह्मण | १५०-५ |
| बालवृद्ध | ९३-९ | बुध | १७८-४ | ब्राह्मण | १११-७ |
| बाला | ३८-१६ | बृहत् | १२३-२५ | ब्राह्मणयाजक | ७८-१४ |
| बाल | २२४-१३ | बृहत् | १२५-१२ | ब्राह्मणतुर्य | "-२१ |
| बाभ्रव्यायणी | ५१-१६ | बृहती | "-" | ब्राह्मणमत | ८४-२० |
| बाल | २२१-४ | बृहतीका | १२९-२३ | ब्राह्मणचेल | ८६-१९ |
| बालिश | १४९-२३ | बृहतीकार | १३९-१९ | ब्राह्मणजालम | "-" |
| बालिश | २२२-२ | बृहस्पति | १००-१५ | ब्राह्म | १११-५ |
| बाहीक | १९३-१५ | बृसी | ४५-२४ | ब्रूहि | १६-१८ |
| बाहु | १३६-२५ | बृसी | १०३-२ | भङ्गा | २१०-२२ |
| बाहुकीट | १८३-२० | ब्रैत्य | १५३-९ | भङ्गी | ४२-२५ |
| विचर्चिका | २३३-२२ | ब्रैत्वयत | ३७-१४ | भगल | १७५-२१ |
| विन्दु | १५६-४ | ब्रैत्वकी | ११५-२७ | भक्षाली | १९६-४ |
| विस्व | १४८-१८ | ब्रैजवापि | १३५-२ | भक्षितपलाशुहु | ७१-११ |
| वित्त्व | १७५-११ | ब्रैजवापि | २०५-१५ | भक्षादी | १९६-५ |
| विस | २२०-१६ | ब्रैज्य | १८९-९ | भक्षा | २१६-१८ |
| विहाल | १०१-१४ | ब्रैन्दवि | १३४-२० | भगन्दर | ६२-१३ |
| विस्वा | ४१-२६ | बोघ | २०४-१८ | भग | ६४-११ |
| विस्वी | ४१-२६ | ब्रध | १५६-१९ | भगला | १३८-२२ |
| विल | १७९-४ | ब्रह्म | ६१-१६ | भगी | ५-६ |

| | | | | | |
|------------|---------|-------------|--------|---------------|--------|
| भञ्जन | १८८-१९६ | भवतु | २७-७ | भारत | ८४-१९ |
| भञ्जनागिरि | ८८-२४ | भव्यासनोच्च | ८७-२४ | भास्कर | २५-७ |
| भण्डित | १५४-३ | भर्ग | १३६-५ | भास्त्र | १७५-१७ |
| भण्डिल | १५४-३ | भर्त्त | १३४-८ | भाष्यवर्तक | ७८-१९ |
| भण्डिल | १५४-३ | भर्त्तु | १४०-१९ | भिक्षा | २१७-१९ |
| भण्डित | १५९-१५ | भर्ग | १५४-१४ | भिक्षा | १६४-५ |
| भण्डित | १५४-६ | भद्र | २४५-७ | भिक्षुकी | ४६-५ |
| भण्डित | १५९-२६ | भक्षकीय | १६२-१० | भिक्षु | १२९-४ |
| भण्डिति | २४७-२ | भव्यभाला | ४१-३ | भिक्षुकदाक्षि | ६९-२३ |
| भण्डित | ३३-४ | भस्त | ६३-२१ | भिक्षुक | १६४-१९ |
| भरट | २१४-५ | भस्त्राफला | ४०-१ | भिक्षुक | २१४-२४ |
| भरग | २१४-४ | भस्त्रा | १८१-८ | भिक्षुक | २४८-१४ |
| भर | २५०-६ | भस्त्रा | २१४-३ | भित् | २-२२ |
| भर | २१८-४ | भस्मसात् | १५-११ | भिद्वा | ९०-११ |
| भरग | २४४-१ | भस्मसू | १४-२२ | भिन्दिलवशा | २४२-१५ |
| भरत | १६२-२० | भष | २५०-११ | भिषज | १५-१० |
| भरत | १३४-८ | भषी | ४२-२२ | भिषा | १५९-१५ |
| भरत | १३४-१७ | भारत | २०७-१२ | भिषणज् | २४३-१३ |
| भरत | २४४-१४ | भाजन | १५५-२६ | भिष्याज | १६०-३ |
| भरतर्षभ | ८५-२० | भाण्डा | १८८-१६ | भी | २४८-११ |
| भद्राकृत्य | ७७-९ | भागवतीभागवत | ८३-३ | भीम | १२७-५ |
| भरद्वाज | १५५-४ | भाजन | ३६-१५ | भीमसेनार्जुन | ६९-१४ |
| भरद्वाज | १५६-९ | भाजा | ४९-२३ | भीमार्जुन | ८१-१७ |
| भरभ | १४५-१० | भाजी | ४९-२३ | भीरुमान | १०८-२२ |
| भरुजा | ४८-३ | भाण | १४-४ | भीष्मद्रोण | ६९-२ |
| भरुजी | २-४ | भानु | २३०-२२ | भुक्तासुहित | ८८-१७ |
| भवति | १७-२ | भारत | १४४-१४ | भुरग | २४२-११ |
| भवतु | २-१३ | भारम | १४५-१० | भुवन | ६३-७ |
| भघन | ६३-१३ | भारद्भि | १९२-२५ | भुव | २३४-१२ |
| भलन्दन | ३१-३ | भारुजिक | १३-२४ | भुः | २४८-१० |
| भलन्दन | १७५-८ | भार्यापति | ६८-२ | भूर्ज | ६४-१२ |
| भलन्दन | १४२-९ | भार्योद | ७०-१८ | भूत | ५५-११ |
| भल | १७१-६ | भाष | ६३-१८ | भूतनिराकृत | ८४-२६ |

| | | | | | |
|--------------|--------|--------------|--------|------------|--------|
| भूमि | २०२-१४ | भौलिकी | ४७-९ | मठ | ५५-१० |
| भूमि | १४१-१८ | भौरिकी | ४७-१६ | मठिका | १२५-२ |
| भूरि | ७-२५ | भौलिकि | १४८-१८ | मठी | ४४-१० |
| भूमत्तृ | ७८-१८ | भौलिकिविध | १६९-१४ | मडार | १७१-२२ |
| भूयस् | १८-१४ | अंशकलाकृत्य | ७४-२५ | मगडली | ४२-२१ |
| भूयस्क | १३०-३ | अमर | १०१-१८ | मगडल | ५७-२४ |
| भूयस् | १३८-२६ | अमरक | १२९-२५ | मगड | ५४-२० |
| भूर्भुवस् | २०-१ | अमर | १२६-११ | मगडर | २४७-११ |
| भूषण | २४९-१४ | अमरक | १२६-११ | मगडप | ५४-१४ |
| भूषण | ५४-१५ | अष्टका | ३४-१९ | मगडल | २४-११ |
| भू | २०४-२८ | अष्टककपिष्ठल | ३५-१८ | मगडकी | ४२-२१ |
| भृगु | ७-८ | आवृ | २२६-९ | मगडपिका | १२५-३ |
| भृङ्गी | ४५-३ | आवृ | २३७-२५ | मगडु | १५७-१९ |
| भृतक | १२९-९ | आलुषपुत्रः | २५-७ | मणि | २३३-१ |
| भृति | २१३-९ | मङ्गल | १५८-१९ | मणि | २३५-२४ |
| भृश | २२१-१५ | मङ्गल | १८-२४ | मणिक | १२१-१० |
| भृश | २४४-२६ | मकर | १७२-२५ | मणिक | १२१-१० |
| भृष्टलुञ्जित | ६५-८ | मकष्ट | १४५-१७ | मणिपाली | १४७-११ |
| भेद | २११-९ | मक्षिका | २३१-२१ | मणिपाली | २१५-७ |
| भेषज | १२१-१६ | मङ्गव | ७-७ | मत | १७७-१५ |
| भोस् | ५-६ | मङ्गल | ५९-११ | मति | १४०-५ |
| भोगावती | ९९-१३ | मङ्गव | १४१-२ | मतुवर्ष | १८९-२५ |
| भोज | ३७-१५ | मगदी | १७२-३ | मत्स्य | १२७-१९ |
| भोजंभोजम् | १५-१४ | मगघ | १८९-२३ | मत्सी | ४२-२७ |
| भौजि | १८९-९ | मगघ | २४२-२१ | मत्स्यक | १२८-२ |
| भौरिकिविध | १६९-१४ | मघष्टु | १४५-२० | मधि | २४७-४ |
| भौरिकि | १४८-१९ | मञ्जुक | ५४-२४ | भेद | २४५-७ |
| भौरिकि | ३७-२० | मञ्जुरी | २१७-१९ | मदाघ | ३४-११ |
| भौलिकि | ७-२१ | मञ्जुरी | ४५-११ | मदि | २४९-१४ |
| भौलिङ्गि | ४७-४ | मञ्जीर | ६४-३ | मद्यपीत | ७०-२६ |
| भौलिङ्गी | ११५-१२ | मञ्जीरक | १४१-२३ | मद्रस्यला | १९-६ |
| भौलिङ्गी | ४७-४ | मञ्जु | २३२-१८ | मद्रकूल | १९६-३ |
| | | मटर | १५२-६ | मद्रशर्मन् | १३८-९ |

| | | | | | |
|------------|--------|-----------------|--------|-----------|--------|
| मध्य | १९१-७ | मनस् | २१-५ | मरुत् | २४०-१३ |
| मध्य | ५७२-२० | मन्वर्थे | १८९-२५ | मरुत् | १८०-३ |
| मध्या | ३९-१ | मनायी | १५७-१७ | मरुत् | १३४-१३ |
| मध्यसा | ३९-३ | मनीषा | २३५-८ | मर्मर | ६२-३ |
| मध्यस्थ | २२२-३ | मनीषी | १०२-१ | मर्यादा | ९६-८ |
| मध्यम | ६१-१२ | मनीषित | १०१-२० | मल | ५७-१० |
| मध्यमिका | १९१-७ | मनु | १५९-८ | मलिन | १७२-७ |
| मध्यमक | १९१-८ | मनुष्य | १६५-११ | मसमसा | ७५-१८ |
| मध्यतस् | १२२-२४ | मनुष्यी | ४३-१७ | मसुरकर्ण | १४१-१४ |
| मध्यमा | १४६-१३ | मनुषी | ४३-१८ | मसूर | १६६-४ |
| मध्या | १४६-७ | मनुवृद्ध | ७०-५ | मसुरकर्ण | ३३-२४ |
| मध्येगुरु | ७१-२ | मनोज्ञ | २२८-२१ | मस्कर | १०५-२ |
| मध्येगुरु | ८०-९ | मन्मथ | १०२-२० | मस्करी | १७४-२६ |
| मधु | १८०-१ | मन्तु | १५७-१७ | मस्तक | १२४-९ |
| मधु | २०२-२० | मन्तु | १४२-१७ | मस्मसा | ७५-२० |
| मधु | १७४-२३ | मन्द | २४५-५ | महस् | १७९-१४ |
| मधु | २३०-२२ | मन्द | १४४-१३ | महत् | १६२-२८ |
| मधु | २३९-४ | मन्द | २२१-१४ | महत् | २२०-६ |
| मधु | १०८-९ | मन्द | ७८-१८ | महत्क | १२५-१२ |
| मधु | ५३-११ | मन्त्रमित | ८४-२० | महाजन | १९८-२७ |
| मधु | १५९-२० | मन्त्रि | २५०-१७ | महापुत्र | १७४-१ |
| मधुक | १२५-१३ | मन्त्रणार्ह | ८३०-२३ | महाचित्त | १७४-२ |
| मधुर | २२१-९ | मन्दार | १७८-२० | महाराज | २२३-८ |
| मधुपर्क | २११-२१ | मन्त्र | २१६-२१ | महाव्रत | २१०-८ |
| मधुकर्ण | १७४-२२ | मन्त्रित | १५२-१३ | महानाम्नि | २१०-११ |
| मधुमत् | २०४-२ | मन्त्रे | १७-३ | महानस | १६२-२० |
| मधुमान् | १९४-१५ | मम | २४५-२४ | महानद | ६२-१२ |
| मधुर | १७४-१८ | मम | ८-१९ | महित | १५८-२० |
| मधुसर्पिस् | ६९-२ | मयूरगड | ९८-१४ | महाप्रयाण | १६२-२५ |
| मधुसर्पिस् | ९१-७ | मयूरगड | ९८-१४ | महाप्राण | १६२-२५ |
| मधुसूदन | २४९-२१ | मयूर | १०२-२७ | महिलापाद | ९३-१७ |
| मनस् | १६०-३ | मयूरव्यंसक | ८७-१ | महाशूद्री | ३९-२६ |
| | | मयूरव्यंसकप्रिय | ९०-२८ | महित्री | २४०-१३ |

| | | | | | |
|----------------|--------|--------------|--------|------------------|--------|
| सहित | १६२-१२ | साधव | ११८-१० | सांस | १९८-७ |
| सहित्थ | १०३-२ | सानस | ११८-१२ | सांस | २३२-१७ |
| सही | १८७-१४ | सान | ६१-१५ | सांसशोषित | ९३-८ |
| सहिष | १०१-१२ | सान | ७१-१५ | सांस | २०८-१२ |
| सहीङ् | २४२-२२ | सान | २३५-८ | सांसौदन | २०८-१३ |
| सहिमत | १६२-२३ | सानकस्थली | १९६-९ | सांसौदन | १९८-६ |
| सहिषी | २१५-६ | सानव्यायनी | ५१-१८ | मित्रयव | ३१-२३ |
| सही | २२०-१३ | सानाध्यायनी | ५१-२४ | मित्र | १९५-१० |
| सही | ४२-१० | सानस्थली | १९६-९ | मित्र | १९९-२३ |
| सहीध्र | २५१-१० | सानुष | २२३-१४ | मित्र | १४९-३ |
| सा | ९-९ | सान्तव्यायनी | ५१-२० | मित्रयु | १५२-७ |
| साङ् | ९-९ | साया | १८७-१२ | मित्रयु | १४७-१ |
| साङ्क्षव्यायणी | ५१-२१ | सारुत | ११७-१९ | मित्रयु | ३१-२३ |
| साङ्खव्यायनी | ५१-२७ | साल | २३५-७ | मित्रावरुण | ९१-१८ |
| साकि | ९-२ | सालक | ६२-३ | मिथुन | २२६-१८ |
| साठर | १९५-२३ | सालव | १६९-२ | मिथुन | २०-१५ |
| साठरा | १५२-६ | सालती | ४२-११ | मिथ्याकृत्य | ७७-२६ |
| साणव | २२२-१२ | साला | २३७-१ | मिथु | ५२-२६ |
| साण्डव्यायनी | ५१-१९ | साल्वा | १८७-१५ | मिथ्या | २०-११ |
| साण्डलिक | १३२-३ | साल्य | १२१-१५ | मिथस् | २१-८ |
| साण्डव्यपिङ्गल | ६९-२२ | सावा | १८७-१२ | मिमत | १४९-१३ |
| साण्टिकुरट | ६९-२५ | साशब्द | २१२-१९ | मिप्रकावण | ९८-२२ |
| साण्डरिक | १३१-२८ | साषादन | १९५-९ | मीन | १७०-२४ |
| साची | ४४-२६ | साषशराखिन् | १३८-२० | मीमांसा | १८६-४ |
| साजिरक | १४१-२३ | साषस्थली | १९६-८ | मीमांसकदुर्दुरुट | ८६-१५ |
| सातरिपुरुष | ८२-२१ | साप | ५८-२० | मुकयी | ४३-४ |
| सातरिश्वन् | २४१-१६ | साषोण | १०९-८ | मुकुर | २४७-२० |
| साट | ४०-११ | सास | ५८-१७ | मुकुर | २१८-१ |
| सातामही | ४२-१० | सासजाता | ७०-१२ | मुकुर | २१८-१ |
| सातृक | १९१-१० | सासक्षपण | २०७-१४ | मुकुल | २३५-८ |
| सातापितृ | ८१-१८ | साहकस्थली | १९६-८ | मुकुल | ५८-२६ |
| सात्रायाम् | ८-१८ | सापोन | ७-९ | मुकुल | १४७-२० |
| सादित | १७२-१२ | सांसी | ४६-११ | मुक्ता | १३२-१६ |

| | | | | | |
|---------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| मुक्ति | १८६-१६ | मुसल | १०६-३ | मुषिक | ५६-२१ |
| मुख | २३९-९ | मुसल | ५१-२६ | मुषिका | १३७-२१ |
| मुख | २००-२ | मुसली | ४७-२१ | मुषी | ४९-२ |
| मुख | ५६-८ | मुसल | २०६-२२ | मुकरण्ड | १४४-२४ |
| मुख | १३०-१३ | मुसक | २६९-७ | मुकरण्डु | १४४-२४ |
| मुख | २०५-१ | मुहमहुम | २२-१६ | मुगपद | ९८-१४ |
| मुखचन्द्र | ८४-३ | मुहः | २२-१६ | मुगक्षीर | ९८-१३ |
| मुखतम् | २-२४ | मुहूर्त | २०१-१७ | मुगचपला | ९८-१५ |
| मुखपुण्डरीक | ८४-३ | मुहूर्त | १८४-२२ | मुगावती | ९९-१२ |
| मुखतम् | १९०-५ | मुहूर्त | ६२-२१ | मुगीपद | ९८-१५ |
| मुञ्ज | | मुर्च्छा | २४६-६ | मुगीचपला | ९८-१५ |
| मुञ्ज | १४९-३ | मुर्च्छा | २३१-११ | मुगीक्षीर | ९८-१३ |
| मुण्डसम्भावित | ८४-२० | मुर्च्छा | २१८-२० | मुजा | २४८-२३ |
| मुत् | २४८-९ | मुढ | १४०-१९ | मुणाल | २३७-११ |
| मुद्गल | १५९-१६ | मुति | २४८-१६ | मुणाली | ५७-२३ |
| मुद्रिका | १२४-१९ | मुत्रपुरीष | ९२-२२ | मुणामुजा | ५-७ |
| मुद्रा | २१७-२५ | मुत्रशक्त | ९३-२ | मुणाल | १०२-२६ |
| मुनि | १४१-१३ | मुत्र | २१७-३० | मुणाल | ५७-२३ |
| मुनि | २३४-१० | मुत्रशक्त | ६९-१५ | मुत् | २४८-१० |
| मुनिचित्त | १७४-१ | मुल | २४७-१८ | मुदु | १४५-१२ |
| मुनिचित्त | ८६-१७ | मुर | २४७-१८ | मुदु | २३२-१७ |
| मुनिचन्दन | ८४-३ | मुलविभुज | ३५१-९ | मुदु | २२०-६ |
| मुनिस्थल | १७४-२१ | मुल | २२१-९ | मुपा | २१-१४ |
| मुनिखेट | ८६-१४ | मुल | १७४-२३ | मु | ७-१३ |
| मुनिपुङ्गव | ८५-१९ | मुलक | ६३-१२ | मेखला | २३५-८ |
| मुनिप्रदी | ९४-१० | मुलाटी | ४२-८ | मेखला | १०३-३ |
| मुनिधूर्त | ८६-१७ | मुल | २-१८ | मेघ | २११-२० |
| मुनीवती | ९९-११ | मुल | २१-१३ | मेघ | २४५-१४ |
| मुरल | १३५-१७ | मुलभार | २१०-२६ | मेघ | १९९-२३ |
| मुर | १३९-२६ | मुल | ५९-३ | मेघ्य | २०-१३० |
| मुल | २३५-१९ | मुलक | १२४-१८ | मेढ | ६४-४ |
| मुसग | २११-२० | मुषिका | ३८-१४ | मेधी | ४३-२६ |
| मुसल | १५८-२० | मुग | ४९-२ | मेदरिपण्ड | २५-१० |

| | | | | | |
|------------|--------|-----------|--------|----------------|--------|
| मेघ | २५०-८ | यज्ञ | १४८-१२ | यवाम | २३७-१४ |
| मेघा | २४२-९ | यतस् | १२२-२६ | याज्ञकोपाध्याय | ९३-१० |
| मेघा | २४९-४ | यदुत | ४-७ | याज्ञदत्ति | ३०-२७ |
| मेघा | १९९-६२ | यद् | २७-२ | यातृ | १०-१४ |
| मेघा | २०५-२४ | यद् | ११-१३ | याति | १६-२१ |
| मेघा | २११-१९ | यत्र | १०-५ | यातोपयात | २१४-१४ |
| मेघाविन् | २२८-२१ | यथा | १५-१३ | यात | २१४-१४ |
| मेधी | ४३-५ | यथाकषाच | ९-४ | यान | ५५-१६ |
| मेघातपस् | ६९-९ | यथातथ | २२२-२१ | याव | १२८-१० |
| मेघातपस् | ९१-१४ | यथापुर | २२६-२० | याधित् | ६-२१ |
| मेनका | ५२-५ | यथाकान | ५-२१ | युक्तम् | २२-१९ |
| मेघ | २५०-७ | यथात्मन् | २२४-५ | युग | २०५-२५ |
| मेह | २५०-११ | यदा | ६-१० | युग | १६४-१५ |
| मेत्र | १७५-१५ | यदिव | ६-२२ | युग | २११-२१ |
| मोदक | ५४-४ | यदि | ४-६ | युगन्धर | १५०-५ |
| मोदमान | १९१-१९ | यदिनाम | ५-१८ | युगपत् | २२३-२२ |
| मोदन | १८८-१० | यदृच्छा | ८९-१८ | युगपत् | १९-२० |
| मोदन | १९१-१९ | यमल | १७३-३ | युगधरजा | १६४-२३ |
| मौञ्जायन | १३४-२३ | यमसभ | २०३-१६ | युक्ति | २४८-२५ |
| मौनिक | १३२-१ | यवक | १२६-१८ | युधिष्ठिर | १३८-१२ |
| मौद्रल्य | १७६-१२ | यवक्रीत | १८५-१७ | युत् | २४८-९ |
| मौलीन्दुः | ७०-३ | यमष्टु | १४५-१९ | युद्ध | २४५-१९ |
| यका | ५२-४ | यमुन्द | १४७-२६ | युवन् | २२८-२ |
| यकृष्णोमन् | १९३-२२ | यव | २३०-१९ | युवराज | २२४-४ |
| यकृष्णोमन् | १९३-२२ | यव | २३२-६ | युवराज | १९२-१९ |
| यकृन्मेदस् | ९२-२२ | यवनमुग्रह | ८७-१० | युवन् | २२६-६ |
| यच्च | ६-२ | यधास | १६६-२ | युधति | १६४-९ |
| यजमान | २१५-१३ | यशस् | २०९-१५ | युष्मद् | २७-५ |
| यजमान | २२८-७ | यधाम | १७७-२२ | युष्मद् | ४०-१३ |
| यजुस् | १८३-१८ | यधास | १७९-१३ | यूफा | २३३-२१ |
| यश्च | १८३-७ | यश्क | ३०-१३ | यूप | २००-२ |
| यष्टदत्त | १७६-३ | यश्क | १४१-२३ | यूप | ५५-२० |
| यश्च | २०१-१६ | यष्टि | २१५-२३ | यूप | १०१-१९ |

| | | | | | |
|-----------|---------|------------|--------|--------------|--------|
| सूथर | १७०-२२ | रथकार | १३९-२४ | राजपुरुषायशि | ११३-१८ |
| सूधी | ४३-२५ | रथपा | १०४-१० | राजस्थल | १९६-५ |
| सूप | २०६-१४ | रथकार | १३९-२४ | राजपुत्र | १६५-१३ |
| सूधी | ४२-२६ | रथगणक | ७९-३ | राजन्य | १६५-५ |
| सूष | ५६-२० | रथन्तर | १६२-१८ | राजद्वितीय | ७९-५ |
| सूषी | ४२-२६ | रथस्य | १०४-९ | राजन्य | १६८-१७ |
| येन | ७-१४ | रथ | १६५-२० | राजस्नापक | ७८-२० |
| योग | २०८-११ | रथगण | २२७-२५ | राजपरिवेषक | ४८-२३ |
| योध | ५५-२२ | रथकार | १७४-२४ | राजतुरीय | ७८-७ |
| योध | ११८-११० | रथन्तर | १५२-१५ | राजसूय | ५९-२१ |
| यौवन | ५५-१६ | रथीतर | १५२-१५ | राजपथ | १२७-१३ |
| | (२) | रसि | २४९-१८ | राजशाहूल | ८५-१९ |
| रक्षस् | २४०-१४ | रराका | १५८-८ | राजी | २३६-६ |
| रक्षोऽसुर | २४०-१५ | रवण | १४२-१३ | राजप्रौरुष्य | ११३-११ |
| रङ्कु | १९४-८ | रस | ५७-१८ | राजीव | २३७-११ |
| रक्षोघ्न | ११८-२३ | रस | १८५-१४ | रामलक्ष्मण | ९१-७ |
| रक्षोहन् | २४१-१० | रहस् | २००-२ | राम | १३७-८ |
| रक्षोमुख | ३१-९ | रहस् | २०४-१८ | रामायण | २०७-१३ |
| रक्षस् | १३४-११ | रहूगण | १५८-८ | रामोद् | १५३-१४ |
| रघुवृषभ | ८५-१९ | रहोगण | १५८-८ | रावण | ११९-१८ |
| रणप्रखिडत | ७१-२६ | राग | २१८-४ | राशिकल्पित | ८४-२६ |
| रजःकर्णी | २५-१६ | राक्षस | ११७-१९ | रासमकरभ | ६९-७ |
| रजत | १६७-४ | राक्षोऽसुर | २०३-७ | राष्ट्र | ५९-२६ |
| रजत | ६१-२ | राशि | ११४-२६ | राहुचन्द्र | ६९-३ |
| रज्जु | १९४-१४ | राजन् | २०२-२३ | रावणि | ११६-१ |
| रजस् | २३८-६ | राजन् | १९१-३ | रावणि | ११४-२५ |
| रज्जुभार | १२-८ | राजन् | १६५-४ | राहक्षिति | ११५-१ |
| रज्जुकण्ठ | १८२-५ | राजन्वत् | २३१-११ | रायस्पोष | १७५-२२ |
| रण | २५०-६ | राजहंस | ८५-१८ | राष्ट्रपति | १६२-२ |
| रण | ५४-१६ | राजगृह | १९६-५ | राहवि | ११४-२४ |
| रण | २१३-२ | राजदन्त | ६४-१६ | रिक्त | १२९-२४ |
| रण | २४७-२ | राजद्वितीय | ७१-५ | रिक्षा | २४७-१५ |
| रणपथ | १२७-१४ | राजपुरुष | २२३-२२ | रिपुदमन | २४९-२१ |

| | | | | | |
|------------|--------|--------------|--------|-------------|--------|
| रिपूत्सादक | ७८-१७ | रोदसी | १९-२७ | लत | १५४-११ |
| रिष्टि | १८०-५ | रोध | १४२-३ | लति | २४८-१० |
| रुचि | २४९-१८ | रोम | २४७-१४ | लतु | १५७-१८ |
| रुक् | २४८-९ | रोम | १८०-३ | लघु | २०-६ |
| रुजा | २४८-२३ | रोम | २३४-११ | लमक | १४९-३ |
| रुद्र | २०२-२३ | रोमन् | १७२-४ | लमक | ३२-१९ |
| रुमत् | १८०-१८ | रोमक | १९३-२१ | लवणी | ४७-२० |
| रुमणवत् | २३१-८ | रोमक | १७६-१८ | लवण | २३९-१८ |
| रुस | २०२-२२ | रोमश | १७७-६ | लवणा | ४७-२१ |
| रुस | २३४-११ | रोमाञ्च | २१८-४ | लवृण | २२१-१० |
| रुस | १३१-२२ | रोह | १७१-१० | लवली | ४४-२७ |
| रुट् | २४८-९ | रोहिणी | १४५-१ | लवणकृत्य | ७७-६ |
| रुक्मिणी | १४५-११ | रोहिणी | ५०-९ | लशुन | ६५-१३ |
| रुक्ष | १५९-१ | रोहित | २४७-२१ | लहका | ५२-२२ |
| रुक्ष | १४८-१३ | रोहिणी | २४७-२१ | लहका | १३८-१ |
| रुष्य | १४८-९ | रोहिण | १५४-३ | लह्य | १४१-२३ |
| रेख | १४१-२४ | रोहीतक | १६७-११ | लाट् | २४३-१५ |
| रेखा | २४९-३ | रौत्त्यायणी | ५१-२८ | लाट् | २४२-१४ |
| रेखा | २४७-१४ | रौढि | ३७-२८ | लाडि | ३७-९ |
| रेखा | २४३-१० | रौढीयपोशिनीय | ६९-११ | लातेव्यायनी | ५१-२७ |
| रेफत् | २४५-१ | (ल) | | लावेरणि | १९०-१० |
| रेभ | १५८-२१ | लक्षण | १८४-६ | लाङ्गला | १११-९ |
| रेधती | १४७-९ | लक्ष्य | १८३-१२ | लिङ्गा | २४७-१५ |
| रेधती | ५२-९ | लङ्कशान्तमुख | ३५-१५ | लिङ्गु | १५०-५ |
| रेणु | ६२-२६ | लङ्क | १४९-११ | लिखिति | २४७-३ |
| रेणु | २४४-२७ | लक्ष्मण | १४५-१४ | लिङ्गुशीघ्र | ६९-२५ |
| रेवका | ५२-९ | लङ्गा | १४७-१८ | लिट् | २४३-१७ |
| रेवतिक | २०५-१४ | लङ्का | १४७-१८ | लिप्रवासित | ६५-१० |
| रेवत | १७५-१० | लङ्क्य | १४८-१२ | लृ | १३-२५ |
| रोगनाशन | २४९-२१ | लफुल | १७२-१८ | लृन | १२८-१८ |
| रोग | २१८-४ | लघु | २४७-१२ | लृनयव | ७३-८ |
| रोचनाकृत्य | ७७-२ | लघु | १८०-७ | लृयमानयव | ७३-१८ |
| रोचन | २४९-१४ | लघुदीर्घ | ६१-९ | लेख | १४१-२५ |

| | | | | | |
|------------|--------|-------------|--------|------------|--------|
| लेखाभू | १४४-७ | लौहित्यायनी | ५१-१५ | वतगड | १५८-५ |
| लेखाभू | ३३-२ | (व) | | वतगड्डी | ५१-२६ |
| लेखा | २४७-१४ | वक्षस्तस् | १२२-२७ | वत् | १५-१४ |
| लेखा | २४३-१३ | वकसवध | ३१-१९ | वत् | ६-११ |
| लेट | २४३-१ | वक्र | २२०-८ | वत्स | १६५-५ |
| लेट | २४३-१८ | वक्र | ५८-१२ | वत्स | २२०-११ |
| लेह्य | ३१-६ | वक्रणितम्बा | १०९-६ | वत्सक | १२८-१८ |
| लोकायत | १८३-१३ | वक्रणदी | १०१-६ | वत्स | १५७-११ |
| लोचना | ७७-४ | वङ्ग | १९०-१६ | वत्सोद्दरण | २०४-३ |
| लोट् | २४३-१ | वङ्गरभगडीरथ | ३५-८ | वद | २५०-४ |
| लोटा | २४३-२१ | वञ्जूल | १७८-१८ | वदरी | ४१-२७ |
| लोमश | १७६-११ | वचाकु | १३७-१२ | वदनेन्दु | ८४-२ |
| लोम | १५६-२० | वज्रपाणि | ७२-१ | वदि | ६-१ |
| लोमा | ९२-२६ | वज्र | ५८-५ | वध | २११-२० |
| लोमक | १७३-८ | वज्र | १७१-२ | वधिका | १२७-७ |
| लोमक | १७६-१८ | वट | १८०-१७ | वधू | २०२-२० |
| लोमक | १४८-८ | वट | १९५-२२ | वधू | २२६-२२ |
| लोम | २३४-१० | वटर्ज्य | ६-१२ | वन | ११९-१६ |
| लोम | २४७-१४ | वट | ६४-५ | वन | १८७-२१ |
| लोमन् | १७२-२६ | वड | १७२-१८ | वन | १८७-२७ |
| लोमन् | १७२-२ | वटाकु | १३८-२१ | वन | १८९-३ |
| लोह | १६६-५ | वटारक | ३२-२७ | वन | १७८-१२ |
| लोह | ६०-२० | वडवा* | १७-१५ | वन | १५३-११ |
| लोहा | १४९-१४ | वडवा | १०१-१८ | वन | १०२-१८ |
| लोहागडी | ४१-२७ | वडवा | २२२-१ | वन | १६५-१९ |
| लोहित | ५६-२३ | वडवा | १६४-२१ | वनवासी | १८७-१४ |
| लोहित | ५६-२४ | वडवा | १४१-१७ | वनकौशाम्बी | १८७-१४ |
| लोहित | १५७-१८ | वडवा | २२२-१ | वनरूपति | १०२-५ |
| लोहित | २४६-२ | वडवा | २३५-९ | वन्या | १८८-१६ |
| लोहित | २४७-२१ | वडभीकार | १३९-१९ | वपा | २४८-२७ |
| लोहितागिरि | ९८-२६ | वडारक | ३३-१७ | वप्र | ६२-२२ |
| लौमन | १३१-९ | वणिय | १९६-१६ | वर्मिक | २२४-२१ |
| लौहितिक | १२३-२ | वज्रगड | १४१-११ | वयस् | १३४-१२ |

| | | | | | |
|-------------|--------|-----------|--------|----------------|--------|
| वयस्क | १२८-३ | वर्म | २३५-१७ | वसन्तग्रीष्म | ६९-३ |
| वयस् | २४०-१८ | वर्मली | १८८-८ | वसान | १६९-६ |
| वरस् | २२-५ | वर्मिन् | १४७-२१ | वसाति | १६८-१८ |
| वर | २५०-६ | वर्वड | १९५-२४ | वसा | २४८-२६ |
| वलगु | २४२-१७ | वर्थ | २१०-२ | वसु | २४०-१४ |
| वराही | ४७-२६ | वर्थ | ५६-१० | वसु | १४८-१८ |
| वराण | १७८-२४ | वर्षा | १८३-१९ | वस्त्र | ५५-५ |
| वसयण | १८१-२२ | वर्षमक | ३१-१९ | वस्तु | २३४-१० |
| वराह | १०४-११ | वलाह | १७४-१४ | वरत्रा | १६४-२४ |
| वस्त | १३९-८ | वर्षुक | ३१-९ | वह | २५०-१३ |
| वस्त | २०३-४ | वर्ण | १९४-६ | वह | १५४-१३ |
| वरेण्य | १४८-४ | वलि | २३४-१६ | वहद्गु | ७२-२३ |
| वर्ग | १९९-२२ | वल्कल | ५८-१४ | वा | ३-५ |
| वर्च | १९५-१० | वलगु | १५७-१७ | वाक् | १३९-२४ |
| वर्चस्क | ५३-१४ | वल्मीक | ५३-२४ | वाक् | ३९-२१ |
| वर्चस् | २४५-६ | वल्मीक | १८०-१९ | वाक्चपल | ७९-२६ |
| वर्ण | १७९-२ | वल्मीक | १३८-२ | वाकिन् | १४७-१७ |
| वर्णक | २१७-१९ | वल्या | १८८-१५ | वाक् | २१४-१९ |
| वर्णक | ३३-२० | वसका | ४४-२७ | वागवज्जु | ८४-२ |
| वर्णतस् | १२३-१ | वलय | ५०-८ | वाग्देवताभक्ति | ९७-२५ |
| वर्ण | २३२-६ | वंश | २११-२ | वाग्मिन् | १५३-१३ |
| वर्णिका | १२४-१७ | वंश | १९९-२२ | वाङ्मनस | ९१-८ |
| वर्णकपेशिका | २१५-१५ | वंशभार | २१०-२५ | वाचस्पति | २४१-१५ |
| वर्णक | २१५-१६ | वंशावती | ९९-९ | वाचा | ३९-२१ |
| वर्ण | २०४-३ | वशिष्ठ | १७३-१८ | वाजपेय | ५९-२४ |
| वर्णते | १६-२३ | वशिष्ठ | ३०-१६ | वाज | ६०-१८ |
| वर्ण | ५६-५ | वशीक | २-१५ | वाजसनेय | १८२-५ |
| वर्तुण | १७५-१२ | वशैकृत्य | ७८-३ | वाट् | १०-४ |
| वर्तनास | १४१-२४ | वपट् | ९-५ | वाटाकू | १३८-२१ |
| वर्तमान | १६३-१२ | वर्षाशरद् | १८४-१७ | वाजघ्य | १५०-१३ |
| वर्ध | २३३-१४ | वपट् | ७५-४ | वाटूर | १८६-१८ |
| वर्धन | २४९-२ | वसन्त | ५५-१२ | वाट्य | १२५-५ |
| वर्म | २१८-१५ | वसन्त | १८३-५ | वाह्यलि | १०२-२२ |

| | | | | | |
|--------------|--------|--------------|--------|-------------|--------|
| वाणिज | ११८-१८ | वारिपथ | २०७-२५ | विकसा | १४४-८ |
| वाणिजक | १६८-१७ | वाकलि | ११६-७ | विकटी | ४८-५ |
| वाणिकाजय | १६८-१८ | वारिपथ | १२७-१४ | विकटा | ४८-५ |
| घात् | १०-३ | वाहर्षायणी | ५१-२० | विकर्ष | २११-८ |
| घात | १६५-२३ | वार्चल | १७५-१२ | विकर्ण | १४६-१ |
| घात | २३३-१० | वार्त्त | १२०-८ | विकली | ४४-३ |
| घातकि | १४०-२६ | घातिंकनूत्र | १८५-१५ | विकला | ४४-५ |
| घातरहायन | १६६-१५ | घादांवान् | ८८-११ | विकुट्यास | १७७-५ |
| घातगडी | ५१-२६ | घादांलीकृत्य | ४६-१८ | विकिर | १०५-१८ |
| घातघ | १६५-१ | वार्मिक | २३५-५ | विगर्ह | २३७-१२ |
| घातावती | ८८-१३ | वाल | १४६-५ | विघातिन् | २२३-१८ |
| घातागर | १८१-२३ | वाल | २४७-७ | विचार | २१७-१८ |
| घात्सखल्ल | ७०-१ | वालगव्यायनी | २१-१८ | विचप्रचा | ८८-३ |
| घाद्यक | १२४-२८ | वालमीकि | १८०-२ | विग्र | १७४-६ |
| घादन | १४५-३ | वालगुक | १२२-३ | विग्रह | १७४-५ |
| घादांली | १८०-६ | वावत् | ८-४ | विग्रा | १४४-१५ |
| घानरश्वा | ८४-५ | वाव | ८-५ | विघात | ११८-२४ |
| घानसन्तरा | १००-२३ | वास | १७८-१३ | विघ्न | २१८-२१ |
| घानुजि | १४०-२५ | वासर | ६४-५ | विजापक | १८४-८ |
| घान्तवृक्ष | १४१-१ | वासर | ६४-५ | विजावक | १८४-५ |
| घाश्रव्यायणी | ५१-१६ | वासव | ११८-१ | विटङ्क | ५५-१० |
| घासन् | २३४-१६ | वासवदत्त | १७१-४ | विजिगीषा | १८०-२६ |
| घासरज्जु | १२७-१७ | वासवदत्ता | १८५-१८ | विटप | ५७-४ |
| घायस | १२०-१४ | वासा | २३०-१८ | विटी | ४४-२१ |
| घायस | १२८-३ | वासि | २४८-१३ | विडौजा | १००-१२ |
| घायसविद्या | ८८५-८ | वास्तु | ६२-१८ | वितपन | ७७-८ |
| घायुदत्त | १४५-१२ | वास्तुविद्या | २०१-२४ | वितान | ५६-२२ |
| घायुदत्त | १७१-५ | वाह | २१३-८ | वित्तविनाशन | २४८-२० |
| वारत्र | ५४-२४ | विक्षा | २१६-१८ | वितरहा | १८८-८ |
| वार | २४७-७ | विकङ्कत | १६७-११ | वित्त | ६४-१२ |
| वाराटकि | १८०-३ | विकङ्कत | १७८-२ | विल्लीकृत्य | ७५-१८ |
| वाराणसी | १८७-२२ | विकर | १७२-२२ | विडङ्क | ५४-२४ |
| वाराटिकि | १८०-३ | विकथा | १८८-१७ | विद | १५३-१५ |

| | | | | | |
|------------------|--------|-------------|--------|----------|--------|
| विद् | १३८-१८ | विप्रचित्त | १२३-२३ | विलेपिका | २१५-११ |
| विद् | १५५-२३ | विप्रकर्ष | २११-१० | विषस्वत् | २३१-११ |
| विदन्त | १२०-११ | विप्रयोग | २११-११ | विषहं | २३७-१३ |
| विदेह | १९५-११ | विप्रश्न | २११-११ | विचित्त | १७६-१९ |
| विदर्भ | १५५-२४ | विफल | २२५-३ | विशयिन् | २५१-६ |
| विदग्ध | २२२-१९ | विबुधप्रधान | ८०-७ | विशंप | १५४-७ |
| विदमृत् | १५८-२१ | विभग्न | १७४-१५ | विश | १४३-२३ |
| विदा | २४८-२२ | विभीतक | १६६-११ | विशस्ति | २२३-१८ |
| विधारय | १३५-२३ | विभाषा | ३-६ | विशङ्कटी | ४९-५ |
| विद्या | २०१-२० | विभीतकी | ४७-२२ | विशाय | २२३-१७ |
| विदार | ५०-१९ | विभू | २४९-१४ | विशाल | ५९-१५ |
| विधर्म | २२४-१२ | विभू | २५१-५ | विशाल | २२३-१७ |
| विनद | ६२-२५ | विमति | २२१-१४ | विशाली | ४९-१ |
| विधवा | १४४-२ | विमनस् | २२१-१५ | विशाला | ४९-१ |
| विनत | १७६-२० | विमति | १४०-४ | विशाल | १५३-१३ |
| विनाद | १९६-१६ | विमति | १४४-२३ | विशिका | २१६-१२ |
| विताली | ७६-१ | विमान | ५६-२२ | विशिखा | २१६-१२ |
| विना | ३२-२५ | विमुक्त | २४०-८ | विशाल | १८१-२० |
| विन्द | २३०-२१ | विस्व | १३९-८ | विशाल | १७५-११ |
| विन्दु | १३७-१ | विस्व | ५७-४ | विशारद | २२०-२४ |
| विपञ्ची | ५०-१४ | विस्व | २३६-४ | विशिष | ८४-२४ |
| विपत् | २४८-२ | वियात्क | १२९-१७ | विशिष्ट | ८४-२४ |
| विपथ | १०५-२० | वियात | १२९-१८ | विपु | २३५-२५ |
| विपदी | ९४-६ | वियात | २२१-१६ | विश्वानर | १५३-२० |
| विपद | १८४-१७ | विपुल | २२८-२१ | विशेष | १८४-३ |
| विपाट् | १४२-५६ | विरङ्ग | २११-१३ | विश्वतर | २-४ |
| विपाश | १७५-६ | विराघय | २२२-२३ | विश्वस्त | २२५-२ |
| विपादिका | २३१-२२ | विरूपक | १९४-१४ | विश्व | १२२-२६ |
| विपादिका | २३३-२२ | विरूपाक्ष | ११४-१७ | विशवावसु | ५७-१८ |
| विपाश | १५६-२२ | विरोहित | १५७-११ | विश्व | २७-१ |
| विप्रुट् | २४८-४ | विगात | २२१-१९ | विश्वकथा | १९८-१९ |
| विपूयविनीयजित्या | ६९-६१ | विलावती | १८५-१९ | विश्वजन | १८८-२७ |
| | | विलाता | ३८-१६ | विश्वघा | २१६-१९ |

| | | | | | |
|------------------|--------|--------------|--------|--------------|--------|
| विश्वदेव | २२९-८ | वीणा | १७७-१४ | वृष्णिवृद्धि | १४२-१४ |
| विश्वानर | १५५-२६ | वीणा | १३५-११ | वृष्णिक | १४३-३ |
| विश्रवण | १४२-१५ | वीणा | १३५-२ | वेग | २४५-२२ |
| विश्रयं | १४४-२५ | वुल्या | १८८-१६ | वेग | २१७-१८ |
| विश्रि | १४६-२६ | वृक्षमूल | २१५-१ | वेट् | १०-२२ |
| विश्रि | ३१-२ | वृक्ष | १५७-१३ | वेट | १८०-१७ |
| विष | ५९-११ | वृक्ष | १८०-२४ | वेट | २४३-५ |
| विष | २०५-२६ | वृकवन्ध | १४७-१३ | वेटलाञ् | २४२-१४ |
| विषपुट | ३०-२४ | वृकवञ्चिन् | १४७-१३ | वेटा | २४३-२१ |
| विषपीत | ७१७-२३ | वृकग्राह | १४७-११ | वेटालाट | २४३-२२ |
| विषमत्स्य | २२२-१५ | वृकला | १३७-९ | वेटावान् | ९९-१२ |
| विषम | ७२-२४ | वृकशाण्डिल्य | ७०-१ | वेणु | १६६-२२ |
| विषम | १८९-१८ | वृट | २२१-१२ | वेणु | १९८-१० |
| विषयिन् | २३१-६ | वृत्त | ५५-११ | वेणुक | १९१-५ |
| विष्किर | १०५-१८ | वृत्रहन् | २४०-१५ | वेणु | १७७-१४ |
| विषु | १२-८ | वृत्रघ्नी | ४९-३ | वेणुकीय | १७०-१६ |
| विष्णुप्रदी | ९४-७ | वृत्रहा | ४९-३ | वेत् | १०-२२ |
| विष्वक् | २३४-२२ | वृत्रहन्वृ | २४०-२४ | वेतन | २१३-७ |
| विष्टपुर | १४४-३ | वृत्ति | १९८-७ | वेतसकीय | १७०-१५ |
| विष्टपर | १४४-३ | वृत्ति | १८४-२ | वेतसी | ४५-२४ |
| विष्णुवासव | ६६-२ | वृथा | २०-१२ | वेताली | ७५-२७ |
| विष्णुवृद्ध | १५२-१४ | वृद्ध | २२८-२२ | वेत्र | १८१-२० |
| विष्वक् | २१-१ | वृद्ध | १६५-११ | वेत्रक | १९१-७ |
| विष्वक्सेन | ६६-१४ | वृद्ध | २२०-७ | वेत्रकीय | १७०-१५ |
| विहायसा | १८-२५ | वृद्धमनु | ७०-५ | वेद् | २०६-१ |
| विसर्प | २३१-२२ | वृद्धिगुण | ६९-८ | वेद् | १२९-१३ |
| विसर्ग | २०८-१२ | वृन्द | १७०-२३ | वेद् | २४२-१३ |
| विसहन | ७७-२६ | वृष | २२०-१३ | वेददर्श | १८२-१४ |
| विहसनेकृत्य | ७८-२ | वृषगण | १५०-११ | वेन | १४०-२१ |
| विष्वक्सेनार्जुन | ६६-१३ | वृषदंश | १६३-२ | वेश | २१३-१० |
| विहार | ५०-१७ | वृषल | २२७-१ | वेशम | १७७-१५ |
| विहाय | ६२-२७ | वृषगण | १५८-८ | वेशम | १७६-११ |
| वीह्य | १५३-२३ | वृष्टि | १७२-९ | वेशम | २१३-८ |

| | | | | | |
|----------------|--------|---------------|--------|---------|--------|
| वेप | ६४-११ | वैशीति | ११६-१९ | व्रज | ५४-४ |
| वेला | २४२-१८ | वैशेषिक | १३२-९ | व्रण | ५४-२२ |
| वेपि | १७७-१ | वैश्वदेवभक्त | १६९-२५ | व्रण | २१८-६ |
| वेहत | २४५-३ | वैश्वदेवभक्त | १७०-९ | व्रण | २५०-५ |
| वैङ्कि | ११६-२ | वैश्वमानवभक्त | १६९-२३ | व्रणकलि | ८१-१८ |
| वैकर्ण | १६८-१८ | वैश्वानर | ११९-४ | व्रन | ६२-१९ |
| वैकर्णी | ११६-१२ | वैषट् | ९-२७ | व्रत | २३५-७ |
| वैकारि | ६६-१७ | वैव | ४-५ | व्रीहि | १६६-२२ |
| वैकारिमत | ६६-१८ | वैषट् | ७५-५ | व्रीहि | २३२-३ |
| वैकारिमतगाजवाज | ६६-२० | व्यंसक | ८६-२७ | शङ्कर | १८१-१८ |
| वैणकि | ११५-२४ | व्यङ्ग | ११४-१४ | शङ्कर | २०४-१९ |
| वैयाकृत | ११९-६ | व्यत्कस | ११३-२३ | शक | १३५-१७ |
| वैजयन्ती | ४४-३ | व्यवहारपटु | ८०-१३ | शक | १५७-११ |
| वैतुलौक्य | ११३-१८ | व्याकुलित | २३०-११ | शक् | २४८-१६ |
| वैदत | ११८-२२ | व्याघ्रपात् | १५९-१५ | शकट | १६५-२३ |
| वैदुप | ११९-९ | व्याकरणसभापन | २०९-२६ | शकट | ५३-२४ |
| वैद्य | ११८-११ | व्याकरण | २०१-१८ | शकट | १७८-१ |
| वैद्यशलाका | ५१-१० | व्याव्यान | २०१-१८ | शकट | १४९-१६ |
| वैधेय | १२०-१ | व्याघ्र | ८३-२८ | शकल | १५८-७ |
| वैनयिक | १३२-९ | व्याघ्र | १३९-१० | शकला | १४४-१० |
| वैनीतक | ६३-२४ | व्याघ्र | १६६-११ | शकन्धु | १४०-९ |
| वैमत | १७५-१६ | व्याहि | ३६-२५ | शक | २०४-१० |
| वैयत्कस | ११३-२३ | व्याहि | ११४-१५ | शकन्धु | १०२-२७ |
| वैयाकरणखसूची | ८६-११ | व्याहि | १८९-२० | शकन | १८०-७ |
| वैयाकरणखसूचि | ८६-१३ | व्याधि | २१८-३ | शक्ति | २१३-७ |
| वैयात | १२०-७ | व्यायाम | २३५-१५ | शक्ति | ४८-१७ |
| वैयाकृत | ११८-८ | व्याल | २१३-२ | शक्ति | २१५-२० |
| वैर | २४५-२० | व्यावहारिक | ११४-१५ | शकुनि | १४३-२४ |
| वैरकि | ११५-२४ | व्यावहारिक | १३२-११ | शकुलाद | १९२-८ |
| वैरतन | ८४-६ | व्यास | २१३-२ | शङ्कुपथ | १२०-२४ |
| वैराफण | १८१-१२ | व्यास | १३९-७ | शकुनी | १९६-२७ |
| वैगठक | १६९-५ | व्यूढोरस्क | ९५-२६ | शकुनि | १९७-२ |
| वैषाकवि | १४०-१८ | व्युष्ट | २०८-२४ | शङ्कु | १४०-९ |

| | | | | | |
|------------------|--------|----------------|--------|---------------|--------|
| शङ्कु | १७-१४ | शवल | १७७-५ | शर्करा | १७८-५ |
| शकन्मूत्र | ६९-१५ | शञ्जल | १४४-१७ | शलाघल | ४३-९ |
| शकलाकृत्य | ७५-२७ | शवली | ४३-७ | शर्कारी | ४३-५ |
| शकृत्पदी | ९४-१५ | शबराग्नि | १०९-२६ | शशवत् | ७-२३ |
| शङ्ख | २०४-१९ | शब्द | २४५-१३ | शर्करामर्दन | २१४-१८ |
| शङ्ख | १५४-११ | शब्दतस् | १२३-१ | शलभ | २४७-९ |
| शङ्ख | १५६-११ | शब्दार्थ | ६८-२६ | शलल | ६४-१३ |
| शङ्ख | ६०-२१ | शनैस् | २१-९ | शलाका | १४३-२३ |
| शङ्खपाणि | ७१-१० | शन्तनुदेवापी | ६९-१७ | शलाकाभू | १४५-६ |
| शची | ४६-१० | शम | २०-१४ | शलाघला | १४५-६ |
| शट | १५६-२२ | शमी | १८०-१४ | शलाका | १८०-४ |
| शट | १५७-११ | शमी | ४५-५ | शशवत् | १९७-७ |
| शठा | ५०-२० | शमीवत् | १६०-६ | शर्करा | १७४-१२ |
| शठी | ५०-१० | शमी | २०५-५ | शर्करोन्मज्जन | १३४-१ |
| शंङ्खिल | १५८-२१ | शम्बल | ६१-१९ | शष्प | १९५-१६ |
| शशिङ्खलकशकृत्स्न | ३५-१४ | शम्भली | ५०-२३ | शयगडभक्त | १८०-३ |
| शशा | १५०-१३ | शयन | ५५-२६ | शलाका | १४०-१६ |
| शतमान | ५६-१७ | शय्या | २१३-१० | शलङ्कु | १५०-१४ |
| शत | ५५-१५ | शर | १८०-२ | शलङ्कु | १३८-२७ |
| शतद्वार | १४५-६ | शर | १७७-१२ | शल्यका | १४८-२ |
| शतकुम्भ | १११-२५ | शरद्वत् | १५६-९ | शशादन | १९५-९ |
| शतपदी | ९४-६ | शर्करा | १७७-१४ | शस्वागिरि | ९९-४ |
| शतपति | १६२-१ | शरलोम | १३७-९ | शशिशेखर | ७१-९ |
| शतपुष्पा | ४०-४ | शरद्व | १८३-२४ | शल्य | ५७-७ |
| शतपथ | १२७-१५ | शरभ | २४७-९ | शष्कण्डी | १४५-२३ |
| शताहर | १४५-१९ | शरावती | ९९-८ | शष्कुली | १०५-१२ |
| शलमान | ५६-१७ | शरीर | ५९-२५ | शष्कुली | ४६-२२ |
| शलतिक | १२९-१८ | शरपुरुषीय | १३३-१८ | शाक | १४०-१६ |
| शलप | १५४-१४ | शरमय | १६८-११ | शाक | १५६-२३ |
| शलप् | १३-१८ | शरणा | १३०-१५ | शाक | १८०-२५ |
| शलफ | ६४-३ | शरनिवेशन | ११०-३ | शाक | ५४-९ |
| शलफर | १८१-११ | शरनिवेश | १०९-२४ | शाकल्यायनी | ५१-२७ |
| शलवर | १५२-१० | शखैरोद्घर्त्तक | ७८-१५ | शाकिन् | १४०-१२ |

| | | | | | |
|---------------|--------|---------------|--------|-------------|--------|
| शाकी | २३४-२३ | शालूक | २३७-१३ | शिरोजानु | ६६-४ |
| शाक्यपदी | ९४-२५ | शालूक | १४४-४ | शिरोविजु | ६६-४ |
| शाङ्खव्यायनी | ५२-२४ | शात्मलि | २७-२२ | शिरोविजु | ६६-५ |
| शाङ्गपाणि | ७२-१ | शाल्वागिरि | ९८-२७ | शिलिक | २२४-१७ |
| शाख | २३५-८ | शास्त्र | २१७-२० | शिशपा | १७५-७ |
| शाख्य | १३०-१० | शाख | २०३-२५ | शिशुकन्द | २०३-१३ |
| शाटीमच्छद | ९३-१ | शास्त्रप्रवीण | ८०-३ | शिववैश्रवण | ९१-२२ |
| शाटीपट्टिक | ९३-१ | शायारुढभक्त | १६९-२५ | शिव | १४१-११ |
| शात्य | १४८-११ | शांष्पेय | १८२-११ | शिव | १५३-१५ |
| शाण्डिल्यकृक | ७०-१ | शाख | १८७-१४ | शिध | १२७-४ |
| शाण्डिल्य | १७५-१६ | शाण्डुलिक | १३२-१ | शिवाकु | १३८-२२ |
| शाण्डिल्यखेल | ७०-६ | शाख | १३६-१४ | शिरःशेखर | ८०-११ |
| शातपत्र | १३१-१४ | शाश्वत | ११९-५ | शिशपा | १५०-७ |
| शान्तिवाचन | २१०-१ | शिक्षा | १८६-४ | शिशिर | १८३-६ |
| शात्रम | ११७-२३ | शिक्षा | २०१-१६ | शिशपा | १६६-२३ |
| शान्तनमुख | ३५-१६ | शिक्षा | २१६-१८ | शीक | २४५-१६ |
| शालुन्तप | १३४-२२ | शिक्ष | १७०-२२ | शीकर | २४५-२१ |
| शापेय | १८२-१२ | शिक्षर | ६२-७ | शीघ्र | २०-६ |
| शाफेय | १८२-१३ | शिखा | २३७-२५ | शीघ्र | २४५-५ |
| शायरुढायनभक्त | १७०-८ | शिखा | २३५-१७ | शीत | १२९-१९ |
| शाकर | १३१-८ | शिखा | १४८-१ | शीत | २२१-११ |
| शाकरी | १३१-८ | शिखानत्र | १६०-५ | शीत | १४८-३ |
| शालङ्कि | ११५-१० | शिशु | १५६-१० | शीत | २३२-१७ |
| शालभङ्गिका | १२९-२६ | शिशु | ३६-१३ | शीतंकृत्य | ७८-२ |
| शाल | १९-११ | शिम्वि | २३०-२३ | शीधु | ५३-९ |
| शालंकायन | १६९-४ | शितिपदी | ९४-२५ | शील | २३६-२७ |
| शाला | १८१-५ | शिरसिगड्डु | ७१-२ | शील | ५९-११ |
| शाला | ५१-६ | शिरीष | १७५-११ | शील | २१-१४ |
| शालास्थलि | ३७-२२ | शिरीष | २३७-७ | शीपंगय | १३१-३ |
| शाली | ५१-५ | शिरीष | १६७-४ | शीपं | १७१-२१ |
| शालीन | १४०-१९ | शिरीष | १७८-१ | शीपंनू | १७३-८ |
| शालावत् | १६०-५ | शिरीषा | १७४-२५ | शीपंच्छिन्न | ७१-२२ |
| | | शिरीष | १७४-१४ | शीपंमाय | ३१-७ |

| | | | | | |
|-------------|--------|------------|--------|----------------|--------|
| शीर्षघातिन् | २२३-७ | शुभ | ७-२५ | शेखर | ५७-६ |
| शीर्षभार | २१४-४ | शुभ | १५६-१९ | शेष | २५०-१२ |
| शीर्षभार | २१४-५ | शुभा | १४८-२ | शेष | १८६-१९ |
| शु | २२-१७ | शुभ्र | १५०-८ | शैखरवृ | १११-२० |
| शुक | १६४-१९ | शुभ्र | २४५-१६ | शैलाल | १११-१० |
| शुक | ९-१ | शुभ्र | १४३-२३ | शैशुकन्द | २०३-१४ |
| शुक | १४३-२३ | शुपि | २३९-९ | शैलूपक | १६९-५ |
| शुक्ति | १८०-४ | शुत्क | ५४-११ | शैवल | २१८-१३ |
| शुच | २४८-९ | शूक | ५४-१० | शैशिरि | १८९-२१ |
| शुचि | २४५-१६ | शद्रार्थ | ६८-६ | शोणा | १४९-११ |
| शुचिपदी | ८४-११ | शूद्रक | १२६-८ | शोणा | ४८-२ |
| शुचिशुक्र | ६९-७ | शूद्रक | १५३-२० | शोणी | "-" |
| शुचिवती | ९९-१२ | शूद्रा | ३९-२५ | शोफ | २३७-१ |
| शुविडक | २०२-१३ | शून्यक | १२९-२४ | शोभा | २४९-३ |
| शुविडा | १५६-२३ | शून्य | १२८-४ | शोभन | २४९-१४ |
| शुविडका | २०४-१४ | शूर | १३८-४ | शौङ्गि | १८९-२१ |
| शुन | १५४-३ | शूरसेन | १९३-१६ | शौण्डलिगु | ६९-२५ |
| शुन | २२-१९ | शूरसेन | १३६-४ | शौण्डीर | २२४-१२ |
| शुनक | १५६-९ | शूर्पणाय | १८१-७ | शौण्डभक्त | १६९-२५ |
| शुनासीर | २२-१८ | शूर्प | ५५-२५ | शौद्रायणभक्त | १७०-६ |
| शुनःकर्ण | २५-३ | शूर्पी | ४२-८ | शौनक | १८२-४ |
| शुक्र | २११-१९ | शूर्पणाय | १३९-१९ | शौवावतान | १९२-२५ |
| शुक्र | २३९-२३ | शूलपत्रिणि | ७२-१ | शौव | ११३-२५ |
| शुक्र | १४४-१५ | शूल | ५०-८ | शौवाद्दंष्ट्रा | ११४-४ |
| शुक्र | १७४-१ | शूलिका | १२४-२१ | शौवन | ११३-२५ |
| शुक्र | २४७-१९ | शूपी | ४३-२५ | शौवस्तिक | ११३-२२ |
| शुक्ल | २४७-१९ | शुक्ललोदि | १३६-२८ | श्रयवक | १५६-१० |
| शुक्ल | २४०-३ | शुक्लक | १२९-२५ | श्रयापर्य | २६-१७ |
| शुक्रशुची | ६९-७ | शुक्ल | २०४-२८ | श्रयाम | १५३-१६ |
| शुक्लमाथ | २१२-९ | शुक्ल | ५४-३ | श्रयाम | १४५-१३ |
| शुक्लपक्ष | १८९-१ | शुक्लार | २१८-१३ | श्रयाम | २४६-४ |
| शुक्लरुष्ण | ९१-१७ | शुक्ली | ४१-२३ | श्रयाम | २३५-१५ |
| शुक्ली | १५-१२ | शुक्ल्य | १३०-१९ | श्रयामक | ३६-१५ |

| | | | | | |
|--------------|--------|---------------|--------|--------------|--------|
| श्यामाक | ३६-१४ | श्रुततपस् | ९१-१४ | षण्ड | १०२-२३ |
| श्यामाक | १६६-१५ | श्रुमत् | १६०-६ | षत्वणात्त्व | २०२-७ |
| श्याप्रथ | १४१-१ | श्रुव | १५७-१८ | षष्ठान्नव्रत | २०७-१२ |
| श्यापुत्र | १४०-५ | श्रूः | २४८-१६ | षष्टिक | ६०-१७ |
| श्यावपुत्र | १४०-५ | श्रेणिविहित | ८५-५ | षष्टि | ६३-१९ |
| श्यामायन | १८२-१४ | श्रेणीकृता | ८४-१७ | षाड्गुण्य | १२१-२५ |
| श्यावप्रथ | १४१-१ | श्रेणिनिरूपित | ८५-५ | षोडन् | १०२-१९ |
| श्यावनाय | १४१-१ | श्रेण्यासीन | ८५-५ | षोडश | १०१-३ |
| श्यावरथ | १४०-२१ | श्रेयस्क | १३०-३ | षोढा | १०१-२ |
| श्यावनाय | १८०-२६ | श्रोत्रिय | २२८-२७ | षोडैन | ११८-२२ |
| श्येनकपोतीय | १३३-१२ | श्रेष्ठ | २२३-५ | संकथा | १९८-१९ |
| श्रद्धातपस् | ६६-१ | श्रीव्यायगी | ५१-१५ | संक्रत | १९५-८ |
| श्रविष्ठा | १५३-२२ | श्रीति | १८९-२१ | संक्रम | २०८-१९ |
| श्रमशान | २१५-१ | श्रीपट् | ९-२७ | सङ्कट | १७८-६ |
| श्रयवक | १८१-८ | श्रीपट् | ७५-५ | सङ्कला | ७६-१५ |
| श्रयवक | १५६-१ | श्लेषमन् | २३३-६ | संकलित | ३०-७ |
| श्रमशान | १०१-२० | श्लेषमन् | २३४-१५ | संकलिका | १२५-४ |
| श्रमण | २२६-२० | श्लक्षणा | २०१-१६ | संकर्षणा | १३७-५ |
| श्रमण | ८३-४ | श्रमश्रुजात | ७१-२१ | संकाश | १७१-१८ |
| श्रद्धा | २१८-१६ | श्लक्षणाभार | २११-११ | सङ्कृत्य | १४९-१२ |
| श्रद्धा | २०९-१२ | श्रवचणहाल | ९२-७ | सङ्क्रम | ६३-१३ |
| श्रद्धातपस् | ८१-१४ | श्रवन् | १७-१४ | सङ्कट | १७९-१३ |
| श्रद्धामेधा | ९१-८ | श्रवन् | १६४-१५ | संकलित | २३०-७ |
| श्लक्षणा | १८४-५ | श्रवन् | २१८-१४ | संग | ५८-१२ |
| श्रमणविश्रुत | ८४-२६ | श्रवपाक | २०२-२२ | संग्रह | १८४-६ |
| श्रावस्ती | १८७-१३ | श्रवन् | १४५-१९ | संग्रह | १९८-८ |
| श्री | २३३-१ | श्रवन् | २०-६ | संग्रहसूत्र | १८५-१५ |
| श्रीमत् | १६०-६ | श्र्वेत | १७४-६ | संग्राम | १९८-१८ |
| श्रीमदुखा | ४१-५ | पट् | १३८-२६ | संग्राम | २०८-१२ |
| श्रुत | २३०-१ | पट्पदी | ९४-१८ | संग्राम | २०८-२५ |
| श्रुकृत्य | ७६-२ | पहण्ड | १९५-८ | संग्रह | १८४-२ |
| श्रुततपस् | ६९-११ | पह्वा | १०२-१६ | संग्रह | १८४-२ |
| | | पहाण्ड | १९-३८ | संग्रह | १८४-१ |

| | | | | | |
|-----------------|---------|-----------|--------|--------------|--------|
| संघात | २०८-१० | संहतखुसम् | ७३-२१ | सप्त | १३७-१२ |
| संघात | १९८-९ | संफगा | ४०-१ | सत्रासाह | १९५-१४ |
| संघात | २०९-३ | संप्रहाण | ३९-१७ | सत्वन्तु | २४०-१० |
| संघाट | १८४-१ | संप्रयोग | २११-९ | सत्वर्ज | २४०-९ |
| संपर | १८१-७ | संप्रश्न | २११-११ | सम्पत् | १९७-८ |
| संज्ञा | १८३-१० | संक्रन्दन | २४९-१५ | सकर्णक | १७३-९ |
| संज्ञा | २१८-२० | संभाषिन् | २२३-१८ | सकृति | १५७-१२ |
| संज्ञा | २३५-१७ | संभूयस् | १३८-२७ | सक्तु | २३३-१४ |
| संयोग | २०८-१२ | संहतयवम् | ७३-२२ | सक्तु | १९८-९ |
| संवत्सर | २०१३-१८ | संहिता | १८३-२३ | सकथिल | २३३-६ |
| संवत् | १८-२ | सकर्णक | १७२-९ | सस्राणक | ९६-२७ |
| संवत्सरजाता | ७७-१३ | सकल | १७२-२७ | सखिदत्त | १७१-४ |
| संवास | २०८-१९ | सकुक्षि | १०७-१ | सत्वक | १८९-३ |
| संशकला | ७५-२३ | सक्तु | ५४-२१ | सक्तुसिन्धु | १९४-९ |
| संवेशिन् | २२३-१७ | सक्तु | २०८-१७ | सद्यस् | १४-१३ |
| संवेशन | २०९-२० | सकल्लोमन् | १९३-२१ | सक्तु | २३३-१४ |
| संशय | २०७-१२ | सजूःकृत्य | ७५-१४ | सक्तुमांसौदन | २०८-१३ |
| संस्था | २१६-२३ | सजनपद् | १०६-२३ | सनामा | १०७-७ |
| संवेश | २०८-१७ | सजातीय | १०७-८ | सरूप | १००-६ |
| संवार्त्तिक | १८५-२४ | सज्योतिस् | १०६-२३ | सरूप | १०७-६ |
| संवाह | ९१-२५ | सत्व | २१४-१९ | सयुग | १९९-१० |
| संवादिन् | २२३-८ | सपत्नी | १०६-२४ | सरस | ४४-२२ |
| संवत्सर | १९-३ | सपद्मि | ९७-५ | सरसेन | १७२-१२ |
| संरक्षित | २२९-२६ | सपत्नी | १४२-३ | सखि | १७१-२० |
| संश्रुत् | २४५-६ | सत्यम् | १८-२२ | सर्वदमन | २४८-२० |
| संसर्गविद्या | १८५-९ | सरव | ६४-९ | सर्वसेन | २०४-१६ |
| संसार | ६४-५ | समल | १५०-८ | सरिर | २४७-२० |
| संस्तीय | १९५-९ | सत्वत् | १२४-१३ | सर्वलोक | १८६-२५ |
| संस्फीय | १९५-९ | सत्वल | १५०-८ | सर्पिर्मधु | ६९-९ |
| संस्थान | १०७-७ | सतुल | ७१६-२३ | सर्पाण | १८०-१४ |
| संसेविन् | १३८-१ | सत्य | २१६-२१ | सर्वविद्या | १८५-९ |
| संह्रियमाणयवम् | ७३-२२ | सत्यंकार | १४०-१ | सलिल | २४७-११ |
| संह्रियमाणखुसम् | ७३-२२ | सत् | १९-२५ | सवर्ण | १०७-७ |

| | | | | | |
|---------------|--------|--------------|--------|-----------|--------|
| सवेणी | १०७-१ | समया | १८-२ | सनातन | १९-२६ |
| सवयेष्टा | १०८-१६ | समरूप्य | १८९-१ | सनाह | २०८-१७ |
| सवयेष्टात् | १०८-१५ | समनय | १८९-१ | सन्निपात | २०८-१३ |
| सवयास् | १००-१२ | समग्र | २२२-२५ | सनख | १५३-२४ |
| सख्यानस् | १०७-७ | समपदाति | ७२-२७ | सनाभ | १०७-७ |
| सहशय | ११३-१ | समल | १७१-२६ | सनत् | १८-२० |
| सत् | १३-३ | समानदेश | १८७-५ | सन्धिवेला | १८७-१२ |
| सत्यक | १३७-२५ | समानधर्म | १०७-९ | सगोत्र | १०७-१२ |
| सदम् | १४-१६ | समाचार | २२४-३ | सपर | २४२-२० |
| सदा | १४-१२ | सम्पराय | २०८-१२ | सम्पत्त्य | १८१-२३ |
| सदा | १९-२४ | समान | १०६-२४ | सपक्ष | १०६-२३ |
| सदृश | २२३-१४ | समारम्भण | २०९-२२ | सपिशह | १०६-२६ |
| सदृश | १७६-१८ | सतपःश्रुत | ६९-१० | सबन्धु | १०६-२४ |
| सनत्कुमार | १८-२० | सम्पन्नशालिक | ९६-५ | समक्ष | ९५-१६ |
| सना | १९-२५ | समावेशन | २०९-२२ | सनभूमि | ७२-१९ |
| सनुतर | १८-१२ | समयुग | १९९-९ | समपक्ष | ७३-१२ |
| सन्ताप | २०८-९ | सम्मानतीर | ७३-१४ | सनर | ५९-२१ |
| सन्धि | १४१-२५ | समुदाय | २०८-२५ | सनभूमि | ७२-१८ |
| सत्पुष्पा | ४०-४ | समुपजीव | १३-१८ | सनल | १९९-११ |
| सदामत्त | ३२-२ | सम्मर्दिन् | २५०-१७ | सनस्य | २२२-३ |
| सधर्म | १०-९ | सम्मति | २२१-४ | सनर | २४२-१४ |
| सधर्म | २२३-२४ | सम्बन्ध | १६०-४ | समित | २४८-४ |
| समल | १७२-१० | सम्बन्ध | २०८-१९ | सम | ६-८ |
| सम | ४०-१४ | सम्बन्ध | १५६-१० | सङ्कुचित | २०४-८ |
| सफुट | १५३-२१ | सम्भूयस् | २०४-१ | संसेवित् | २४८-३ |
| सम्पादन | २०८-१२ | सञ्ज्ञ | २२३-७ | समिन्ध | २४८-६ |
| सपदि | १९-११ | सन्मादन | २०७-११ | समित | २४८-४ |
| समपदाति | ७३-१ | सदेश | १०६-२६ | समानतीर | ७३-१४ |
| सम्रत्नचारिन् | २२६-१३ | सधमित्र | १९२-१६ | समानतीर्थ | ७३-४ |
| सभापति | १६२-१ | सधर्मा | १०७-८ | समानशाल | १९०-४ |
| सम | २७-१३ | सद्यस्काल | २५-२ | समानग्राम | १९०-१० |
| सम | १८८-२५ | सत्तात् | १६२-१५ | समानदेश | १८७-५ |
| समल | १७२-२७ | सनाभि | १०६-२६ | समानग्राम | १८७-५ |

| | | | | | |
|---------------|--------|----------------|--------|--------------|--------|
| सम्पत् | २४८-२ | सहचरी | ४२-२२ | सात्वत | ११८-५ |
| समान | ५६-२० | संहियमाणवव | ७३-२२ | सात्मन् | २२३-११ |
| समीरणाग्नी | ६९-८ | सह | ५-१ | सात्वन | ११८-५ |
| सम्प्रिय | १६९-८ | सहस्रशीर्षन् | २४१-१६ | सान्तपन | ११७-२४ |
| सम्मानस् | २२१-२० | सहतपुच्छि | ७६-२६ | सान्त | ११७-२४ |
| समुद्र | १९६-२ | सहसा | १८-२७ | साधि | २४९-१५ |
| समुद्रकुक्षि | १९५-२० | संहृतयव | ७३-२२ | साधारण | ११७-२४ |
| समुद्रस्थली | १९६-११ | संहियमाणबुस | ७३-२२ | साधारणा | ११७-२५ |
| सम्यक् | ३६-१८ | सहनबुस | ७३-२१ | साधुपूजक | ७८-२१ |
| सरात्रि | १०६-२६ | संहिता | १८३-२३ | साधु | २२०-६ |
| सरक | १७३-४ | सहक | १७३-९ | सानाय्य | ११९-२४ |
| सरक | १७१-११ | सहकृत्य | ७७-७ | सानु | २३०-२२ |
| सरस | १७३-९ | सहचरा | ४१-२२ | सानु | ५३-२४ |
| सरक्ष | २२४-१६ | सह | ५-१३ | सान्निध्य | १२२-१३ |
| सरक | ५४-३ | सहस्रशीर्षन् | २४१-१६ | सान | २३४-१६ |
| सरस | १७१-१३ | सहतपुच्छि | ४६-२६ | साम | १८६-५ |
| सरोज | २३७-८ | सहसा | १८-२७ | सामयिक | १३२-९ |
| सरोरुह | २३७-११ | सहक | १७३-९ | सामयिकव्रत | २१०-९ |
| सर्प | २५०-७ | सामिन् | २२३-६ | सामल | २०३-२५ |
| सर्पिकुण्डिका | २५-१९ | साक्षात्कृत्वा | ७६-२५ | साम्रत | ११९-१६ |
| सर्पिर्मधु | ९१-७ | साक्षात्कृत्य | — | सामान्य | १२२-१३ |
| सर्वतस् | १२२-२६ | साक्षात् | १८-१९ | सामि | १९-२२ |
| सर्वकेश | २०४-१७ | साकम् | ६-८ | साम्रदानिक | १३२-१० |
| सर्वनाम | १०९-२७ | साङ्गतिक | १३२-१० | सामाचारिक | १३२-१५ |
| सल्लकी | ४६-२७ | साङ्क्रामिक | ११३-३ | सामयिक | १३२-१५ |
| खर्व | २६-१२ | सांगरव | १८२-७ | सामाप्य | १२१-१३ |
| सवर्ण | १५९-१ | साचि | १८-२१ | सामुत्कर्षिक | १३२-१२ |
| सवर्ण | ५४-१५ | साडि | १८९-६ | सामूहिक | १३२-९ |
| सर्ववेद | ११३-१७ | सात् | १५-११ | साम्ब | १३७-१३ |
| सरम | १७१-१२ | साङ्गतिकी | १३२-११ | साम्पर | १७५-१६ |
| सहस्र | १६४-१५ | साङ्गामिक | १३२-१२ | साम्बध्यायनी | ५१-२३ |
| सवचन | १०७-१२ | सात्वन्तव | १२०-३ | सांयाति | १९१-२६ |
| सहस् | २२७-२४ | सात्यंकासि | ११५-६ | सायम् | १८-१ |
| सहकृत्य | ७७-७ | | | | |

| | | | | | |
|---------------|--------|-------------|--------|----------------|--------|
| सारपत्रक | २२९-१ | सिन्धु | १९४-५ | सुखजाता | ७१-१३ |
| सारपत्र | २२८-२० | सिन्धुमित्र | १९२-१४ | सुखशय्या | २१३-१२ |
| सारपुत्र | २२९-१ | सिद्धगति | १२७-१६ | सुतङ्गम | १७३-२२ |
| सारङ्गजग्धि | ७१-११ | सिन्धुपथ | १२७-१५ | सुन्दर | ४९-५ |
| सारधि | २२४-१७ | सिंहकर्ण | २०४-२ | सुदन्त | १४४-१६ |
| सारङ्गी | ४१-३२ | सिपल | १७६-१९ | सुदक्ष | १४५-२ |
| सार | ८१-४ | सिरिन्द्र | २०२-२६ | सुदामन् | १४५-१३ |
| सारस्यायनभक्त | १७०-७ | सीतान्वेषण | २०३-१५ | सुदि | २३-५ |
| सारिकावण | ८८-२२ | सीपाल | १७८-१९ | सुदिन | २४५-१९ |
| सार | ६१-३ | सीम् | ९-१९ | सुन्दरी | १८५-१९ |
| सार्द्धम् | ६-२३ | सीमन्त | २१८-३ | सुधावत् | १३७-१० |
| सार्वलौकिक | १११-२१ | सीमन्त | १०१-१९ | सुधामन् | १३८-९ |
| सार्वसेनी | १३४-२२ | सीर | १७२-१ | सुधामित्र | १९२-१५ |
| सार्ववैद्य | १२१-१८ | सुकर | २२३-१४ | सुधायु | ३४-९ |
| सार्ववैद्य | १२१-९ | सुकर | १७६-१४ | सुधात् | १३९-७ |
| सार्ववेदिक | ११३-१८ | सुक | १२-१० | सुनामन् | १३७-१९ |
| सार्वभौम | ११२-१० | सुकर | १७६-११ | सुन्दरा | ५०-२६ |
| सार्ववैद्य | ११३-१७ | सुकुमार | २२९-२८ | सुन्दरी | ५०-२५ |
| सार्वलौक्य | १२१-२१ | सुकृत्य. | १२२-१२ | सुनामन् | १४५-२० |
| सात्व | १९४-५ | सुख | २१७-२० | सुन्दरी | ४६-२० |
| सावित्रीपुत्र | १३४-२३ | सुख | १७६-१९ | सुनामन् | १४८-१८ |
| सांशित्यायनी | ५१-२४ | सुगला. | ४७-३ | सुपिष्ट | १४२-१२ |
| साहस | १२०-७ | सुख | २४६-५ | सुपिष्ट | ३३-१९ |
| सिंह | १०२-२७ | सुख | २४६-१६ | सुपर्ण | २४०-१४ |
| सिक्तसंमृष्ट | ६५-१६ | सुख | २३६-२६ | सुपरि | १७२-६ |
| सिक्तसंसृक्त | ६५-१६ | सुयानिद्रा | ११२-१ | सुपर्ण | ६३-२१ |
| सिद्धास्य | ८७-११ | सुखशय्या | "- | सुपथिन् | २७२-११ |
| सिनीवाली | ४६-२६ | सुखतपस् | "- | सुब्रह्मचारिन् | २२६-१८ |
| सित | १७७-१४ | सुखरात्रि | "-२ | सुभगा | ४१-४ |
| सिध्म | २३२-१४ | सुखशयन | "-१४ | सुभ्रात् | २२८-१ |
| सिद्धकावण | ९८-२२ | सुखशय | "-३ | सुभाग | २२८-२ |
| सिन्धु | २०३-२३ | सुखदिवस | "-२ | सुमङ्गल | २०४-७ |
| सिन्धु | २३९-५ | सुख | २४३-१३ | सुमनोहरा | १८५-१९ |
| | | | | सुमनम् | १५२-८ |

| | | | | | |
|----------|--------|----------|--------|---------------|--------|
| सुमनस् | १५०-१३ | सुस्थल | १३६-६ | सेधा | २४९-४ |
| सुमनस् | २४५-२ | सुस्नात | २-२७ | सेना | १२१-१३ |
| सुमित्रा | १३७-१८ | सुस्त्री | २२६-९ | सेना | २०२-२१ |
| सुयामन् | १४८-३ | सुमवी | ४६-६ | सेव | २५०-११ |
| सुरस | १७१-११ | सुहृत् | २२७-२ | सेनापति | १६१-२७ |
| सुरङ्गा | ४१-११ | सुहित | २२८-१२ | सेवाली | ७६-१६ |
| सुरनदी | ११०-९ | सुरा | २३९-२३ | सेवाकुशल | ८०-४ |
| सुरोहिका | १४३-१६ | स्यूण | २०६-१९ | सेवितक्षत्रिय | ७१-१७ |
| सुराजन् | २२३-२३ | सूकरपदी | ९४-१६ | सैकयतविष | १६९-१५ |
| सुशर्मन् | ७५-२२ | सूचिक | २२४-१७ | सैन्धव | ६१-११ |
| सुलेखन | १४२-४ | सूचक | २२५-२ | सैकयत | १४८-२० |
| सुलामिन् | १५८-१२ | सूची | ४२-१९ | सैकयत | ३७-२६ |
| सुलोमिन् | १५८-१२ | सूची | ५०-५ | सैन्धव | ६१-१२ |
| सुलस | १८५-३ | सूचीपदी | ९४-१० | सैन्धव | २४७-२६ |
| सुवर्चल | १७६-१३ | सूत | ३८-१७ | सौनव्यायनी | ५१-२७ |
| सुवर्णक | १७२-२६ | सूतक | २२५-२ | सैन्धवी | ६-१२ |
| सुवर्ण | १८०-२६ | सूद | २५०-१२ | सैरिन्धी | २०३-३ |
| सुवर्ण | १७८-२३ | सूदी | ४३-८ | सफैयकृत | ११४-८ |
| सुवर्ण | ५४-१४ | सूत्रनड | ११२-१८ | सोढ | २४६-२७ |
| सुवर्ण | १६२-२० | सूत्रनट | ११२-१९ | सोढ | २३६-२६ |
| सुवक्षत् | १४५-१२ | सूत्रिका | १२४-२२ | सोदन | १८८-१८ |
| सुषामा | १०८-१७ | सूना | २३५-२० | सोममित्र | १९२-१५ |
| सुपम | ७३-३ | सूनु | १५७-१८ | सोमरुद्र | ६६-३ |
| सुपाग्णी | १०५-१८ | सूप | २०६-१६ | सोममय | १६८-१२ |
| सुपन्धि | १०८-८ | सूपत् | १०-४ | सोमापूषा | २४०-१९ |
| सुष्टु | २२६-१५ | सूप | ४२-८ | सौख्यम् | १२१-१८ |
| सुष्टु | २०-८ | सूर | १७१-२६ | सौकरसद्य | १११-१० |
| सुषामा | १०७-२१ | सूमी | ४४-१ | सौधाताक | ३७-२ |
| सुपम | १०७-२२ | सूकरगडु | १४४-२४ | सौत्रनाडी | ११२-१९ |
| सुपीम | १०८-१७ | सूपाटी | ४२-६ | सौधर्मी | ४४-२६ |
| सुपवी | ४३६-५ | सूदाकु | १५२-८ | सौध | ६२-२६ |
| सुपेघ | १०४-२८ | सूगोल | १०२-० | सौधायणभक्त | १७०-९ |
| सुस्थाल | १३६-५ | सेतकी | १८७-२१ | सौपर्व | १११-१० |

| | | | | | |
|--------------|--------|-----------------|--------|--------------|--------|
| सौमतायन | १७६-४ | स्तम्भ | १८२-१६ | स्थूणापदी | ८४-५ |
| सौमायन | १७६-५ | स्तात् | १५-१० | स्नातकराजन् | ६७-३ |
| सौमित्रि | १९०-१५ | स्तेन | २२३-११ | स्नातक | १२९-१३ |
| सौम्य | १२१-२ | स्तेन | ५५-२२ | स्नात्वाकालक | ८७-२५ |
| सौव | ११-२२ | स्थपुट | २१७-१० | स्नेह | ६१-२ |
| सौवर | ११४-६ | स्थली | ४९-१२ | स्नेह | २३२-१४ |
| सौव | ११३-२४ | स्थाने | २२-५ | स्पन्दन | १६६-६ |
| सौवादुमृद् | ११४-१ | स्थलपथ | २०७-२५ | स्फिगचाल | २१३-१२ |
| सौवाध्यायिक | ११४-५ | स्थलपथ | १२७-१८ | स्फिग्ज् | १८३-१६ |
| सौवादुमृदव | ११४-२ | स्थलसिन्धु | १९४-६ | स्म | ९-७ |
| सौवरितक | ११३-२४ | स्थगल | २१७-६ | स्यात् | १६-२४ |
| सौवीरभक्त | १६९-२३ | स्थलपूलास | ६७-२६ | स्त्राक् | २०-१० |
| सौसायन | १७६-६ | स्थायिन् | २५०-१८ | स्त्रीकुमार | ९२-९ |
| सौवैरण | १९०-११ | स्थाणु | ६१-१५ | स्त्रीकुञ्जा | ७४-१ |
| स्कन्द | १३०-१२ | स्थाणु | १८०-११ | स्तुक् | २०५-२६ |
| स्कन्ध | १५६-२० | स्थान | ५५-२५ | स्त्राख्य | २५१-४ |
| स्कन्ध | १८२-१६ | स्थाली | ५०-९ | स्व | ६४-२ |
| स्वद्य | २०५-२६ | स्थगर् | २१७-६ | स्व | १९७-२० |
| स्कन्धय | १३१-५ | स्थगल | ३२-७ | स्वर्ग | २०-१४ |
| स्कन्द | १२७-९ | स्थविरवती | ९९-१७ | स्वस्ति | २१-१९ |
| स्कन्द | १५६-२० | स्थविर | २२६-९ | स्वधाकृत्य | ७५-३ |
| स्कन्द | २५०-१२ | स्थण्डिल | २०२-१५ | स्वधा | १४४-३३ |
| स्कन्दविशाखा | ९१-१३ | स्थिर | २२१-१० | स्वर | १७-२६ |
| स्करभ | १५६-२१ | स्थिरक | १५०-५ | स्वस्ति | ११२-२८ |
| स्कन्ध | ११२-७ | स्थूरा | १५८-८ | स्वर्गमन | ११२-१८ |
| स्तनकुम्भ | ८४-३ | सूर्याचन्द्रमसू | ९१-१६ | स्वभाव | २२-२४ |
| स्तनतट | ८६-२ | स्थूणभार | २१०-२७ | स्वन | १५३-१५ |
| स्तन | ६१-१५ | स्थूण | २११-३ | स्वकुलाल | १८२-१० |
| स्तवक | २३५-९ | स्थूण | १७७-१२ | स्वर्भानु | ११०-७ |
| स्तम्बक | १२८-२२ | स्थूल | १७४-१५ | स्वयम् | १९-१ |
| स्तवक | २१७-१९ | स्थूलक | १२३-२३ | स्वन | १७४-५ |
| स्तम्ब | १४९-१५ | स्थूलशिरसू | १३७-५ | स्त्रधर | ११४-१३ |
| स्तम्बक | १२९-४ | स्थूल | ६०-१९ | स्वस | ४०-११ |

| | | | | | |
|-------------|--------|--------------|--------|------------|--------|
| स्वस्थ | २२४-११ | हरिणी | ४३-२५ | हस्त | १२७-१८ |
| स्व | २८-१ | हरित | १२४-२७ | हस्त | १७३-३ |
| स्वतस् | १२२-२८ | हरितवर्तिन् | ११०-११ | हस्त | ५५-१२ |
| स्वर | १०२-१७ | हरिनन्दन | १०४-२० | हस्त | १२८-१ |
| स्वाजनिक | ११४-१७ | हरिद्रा | २१७-६ | हस्तक | २१८-२० |
| स्वागति | ११४-१३ | हरिद्रु | १८२-११ | हस्तक | १२४-१४ |
| स्वाङ्गि | ११४-१७ | हरिश्चन्द्र | १०४-१७ | हस्तकटक | ८०-११ |
| स्वापतेय | ११४-१६ | हरिद्रु | २१७-५ | हस्तिन् | १७३-३ |
| स्वागत | २१२-१७ | हिरण्य | ९९-१९ | हस्तिकर्षु | १९२-१ |
| स्वादु | २२०-६ | हरिद्रुपर्णी | २१७-६ | हस्तिन् | १५०-२ |
| स्वाराज | २२३-१८ | हरिवास | ९१-१२ | हस्तिपाद | ९३-१७ |
| स्वाहा | ७५-४ | हरीकणी | ४१-१९ | हस्तिपाद | १४२-२५ |
| स्वाहाप्राण | २४-१५ | हरीतकी | ४६-९ | हस्तिशिरस् | १३७-२ |
| स्वाहा | १-३ | हर्यग्नि | १०९-२६ | ह्यस् | १८-९ |
| स्वापिशि | २०५-१६ | हर्यश्व | १५७-४ | ह्रद् | १९७-२४ |
| स्तिन् | १२-१२ | हर्ष | २४६-५ | ह्रस्व | २२०-१४ |
| ह | ३-९ | हर्ष | २१८-२ | हंही | ५-६ |
| हनु | २३०-२१ | हल | १६४-१८ | हा | ४-११ |
| हनु | २३२-१७ | हल | ५९-६ | हाधन | २२८-७ |
| हनूमान् | ९९-८ | हल | २३६-२७ | हार | ३२-५ |
| हनूमान् | ९९-८ | हल | १६६-१ | हास्य | १२२-११ |
| हन्त | १०-८ | हलम् | २२-२३ | हाद | १९८-१ |
| हन्तृ | १४०-५ | हलवन्ध | १६४-१९ | हाद | १९७-२० |
| हम् | १०-२१ | हत्या | १४७-२ | हि | ३-२७ |
| हयी | ४३-१७ | हविर्धान | २४०-२३ | हिम् | १०-२१ |
| हये | ८-१२ | हविस् | २०५-२५ | हिम | १८०-१० |
| हरि | २३४-१२ | हंस | ६१-३ | हिम | ५८-१४ |
| हरि | २४९-६ | हंस | १९०-१६ | हिरण्य | १७९-१९ |
| हरि | २३०-२१ | हंसक | १४९-२४ | हिरण्य | ५९-२५ |
| हरिचन्द्रम | ६३-११ | हंसक | १७२-२६ | हिरण्य | १९२-५ |
| हरित | २४४-२८ | हंसपथ | १२७-१४ | हिरण्य | २२७-७ |
| हमित् | २३०-२३ | हंसपथ | १६३-११ | हिरण्य | २३६-५ |
| हरित | १५२-५ | हंसगद्गदा | ९८-१५ | हिरण्यकरण | १९२-११ |

| | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|------------|-----|
| हितक् | १२-७ | हे | ४-१५ | हैरगय | १२५ |
| ही | ४-१३ | हेतु | १२३-१८ | हो | २२५ |
| ही | २४२-१० | हेती | ८-१३ | होह | २२० |
| हुम् | ८-२० | हेमन् | २३४-१७ | होह | २२० |
| हृषीङ् | २४३-२ | हेमन्त | १२३-१८ | होहा | ३८ |
| हृदिक | १४०-१ | हेरम्भ | १०२-१८ | होतु | २२६ |
| हृषीङ् | २४३-६ | हेहय | १४३-१० | होद | २२६ |
| हृदय | २२७-२५ | है | ४-२ | है वृयजमान | २१६ |
| वृष्टि | १४६-२६ | | | | |